प्राचीन गूजराती गद्यसंदर्भ

संपादक

श्री॰ जिनविजयजी



गूजरात विद्यापीठ

अमदावाद

पुरातत्त्व ग्रंथावली

प्राचीन गूजराती गद्यसंदर्भ

संपादक
श्री. जिनविजयजी
गूजरात विद्यापीठ, अमदावाद

प्रकाशक
गूजरात विद्यापीठ
अमदावाद

प्रथम आवृत्ति
प्रत. ५००

પ્રકાશક :
મગનભાઈ પ્રભુદાસ દેશાઈ
મહામાત્ર, ગૂજરાત વિદ્યાપીઠ
અમદાવાદ

મુદ્રક :
ચીમનલાલ ઈશ્વરલાલ મહેતા
વ સં ત મુ દ્ર ણા લ ય
ઘીકાંટારોડ : અમદાવાદ

विज्ञापन

प्राचीन गूजराती गद्यसंदर्भनुं संपादनकार्य कर्या पछी प्रस्तावना लखवानी बाकी हती अने श्री. जिनविजयजी जर्मनी गया, एटले तेने प्रसिद्ध करवानुं काम अटकी पडयुं हतुं. जर्मनीथी आवीने तेमणे सत्याग्रहनी लडतमां झंपलाव्युं. एटले हाल ते संपादकनी प्रस्तावना विना गद्यसंदर्भ प्रसिद्ध करवामां आवे छे. आशा छे के गूजराती भाषाना प्रेमीओ तरफथी तेने घटित आवकार मळशे.

प्रकाशक

अनुक्रमणिका



प्राचीन गूजराती गद्य-संदर्भ

सम्यक्त्व तथा श्रावकना बार व्रत उपर कथाओ

(कर्ता—तरुणप्रभसूरि, संवत् १४११)

१. सम्यक्त्व उपर कथा.

समक्त्व गुणरहइं आविर्भावकु श्रीनरवर्म महाराज कथानकु लिखियइ[1]॥ ईही जि जंबू द्वीप[2] माहि भरत क्षेत्र माहि मगध नामि जनपदु छइ। तिहां विजयवती नामि नगरी, तिहां नरवर्मु नामि राजा, रतिसुंदरी नामि पट्ट महादेवी हूंती। हरिदत्तु नामि पुत्तु हूंतउ। मतिसागरादिक अनेकि[3] महामात्य हूंता। अनेरइ दिवसि राजेंद्र आगइ सभामाहि धर्मविचार विषइ आलापु नीपनउ[4]। तत्र एकि कहिउं[5] धर्म्मु दाक्षिण्यौदार्यादिकहं गुणहं[6] करी हुयइ। तथा परोपकार- 5
इतउ[7] लोक विरुद्ध त्यागइतउ पुणि धर्मु हुयइ। बीजइ कहिउं वेदोक्तु अग्नि होत्रादिकु धर्मु। त्रीजइ कहिउं कुल क्रमागतु धर्मु। चउथइ कहिउं धर्म्माधर्म्म प्रत्यक्ष प्रमाणि करी गगनारविंद जिम दीसइं[8] नहीं, इणि[9] कारणि नथी। इसी परि सभ्य धर्म-विवादु करता देखी[10]करी विवेकवंतु नरवर्मु राजा मनमाहि चींतवइ। दाक्षिण्यादिकहं गुणहं करी तां धर्मु न होइ। ति दाक्षिण्यादिक गुण पुरुषव्रतु। वेदोक्तु पुणि धर्मु नही। हिंसा दोप दूषितत्वइतउ। क्रमागतु 10
पुणि धर्मु नहीं। इसी परि कुणरहइं[11] धर्मु न हुयइ। नास्तिक वचनु जगज्जंतु सुख-दुखादि दर्शन भावइतउ घटइ नहीं। सर्व दोष रहितु शुद्ध कनक जिम किसउ धर्म्मु हुयइ। इसउं मनमाहि जेतलइ नरवर्मु राजा चींतवइ, तेतलइ पडिहारु राजारहइं वीनवइ—'देव! महाराज! तुम्हारउ[12] बालमित्तु मदनदत्तु चिरागतु द्वारदेसि वर्त्तइ।' राजादेसइतउ मदनदत्तु माहि मेल्हिउ[13]। राजेंद्रि[14] समालिंगन[15] सन्मान बहुमान-दान-पूर्वकु पूछिउ—'मित्र! एतलउ 15
कालु किहां[16] थाकउ, किसउं उपार्जिउं?' सु पुणि राजारहइं प्रणामु करी वीनवइ—'महाराज!

---

१ ख प्रतिमां घणा भागे छेवटना इकार उपर अनुस्वार आपेलु होय छे; तेवी ज रीते **माहि** ए शब्दना **हि** [illegible]पर पण अनुस्वार मुकेलुं होय छे. २ ख **द्वीपिं.** ३ ख **अनेक.** ४ पूर्णविरामवाळा वाक्यना अंते जे उ होय छे ते उपर ख प्रतमां हमेशां अनुस्वार मुकेलुं होय छे. ५ ख उ ६ आ शब्द ख प्रतमां नथी. ७ ख प्रतमां **तउ** नी पहेलानो **इ** बधे ठेकाणे पडतो मुकवामा आव्यो छे. ८ ख०इ. ९ ख **इसि.** १० ख **देषी.** ११ ख मां **कुणहइं रहइं** १२ ख **तम्हा.** १३ ख उं. १४ ख० द्र १५ ख० **सभा.** १६ ख **किहा.**

अनेकि २ देश अनेकि २ आश्चर्य दीठा। प्रभुतु धनु उपार्जिउ[1]। एउ नक्षत्र-श्रेणि-सहोदरु एकावली हारु महाराज मइ[2] लाधउ[3]।' राजा भणइ 'मित्र! एह हारनउ[4] लाभु मू आगइ आमूल-चूल कहि।' सु कहइ 'महाराज! तदा कालि हउ पुरुहूतउ[5] नीसरिउ प्रभूत देशांतर भमतउ[6] हूंतउ द्रुपदिकाटवी माहि गयउ। तृषाक्रांतु तेह[7] माहि ओरहउ परहउ घणउ भमिउ। 5 तिहां फिरतइ हूतइ गुणधर सूरि नामि आचार्यु भेटिउ। तेह महात्मा आगइ एकावली हार सारालंकार धारकु देवु एकु देवी सहितु, महात्मा तणा मुख हूतउं धर्म्मु जिनप्रणीतु सांभलतउ मइ दीठउ। हउ पुणि वादी करी तिहा बइठउ। [8]मूंरहइ पुणि धर्मु सांभलता तृस सर्वथा नाठी। आपणा बांधव जिम मू देखता हूता तेह देवरहइ मूं ऊपरि महांत प्रीति उल्हसी। तउ पाछइ तिणि देवि महात्मा पूछिउ—'भगवन्! मूरहइ एह ऊपरि किसा कारण लगी स्नेह तणउ 10 अतिशउ[9]।' महात्मा भणइ[10]—'एह भवतउ पूर्व भवि कौशांबी नगरी माहिं जयराजेंद्र तणा तुम्हे विजय वेजयत नामह करी प्रसिद्ध पुत्र हूता। तुम्हारी माता दैव जोगइतउ परलोकि गई। धात्री प्रतिपालीता हूंता तुम्हे यौवन प्राप्त हूया[11]। जयराजेंद्रु तुम्हरहइ यौवराज्य[12] पदु देणहारु जाणी करी उद्यान[13] वनि क्रीडा करिवा गया[14] हूंता मातानी सउकी विषु दिवारिउं। तदा कालि तिहा अशोकतरुतलि दिवाकर मुनि गरुडोपपाताध्ययन गुणतउ हूतउ। 15 तेहनइ प्रभावि तिहा गरुडेंद्रु[15] आविउ। महामुनि तेहरहइ सेवा परायणु हूयउ। गरुडेन्द्र तणा प्रभावइतउ तुम्हरहइ विषमु विषु प्रभविउ[16] नहीं। गरुड[17] राजु तेह मुनिरहइ प्रणमी करी *आगइ आवी वइठा। गरुडेंद्रि कहिउ 'जइ दिवाकरु मुनिवरु इहा न होय तइ तुम्हे मूया हउत। तिणि कारणि एउ महात्मा तुम्हरहइ जीवितव्यदाता माता पिता समानु। एह महात्मा तणी भली परि सेव करिजिउ।' इमउ[18] भणी करी गरुडेंद्रु आपणइ थानकि पहुतउ। 20 तुम्हे पुणि ज्ञात-तत्त्व तेह मुनि कन्हइ[19] सजमु ले करी दुष्कर तप नियम पर हूया।

---

१ ખ० उ   २ ખ० मइ   ३ ખ० उं.   ४ ખ० उं   ५ ખ० पुर.
६ ખ० भ्रम.   ७ ખ પ્રતમાં तेह एह અને जेह શબ્દના ह ઉપર હમેશા અનુસ્વાર આપેલું હોય છે   ८ ખ પ્રતમાં હમેશા मू હોય છે   ९ ખ० सउ.   १० ખ इं   ११ ખ० हुआ
१२ ખ० योवनिराज्य.   १३ ખમાં આ શબ્દ નથી.   १४ ખ गया   १५ ખ गुरु
१६ ખ प्रभाविउ   १७ ખ गुरुड   १८ ખ०उ   १९ ખ०इ.

* ખ પ્રતિમા प्रणमी करी એ શબ્દો પછી संतुष्टु हूंतउ गरुडोपपाताध्ययनु सांभलिवा लागउ। विपापहार प्रभावतउ विस्मितचित्तहूंता तुम्हे पुणि तेह मुनिरहइं प्रणमी करी आगइ આટલો ભાગ વધારે છે અને તે પછી क પ્રતિમા મળી આવતો आवी वइठा गरुडेन्द्रि कहिउ जइ दिवाकरु मुनिवरु ईहां न होयतइ तुम्हे—એટલો વાક્યસંદર્ભ ખંડિત છે.

तुम्ह माहि ज्येष्टु मरीकरी प्रथम देवलोकि विद्युत्प्रभाभिधानु देवु हूयउ । तउ लहुडउ विद्युत्सुंदरु नामि तिहांई जि देवु हूयउ । तिहा हूंतउ वडउ भाइ चवी करी विजयवती नगरी माहि मदनदत्तु नामि नरवर्म[1] राजेंद्रनउ मित्रु वाणियानउ पुत्रु हूयउ । सु पुणि इउ धन कारणि फिरतउ हूंतउ[2] हवडा[3] तइं दीठउ । तिणि कारणि पूर्वभवाभ्यास वसइतउ तूरहइं[4] एह विषइ स्नेहातिसउ ।' इसउं[5] सांभली करी तिणि देवि एउ एकावली हारु मूरहइं दीधउ । महात्मा 5
पूछिउ 'मूंरहइं[6] निद्रादिक अपलक्षण किसइ कारणि ?" महात्मा कहिउं 'तूंरहइं मरणु ढूंकडउं वर्त्तइ ।' तिणि पु[णि] भणिउं 'किहां मूरहइ उत्पत्ति, किसी परि बोधिलाभु '। महात्मा भणिउं 'तउं नरवर्म राजेंद्र तणउ पुत्रु हरिदत्तु नामि होइसि[7] । एउ[8] एकावली हारु देखि प्रतिबूझिसि ।' इसी परि छिन्न संशय हूंतउ सूरि नमी करी स्वर्गि गयउ । तउ मइं गुरु पूछिउं[9] 'भगवन् ! एउ हारु किसउ ।' सूरि भणिउ 'पूर्विहि नवोत्पन्नु चमरेंद्रु इंद्र स्थानि 10
गयउ । इंद्रि हाकिउ नाठउ । अधोमुख नासता हूंता एउ हारु गला हूंतउ असंख्यात इ द्वीपि पडिउ । इणि देवि लाधउ ।' इसउं साभली गुरु वादी पंचवीस वरिस सीम देसांतरि परिभ्रमी धनु प्रभूतु उपार्जी करी हवडां हउं[10] स्वामिन् ! आविउ। स्वामिन् ! सु देवु तुम्हारु पुत्रु हूयउ कि[11] नही ? ।' राजेंद्रि कहिउं 'मित्र ! हरिदत्तरहइं हारु दिखालउ ।' हरिदत्तु तेडी हारु दिखालिउ । हारु दर्शनइतउ तेहरहइं जाति समरणु[12] ऊपनउं । राजेंद्रि पूछिइ हूंतइ 15
हरिदत्ति कुमारि तिमहिं जि पूर्वभव संबंधु कहिउ । जिम पूर्विहिं मदनदत्ति[13] कहिउ । राजा चित्तमाहि चींतवइ[14] जु[15] आगइ धर्म्म विषइ विवादु हूयउ सु विवादु एह पुत्रनइ चरित्रि करी उच्छेदिउ । एह विश्वमाहि धर्म्मु जिनप्रणीतु जु छइ भव्यरहइं भवभयछेदकु मोक्षसुखदायकु । एतलइ प्रस्तावि उद्यानपालकि राजेंद्रु वीनविउ—' देव ! आजु पुष्पावतंसकि उद्यानि बहु शिष्य परिवृतु चतुर्ज्ञानी सुरासुरनरेश्वरनमस्कृतु श्री गुणंधरु[16] नामि सुगुरु समोसरिउ 20
छइ ।' जिम मेघ तणउं गर्जितु सांभली करी मयूरु नाचइ तिम तेहनउं वचनु सांभली करी राउ हरषिउ । हस्तिस्कंध समारूढु पुत्रमित्रादि परिवार[17] परिवृतु महांत ऋद्धि—समुदय करी गुरुपाद वांदिवा राउ पुहतउ[18] । विधिवत् वांदी करी यथास्थानि बइठउ। अमृतरस सारणि—समान धर्म्म देशना सांभलइ । यथा " भो भव्या ! सर्व धर्म्म मूल[19] शिवपुरद्वारु सम्यक्त्वु वर्त्तइ । सु सम्यक्त्वु देव-गुरु-धर्म्म-विषइ देव गुरु धर्म्म-बुद्धि स्वरूपु कहियइ । अदेव-अगुरु- 25

---

१ ખ नरवर्म्मु. २ ખ મા આ શબ્દ નથી. ३ ખ हिवडां. ४ ખ૦ तूरइ. ५ ખ૦उ. ६ ખ પ્રતમાં मू અને तू ઉપર અનુસ્વાર નથી હોતો. ७ ખ होइसिइ. ८ ખ મા આ શબ્દ નથી. ९ ખ૦उ. १० ખ મા हउं हवडां એમ છે. ११ ખ મા कि નથી. १२ ખ स्मरणु. १३ ખ મા मनदत्ति. १४ ખ चीत० १५ ખ મા जु ના ઠેકાણે इकु પાઠ છે. १६ ખ गुणधरु. १७ ખ वारि. १८ ખ पंहुतउ. १९ ખ मूलु.

अधर्म्म-विषइ देवे-गुरु-धर्म्म-बुद्धिस्वरूपु सम्यक्त्व-विपरीतु मिथ्यात्वु कहियइ। तत्र जित-राग-द्वेष-मोहु देवु जिनु। महाव्रत धरु गुरु। दयामूलु धर्म्म इति। इणि सम्यक्त्वि लाधइ नरकगति तिर्यंचगति गमनु न हुयइं। मनुष्य देव मोक्ष सुख जीवरहइ स्वाधीन हुयइ। तथा च भणितं—

5 सम्मत्तंमि उलद्धे ढइयाई नरय-तिरिय-दाराई।
दिव्वाणि माणुसाणि य मुक्ख-सुहाई सहीणाई ॥

इसउं साभली करी राजा पुत्र सहितु सम्यक्त्व-पूर्वु गृहि-धर्म्मु ले करी संतुष्ट हूंतउ आपणइ घरि गयउ। अनेरइ दिवसि सुधर्म्मा सभामाहि बइठउ सौधर्मेन्द्र नरवर्म्म राजेंद्र तणउं सम्मक्त्तु देवहींरहइ अचालनीउ कहइ। तउ पाछइ सुवेगु देवु इंद्र-वचन विषइ संदेहु धरतउ 10 हूंतउ वैक्रिय[1] ऋद्धि विस्तार सहितु परीक्षा निमित्तु आविउ। तिणि देवि दिव्य शक्ति बलि मायामउ साधु-समूहु अकार्य करतउ राजेंद्ररहइ तिम दिखालिउ जिम जउ अनेरउ देखइतउ धर्म्मि हूंतउ निश्चइसउं पडवडइ। नरवर्म्मु राजेंद्र पुणि तिम साधुवृंदु देखी मनमाहि चीतवइ—कषादिकहं करी हेम जिम शुद्धु जिनधर्म्मु एकु छइं किंतु ए पुण मुनि गुरु-कर्म-भार भावि करी विनडिया हूंता जिनधर्मरहइ लाघवु करइ। सु लाघवु जि मतिमत हूयइ तेहे शक्ति 15 हूंती अवश्यु राखिवउ। इसउं चीतवी करी समभविहिं जि करी अकार्यहूंता[2] मुनि निवारिया। देवु सम्यक्त्व विषइ निश्चलु जाणी करी नरवर्म्म रायरहइ प्रणमी करी साक्षात्कारि होई कहइ 'महाराज! धन्यु तउ[3] जेह तूरहइ सभामाहि बइठउ इद्र महाराजु सम्यक्त्व तणी स्तुति करइ।' इसउं भणी आण्णउ सउलु आपी करी आपणइ थानकि गयउ। नरवर्म्मु महाराजु सम्यक्त्व-मूलु गृहि-धर्म्मु चिरकालु प्रतिपाली करी पुत्र-मित्रादिक सहितु दीक्षा ले करी सुगति 20 पहुतउ।

नरवर्म्मनरेंद्रस्य दृष्ट्वा सम्यक्त्वजं फलम्।
स्वर्गापवर्गदं भव्याः सम्यक्त्वे सन्तु निश्चलाः ॥

---

१ ५ विक्रिय. २ ५ हुता. ३ ५ तू.

२. सम्यक्त्वविषयक शंका आकांक्षानां उदाहरण.

१. शंका विषइ उदाहरणु यथा—नगरि एकि सेठि एक[1] तणा बि पुत्र लेसाल पढइं। [2]तीहंरहइं आरोग्य बुद्धि वृद्धि निमित्तु माता सप्रभाव ओसही पेया एकांत स्थानिथिकी करावइ। तीहंमाहि एकरहइं मक्षिकादि शंकालगी मनि सूग उपजइ। मानसदुक्खपूर्वक सरीर दुक्ख, इणि कारणि तेहरहइं वल्गुली रोगु ऊपनउ; मूयउ। इहलोक सुखहूंतउ चूकउ। 5 बीजउ पुत्रु मनमाहि चीतवइ 'माता अहितु कदाकालिहिं न चीतवइ, तिणि कारणि निःसंदेहु थिकउ[3] पेया पानकु करतउ आरोग्य बुद्धि वृद्धि सहितु चिरंजीवी हूयउ। इहलोक[4] सुख-भागी हूयउ। इसी परि सम्यक्त्व विषइ पुणि जु जीवु संदेहु परु हुयइ सु सासय-सुहु न ल-हइं। निसंदेहु[5] हूंतउ सासय-सुहु लेहइ।

२. आकांक्षा विषइ उदाहरणु—राजा अनइ महामात्यु बे जणा अश्वापहारइतउ अटवी 10 माहिगया। भूखिया हूया। वणफल खावां। नगरि आविया। राजा सूपकार तेडी करी कहइ 'जि के भक्ष्य-भेद संभवइं ति सगलाई करउ।' सूपकारे कीधा। राजा आगइ आणिया। राजेंद्रि चीतविउं—मधुर मोदक पूपकादिक भक्ष्यभेद पाछेई भाविसिइं; इणि कारणि पहिलउं वाकुल[6] ढोकलादिक भक्ष्यभेद भषी करी पाछइ मधुराहार-भक्षणु कीधउं। किसइ कारणि, जिम सवहीं आहारतणा स्वाद लिउं। महतइ पुणि जीमी करी वमन-विरेचनादिकु कीधउं। राजेंद्रि 15 पुणि सर्वाहार-भोग-लुब्धि[7] हूंतइ वमन-विरेचनादिकु न कीधउं। तिणि आहारि दोषि राउ मूयउ। इहलोक सुख चूकउ। महामात्यु जीविउ; इहलोक सुख-भागी हूयउ। तिम जीव[8] पुणि अन्यान्य धर्म्म तत्त्वबुद्धि करी वांछतउ मोक्ष-सुख हूंतउ चूकइ; अवांछतु[9] मुक्तिसुख-भागी हुयइ॥

---

३. धर्मफल संदेह उपर कथा. 20

धर्म्मफल-संदेह विषइ वणिय तस्कर बिहुं[10] तणउं उदाहरणु। तथाहि—वसंतपुरनामि नगरु। जिणदासु नामि श्रावकु। तेहतणउ महेसरदत्तु नामि मित्रु। जिणदासु आगास—[11] गामिणी विद्यातणइ बलि नंदीश्वरि द्वीपि[12] शाश्वत चैत्य वांदिवा गयउ। आविउ हूंतउ महेस-रदत्ति भणिउ 'मित्र! ताहरइ देहि अपूर्वु सुगंधु[13] गंधाइ। तिणि नंदीश्वर-यात्रा-वृत्तांतु कहिउ। तउ महेसरदत्तु भणइ 'मूरहइं पुणि आकाश-गामिनी विद्या आपि।' तउ अतिनिर्बंधि कीधइ. 25

---

१ ખ માં આ શબ્દ નથી. २ ખ तीहं. ३ ખ थकउ. ४ ખ लोकि. ५ ખ૦ देह. ६ ખ वाकुला. ७ ખ लब्धि. ८ ખ जीवु. ९ ખ૦ तउ. १० ખ बिहु. ११ ખ आकास. १२ ખ दीपि. १३ ખમાં सु નથી.

हूंतइ जिणदासि[1] महेसरदत्तरहइ विद्या[2] दीधी। कृष्ण चतुर्दशी रात्रि समइ स्मशानि जाई हेठइ अग्निकुंड ज्वलइ ऊपरि वृक्ष तणि शाखा छीकउ[3] बांधी करी आपणपइं तिहां चडी करी विद्या जपइ। जापि संपूर्णि हूंतइ एक-एक तणी खड्गघाइ करी छेदइ। जेती वार चउथी तणी छेदिवा वार हुयइ, तेती वार मनमाहि संदेहु उपजइ-विद्यासिद्धि होसिइ[4] किंवा नही
5 होइ, पुण मूरहइ मरणु निश्चयि[5] होइसिइ। तउ वली वली छीकउं बांधइ; वली वली संदेहु करइ। एतलइ प्रस्तावि चोरु एकु चोरी करी तिहां आविउ। केडइ वाहर पुण आवी। चोरु स्मशान वन गहनमाहि पइठउ। वाहर बाहिरि वेढु करी रही। चोरि महेसरदत्तु चडतउ उतरतउ देखी करी बोलाविउ 'तउं ज विद्या साधइ छइ स मूरहइ आपि; एउ माहरउ धनु तउ[6] लइ'। तिणि चीतविउं-भलउ मूरहइ एतला फलतणी प्राप्ति छइं, इसउ भणी करी विद्या
10 चोररहइ आपी। चोरतणउं धनु आपणपइं लीधउ। चोरि निःसंदेहि थिकइ एकवार रूडी परि जापु करी खड्गनइ एक घाइ करी चियारइ तणी छेदी करी[7] आकाशि ऊपरि मिउ[8]। प्रभाति चोरि पगि लागी वाहर वनमाहि आवी। महेसरुदत्तु वस्तु[9] संयुक्तु चोरु[10] करी बांधउ। मारिवा लीजतउ देखी करी चोरि आकाश-गाति विद्यागुरु भणी नगररहइ वीहावी करी मेल्हाविउ। इसी परि जु धर्म्म[11] विषइ संशयु[12] करइ सु महेस[र]दत्तु[13] जिम अपाइ[14]
15 पडइ। जु सशयु न करइ सु चोर जिम सकल अनर्थहूतउ छूटइ, मनो वाछितु लहइ॥

[साधु निंदा विषयइ दुर्गंधा[15] उदाहरणु। मिथ्या दृष्टि प्रशसा परिहार विषइ सकटाल[16] महामात्यु उदाहरणु] मिथ्यादृष्टि सस्तवु[17] मिथ्यादृष्टिसउं मैत्री कहियइ। तेह विषइ जिनदास उदाहरणु यथा-उजीणी[18] नामि नगरी। जिणदासु नामि श्रावकु। तिहां एकादशमी प्रतिमा वहतउ हूतउ मुनिसरसउ विहार[19] करतउ सार्थभ्रष्टु हूंतउ बौद्धहंतणइ साथि मिलिउ।
20 मार्गि मूयउ। आपणउ आचारु करी बौद्ध रक्तवस्त्र वेष्टितु करी तिहां मेल्हिउ। सु नमस्कार-समरण परायणु मरी करी देवु हूयउ। अवधिज्ञानि आत्म-देहु देखी बौद्धभक्त हूयउ। इणि कारणि मिथ्यादृष्टि परिचउ न कीजइ। बौद्धहरहइं रत्नस्वर्णालंकारालंकृति हाथि करी अदृष्टु-हूंतउ भोजनु दियइ। लोकमध्यभागि इसउ अतिसउ बौद्धहंरहइ हूयउ-अहो धन्यु बौद्ध शासनु। श्रावकु लोकु लोके अवहेलियइ। अनेरइ दिवसि श्री धर्मघोषसूरि आचार्य मिश्र तिहां
25 आविया। श्रावके वांदी करी तिहांनउ वृत्तांतु कहिउ। आचार्ये उपयोगि दीधइ सगलु वृत्तांतु

१ ખ जिणिदासि २ ખભા विद्या શબ્દ નથી. ३ ખ छीकउ. ४ ખ होइसिइ.
५ ખ निश्चइ ६ ખ तूं ७ ખભા करी શબ્દ નથી ८ ખભા ऊपमिउ ९ ખભા चोर वस्तु. १० ખ चोर. ११ ખ धर्मफल १२ ખ संशउ. १३ ખ दत्त. १४ ખ आपइ.
१५ ખભા दुर्गछा. १६ ખ सकडाल. १७ ખ संस्तविपु १८ ખ उज्जेणि. १९ ખ विहारं.

जाणी करी एकु साधु-संघाडउ मोकलिउ। भणिउं वौद्र देवंकन्हा भिक्षा दिवारिसिइं। पुणि तुम्हे म लेजिउ[1]। हाथु साही इसउं भणिजिउ "गुञ्झगा वुञ्झ वुञ्झ मा मुञ्झ।" इसउं तेहे[2] कीधउं। देवरहइं शुभ कर्मोदय लगी प्रतिबोधु ऊपनउ। भवांतरु जाणिउ। गुरुपाद-मूलि आवी मिथ्यादुःकृतु दीधउं। वली साधुरहइं भक्ति करवा लागउ ॥

४. प्रथम अहिंसाव्रत उपर कथा. 5

अथ[3] प्रथम व्रत विषइ चंद्र सूर राजपुत्र कथा लिखियइ।

हिंसा निरंतरं दुःखमहिंसा तु परमं सुखम्।
जंतोर्ददात्यहो सूरचंद्रयोरिव तद्यथा– ॥

जय[4]पुरु नामि पुरु। शत्रुंजय नामि राजा। सूर चंद्र नामहं करी बि पुत्र[5]। ज्येष्ठानुरागि करी राजेंद्रि ज्येष्ठु युवराजा कीधउ। वृत्ति करी। चंद्रु पत्तिमात्राई करी गणिउ नहीं। 10 तउ अपमान वशइतउ[6] चंद्रि देशांतरु लीधउ। रत्नपत्तनु नामि नगरु तेहनइ उद्यानवनि शीतलि तरुतलि विश्रामि[7] निमित्तु बइठइं हूंतइं श्रुति सुधा-सारणि समानु स्वरु सांभली करी महाधनुर्धर शर जिम स्वरानुसारि जायतइ हूंतइ वनमाहि सुदर्शनु नामि मुनिवरु दीठउ। प्रणमी करी धर्म-देशना सांभली करी नियमु लीधउ। 'मइ कृतापधराइ जीव राजेंद्रादेशिहि सूर्य वृत्ति मुकी करी बीजी परि मारिवा नहीं।' तिणिहिं जि नगरि जयसेनु राजा ओलगिउ। शौच 15 शौर्य दाक्ष्य दाक्षिण्यौचित्यादिकहं गुणहं करी राजेंद्ररहइं अतिवल्लभु हूयउ। अनेरइ दिनि जयसेनि राजेंद्रि एकांति[8] वइसाली चंद्रु भणिउ 'अनीति-मदिरा-कुंभु कुंभु नामि चोरु एकु उत्कट्ठु उठिउ छइ। अहो वीर-कोटीर! सु तू पाखइ अनेरइं[9] किणिहिं[10] मरइ नही। तिणि कारणि तूंउ[11] सु माहरा हियानउं शल्यु ऊधरि। यतः—

स्त्रीश्चगाश्च हरत्येष क्रूरो हन्ति यतीनपि। 20
चमूरुद्धो यमस्यापि दुर्गमं दुर्गमङ्गति ॥

तिणि कारिणि प्रकटवृत्ति सु मारी न सकियइं[12] माहरइ कथनि गुप्तवृत्ति जाई करी सूताहूंता तेहरइं मारि। इसइ कथनि जयसेनि राजेंद्रि कहियउ हूंतइ चंद्रु भणइ 'महाराज! संग्राम पाखइ सूरहइं जीव मारिवा नियमु छइ। सग्रामिहि नासता निरायुध[13] मारिवानउ

---

१ ખ મા मिलिजिउ. २ ખ तेहें ३ ખ अत्र. ४ ખ जइय. ५ ખ માં प्रसिद्ध वि पुत्र. ६ ખ મા नश्यतउ. ७ ખ विश्राम. ८ ખ एकांत. ९ ખ अनेरइ. १० ખ મા નથી. ११ ખ तउं. १२ ખ सिकियइ. १३ ખમાં છેવટનો ધ લખતા છુટીગયો લાગે છે.

निषेधु छइ। तउ पाछइ तेहनउ तिसउ निश्चउ जाणी करी राउ जयसेनु घणेरउं चित्तमाहि रंजिउ। अंगरक्षकहंमाहि महामात्यहमाहि सु मूलिगउ कीधउ। अनेरइ दिवसि सु कुंभु चोरु देस माहि पसरिउ। तउ पाछइ राजादेसइतउ[1] सार सुभट परिवार सहितु चंद्रु तेह पूठि धायउ। आघइ जाई करी दुर्गनउ मार्गु रूधिउ। सर्वदिसि मिलित सुभटहं वन माहि
5 गज जिम वेढिउ। अशरण-भावहूतउ तिणि चंद्ररहइं आवी करी प्रणामु कीधउ। मुखि तृणउ पशु-भाव-संसूचकु लीधउं। चंद्रु उत्तम प्रकृतिता करी चित्ति चीतवइ–पादावनामांतु कोपु संतहंरहइं। तिणि कारणि उपशांतु हूंतउ चंद्रु तेह ऊपरि तूठउ। ऊठाडी करी भाई जिम साईं[2] लीधउ। आपण पा सरसउ रत्नपत्तनि आणिउ। देस-दापन पसाउ करावी राजेंद्र कन्हा मेल्हाविउ। जयसेनु राजा पुत्रहीं कन्हा राज्यलक्ष्मींही[3]कन्हा चद्र अधिकु करी मानइ।
10 चंद्रनउ वडउ भाई सूरु युवराज्य लक्ष्मी लाभिहि अतृप्तु हूतउ राज्यलक्ष्मी लेवा कारणि शत्रुंजय राजेंद्रु आपणा बापरहइं मारण मनु हूयउ। अनेरइ दिनि सूतउ हूंतउ[4] विश्वस्तु शत्रुंजय राजेंद्रु तिणि मारिउ। मारीजायतउ देवीं दीठउ। 'घातकु जाइ जाइ' इसी परि वाहविउ[5]। आरक्षक द्वारपालकादिकहं धायतां हूंतां कठागतु प्राणु राजा कहइ 'कउण तणउ एउ, इसी परि जाणिवउ, मारिवउ नहीं।' इसउ राजादेसु सांभली करी तेहे सुतु
15 जाणी करी देसहूतउ निर्धाटिउ। रत्नपत्तनहूतउ चंद्रु आणावी करी राज्यि बइसालिउ। शत्रुंजय राजा सूरपुत्र विषइ समत्सरु थिकउ मरी करी वनमाहि चित्रकु उपनउ। पितृवध–कलंक–पातकी सूरु पुणि देसांतर फिरतउ हूतउ जिणि वनि बाप–जीवु[6] चित्रकु छइ तिहां आविउ। तिणि चित्रइ[7] पूर्वभव वैरइतउ मारिउ तिहाइ जि मरी करी भील्लु हूयउ। आहेडउ करतउ हूंतउ तिणिहिं जि चित्रकि बीजी वार पुणि मारिउ। सु चीत्रकु तेहतणा बांधवह भिल्लह
20 मारिउ। तिहाई जि पर्वतवन माहि बे जीव शूकर हूया। त्रिहु वरसह तणां हूंता आपणपा माहि जूझता[8] पुलिंदे मारिया। तउ पाछइं अनेरइ किणिहिं वनि मृग[9] ऊपना। परस्पर समत्सर हूंता भीले मारिया। किणिहिं गज-जूथि गजपोत हूया। झु झु करता यूथभ्रष्ट हूता भीले बाधी करी चंद्र राजेंद्र तणइ राज्यि[10]आणी वेचिया। तिहांइ युद्ध[11] करता हूता पञ्ज–तारे महाकष्टि राखियइ। एक[12] दिवसि तिहां केवलालोकु भास्करु सुदर्शनु[13] मुनि
25 आविउ। भक्तिभार भासुर सांतःपुरु चतुरग सेना परिवृतु चंद्रु नरेंद्रु आवी करी प्रणतु हूयउ।

---

१ ખમા राजा आदेशतउ. २ ખ साई. ३ ખમા ही નથી ४ ખમા આ શબ્દ નથી. ५ ખ वाहाठिउ. ६ ખ वापनउ जीवु ७ ખ अनइ ८ ખ झूझतां ९ ખમા मृग શબ્દ નથી १० ખ रायि. ११ ખ जुद्ध. १२ ખ एकि. १३ ખ सुदर्शन.

देशनावसानि तीहं विहुं वारणहं[1] तणउं दारुणु वैर कारणु पूछइ। केवली तीहंनउ[2] पूर्वभव वृत्तांतु कहइ। सु तीहंनउं चरित्रु सांभली करी चंद्रु राजेंद्रु अति वैराग्य संवेग हूंतउ पुत्रु राज्यि निवेसी करी दीक्षा प्राप्तु हूयउ। सुदुस्तपु तपुकरी चंद्रु देवलोकि गयउ। ति गजराज वर्द्धमान. विरोध बुद्धि हूंता मरी करी पहिलइ नरकि गया। तिहां हूंता उद्‌वृत्ती करी पापजो- निमाहि अनंतु भवु भमिया। चंद्रु जीवु देवलोक हूंतउ चवी करी शुद्धु मनुष्यभवु लही करी 5 दिक्षा लेकरि केवलज्ञान लाभ[3] क्रमि करी मोक्षि पहुतउ॥

ये चंद्रसूरनरनायकयोरहिंसाहिंसाफले शिवभवस्थितिहेतुभूते।
श्रुत्वा त्यजंति समजंतु वधं दयार्द्रां वृत्तिं भजंति लघु ते सुगतिं लभंते॥ १॥

॥ प्रथमाणु व्रत विषइ सूर चंद्र कथा॥

५. द्वितीय व्रत उपर कथा. 10

अत्र मृषावाद परिहार विषइ हंसराजेंद्र कथा लिखियइ।

अणुव्रतं द्वितीयं तु यद्वाच्यं क्वापि नानृतम्।
भूकन्यागोधनन्याससाक्ष्येषु च विशेषतः॥
जंतूनामहितं यत्तन्न वाच्यं सत्यमप्यहो।
सुधीभिर्धी प्रपंचेन वोधनीयोऽत्र पृच्छकः॥ 15
इदृक् सत्यगिरां वक्ता यथा राजपुरीपतिः।
वैभवं विभरामास हंसः संश्रूयतां तथा॥

राजपुरी नामि पुरी। हंसु नामि राजा। सम्यक्त्वमूल श्रावक धर्म्मधुरा धौरेयता धरतउ। अनेरइ दिवसि मास घस्र[4] लंघ्यमार्गि रत्नश्रृंग गिरि पूर्वज कारिति श्री ऋषभदेव देवगृहि तीर्थयात्रा करिवा सकल लोक सहितु सत्यवचन महितु गर्व रहितु हूंतउ चालिउ। अर्धमार्गि 20 संधि गयइ हूंतइ पाछा हूंतउ चरु एकु आविउ। राजेंद्ररहइं वीनवइ–'महाराज! तुम्ह चालिया [5]पाछइ दसमइ दिवसि अर्जनु[6] नामि सीमालु पुरी लेवा आविउ। तुम्हे जिके रक्षपाल मेल्हिया हूंता ति सर्वे तिणि जीता, राजपुरी आपणी करी वइठउ। भयभीतु लोकु वेसासी करी तुम्हारउ सिंहासनि उपविष्टु वर्त्तइ। अनेरानइ[7] घरि नाठउ छइ। सुमित्रु नामि मंत्री, तिणि हउं तुम्ह कन्हइ मोकलिउ। इणि कारणि जु कांई[8] युक्तु हुयइ सु कीजउ।' 25

---

१ कमां वारणहं मांनो ण अक्षर लखता पडी गयो छे   २ खमां आ शब्दने ठेकाणे सकलु तेहंनउ आम पाठ छे.   ३ खमां भाल.   ४ क प्रतमां घस्र शब्द उपर दिन आवुं टिप्पण करेलुं छे.   ५ ख चलिया.   ६ ख अर्जुन.   ७ ख अनेरांइ.   ८ ख काइ जुक्तु.

तदाकालि समीपगत[1] जि छइ सुभट तेहे कहिउं 'महाराज! हवडां पाछा वलियइ; अम्हं हूंता कउणु[2] ताहरइ पुरि विस्फुरइ।' तींह आगइ राजा कहइ।

संपदो विपदोपि स्युः पूर्वकर्म्मवशाद्भृशम्।
मूढा मुदं विषादं वा तत्संपत्तिषु तन्वते॥

5 पुण्य प्राप्ति निबधनु यात्रा करणु मेल्ही करी पुण्यलभ्य राज्यतणइ कारणि पाछउ वलनु युक्तउं नहीं। तथा सर्वनासिहिं यात्रा अकरी हउं वलउ नही। यदाहुः—

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः
प्रारभ्य विघ्न चकिता विरमंति मध्याः।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः
10 प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजंति॥

इसउ[3] भणी करी हसु राजा आघउ चालिउ। परिवारु क्रमिक्रमि सगलु पाछउ वलिउ। एकु छत्रधरु आपणपापासि देखी करी वस्त्रालकार तुरगमादिवस्तु समस्तु दे करी पाछउ मोकलिउ। जउ एतलउ लोकु आवत तउ लोकु पुणि पुण्यविभागु लियत। लोकु पाछउ गयउ तउ हव मू एकलाइ जि रहइं पुण्यु होइसिइ। इसउ मनमाहि हर्षितु थिकउ चींतवतउ 15 हूतउ तीर्थाभिमुखु एकलउ पादचारिहिं जि चालिउ। कही एक अटवी माहि महीपतिरहइ देखताई जि हूंता मृगु एकु पराहूतउ नाठउ आवी करी लतावितान माहि पइठउ। तेहनइ पगि लागु[4] भीलु एकु धनुष्कि चडाविइ सरि साधिइ आविउ। राजेंद्रकन्हा पूछइ 'महापुरुष! इणि पत्रच्छन्नि[5] वनि मृगतणउ पगु दीसइ नहीं। सु पुणि मृगु माहरउ भक्ष्यु किहां गयउ?' तउ पाछइ राजा चित्ति चीतवइ 'साचइ कहिइ मृगु[6] विनासु हुयइ कूडइ काहियइ द्वितीय 20 व्रतभंगु हुयइ। तिणि कारणि बुद्धि करी एउ विप्रतारिवउ।' इसउ चीतवी करी राजा भणइ 'अहो माहरउ स्वरूपु पूछइ। मार्गभ्रष्टु हउ ईहां आविउ।' भीलु भणइ 'मूढ! नाठउ मृगु किहा गयउ?' राजा भणइ 'हउ सुहसु नामि पुरुषु।' आहेडी गाढइ स्वरि कहइ 'मृगनउ मार्गु मूर्ख मूरहइ कहि।' राजा भणइ 'राजपुरी माहरउ थानकु।' आहेडी कोपि चडिउ[7] भणइ 'जु तूरहइ बधिरताव्याधि गाढउ छइ, सु गाढेरउ होइजिउ।' इसउ भणी करी भीलु 25 अनेरइ मार्गि[8] गयउ। मृगरहइ मतिप्रयोगि छोडवी करी आपणउं व्रतु अलीक वचन परिहार लक्षणु अखडु प्रति पाल्इ। तिहां हूंतउ आघउ चालिउ। सामुहा आवता[9] मुनिरहइ वादी करी मार्गु मेल्ही करी आघउ चालिउ। यमकिंकर सरीषा भील बि कोपारुण लोचन धुणहि चडा-

१ B सीमगत २ B कवण. ३ इसिउ. ४ B लागउ ५ B छन्न.
६ B मृग ७ B चडी. ८ B थानकि ९ B आवतां

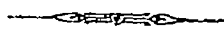
विइ सरि सांधिइ[1] आवी करी राजेंद्र आगइ कहइं ' चिरकालइतउ चौर्य निमित्तु सूरु नामि पल्लीपति नीसरिउ। दूरइतउ एह वनमाहि मुंड पाखंडिक एकरहइं देखी करी अशुकुनु[2] एउ, इणि कारणि तेह माराविवा कारणि अम्हे मोकलिया। सु पाखंडिकु जइ तइं दीठउ तउ अम्ह आगइ कहि।' तउ राउ मनि चीतवइ ' जउ हउं मौनु करी रहिसु। अथवा व्याज वचन भणिसु तउ भील सरल[3]मार्गि जायता हूंता मुनिरहइं विनास[4]हेतु होइसिइं। 5 तिणि कारणि सांप्रतु असत्यु जइ कहियइ, तउ सत्य कन्हा अधिक पुण्यकारकु हुयइ।' इति शब्दच्छलइतउ सत्यु असत्यु राजा कहइ ' जिणि मार्गि तुम्हे जाउ छउ तेह मार्गहूंतउ जु वामउ मार्गु तिणि मार्गि महात्मा जाइ छइ।' विश्वजंतुजात रक्षिणि [5]करी दक्षिणु[6] मुनि तणउ दक्षिणु मार्गु मेल्ही करी ति भील वामइ सकल जीव विघातभावि करी वामइ मार्गि जिम-पूर्विहिं ति भीळ जायता हूंता तिमहिं जि गया। मुनि कुशळि क्षेमि पहुतउ। ति भील बिहुं प्रकार- 10 हंकरी अमार्गि गया। राजा वचन सुधासेक समुल्लसित कीर्ति कल्पळता वितानु हूंतउ आघउ चालिउ। संध्यासमइ महाद्रुम एक अधो भागि वासइ रहिउ। "संघि समुद्रि धनवंति चउथइ दिवसि पडिसियां। धन सलिल माहि विलसिया। दारिद्रिय धूळि ऊतारिसियां।" इसी वात करता वनांतरित[7] चोर राजेंद्रि तिहां जाणिया[8]। "किसी परि ए चोर संघविघात कारक नही हुयइं।" जेतलइ मनमाहि राजेंद्रु इसी परि चीतवइ तेतलइ दीपिका दीपिताशावकाश उदायुध 15 महायोध तिहां अविया। राजेंद्र आगइ भणइं 'तउं कउणु? के एकि[9] चोर संघविघात कारक हेरकहं अम्ह आगइ ईहां कहिया छइं। जइ तउं जाणइ तउ कहि। जिम ति[10]चोर मारी करी संघ रक्षा करी यशु[11] अनइ पुण्यु बि वस्तु उपार्जा[12]। जिणि कारणि श्रीपुर नगर नायकि श्री गाधि नामकि जिनशासन तीहं चोरहं मारिवा निमित्तु अम्हे मोकिलिया छां।' राजा पुनरपि चित्ति चींतवइ "साचइ भणिइ चोरघात पातकु लागइ। कूडइ भणिइ संघलुंटन दूषणु लागइ।" इसउं चीतवी करी 20 राउ भणइ 'तुम्हे संघि जायउ[13]। तिहां गया हूंतां तुम्हरहइं संघरक्षा पुण्यु अनइ यशु बे बोल होसिइं।' ति पुरुष राजानइ वचनि करी रंजिया संघमाहि गया। लतावितान हूंता चोर नीसरिया राजेंद्रने पगे आवी करी[14] पडिया। इसउं वीनवइं 'अहो महापुरुष! तइं अम्हे ईहां छता जाणिया पुण अम्हारी दया करी तइं न कहियाइ। तिणि कारणि तउं अम्हरहइं जीवितव्यदाता परमोपकारी पिता।' इसउं भणी प्रणमी करी वली गया। प्रभाति राजा आघउ चालिउ केतली 25 फ़ल गया हूंता ऊतावला असवार के एकि राय रहिइं मिलिया। राय आगइ कहइं 'जिणि

१ ખ साधिइं. २ ખ अशकुनु. ३ ખ सरलइ. ४ ખ विनाश. ५ ખ रक्षणि. ६ ખ दक्षिण ७ ખ० तरिता. ८ ખ जाणियां. ९ ખ कइएकि. १० ખ तिम. ११ ખ यासु. १२ ખ उपार्जी. १३ ખ जाउ. १४ ખમા આ શબ્દ નથી.

अम्हारउ ठाकुरु दंडिउ सु हंसु ईहा किहांई[१] दीठउ। जउ दीठउ तउ कहि जिम सु मारी-
करी आपणा ठाकुर तणउ वैरु सोधउ।' इसउं सांभली करी राजा मन माहि चीतवइ "आपणा
जीवितव्य तणइ कारणि कउणु विचक्षणु कूडउ बोल्इ" इसउं चीतवी राउ भणइ 'हउं सु
हंसु राजा।' आयुध लेकरी आगइ ऊभउ हूयउ। तउ एक गमइ अनेकि अश्वाधिरूढ प्रौढ सुभट[२],
5 बीजइ गमइ एकु हंसु राजा। तउ पाछइ धर्म्म प्रभावइतउ युद्ध करतउ राजा घणेई असवारे
पाछउ करी न सकिउ। किंतु पच परमेष्ठि महामंत्र समरण परायणु तेऊ जु एकु सर्वे निर्जिणी
करी सग्राम भूमि[३] पीठि रहिउ "सत्यवादिन्! जय जयेति" वाद पूर्वकु देव दुदुभिनाद करण
समकालु पचवर्ण कुसुमनी वृष्टि राजेंद्रनइ मस्तकि करतउ तेह वनतणउ अध्यक्षु त्र्यक्षु नामि
यक्षु प्रत्यक्षु आगिल्इ गमइ हूयउ[४]। ताहरइ सत्यवादि करी प्रसन्न चित्तु हउ त्र्यक्षाख्यु[५]
10 यक्षु ताहरा वइरी सर्वे निर्जिणी करी तू आगइ इसउं कहउ—रत्न श्रृगाभिधानि गिरि जिणि दिणि
यात्रा हुयइ, आजु सु दिवसु, तिणि कारणि इणि विमानि माहरइ चडि; जिम हवडाई जि तिहा
जाइयइ[६]। तउ राउ विमानि चडिउ। आपणपउ दिव्यालकार श्रृगार धारकु देखइ। आगिल्इ
गमइ दिव्य संगीतकु स्वकीय गुणतणइ गानि करी मनोहरु साभल्इ। गुह्य कनइ अर्द्धासनि
समासीनु हूंतउ हंसु देवगृहि आविउ। दिव्य कुसुम गधसार घनसार कस्तूरिकाऽगुरु वारहं
15 करी जिन बिंबहं रहइं महापूज करी यात्रा संपूर्ण करइ। विमानाधिरूढु राजपुरीपति[७]
परिसरोद्यानि आविउ। यक्षि अर्जुनरिपु बाधीकरी पेगे आणी घातिउ। सु रिपु दया परिणाम
वसइतउ मेल्ही करी हंसु राजा राजपुरी माहि आवी राजि वइठउ। दिव्यभोग राजेंद्ररहइ तुम्हे
पूरिवा' इसउं आइसु दे करी चत्तारि यक्ष हंसरहइ अगरक्ष त्र्यक्षु[८] यक्षु मेल्ही करी राउ मोक-
लावी आपणइ थानकि पहुतउ। हंसु राजेंद्रु राजपुरी जनरहइं महाहर्षु ऊपजावतउ सत्य
20 प्रभावि पुरदर जिम प्राज्यु राज्यु[९] प्रतिपाली करी देवलोकि गयउ।

हंसराजवतंसस्य सत्यवादफलं कलम्।
श्रुत्वा भव्यजनाः सत्यं ब्रूथ याथ महोन्नतिम्॥

॥ द्वितीयाणुव्रत विषइ हंस राजेंद्र कथा समाप्त॥



---

१ ખ ईहांकिहांई २ કમા प्रौढ અને सुभट શબ્દ લખતાં છુટી ગયા છે, તેમા प्रौढ શબ્દ તો પાછળથી પાનાના હાંસિયામા લખવામા આવ્યો છે. ३ ખ भूमिं. ४ ખ हूयउ. ५ ખ त्र्यक्षा. ६ ખ जाईयइ. ७ ખમા આ શબ્દ નથી. ८ ખ त्र्यक्ष. ९ ખ प्राज्यराज्य.

६. तृतीय व्रत उपर कथा.

अथ अदत्तादान परिहार विषइ लक्ष्मीपुंज कथा लिखियइ ।

अदत्तादान[1] विरतिव्रतनिश्चलनिश्चयः ।
लक्ष्मीपुंज इवाप्नोति सर्वः सर्वमचिंतितम् ॥

तथाहि-हस्तिपुर नामि पुरु। महादारिद्रय मंदिरु सुधर्मु इसइ नामि धर्म्म कर्म्म कर्म्मठु श्रेष्टि 5
एकु हूंतउ। सु कउडां[2] वडइ वस्तु लेई करी वेचइ। केई एकि कउडा[3] ऊपार्जतउ हूंतउ काल्ह
अतिक्रमावइ। धन्या नामि तेहनी गेहिनी। तिणि[4] अनेरइ दिनि रात्रि स्वप्नु लाधउं। दिव्या-
लंकार सार श्रंगार तार छइ। श्रीदेवी जिनेंद्र पूजा करती पद्मह्रद माहि बइठी जाणइ हउं देखउं
छउं। ते तीही जि वार जागी हूंती हर्षरोमांच कंचुकित गात्र ऊठी करी प्रियतम आगइ आवी
स्वप्नु कहइ। तिणि कहिउं 'प्रियतमि! श्रीमंतु धीमंतु धर्म्मवंतु तूरहइं पुत्रु होइसिइ। तिणिहिं 10
जि दिणि तेहना प्रभावइतउ तेह सुधर्म्म श्रेष्टिरहइं बि गुणउ लाभु हूयउ। लाभोदय कर्मोदय
लगी सु श्रेष्टि सुख लेसहंरहइं तेह[5] दिन लगी प्राहुणउ हूयउ। धन्या रहइं सुभकांति सौभाग्य
दिकहं गुणहंकरी सु गर्भु भाग्यवंतु सुधर्मि संभाविउ। आग्रहायणीय दिणि सु सुधर्म्म श्रेष्टि धन
चिंतातु पादनइ अंगूठइ करी घरनी भुइं खरवलतउ हूंतउ कल्याण मणि माणिक्य पूर्ण बिलु देखी
निधि लाभइतउ आनंद मंदिरु हूयउ। तउ पाछइ जिसउं[6] इंद्रनउं विमानु हुयइ तिसउं मंदिरु 15
कराविउं। रूपवंतु[7] सालंकारु सशृंगारु दासदासिका परिवारु[8] तिमहिं तेहनइ घरि सांपडिउ।
आग्रहायणीय महोत्सुवु सवित्सरु कराविउ। तेहनइ मणि सुवर्ण[9] दानिकरी जि दातारहूंता
तेई याचकु हूया। जिम जलि नीसरतेई[10] कूपु भरिओई जि दीसइ, तिम रत्न[11] काढीतेई सु
बिलु तिमहीं जि भरिउ दीसइ। तिणि विभूति करी दृष्ट संपूर्ण दोहद कालि धन्या सुपुत्रु प्रसवइ।
देवहीरहइं विस्मय कारकु दानु दियतइ हूंतइ श्रेष्टि पुत्र तणउ जन्म महोत्सवु कराविउ। इणि 20
आवियइ अम्हारइ घरि लक्ष्मी तणा[12] पुंज हूया। तिणि कारणि अम्हारा पुत्ररहइं यथार्थु
लक्ष्मीपुंजु इसउं नामु हुयउ। इसीपरि भणी करी वडइ विस्तारि लक्ष्मीपुंज नाम-करणु पितरे कीधउं।
मनोवांछित वस्त्रालंकारादिकहं करी सु[13] बालकु जन्म लगी सुभभागी हुयउ। कलावंत जिम
सकल कला कलापवंतु हूयउ। आठ दिसि संभूत जिसी आठ लक्ष्मी हुयइं तिसी स्वयंवर आवी
काठ वर कन्या परिणिउ। देवावास समा निवास निवासि यथा काम सुख संभोग भंगी संयुक्तु 25

---

१ ખમાં दान શબ્દ પડી ગયો. २-३ ખ कवडां. ४ ખમાં णि નથી. ५ ખ तेहिं. ६ ખ जिसुं. ७ ખ० वंत. ८ ખમાં परि શબ્દ પડિ ગયો છે. ९ ખ सुवर्णि. १० ખમા जिम जले नीसरे तोई. ११ ખ रत्नि. १२ ખ तणां. १३ ખ स.

हूंतउ सूर्यास्तोदय अजाणतउ हूतउ जु जु इंद्रियानुकूलु सु सु यथारुचि भोगवइ; जु जु दुक्ख करु सु सु सत्ताईं करी न जाणइ। पंचोत्तर सुर जिम सुख सागर निमग्नु हूतउ सु कालु अतिक्रमावइ। अनेरइ दिवसि कात[1] काताजनांकशय्या सुप्तहूंता तेहरहइ जेतलइं चित्तमाहि इसी चिंता ऊपजइ "जु मूरहइं किसा कारण लगी इसी देवसमान ऋद्धि हूई।" तेतलइ आगि-
5 लइ गमइ दिव्यवस्त्रालंकार भासुरु जिसउ सुरु हुयइ[2] तिसउं पुरुपु प्रकटु हुई करी अंजलि करण[3] पूर्वकु भणइ—'देव! धन्याकुक्षिसरोहस! भाग्यसौभाग्यपात्र! जनावतंस! मणिपूरु इसइ नामि पुरु छइ। तिहां पुण्यधरु गुणधरु[4] इसइ नामि सार्थवाह[5] हूंतउ। सु अनेरइ दिनि विशदाभिधान मुनि समीपि वनमाहि गयउ।

जंतोः स्यादुक्खदं द्रव्यहरणं मरणादपि। अतः सुकृतिभिः कार्यं चौर्यचर्याविमोचनम्॥
10 एवमाकर्ण्य पुण्यात्मा स विद्याधरससदि। अदत्तादानविरतिं व्यधात्तत्र तदा मुदा॥

पुरमाहि आविउ हूंतउ व्यवसाय निमित्तु भूरि भाड संभारु लेकरी देसातरि चालिउ। आपणा देस तणइ अति[6] सार्थि अटवी माहि पइठइ हूतइ आपणपइं सार्थवाहु घोडइ चडिउ आगइ थिकउ[7] जाइवा लागउ। पाछइ मार्गु मूकी करी प्रौढ पद प्रचारि किणिहिं दांडइ पडिउ। सुवर्ण लक्षमूल्य रत्नावली एक तिहां भुइ पतित देखइ। व्रतभग भय वशइतउ वली
15 बीजीवार तिणि गमइ दृष्टि अकरतउ हूतउ आघउ गयउ। सार्थ सचल भावतणा अलाभयतउ "किसउ[8] सार्थु दूरि गयउ?" इसी परि मनमाहि शका ऊपनी। तउ पाछइ सार्थवाहु आपणउ वाहु आघउ ऊतावलउ चलावइ। खुरक्षुण्णि मार्गि स्वर्ण पूर्णु त्रावानउ कुभु देखइ। व्रतभगइ तउ तिमहिं जि मूकी करी आघउ गयउ। ऊतावला जायता[9] हूंता सहसात्कारि वाहन वाहु मूयउ। पापभयभीतु चीतवइ "मू वाहता हूंता एउ मूयउ। हा! हतोस्मि। जु को एहरहइं
20 जीवाडइ तेहरहइ एउ तुरगमु हउ आपउ। अनइ ऊपरि घणउ धनु आपउ।" इसउ मनमाहि चीतवतउ हूतउ सार्थवाहु पादचारिहिं जि आघउ गयउ[10]। तृषाक्रांतु[11] हूंतउ वृक्षशाखा निबद्ध वारि पूरित दीयडी देखइ। तउ अदत्तादान व्रतभग[12] बीहतउ ऊंचइ स्वरि करी कहइ "कउण तणी ए दीयडी?" इसी परि वार वार भणतउ हूंतउ साभली करी तीहीं जि तरुनी शाखा बाधउ छइ पाजरउ तिहा छइ सूयडउ, तिणि भणिउ "वनमाहि ओसही लेवा गयउ वैद्यपुत्र,

१ ખ કંત. २ ખ हुइ. ३ ખ करणु ४ ખ गण० ५ ખ वाहु. ६ ખમા આ શબ્દ નથી ७ ખ थकउ. ८ ખ किसुं. ९ ખમા जाता. પ્રથમ य લખેલો પણ પાછળથી ભૂંસી નાખેલો. १० ખમાં चालिउ ११ ખ क्रांत १२ ખમા भंग શબ્દ પડી ગએલો છે.

तेहनी ए दीयडी। हउं तेह आगइ कांई[1] नहीं कहउं। तउं शीतलु जलपी।" इसउं शुकतणउं वचनु साभली करी कर्ण हाथे ढाकी करी शुक आगइ सार्थवाहु कहइ। "तृस वरि; माहरा प्राण हरउ; पूण तोई वैवि अणदीधउं जलु पीयउं नहीं महा पापभय भावइतउ।" तउ पाछइ शुकनउं रूपू संहरी करी वृक्ष हूंतउ ऊतरिउ को एकु वरु पुरुषु। सार्थवाह आगइ हर्षितु[2] थिकउ कहइ— "वैताढिय नामि पर्वति, विपूला इसइ नामि नगरी। तिहांनउ हउं सूर्यु इसइ नामि 5 विद्याधरु। अनेरइ दिनि ताहरइ मणिपूरु इसइ नामि करी प्रासिद्धि नगरि विशदाभिधानु माहरउ जनकु विद्याचारण मुनिवरु उद्यानवनि समोसरिउ हूंतउ हउं तेहरहइं वांदिवा [तिहां][3] आविउ। वांदी करी यथास्थानि बइठउ। तदा कालि मू उदिसी करी महात्मा भणिउं।

अनादानमदत्तस्यास्तेयव्रतमुदीरितम्। बाह्याः प्राणा नृणामर्थो हरतातं हृताहिते॥ यथा

वरं विभववंध्यता सुजन भावभाजां नृणा- 10
मसाधुचरितार्जिता न पुनरूर्जिताः संपदः।
कृशत्वमपि शोभते सहजमायतौ सुंदरं
विपाकविरसा न तु स्वयथुसंभवा स्थूलता॥

ताहरइ तउ धनु घणूं आगे[4] छइ; किसइ कारणि परद्रव्यापहारु करइ; इत्यादि चोरी परिहरण विषइ घणउं भणिउं। तथापि हिं हउं चौर्यव्यसनी फीटउ नहीं। तइं पुणि मू देखता तदा- 15 कालि परद्रव्य लेवा नियमु लीधउ। मूरहइं महा विस्मउ हूयउ[5]। जोयउ न ए वाणिया धनलव लाभ निमित्तु सरीरू सर्वस्वू जोषीमि घाती करी दूर विषम देशांतर पूर फिरइं। तींहं रहइं अदत्तादान विरति नियमु किसी परि प्रति पालइ। तिणि कारणि एह तणी हउं परीक्षा करिसु। इसउं चीतवी अदष्टु थिकउ तू पाखती[6] फिरिउ। फिरतइ हूंतइ आजु मइं अवसरु लाधउ। तउ मइं तूरहइं स्वर्ण लक्ष्यमूल्य रत्नावली पतित दिखाली। निधानु पुण दिखालिउं। अनइ घोनउ मूयउ दिखालिउ। 20 मइं तउं पुण लोभि जीतउ नहीं। तृसिया हूंता तू रहइं पाणीभरी दीयडी दिखाली। शुकनइ रूपि तू रहइं जलपान विषइ प्रेरणा कीधी। तइं पुण मोटेई प्राणरक्षण लक्षणि कार्यि उपस्थितइ[7] हूंतइ मइ अल्पु पाणी पानमात्रु अदत्तादानु करावी न सकिउई।" इसउ भणी करी सूर्यि विद्याधरि आपणा सेवक विद्याधर तेडिया। ति अदस्य हूंता सर्वे दस्य हूया। तींह कन्हा मणिमाला अणावी निधानु अणाविउं। अनेरउं घणउं[8] धनु अणाविउं। मूयउ हूंतउ जु घोडउ सु जीवाडिउ। 25

---

१ ખ काई. २ ખ हर्षित. ३ કભા પડી ગયો છે. ४ ખ घणउ आगइ.
५ ખ हूयइ. ६ ખમા આ શબ્દના ઠેકાણે रूपा० આવો ભ્રષ્ટ પાઠ છે ७ ખમાં त પડી- ગયો છે. ८ ખ घणुं.

सार्थवाह आगइ सूर्यु विद्याधरु भणइ 'सार्थवाह ! एउ ताहरउ घोडउ आपणउरसाति' इसउं भणी करी सार्थमाहि आणी सार्थवाहु मेल्हिउ । धनु सार्थवाह आगइ मेल्हिउं । सार्थवाहु भणइ ' किसउ एउ धनु '' सु भणइ 'कांई एकु माहरउ, कांई एकु कउतिग लगी परहूंतउं अपहरिउ । तदा कालि राजऋषि विशदमुनि वचनि ज मूरहइ चोरी तणी निवृत्ति न हूईयइ । स हवडा ताहरा
5 साहस दरसनइतउ मूरहइं चोरीनिवृत्ति ऊपनी । तिणि कारणि तुम्ह[१]रहइ मइ धर्म्मगुरु भणी धनु पादभेट कीधउं ।' इसउ कहता सूर्य विद्याधर आगइ गुणधरु भणइ–' जु धनु जेहनउं तइं हरिउं छइ, सु तेहरहइं पाछउं दइ। तिणि तिमइ जि कीधउ। पाछिलउं गाहरउं धनु गुणधर [२]तउ लइ ।' इसउं भणता सूर्य आगइ गुणधरु कहइ–'अहो विद्याधर तउ एउ माहरउ धनु[२]सगळं लइ। जिणि कारणि इसउ मइ मानिउ हूतउं "जु को माहरउ घोडउ जीवाडइ तेहरहइं हउं
10 सगळ आपणउ धनु आपउ।" तइं माहरउ घोडउ जीवाडिउ, तिणि कारणि तउ माहरउ धनु लइ। किंच दान[३]पात्रि दीजइ। हउ पुण दानयोग्यु पात्रु नही, तिणि कारणि ताहरउ धनुं कथमपि हिं ल्यिउ नहीं।' इसउ भणता गुणधर[४] आगइ विद्याधरु भणउ–'हउ ताहरा उपदेशरहइं इणि भवि ऊरिणु नहीं हुउ। मइ मायालगी ताहरउ घोडउ मूयउ दिखालिउ तिणि कारणि किसी परि ताहरउ धनु हउं लिउ ? माहरउ धनु तउं न लियइ, ताहरउ धनु हउ न लिउ। तउ पाछइ
15 एह धनरहइं कउणु धनिकु होइसिइ'' सार्थवाहु कहइ–'धर्मु जेहरहइं देसिइ तेउ[५] धनिकु होइ सिइ। तिणि कारणि आवि, जिम सर्वज्ञदेसिति धर्म्मि वेचां, लक्ष्मी कृतार्थ नीपजावां।' तेहनइ वचनि विद्याधरि अंगी करियइ[६] हूतइ तेहे[७] विहु आपणी लक्ष्मी सप्तक्षेत्री माहि वावी। तउ पाछइ गुणधरु मरी करी तउ लक्ष्मीपुंजु हूयउ। हउ पुण ताहरा उपदेशइतउ सुपात्रि धनु दियतउ आयु पूरी करी व्यंतरु ऊपनउ। ताहरइ पुण्यि करी हउ पुण आवर्जितु हूंतउ तूरहइ आजन्मु[८]
20 हितु कालोचितु वस्तु पूरउ।' इसउ व्यंतर वचनु सांभली करी मूर्च्छा गयउ हूतउं सीतोपचारइतउ मूर्च्छापगमइतउ जातिसमरणु लही करी लक्ष्मीपुंजु प्रमोदपुंजु हूयउ[९]। यावज्जीवु विशुद्धु[१०] जिनधर्म्मु प्रतिपाली करी अंतकाली अनसनु करी समाधिसउ मरी अच्युत देवलोकि देवु होई। पुनरपि मनुष्य भवु लही, दीक्षा ले, केवल ज्ञानु उपाडी, मोक्षि पहुतउ ॥

लक्ष्मीपुंजकथा श्रुत्वा भव्याः स्तेयविवर्जनम्। कुरुध्व येन वस्तूर्णं पूर्णं भवति मंगलम् ॥

25 ॥ अदत्तादान परिहार विषइ लक्ष्मीपुंज कथा ॥

---

१ ङ तुम्हे २ ખ પ્રતમાં આ બને બગડાઓ વચ્ચેનો પાઠ લખતાં છુટી ગયો
३ ખ दानु. ४ ખ ०धरु ५ ખ तउ. ६ ખ करिइ. ७ ખ तेहं. ८ ખ आजन्म.
९ ખ हुउ. १० ખ विशुद्धि

७. चतुर्थ व्रत उपर कथा.

चतुर्थ व्रत विषइ नागिल कथा लिखियइ।

अहो ब्रह्मव्रतं मुक्तेः संमुखीकारकारणम्।
गीयते नागिलस्येव विपदामुपदाहकृत्[1] ॥

तथाहि–महापुरु नामि पुरु। भोजु नामि राजा। लक्ष्मणु नामु श्रेष्ठि जिन धर्म्मु सर्व सारु 5
मानइ[2]। तेहनी नंदा नामि विवेकिनी नंदनी[3]। स पुण सतीमतल्लिका परिणयन योग्य हूंती
पिता आगइ कहइ—

'निरंजनं देशोन्मुक्तं निस्नेहव्ययमन्वहम्।
धत्ते विवेकं दीपं यः परिणेता ममास्तु सः ॥

इसउं तेहनउं वचनु सांभली करी पिता चिंताकुलु हूयउ। जु जु तेहरहइं वरु आवइ 10
तेह तेह आगइ 'निरंजनं' इत्यादि श्लोकु पढइ। को[4] एकु श्लोकु परमार्थ वृत्ति करी परीछइ
नहीं। बाह्यार्थ वृत्ति करी परीछइ। तिणिहिं जि नगरि नागिलु नामि जूयारी[5] एकु छइ।
सु पुणि रूपि करी जिसउ कंदर्पु हुयइ तिसउ छइ। तिणि नागिलि अनेरइ दिनि अनेकि
लंघन करी विरूपाख्यु[6] यक्षु आराधिउ हूंतउ[7] प्रत्यक्षु हूयउ कहइ–'अहो! वरु मागि।'
तिणि भणिउं–'जउ तउं मूरहइं तूठउ तउ जिसउ[8] दीपु नंदा कहइ छइ तिसउ दीपु तउं[9] 15
माहरइ घरि था।' यक्षि कहिउं[10]–'होइसु।' तउ पाछइ लक्ष्मण श्रेष्ठि तणइ घरि जाई करी
नंदा मागइ। श्रेष्ठि भणइ–'नंदा जिसउ दीपु भणइ तिसउ दीपु जउ थाहरइ[11] घरि हुयइ तउ
नंदा लहइ।' तिणि भाणिउ–'आवी माहरइ घरि जोयउ।' श्रेष्ठि जोयइ तउ तिमहीं जि परि
दीपु देखइ। नंदा तेहरहइं परिणावइ। यक्ष प्रभावि दारिद्रता भावु नाठउ। लक्ष्मी प्रभूत
आवी। तथापि नंदा तिसइ दीपादि दर्शनाश्चर्यिहिं करी निरानंदाई जि हुयई। सु पुण नागिलु 20
स तिसी देवता समान रूप नायिका लहिऊ करी द्यूतव्यसन तणी निवृत्ति न करइं। जिम
जिम धनु हारइ तिम तिम नंदा स्नेह लगी लक्ष्मणु श्रेष्ठि पूरइ। जदपिहिं[12] धनु हारी बाहिरि
अपर पणांगना रमी घरि मउडउ आवइ, तथापिहिं नंदा सानंद थकी[13] तेहरहइं परिचर्या
करइ। तउ पाछइ नागिलु आपणइ मनि चीतवइ–'हउं एहरहइं प्रिउ[14] नहीं, जु एवडेई
अपराधि मूं ऊपरि रोषु[15] न करइ।' अनेरइ दिवासि तिणि नागिलि घणउं धनु हारिउं। 25

१ ખ ०दापहृत्. २ ખ नमइ. ३ ખમાં नंदिनी. ૯માં એ શબ્દ ઉપર पुत्रिका આવું ટિપ્પણ લખેલુ છે. ४ ખ कोइ. ५ ખ जुयारी ६ ખ ०पाक्षु. ७ ખ तउ. ८ ખ जिसु. ९ ખ तूं. १० ખ भणिउ. ११ ખમા जउ किमइ ताहरइ. १२ ખ यद्यपिहि. १३ ખ थिकि. १४ ખ प्रिय. १५ ખ क्रोधु.

कितवहं कन्हा नाठउ वन माहि पइठउ । तिहा ज्ञानवंतु मुनि धर्म्मध्यानि वर्त्तमानु तिणि दीठउ । वादी करी प्रस्तावि पूछिउ–' भगवन् ! माहरी भार्या सुभ सद्भावइ हूती मूंरहइ चित्ति कांई[१] न करइं ।' इसइ पूछिइ हूंतइ महात्मा मनि चीतवइ 'योग्यु छइ, एउ प्रतिबूझिसिइ, ' तिणि कारणि महामुनि कहइ–'स विवेकिनी कातु[२] पुणि विवेकवंतु परिणिवा कारणि विवेकु
5 निरंजनादि गुणु तिणि कहिउ । तउ विवेकु दीपु जु धरइ, सु मूरहइ वरइ । इसउ तेहनउ अभिप्राउ हूंतउ । सु अभिप्राउ को जाणइ नहीं । तइ दीपु निरजनादि गुणु दिखाली करी परिणी ।

यतः–निगद्यतेऽञ्जनं माया नवतत्त्वाच्छितिर्दशा ।
स्नेहव्ययः प्रेमभंगः कंपः सम्यक्त्वखंडनम् ॥

तेहे मायादिके दोषे विवर्जितु विवेक[३] दीपु जु धरइ सु मूरहइ वरइ । तिणि पुण
10 जेतीवार तिसउ दीपु यक्ष विरचितु दीठउ, तेतीवार मौनवत हूती तइ परिणी । जेतलइ सती तेतलइ तूरहइ अपराधवंत ही विषइ न रूसइ । जेतलइ तउ अविवेकी एतलइ तू ऊपरि न तूसइ । तूरहइ चित्तिहि न करइ ।" महासतीनउ सु समाचारु साधु भणितु अनइ विवेकु साभली करी प्रति बूझइ । महात्मा कन्हइ जिसउ विवेकु पूर्विहिं कहिउ तिसउ विवेकु अनइ स्वदार संतोषव्रतु तदा कालि नागिलि अंगीकारिउ । घरि आवी स्नानु करी विधिवत् देवपूजा
15 करइ । सुपात्रहंरहइ दानु प्रवर्त्तावइ । यथेच्छ काम सुख भोगवइ । तउ पाछइ विवेकवंतु कातु देखी करी नदा सानदा हूती भणइ–' शील सलिल परिसिक्त हूती जिन भक्ति कल्पलता आजु मूरहइं सफल हुई । कात जु मइं तउ विवेकवतु दीठउ ।' नागिलु भणइ–' प्रियतमि ! जु मइ व्यसनु मेल्ही करी विवेकु अगी करिउ, तेह अर्थ विषइ गुरुनउ आदेशु कारणु ।

यत उक्तम्–मनो न निश्चल तावद्यावत्तत्त्वं न विंदति ।
20 विदिते तु परे तत्त्वे मनो नौकूप-काकवत् ॥

तेह दिवस हूंती तीहरहइ एक चित्तता हुई । नागिल नंदा बिहु आधि-राहितहं समाधि-सहितह समान-धर्मरूप-कला-यौवनवतह तीह तणी कायकाति आतिशय प्राप्त हुई । अनेरइ दिनि किणिहिं पर्वि नंदा पीहरि गयई[४] । नागिलु आपणा घरतणी सातमी भुइनइ माणि कुट्टिमि देवपल्यंकोपमान शयनीय ऊपरि सूतउ चन्द्रबिंबि-दत्तलोचनु वर्त्तइ । कइ[५] एक विद्याधरी
25 प्रिय-विरहिणी आकाशमार्गि जायती नागिलरहइ देखी करी सकाम हुई हूंती नागिल आगइ

---

१ ५ काइ २ ५ कांति. ३ ५ विवेकु ४ ५ गई ५ ५ केइ.

आवी करी भणइ–'कामाग्नि संतप्त गात्र[1] हूंती हउं अहो महापुरुष ! तूरहइं शरण[2] आवी। स्वामिन् ! स्वाग-संग-सुधा-तरंग-रंग-केली[3]-सुखु मूरहइं कराबि। हउं पुण, विद्याधर-शिरोमणि छइ हंसु विद्याधरु तेहनी गेहिनी, तइं दीठइ तेह हूंतउ माहरउं मनु ऊबीठउं हूअउं। चंद्र नाम खेचरेश्वरनी हउं दीकिरी। नामि करी आगइ लीलावती, तइं आदरी तह हउं कर्म्मिहिं करी लीलावती होइसु। अथ मूरहइं जइ किमइ नहीं अंगीकरइ तउ तउं[4] नहीं हुयइ; अथवा हउं 5
नहीं हुउं। ते तीवार धर्मज्ञ ! तउं किसउं स्त्री-हत्या-पातकी नही हुयइ। पतितणी विद्या, पिता-तणी विद्या हउं सर्व्वइ जाणउं। ति विद्या तूरहइं देसु, पाति अनइ पिता तूरहइं साध्य करिसु। तिणि कारणि तउं[5] मूरहइं अंगीकरि। माहरउं वचनु अन्यथा म करिसि।' इसउं भणी करी तेहना पाद आपणइ मस्तकि धरिवा कारणि जेतलइ धाई तेतलइ परस्त्री संस्पर्शु माहरां पगहींरहइं म हुउ इणि कारणि नागिलि जिम दहन हूंता दाझता पाछा कीजइं तिम कीधा। 10
तउ पाछइ स विद्याधरी कोप वशंगत हूंती आकाशगत अतीव रक्तलोचन थिकी अग्निवर्ण लेह-गोलु अतिविलोलु विकुर्वी करी नागिल तणा मस्तक ऊपरि मूंकइ। 'दाधउ रे ! दाधउ रे !' इसी परि गगन-गत हूंती वाहवइ। तेहरहइं बीहावइ। तउ पाछइ नागिलु पंचपरमेष्ठि नम-स्कारु मनमाहि समरइ। नमस्कारनइ प्रभावि लोहगोलउ विलइ गयउ। स विद्याधरी पराजित हूंती लाजी करी अदृश्य हुई। नागिलु हर्ष-रोमांच-कंचुकितु गात्रु हुयउ। 'तुम्ह पाखइ पितृ 15
मंदिरिहिं मूरहइं रति नहीं' इसउं भणती हूंती नंदानइ रूपि नंदानइ स्वरि स खेचरी गृह-द्वारि आवी। परिवार कन्हा द्वारु ऊघाडा[6]वइ। नागिलु स्वरि करी नंदा ओलखतू हूंतउ खेचरी कपटा[7]शंका करी। संकीर्ण स्थानस्थु होईतउ नंदा बोलावइ–' हे अरविंदाक्षि दाक्षिण्य निधे ! यदि त्वं नंदासि तदा मामेहि। अथान्या कापि तदा धर्मनृप[8]-प्रभावाद्भग्नगतिर्भव।' इसा कथन कथनांतरु धर्म्मनइ प्रभावि स खेचरी स्तंभित गति हूंती, तेहनइ चरित्रि करी विस्मया- 20
पन्न हूंती विद्याधरी आगइ ऊभी रही। नागिलु कपटांतराशंकी शीलरक्षा कारणि आपहे व्रतु लियइ। सासन-देवता-दत्तु वेसु धरतउ हूंतउ गृहस्थितु जु छइ यक्षु दीपु तेह आगइ इसउं[9] कहइ–' अहो आराध्य ! नंदानइ लोभि मइं तउं गृह दीपंता पमाडिउ हूंतउ। सांप्रतु हउं कृतकृत्यु हूयउ। विरूपाल्य[10] यक्ष तउं आपणइ थानि पहुचि।' तउ दीप हूंती भाषा नीसरी 'जां तूं[11] जीविसि तां हउं तू सरिसउ[12] रहिसु।' तथा शील महिमा देखी करी स खेचरी 25
अति रंजित चित्त हूंती प्रभात समइ महाविस्तरि दीक्षा महोत्सवु करावइ। सूर्योदयहि[13] दीप्र-

१ ખમાં गात्र નથી. २ ખ शरणइं. ३ ખમાં केवली. ४ ખમાં तउं નથી. ५ ખ तूं. ६ ખ ऊघडा. ७ ખમાં कपटा શબ્દ નથી. ८ ખમાં नृप શબ્દ નથી. ९ ખ इसुं. १० ખ विरूपाक्ष. ११ ખ तउं. १२ ખ सरसुओ. १३ ખ सूर्यादिहिं.

भासु जु छइ यक्षदीपु तिणि अनुगम्यमानु विस्मय-स्मेर-विलोचनहं लोकहं विलोक्य-मानु नागिलु भवसमुद्रकूलि गुरुपाद-मूलि पहुतउ । नदा साहितु दीक्षा ले करी दुस्तप-तप क्रिया-कलाप करतउ हूंतउ गुरु सरसउ[1] विहरिउ । राति[2]हिं यक्ष-दीप तणइ प्रद्योति श्रुत पाठु करतउ थोडे दिवसे ज्ञात-ज्ञातव्यु[3] गीतार्थ-शिरोमणि हूयउ । संजम ग्रहण पूर्विहि आयुः कर्म्मु बांधउ[4] हूंतउं, तिणि कारणि हरि वर्ष क्षेत्रि कल्पवृक्ष तलि नंदा स्नेह लगी जुगलियउ हूयउ । सु जुगलु भाग्यशेष तणइ प्रभावि स्वर्गभोग भोगवी करी महाविदेही क्षेत्रि मनुष्यता लही सिद्धिइं गयउं ।

शीलं सुवर्णाभरणं परीक्षाहीरान्वितं नागिलवन्निधाय ।
आ संसृतिं साररमामवाप्य श्रेयः श्रियं भव्यजना लभध्वम् ॥
॥ चतुर्थव्रत विषइ नागिल द्यूतकार कथा समाप्ता ॥

८. पंचम व्रत उपर कथा.

परिग्रह परिमाण करण[5] विषइ विद्यापति महीपति कथा लिखियइ ।

परिग्रहपरिमाणाख्यव्रतकल्पद्रुरद्भुत ।
निषिध्यमानमप्यर्थं दद्याद्विद्यापतेरिव ॥

पोतनपुरे नगरि धनद जिम धनपति विद्यापति इसइ नामि श्रेष्टि अति विख्यातु हूयउ । तेहनइ[6] श्रृंगारसुदरी इसइ नामि श्रेष्टिनी रूपि करी जिसी सुरसुदरी हुयइ तिसी । ति बे जिन-भक्त अनंतफल लाभ वांछा करी सप्तक्षेत्रीतलि[7] धनबीजु वावतां हूंता यथाकासु वृष-पोषणु करइ । धनु ऊपार्जतां[8] जिनधर्म्मु विधवत् करतां सुखमय हर्षमय विस्मयमय समय नीगमतां हूंतां तीहरहइं अनेरइ दिवसि रात्रि समइ स्वप्नमाहि विद्यापतिरहइ का एक स्त्री कहइ–'हउं ताहरा घरनी लक्ष्मी, एतला दिवस ताहरइ पुण्य गुणि करी बांधी हूती तूरहइं वशि[9] हूंती ।' हव[10] हउं दैवि मोकली[11] तिणि कारणि आजु हूती दसमइ दिवसि ताहरा घरहूंती जाइसु ।' इसउ दुःश्रवु वचनु तेहनउ विद्यापति साभली करी जागिउ । 'दरिद्रु हउं होइसु[12]' इसी-परि चिंतावस्थु हुयउ । प्रभात समइ श्रृंगारसुंदरी विद्यापति चिंतापतितु देखी करी भणइ[13] 'कात! रवि विंवजिम तुम्हारइ मुखि मालिन्यु अदृष्टपूर्वकु किसइ कारणि आजु दीसइ ।' स्वप्नस्वरूपि विद्यापति भणिइ हूंतइ पुनरपि श्रृगारसुंदरी भणइ[14]–'निर्वाण नगर प्रदेशि निषे-

---

१ પ્રભાં सरिसउ. २ પ્રભા रातिहिंના બદલે तिहिं શબ્દ છે. ३ પ્રભા ज्ञातव्य. ४ પ્ર बांधतउं. ५ પ્રભાં करण શબ્દ નથી. ६ પ્ર तइं. ७ પ્ર तालि ८ પ્ર ०र्जता. ९ પ્ર वशः १० પ્ર हिव. ११ પ્ર मोकिली. १२ પ્ર होइसिउ. १३ પ્ર भणइ. १४ પ્ર भणई.

धार्गला लक्ष्मी संतहंरहइं हृदय-शल्य-तुल्य जइ जाइ तउ जाउ। विवेकु एकु सर्व-समी[1] हित-संपादकु तुम्हकन्हा म जाइजिउ। तथा धनतणउं फलु सुपात्र-दानु[2] सु[3] तुम्हे भव्यपरि[4] एतला दिवस सीम लीधउं। मोक्षमार्ग भंगविषइ वाडि ए लक्ष्मी जइ भाग्यवशि भागी तउ ताहरी पुण्यवृत्ति जागी। तिणि कारणि हर्ष[5] स्थानि किसइ कारणि विषादु करउ। किसी परि ए लक्ष्मी दसमइ दिवसि जाइसिइ। आत्मायत्त हूंती आजू[6] जु सप्तक्षेत्री माहि वावउ। परिग्रह परिमाणु व्रतु 5 करउ। असुभकाल तणउं हरणु करउ।' इसी प्रियतमा भाषा सांभली करी हर्षितु हूंतउ प्रभातिहिं जि समस्त लक्ष्मी सप्तक्षेत्रीं वेचइ। देहमात्रोपयोग्यु स्वल्पु धनु राहवी करी मध्यं[7] दिनि जिन-पूजा करी इसउं कहइ—'एक श्रृंगारसुंदरी भार्या, एक शय्या, वि वस्त्र, पात्रु एकु, आहारु दिन-भोजन मात्रु मूकी[8] करी अपर समस्त वस्तु परिग्रह करण नियमु। जिनेंद्र सेवा निमित्तु घणूं वस्तु धरउं।' इसी परि परिग्रह प्रमाणु करी समस्तु दिवसु धर्म्मध्यान परायण थिकउ नीगमइ। 10 'धन पाखइ प्रभाति किसी परि याचकमुख देखीसिइ। इणि कारणि रात्रि समइ लोकि सूतइ हूंतइ देशांतरि गमनु करिवा युक्तु।' इसउं श्रृंगारसुंदरीसउं आलोची करी सूतउ। रात्रि प्रहर द्वय समइ देशांतरि चालिवा जउ ऊठिउ तउ घरु तिमिहिं[9] जि धन-भरिउं देखइ। तउ विस्मयापन्नु हूंतउ विद्यापति प्रियतमा प्रति भणइ—'दसमइ दिनि दैवि आकर्षितइ[10] जि हूंति श्री जाइसिइ, दस-दिवस-सीम दीयमानइ हूंती माहरा घर हूंती नही जाइ। तिणि कारणि "धनदानु धनक्षय- 15 हेतु, धनतणउं अदानु धन-संचय-हेतु" इसउं मुग्धजन मुधा बोलइ।

न याति दीयमानापि श्रीश्चेद्दीयत एव तत्।
तिष्ठत्यदीयमानापि नो चेद्दीयत एव तत्॥

इसी वार्त्ता तणइ विस्मयरासि वर्त्तमानहं हूंता तीहिं[11] रहइं सूर्यु ऊगिउ। बीजइ दिनि पुणि तिमहिं[12] जि लक्ष्मी सुपात्रि देवी करी परिग्रह परिमाणु करी सूतउ। प्रभाति तिमहिं जि श्री 20 देखइ। वली तिमहिं जि ऋद्धि सुक्षेत्रि वावइ। इसी परि नव-दिवस-सीम करइ। इसउं कांई[13] एकु सुपात्र[14] दानु प्रवर्त्ताविउं जिसइ कल्पद्रुमाधि देवीरहइं पुण विस्मउ ऊपनउ। 'पूर्व-पुण्य-पयःपंकु मुक्ति-मार्गरहइं दूषकु श्रीनउ पूरु मूरहइं[15] प्रभाति शोषि जाइसिइ' इसी परि हर्ष-पूरितु हूंतउ रात्रि सूतउ। स्वप्न माहि श्री आवी करी भणइ—'अहो महापुरुष! ताहरां[16] दान-धर्म्महं करी दुष्टु दैवु दूरि कीधउ, हउं[17] जायती वली थाहरावी। 25

---

१ ખ सामी० २ ખ दान. ३ ખમા સુ નથી. ४ ખ पदि. ५ ખ हर्षि. ६ ખ आजू. ७ ખ मध्य. ८ ખ मुंकी. ९ ખ तिमहीं. १० ખ कर्षीतइ. ११ ખ तीहं. १२ ખ तिमहीं. १३ ખ इसुंकाइ. १४ ખ सुपात्रु. १५ ખ मू. १६ ખ ताहरा. १७ ખ हुं.

अत्युग्रपुण्यपापानामिहैव फलमश्नुते ।
इति सूक्तं त्वयाकारि मतिसार ! यथातथम् ॥
कदाचन न मुंचामि तदहं सदनं तव ।
यथेच्छं भाग्यभंगीभिरुत्संगीकृत भुंक्ष्व माम् ॥

5 तदा कालिहिं जि जागिउ हूंतउ भार्या आगिलइ गमइ स्वप्न-विचारु कहइ । प्रतिज्ञा निर्वाह निमित्तु कहइ–' प्रियतमि ! भोगमात्र फलि श्रीदान-व्यसनिहि जि हा माहरउं जन्मु जाइसिइ । मुक्तिफलि तपि किसी परि प्रवर्त्तिसु । कदा कालिहिं लोभ-लोलितु मनु नियम-भंगु पुण कराविसिइ । तिणि कारणि श्री-पूर-पूरितु मंदिरु मूंकी[1] करी किणिहि देशातरि जाइयइ । तउ श्री ग्रहतइ[2] छूटियइ ।' इसउ भार्यासउं आलोची करी जिनबिंब करंडिका ऊपाडी करी श्रृंगार-
10 सुंदरी मात्र परिवार हूतउ बाहिरउ नीसरिउ । पच परमेष्ठि नमस्कार समरणा करतउ नगरइतउ चालिउ । नगरि एकि जाई करी सूतउ । तिहा अपुत्रु राउ विणठउ । प्रधान पुरुषे पांच दिव्य अधिवासिया,[3] जिहा विद्यापति हूतउ तिहा आविया । घोडइ हेषारवु कीधउ । छत्रु आवी माथइ रहिउ । चामर बिहुगमे[4] ढलिवा लागा । पट्टहस्ति गलगार्जिकरण पूर्वु[5] तीर्थजलपूर्ण कलसे करी, राज्याभिषेकु करी, भार्यासहितु ऊपाडी करी, शुडादडि करी, कुंभस्थलि चडाविउ ।
15 तउ पाछइ मंत्रि सामंत मडलेश्वर विसर[6] परिवृतु राजसौध ऊपरि आवतउ मनमाहि[7] चींतवइ 'जिम पूनिमनउ चद्रमा मेह-पटल[8] हूंतउ नीसरिउ राहुग्रस्तु हुयइ, तिम हउ अल्प-धन-पक हूतउ[9] कथमपि हिं नीसरिउ, प्राज्यराज्य महा-पक माहि[10] पडिउ ।' भद्रासनि बइसाली करी महामात्य राज्याभिषेकु करावइ । विद्यापति भणइ–'[11]मूरहइ राज्य माहि[12] कार्यु नहीं ।' प्रधान कहइं–' इम किम हुयइ । देवता [13]तूरहइ राज्यु दियइ ।' विद्यापति भणइ–' तथापि हि
20 मू राज्यि कार्यु नहीं ।' इसी परि वार वार राज्याभिषेक-निषेधु करतइ हूतइ आकाश-भाषा ऊछली–' अजी भोग-फलु प्रभूतु कर्मु छइ, तिणि कारणि राज्यलक्ष्मी-पाणि-पीडनु करि ।' इसउ निज-भाग्य-देवता-वचनु साभली करी सिंहासनि जिनेंद्र-प्रतिमा बइसाली करी तेहनइ पादपीठि आपणपइ बइसी करी जिनप्रतिमा रहइ राज्याभिषेक तणइ व्याजि आपणपारहइ त्रिभुवनाधिपत्य निमित्तु अभिसिचावइ । जेतलउं अंगी करिउ छइ तेतलउ आपणइ लेखइ करी बीजउ
25 समस्तु वस्तु शस्त[14] हस्ति तुरगम भांडागारादिकु जिन नामाकितु करइ । सदा तीर्थयात्रादि प्रभावना करावइ । देवगृह करावइ । जिनबिंब भरावइ । अभय-घोषणा अमारि-घोषणा करावइ ।

---

१ ખ मूकी २ ખ तउ ३ ખ वासियां ४ ખ विहु. ५ ખ पूर्ष.
६ ખમા આ શબ્દ ઉપર समूह આવુ ટિપ્પણુ કરેલું છે ७ ખ मांहि. ८ ખ पडल.
९ ખ हंतउ. १० ખ माहिं. ११ ખ मूं १२ ખ माहिं १३ ખ तू
१४ ખ મા शस्त શબ્દ નથી.

लोककन्हा करु न लियइं। कहइ 'अहो! लोकउ जु राज[1]भागु आवइ सु धनु धर्म्मि हिं जि वचउ।' तउ पाछइ जिनधर्म्मनइ एकातपत्रि राज्यि प्रवर्त्ततइ[2] हूंतइ 'मारि' इसा अक्षर कंदर्पनाम मूंकी करी अनेरइ थानकि, न केवलं जीवविषइ को[3] न कहइ अजीव छइं जि धूत-माहि सारि तींही आगइ को न कहइं मारि। जिमजिम विद्यापति राजा धनु वेचइ तिमतिम तेहनी भाग्यदेवता राजमंदिरि धनु वरसइ। अनेरइ दिनि समीपगत राज्येंद्र मिली करी तेहना राज्य रहइ लेवा आविया। विद्यापति धर्म्म मूकी बीजी वात जाणइ नहीं। जिनाधिष्टायक छइं यक्ष तेहे तींहंरहइं रोग ऊपजावी करी नासविया। विद्वेषियां[4] तणउं विकटु कटकु देखी करी विद्यापति चित्ति चीतवइ 'अहो! शक्र-विक्रमवंत शत्रु राजेंद्र छइं, तेई धर्म्मतणइ प्रभावि भाजी गया। मूरहइं अल्प परिग्रहता देखी करी महापरिग्रह शत्रु लोक जिणिवा कारणि आपणा सेवक[5] भणी धर्म्मि निश्चइ साहाय्यु कीधउं।

तदहं यद्यमुं सेवे त्यक्त्वा शेषपरिग्रहः।
तदंतरायभंगेपि भवत्ययमुपक्रमः ॥

इसउं चीतवी करी श्रृंगारसुंदरी-संभवु श्रृंगारसेनु सूनु राज्यि बइसाली करी संजमसूरि समीपि संजमु ले करी कल्याणमउ आपणउ आत्मा तपोग्नि तापि सूझवी करी विद्यापति राजऋषि देवलोकि गयउ। मनुष्य देव भव पंचकि हूयइ हूंतइ मुक्ति गयउ।

विद्यापतिं कृतपरिग्रहमानयामं श्रुत्वा बुधा भवत संपदि निस्पृहा भोः।
येन स्वयंवरवधूः शिवसंपदेपा जातस्पृहा क्षिपति वः स्रजमाशु कंठे ॥

इति परिग्रह परिमाण करण व्रतफल विषइ विद्यापाति राजऋषि कथा समाप्ता ॥

---

९. षष्ठ व्रत उपर कथा.

दिक्परिमाणव्रत करणाविषइ सिंह कथा लिखियइ।

गतौ संकोचयत्येव यः स्त्रादिग्विरतिव्रतम्।
संसारलंघनोत्ताल[6]फालारंभः स सिंहवत् ॥

तथाहि:—वासंती नामि नगरी, कीर्त्तिपालु नामि राजा, भीमु नामि तेह तणउ पुत्रु। पुत्रही[7] कन्हा अति वल्लभु सिंहु नामि श्रेष्ठि। सु पुणु[8] परम श्रावकु जिन-भक्ति-वंतु वर्त्तइ। अनेरइ दिनि सभामाहि कीर्त्तिपालु राजा सिंह[9] श्रेष्ठि मुख-कमलु भ्रमर जिम जोयंतउ हूंतउ

१ ৸ राजु. २ ৸ प्रवर्तिइ. ३ ৸ कोइ. ४ ৸ द्वेसिया. ५ ৸ सेव तणी. ६ ৸ फला. ७ ৸ ही. ८ ৸ पुण. ९ ৸ सिंहु.

वर्त्तइ। तेतलइ प्रस्तावि प्रतीहारु आवी राजेंद्ररहइ वीनवइ–'महाराज ! तुम्हरहइं देखण-हारु एकु[1] पुरुषु दिव्याकारु द्वारि आविउ छइ।' राजा भणइ 'माहि मेल्हि।' तउ पाछइ प्रतीहारि मुक्तु हूंतउ सु पुरुषु माहि आवी राजेंद्र रहइं प्रणमी करी, आसनी समासीनु वीनवइ 'महाराज ! नागपुरु नामि नगरु, तिहां चंद्रु नामि नरेंद्रु, रत्नमंजरी नामि राज्ञी। तींहिनी गुण-माला नामि दीकिरी। स ताहरा पुत्र भीमरहइ देवा कारणि स्वामिन् ! तुम्हकन्हइ[2] हउं पाठिविउ[3]। तिणि कारणि, अहो महीपाल ! स राजपुत्रिका रूप शोभा करी रतिरहइ दत्तजय[4] पत्रिका वर्त्तइ। रूप-लक्ष्मी करी जित-लक्ष्मी-पुत्रु जु छइ भीमु नामि तुम्हारउ पुत्रु तेहरहइं प्रमाणु करउ।' दूति इसइ अर्थि वीनविइ हूंतइ सिंहश्रेष्ठि मुख सामुहउ जोयतउ हूंतउ कीर्त्ति-पालु राजा भणइ–'सिंह श्रेष्ठिन् ! आपणपा[5] रहइ आगे भेदु को नहीं। तिणि कारणि माहरइ थानकि थाई, तुम्हे भीमु नागपुरि लेकरी पुहुचउ[6]। बाधव ! एउ सवधु करउ।' दिग्विरति-विरति-व्रत-भंग अनइ अनर्थ-दड-विरति-व्रतभंग भयभीतु हूतउ सिंहु अधोमुखु थाई रहिउ। राजेंद्ररहइ उत्तरु न दियइ। लगार एक कुपित-लोचनु[7] हूतउ राउ भणइ–'किसउ बांधव[8], एउ सवधु बंधुरु नहीं जु तउ उत्तरु कोई न दियइ।' आकार इंगितादिकह चिन्हह करी सकोपु राउ जाणी करी सुधाशीतल वाणी राउ जिम शीतलु थाइ, तिणि कारणि सिंहु बोलइ 'ईहा हूतउ जोयण सउ अधिकेरउ नागपुरु हुयइ। इणि कारणि व्रतभग-भय-वशइतउ हउ नागपुरि न जाऊ।' इसइ भणिइ हूंतइ सिंह ऊपरि कीर्त्तिपालु राउ कोपि चडिउ। जिम घृत सेकी करी वैश्वानरु ज्वलइ, तिम प्रज्वलिउ। तउ राउ कोपवशि हूतउ भणइ 'जइ किमइ जोयण सय ऊपरि नहीं जाइ, तउ हउ तूरहइ बाधी करी जोयण सहस्र ऊपरि निक्षिपाविसु।' तउ सिंहु समुत्पन्नमति हूतउ पुनरपि भणइ–'महाराज ! ताहरउ विरहु हउ सही सकउं नहीं, तिणि कारणि अहकार रहितु हूतउ जोयण सय ऊपरी हउ जाउ नहीं, इसा उत्तर तुम्ह आगइ कहिउ[9]।' इसइ वचनि राउ उपशात कोपानलु[10] हूंतउ सरसउं प्रबलु बलु दे करी भीम सरसउ[11] सिंहु चलावइ। कटक आगइ, कुमार भीम आगइ भणिउ–'ज काई सिंहु कहइ तं तुम्हे करिवउ।' तउ पाछइ राजाभियोगि अकामूथिकउ सिंहु भीमकुमार सरसउ चालियउ[12] हूतउ कुमार आगइ ससाराऽसारता[13] गुप्तवृत्ति करी कहइ।

बहिरंतर्विपर्यासः स्त्रीशरीरस्य चेद्भवेत्।
तस्यैव कामुकः कुर्याद् गृ-द्र गोमायुगोपनम्॥

---

१ ખ મા एकु पूरुषु શબ્દો નથી २ ખ तुम. ३ ખ पाठविउ ४ ખ जयदत्त. ५ ખ आपणपा ६ ખ पहुचउ ७ ખ लोचन ८ ખ बांधवुं ९ ખ कहवु. १० ખ ०नल ११ ખ सउं १२ ખ चालिउ १३ ખ માં ऽसार આટલા અક્ષરો પડી ગયા છે.

यकृच्छकृन्मलश्लेष्ममज्जास्थिपरिपूरिताः ।
स्नायुस्यूता बहीरम्याः स्त्रियश्चर्मप्रसेविकाः ॥

तउ भीम कुमाररहइं महोपशम वशइतउ भववासना त्रूटी गई । मुक्तिकन्यानुरक्त चित्तु हूंतउ भीमु कुमारु श्री[1]अनइ स्त्री तृणही सरीषी न देखइं । जोयण शत मार्गि आविउ हूंतउ सिंहु आघउं पीयाणउं[2] करइ नहीं । जेतीवार बीजा महता पूछइं तेतीवार कूडा ऊतर करइ। 5
जउ दिन ५–६ हूया तिहां तउ पाछइ बीजे महते भीमकुमार आगइ कहिउं 'कुमारवर ! राजेंद्रि अम्ह आगइ सिंहछानउं इसउं[3] कहिउं छइ–"जइ किमइ किहाई गयउ हूंतउ सिंहु आघउ न चालइं तउ तुम्हे बलात्कारि सिंहु बांधी करी आघउं पियाणउं कराविजिउ । " तिणि कारणि जउ तुम्हे भणउ, तउ सिंहु बाधी करी चलावियइ । भीमु कहइ–'आजु जउ पियाणउं आघउं[4]सिंहु न करइं तउ कालि तुम्हे राजादेशु करिजिउ ।' इसउं मंत्रिवचनु 10
एकांति भीमु सिंह आगइ कहइ । संसार निरास बुद्धि हूंतउ सिंहु भीम आगइ कहइ–

न किं चिदत्र संसारे निस्सारेऽस्य शरीरिणः ।
शरीरमपि न स्वीयं स्वीयमस्तीह कस्य चित् ॥

इत्यादि वैराग्य कारकु बहु भणी करी कटक हूंतउ रात्रि समइ प्राहरिक लोकि सूतइ हूंतइ नीसरिउ, कुमारु पुण सरसउ नीसरिउ । किणिहिं गिरिविणोद्देसि जाइ करी पादपोप- 15
गमनु अनशनु[5]करिसु । तउ ति महामात्य माहरउं किसउं करिसिइं । किम मूरहइं बांधी ले-सिइं । जु शरीरु लेसिइं, सु हउ पहिलउं मूंकी[6]रहिसु ।' इसउं भणी करी भीम आगइ आघउ जाइवा लागउ । भीमु भणइ 'मूरहइं तुम्हेई जि शरणु ।' इसउं भणतउ सरसू जु चालियउ[7]। गिरिएकि जाई शुद्ध शिलातलि बिहुं पादपोपगमनु अनुशनु कीधउं । प्रभाति प्रधान महामात्य कुमार भीम सिंह श्रेष्ठि विहुंरहइं अदेखता हूंता पादानुसारि नीसरिया । घणी भुइं गया । 20
किणिहिं पर्वति शिलातलगृहीतदिक्ष कृतपादपोपगमन सिंह भीम देखी करी विलक्ष वदन थिका प्रणमी करी चाटुकारकरणपूर्वु घणउं खमावइं । पाये[8]लागी मनावइं–'पसाउ करी अम्हारु अपराधु खमिजिउ । ऊभा थाउ, जिम नागपुरि जाईइ[9]। एउ वृत्तातु जाणी करी तिल्हं जिम घाणइ घाती राउ कीर्तिपालु अम्हरहइं पीडाविसिइ । तिणि कारणि तुम्हे कृपासमुद्र अम्ह ऊपरि कृपा करी अम्ह सामुहउं काइं देखउ नही ? कांइं[10]अम्हसउं बोलउ नहीं ?' 25

---

१ ખમાં श्री નથી ર ખ पया० ૩ ક્માં આ શબ્દ પડી ગયો છે. ૪ ખમાં આ શબ્દ નથી, કમાં પણ પાછળથી હાંસિયામાં લખવામાં આવેલો છે. ૫ ખમાં अन અક્ષરો પડી ગયા છે. ૬ ખ मूकी. ૭ ખ चालिसउ. ૮ ખ पाए. ૯ ખ जाइयइ. ૧૦ ખ काइं.

इत्येवमादिकु बहुधा भणी करी महामात्यह विलक्षहं पाछा वली सु वृत्तांतु कीर्तिपाल महीपालरहइं जाणाविउ। सिंह[1] बध्यु, कुमारु परिणाविवउ[2]। इसउं राउ मनि चीतवतउ हूंतउ, विह्लउ तिहा आविउ। इसइ महाविरुद्धइ मनि हूंतइ[3] राउ ति महापुरुपु महासत्त्व सिंह-व्याघ्र-चित्रक-शूकर-वृक-प्रमुख-दुष्ट-स्वापद-ससेव्य पद देखी करी मनि चीतवइ 'महासप्रभाव
5 ए महासत्त्व, मइ ए पराभवी नहीं सकियइ। किंतु भक्ति सेवा योग्य ए।' इसउं ध्यायतउ हूतउ[4] राउ तींह कन्हइ गयउ।

> स्वापदैर्दत्तमार्गं तं मार्गंतं वीक्षणान्यपि।
> नमंतं चाटुमंतं च नेक्षां चक्रतुरप्यमू॥

मासोपवासावसानि सुरासुर-नराधीश-ससेव्यमान शुक्लध्यानानल-दग्धकर्मेंधन-वितान
10 मुक्तिपद प्राप्त हूया।

> न योजनशतादूर्ध्वं यामीति तव निश्चयः।
> असंख्यैर्योजनैर्मित्र मां मुक्त्वा किमगाः शिवम्॥

इसीपरि विलपतउ हूंतउ राउ सिंह अनइ भीम बिहु रहइं संस्कारु करी आपणपइ शोकानल दह्यमान-मानसु हूतउ देवे सबोधिउ, भणिउ[5]—'महाराज! शोकु तींहंनउ कीजइ
15 जि अकृत कृत्य हुयइं। ए महात्मा स्तुत्यपाद' इसीपरि तउ पाछइ, पाछउ वली राउ वासंती नगरी गयउ।

> संकोच्य सिंह इव सौवगति यथाप श्राद्धाग्रणीर्झगिति भीमयुतः ससिंहः।
> उच्चैः पदं प्रमदमंदिरमिद्धशर्म्म भव्यास्तथैव विलसंतु वसंतु तत्र॥

॥ दिग्व्रतविषइ सिंहश्रावक कथा समाप्ता॥

---

१ ખ सिंहु २ ખ परिणाविवा ३ ખમા हूंतइ પછી मनि શબ્દ છે ४ ખમ શબ્દ નથી, કમાં પણ પાછળથી ઉમેરવામા આવ્યો છે. ५ ખમાં આ શબ્દ નથી.

१०. सप्तम व्रत उपर कथा.

भोगोपभोग परिमाण करण व्रत विषइ धर्म्म तणी कथा लिखियइ।

कृती मितीकृताहारः सप्तमव्रतलीलया।
5 मुच्यते संचितेनापि कर्मरोगेण धर्म्मवत् ॥

तथाहि—श्रीनिवासकमलु श्रीकमलु इसइ नामि नगरु। दूरीकृताऽसत्यु सत्यु इसइ नामि राजा। 5
जेहनउ खड्गु जिसउ शत्रु-कालरात्रि तणउ दर्प्पणु हुयइ इसउ लेके दीसइ। सु पुण गुणवंतु
कलावंतु लक्ष्मीवंतु भोगी त्यागी जिम स्वर्ग्गि शक्रु राज्यु करइ तिम राज्यु करइ। अनेरइ
दिवसि राजसभा माहि नैमित्तिकु ए[कु][1] कहइ—'महाराज! इणि वरसि[2] इसउ ग्रहयोगु दुष्टु पडिउ-
छइ, जिसइ बारहवरस दुर्भिक्षु पडिसिइ।' राजा प्रधानहं सामुहउं जोयइ। प्रधान भणइं—'महा-
राज! एहना वचननउं संवादु आगइ अनेकि वार अम्हंरहइ हूयउ। तउ पाछइ तिणि नैमित्तिकि[3] 10
वचनि करी, जिम वाति करी तृणु धूजइ तिम, राजेंद्रनउं मनु धूजिउं। तउ पाछइ राजेंद्रि तृण कण
संग्रहु कीधउ। तथा कण-तृण-संग्रहण-व्यग्रि समग्रि जनि हूयइ हूंतइ तदाकालि[4] का एक
दुर्भिक्ष्यवर्णिका[5] आवी। तउ राउ मनि[6] चीतवइ—'हा! निर्धान्य निर्धन जन किहां जाइ-
सिइं, किम थाइसिइं[7]।' इसी चिंता करी संतप्तचित्त राजेंद्ररहइं वर्त्तता हूंता प्रमोदनिमित्तु
आसाढमासनइ पहिले जि पक्षि दिवससमइ पूर्व वातु वाइउ। सुभक्ष फलहं विषइ छइ फलदु 15
जलदु तेहनउ जिसउ[8] अंकूरु हुयइ, इसउ जलदलवु पूर्व दिसि[9] समुदितु राजेंद्रि दीठउ।
जिम भाग्यवंत पुरुषरहइं श्री प्रवर्द्धइ तिम सु जलदलवु विस्तरिउ। वीजइ भणित अंगुली
हुई, तिणि करी दुर्भिक्ष्य हेतु जि छइं दुष्ट-ग्रह तींहरहइं तर्जतउ हूंतउ वीहावतउ हूंतउ; वला-
काई भणित दंत हूया, तींहंकरी जोइसी यणां वचन हसतउ[10] हूंतउ दर्शनमात्रिहि जि दूर्भिक्षु
भाजी करी गाजतउ हूंतउ, धारा भणित मुशल नीपनां तेहेकरी जनतणां दुक्ख-कण खांडतउ 20
हूंतउ; दक्षिणोत्तर लक्षण विहुं समुद्रहं तणउं जिसउ जलाकर्षकु नालु हुयइ इसउं धनुष्कु
ताडी करी सु मेघु वूठउ। जाणियइ किरि दुर्भिक्ष्यरहइं दैवु रूठउ। लेकरहइं तूठउ। इणि
एकहिं जि[11] वृष्टि करी काल निप्पति हुई, इसउं लोकु तदाकालि बोलतउ साभली करी सज्जन
जिम काजुकरी गुणस्तवन-कीर्त्तिभय वीहतउ जाणे मेहु तिरोहितु हूयउ। निवृत्त-चिंता-संताप
महीपतिरहइं वीजइ दिवसि उद्यानपालु वीनवइ—'देव महाराज! तुम्हारइ क्रीडोद्यानि चउमासि 25
रहियाहूंता श्रीयुगंधर सूरिवररहइं आजु[12] केवलज्ञानु ऊपनउ। उद्यानपालरहइं पारितोषिकु[13]

---

१ કમા कु પડી ગયો છે. २ ખ वरिसि ३ ખ नैमित्तिक. ४ ખમા कालि શબ્દ નથી. ५ ખ पर्ण्णिका. ६ ખમા मनि નથી. ७ ખ थाइसि. ८ ખમા जिसइ નથી. ९ ખ दिशि १० ખ हंसतउ. ११ ખ० होजि. १२ ખમા आजु નથી १३ ખમાં આ શબ્દ નથી.

प्रभूतु दानु दे करी, तउ राउ उद्यानवनि चालिउ । त्रिन्हि प्रदक्षिणा दे करी मुनिवररहइं वादी करी उचितस्थानि समासीनु देसना साभलइ । तउ पाछइ प्रस्तावि राजा कृताजली हूंतउ पूछइ– 'भगवन् ! तींहं नैमित्तिकहंनउ वचनु किसीपरि विघटिउं ।' केवली कहइ–'म्रह दुर्योगि करी द्वादश वार्षिकु दुर्भिक्ष्यु हूंतउ, पुण जिण[1] कारणि सु दुर्भिक्षु न नीपनउं सु कारणु ईंहनी मति-
5 रहइं[2] गोचरु नहीं।

तथाहि[3]–पुरिमताल्ह इसइ नामि पुरु। तिहा प्रवरु इसइ [नामि] गुणहं करी प्रवरु नरु एकु हूंतउ । सु पुण नवइ यौवनि कर्म्म वशइतउ रोगु[4] पीडितु हूयउ। सु पुण रसणिंदिउ जिणी सकइ नहीं। पाछइ जु जु आहारु आहरइ, सु सु आहारु तेहरहइ आधारु हुयइ । तउ पाछइ प्रवरु नरु आपणा मन माहि चीतवइ–'जु आहारु शरीररहइं अहितकारकु तेहनउं हउ प्रत्याख्यानु
10 कांइं करउ नहीं। अनाहार प्रत्याख्यानतणउं फलु काइं लिउ नहीं । इसउ चींतवी करी, गुरुनी साखि इसउ भणइ–'जि स्निग्ध लवण मधुर आहार ति हउ आहरिसु नहीं, जि तिक्त कटुक कषाय आहार ति हउं आहरिसु । ऊनोदरता व्रति वर्त्तमानु हूतउ जेहतणा संग वशइ-तउ ईर्ष्यालुथिकी मुक्ति पुरुषहरहइं सामुहूं[5] न जोयइं, स स्त्री सर्वथा परिहरउ । इसउ अंगीकृतु व्रतु सु अखंडु पालतउ हूतउ धर्मतणा प्रभाव वशइ[6]तउ इह लोकिहिं रोगमुक्तु
15 हूयउ। अथवा धर्म्मरहइ किसउं कांई असाध्यु छइ । नीरोगु हुयउ हूतउ सु प्रवरु नरु आप-णपउ[7] व्रतु अम्हेल्हतउ हूतउ, स्वयंवर प्रभूत लक्ष्मीवरु हूयउ । जाणियइ तेहनी विभूति आगइ स्वर्गु अल्पविभूति जाणी करी दासीतणइ मिषातरि तेहनइ घरि देवता सेवावृत्ति करिवा कारणि आवी। तथापि हिं सु विषयाशक्तु न थिओई । मार्गनी कोटिकरी जु तेहनइ घरि धनु आवइ सु धनु सुपात्र[8]दान दयादान उचितदान लक्षण छइ गरूया[9] त्रिन्हि मार्ग
20 तेहेकरी नीसरइ। अनेरइ वरसि रंकलोकहंरहइ दुःप्रेक्षु दुर्भिक्षु[10] नीपनउ । जिम निदाघ समइ जलासय सुसइं तिम यदाकालि सामान्य जन[11] दान धर्म्म खिसइ, तदाकालि प्रवरना दान धर्म्म घणेरउ उल्लसइ।

ग्रीष्मे सरांसि शुष्यंति सत्कल्लोलश्च वारिधिः ।
दुष्काले स्तब्धतां यांति नीचा उच्चाश्च दानिनः ॥

25 तउ पाछइ जिम संसार भयभीतहं एकू जु जिन धर्म्मु सेवियइ, तिम दुर्भिक्ष्य भयभीतहं जनहं एकू जु प्रवरु नरु सेविउ। दिगत-समागत साधु शत-सहस्र-लक्ष-सख्य प्रासुकेषणीय पक्वान्न

---

१ પ जिणि २ પभा ईह नैमित्तिकरहइं આવું વાક્ય છે. ३ પભા આ શબ્દ નથી. ४ પ रोग ५ પ व्हइ. ६ પભા આ શબ્દ નથી ७ પ आपणउ. ८ પભા पात्र. ९ પ व्याइं. १० પભા આ શબ્દ પડી ગયો છે. ११ પભા जन નથી.

दधि दुग्ध घृतादिकहं करी विहरावइ। श्रावक पुण वयनइ अनुसारि पितृ मातृ भ्रातृ समान देखतउ हूंतउ घरहिं जि रहावइ,[१] वस्त्र भोजनादि आपणपा समू जु करावइ। इसीपरि सुपात्र दानैकव्यसनु पोषी करी अखंडु व्रतु प्रतिपाली करी कालयोग वशइतउ प्रवरु मरी करी देवलोकि सुरवरु हूयउ। जिसउ इंद्रु हुयइ ऋद्धि करी तिसउ इंद्र-सामानिकु हूयउ। शाश्वता-र्हंत यात्रादि सुकृतहंकरी आयु पूरी चित्ति चीतवइ—'प्रधानि श्रावकनइ कुलि हउं ऊपजिजिउं; 5
मिथ्यात्वि कुलि राजेंद्रू म होइजिउं।' तउ पाछइ ताहरा नगर समीपि छइ चित्रशालु इसइ नामि विचित्रशालु पुरवरु तिहां छइ शुद्ध-बुद्धि इसइ नामि श्रावकु जिणि इसीं[२] दुर्भिक्षवार्त्ताइं धान्य तणउ संग्रहु[३] न कीधो। तेहनइ विमला इसइ नामि गुणहं करी अति विमला श्राविका; तेहनी कुक्षिसंभूतु सु देवु पुत्रु हूयउ। तेह महाभाग तणइ जन्मि द्वादश वार्षिकु दुर्भिक्षहेतुक ग्रह[४] निर्जिणी करी सुभक्षु कीधउ। इसउं केवलीवचनु सांभली करी केवलीरहइं वांदी करी राउ 10
चित्रशालि नगरि जाई सु वालकु उत्संगि करी इसीपरि स्तुति करइ—

दूर्भिक्ष्यपंकमग्नोर्व्याधार वीर नमोस्तु ते।
राजा त्वमेव मे राज्ये तलाराख्योस्मि तावकः ॥
मूर्त्तिमानिव धर्म्मोयमित्थं दुर्भिक्षभंगकृत्।
इति तस्याभिधा धर्म्म इति धात्रीभृता कृता ॥ 15

तउ पाछइ सु वालकु जातमात्रू[५] हूंतउ प्रसिद्धउ हूयउ। अनेराई जि के पाखतियां राजा छई तेहे[६] पुण आपणइ आपणइ राज्यि धर्म्मनी आण प्रवर्त्तावी करी मेह वरसाविया। समस्त राजमंडलतणां कालोपचित वयोचित प्राभृत दिनि दिनि तेहरहइं आवइं जिम मंदर-कंदरागतु कल्प-पादपु निरुपद्रव थिकउ प्रवर्द्धइ तिम सु वालकु प्रवर्द्धइ। यौवनि आविइ हूंतइ जिम समुद्ररहइं नदी स्वयंवर आवइं तिम सवहीं दिसि तणा जि छइं राजेंद्र तींहंनी दीकिरी स्वयंवर 20
आगत अनेकि सु धर्म्म वालकु परिणिउ। धर्म्मु समस्त-मही-मस्तक-विहिताज्ञु देवगुरु-भक्तिवंतु धर्मवंतु नवां कर्म अवांधतउ पूर्व पुण्य-फल-भोग भोगवतउ प्रस्तावि संयमु ले करी केवलज्ञानु ऊपाडी करी मोक्षि पहुतउ।

भोगोपभोगविरतिं प्रतिपाल्य पूर्वं धर्म्मो यथा शिवमवाप निरस्तपापः।
यूयं तथेह भविकाः प्रतिपद्य सद्यः सिद्धिश्रियं वृणुत तिष्ठत लोकमौलौ ॥ 25

॥ भोगापभोग परिमाण व्रत प्रतिपालन विषइ धर्म्म राजेंद्र कथा समाप्ता ॥

---

१ प रहाविउ. २ प इसी. ३ प संग्रहणु. ४ प हेतुग्रह. ५ प मात्र. ६ प तेहें.

११. अष्टम व्रत उपर कथा.

अनर्थदंड विरति-व्रत विषइ सुरसेन कथा लिखियइ ।

अनर्थदंडवीराम[१] व्रतधीरा महोदयम् ।
लभंते सुरसभारभासुराः सुरसेनवत् ॥

5 वसुंधरावंधुरा बधुरा इसइ नामि नगरी । तिहा वीरशिरोमणी वीरसेन नामि राजा । सुरसेन महासेन नाम बि पुत्र । अनेरइ दिनि महासेन तणी जीभ सूणी । जिम इंधनह करी वैश्वानरु प्रज्वलइ तिम ओषधह करी सु शोफु रोगु वृद्धि गयउ । 'धर्म्मु एकु एहरहइ ओसहु ।' इसउ भणी वैद्यहं सु मेल्हिउ । क्रमि क्रमि तेहनी जीभ कुही । माखिए मधुमंडप जिम वेवाली । उग्रु दुर्गंधु इसउ उछलिउ जिसइ मातृ-पितृ-भार्यादिकह बधु-जनहं मेल्हिउ । तेह कन्हइ भाडाई वडइ को रहइ 10 नहीं । तदाकालि सुरसेन भाई भाईनइ स्नेहि दुर्गंधु जिणी करी कन्हइ राहिउ । तथा च भणितम्—

विसणे मित्त-परिक्खा दाण-परिक्खा य होइ दुक्काले ।
विणए सीस-[२]परिक्खा सुहड-परिक्खा य संगामे ॥

सुरसेनु महासेन आगइ कहइ—'भ्रात ! जा तू रहइ एउ जीभरोगु छइ तां तउ प्रत्याख्यानु करि—हउ काई[३] तउ आहरउ जउ मूरहइ रोगु जाइ । अन्यथा न आहरूं । तिणि 15 पुण तिमहीं जि कीधउ । पुनरपि सुरसेनु कहइ—'भ्रात महासेन ! जइ किमइ इणि प्रत्याख्यानि थिकइ तउं मरिसि तउ अनशनतणउ फलु लहिसि ।' इसउ भणी करी भाई आगइ आघा थई[४] सुरसेनु वस्त्रांचलि करी माखी वींजइ[५] । निश्चल थिकउ[६] पंच परमेष्ठि नमस्कारु गुणइ । नमस्काराऽभिमंत्रिति जलि करी महासेननी जीभ सींचइ । महासेनकन्हा नमस्कारु समरावइ । जिम जिम जीभ माहि सु नीरु परिणमइ तिम तिम रोगोपशमु हुयइ ।

20 **निर्व्यथं निर्व्रणं नीरुग् निर्दुर्गंधं सुगंधि च ।**
मुहूर्त्तांते मुखं जज्ञे क्व न धर्म्मः प्रभावभाक् ॥

रोगमुक्तु महासेनु देखी करी लोकु सहर्षु हूयउ । ति पुण सुरसेन महासेन बे सहोदर धर्म्म विषइ अति सादर हूआ[७] । श्रीभद्रबाहु नामि श्रीमदाचार्य मिश्र एकवार तिहा समोसरिया । अवधिज्ञान बलि करी ति महात्मा अनेक भविक-लोकहं तणा संदेह ऊतारइं । सुरसेन महासेन वा-25 दिवा आविया । त्रिन्हि प्रदक्षिणा देकरी वादी करी धर्म्म-देशनामृतु[८] पानु करइ । देशनावसानि सुरसेन महासेन जीभ-रोग-कारणु पूछिउ । मुनि भणइ—'मणिपुरु नामि पुरु, तिहा जिनधर्म्माधि-

---

१ કમા **वीराम** શબ્દ ઉપર **विरमणं** આવું ટિપ્પણુ કરેલુ છે २ ખ **सिस्स.** ३ ખ **काई.** ४ ખમા આના બદલે **थाई** શબ્દ છે ५ ખ **वीजइ.** ६ ખ **थकउ.** ७ ખ **हुया.** ८ ખ **मृत**

वासितु मदनु इसइ नामि सुभट्ट एकु हूंतउ। तेहतणा [1]धीरवीर इसां[2] नामहं[3] प्रसिद्ध बि पुत्र हूंता। जिनवचनामृत-पान-व्यसन-भावइतउ मिथ्यात्व-विष-मूर्छा-गोचर न[4] हूयाई। कदाकालिहिं ति उद्यान वनि गया। वसंताभिधानु मुनि-प्रधानु निज मातुल मुनि भूमिपतितु तेहे तिहां दीठउ। "किसउं हूयउं" इसी परि आकुलइ धीरि पूछतइ[5] हूंतइ पुरुषु एकु तिहां वर्तमानु कहइ–'प्रतिमा-वर्तमान मुनि[6] रहइं देखी करी दुष्ट भुजंगमु एकु मुनिरहइं डसी करी बिलि पइठउ, जिम चोरु चोरी करी दुर्गि पइसइ।' तदा कालि मातुलमोह-वशइतउ वीरु कहइ– 'रे रांकउ सु सांपु नासतउ[7] तुम्हे मारिउ कांइं नहीं।' धीरु तेह आगइ कहइ–'सार्पि जीवतइ गयइ आ महापुरुष किसइ कारणि जीभ करी पापु बांधइ।' कोप लगी वीरु वली कहइ– 'जिणि महामुनि डसिउ तिणि मारिएई[8] धर्म्मू जु हुयइ, किसी परि पापु हुयइ? । क्षत्रिय तणउ धर्म्मु एहू जु जु दुष्टु निग्रहियइ, शिष्टु पालियइ। इसउं किमइ असत्यु वचनु तु[9] मूरहइं जिव्हा पातकु आवउ।' धीरु तेहनउं वाक्यु चीतवतउ हूंतउ अपार कृपारस-सागरु मणि-मंत्रौ-षधी-बलि करी मुनिरहइं जीवाडइ। मुनींद्र जीवनइतउ सुभटरहइं अतिवल्लभ हूया। धीर वीर बे सुत सर्व-जन-स्तुत शुभधर्म्म पालता पातकु प्रज्वालता कीर्त्ति करी आपणपउ ऊजा-लता सुचिरु कालु नांदिया। धीरु पूर्णायु हूंतउ सुरसेन तउं हूयउ। अनालोचित तादृग्वचन पापकर्म्मा वीरु ताहरउ भाई महासेनु हूयउ। सर्व वैद्यहं रहइं असाध्यु सर्प्प-घात-वचनपापइतउ तेहरहइं जिव्हारोगु हूयउ। भवांतरि जु तइं यति जीवाडिउ तेहनइ प्रभावि तू रहइं रोगभंग लब्धि हुई। तिणि कारणि नमस्काराभिमंत्रित जलि करी तइं भाई जीवाडिउ, रोगु नसाडिउ। इसउं पूर्व[10] भवु सांभली करी बिहुंरहइं जाति-स्मरणु ऊपनउं। बिहुं व्रतु लीधउं। तीव्रु तप-श्चरणु कीधउं। तिणिहिं जि[11] भवि केवल ज्ञानु उपाडी[12] करी मुक्ति पहुता।

अनर्थदंडस्य फलं दुरंतं श्रुत्वा महासेननरस्य भव्याः।
शिवं निवृत्तेः सुरसेनपुंसस्तं वर्जयध्वं कुशल लभध्वम् ॥

॥ अनर्थ दंड विरति व्रत विषइ वीर जीव महासेन कथा समाप्ता ॥

---

१ ખ तेहं तणा. २ ખ इसइ. ३ ખ नामि. ४ ખમા न નથી. ५ ખ पूछितइ. ६ ખમાં मुनि શબ્દ પડી ગયો છે. ७ ખ नासतु. ८ ખમા मारिई. ९ ખ तउ. १० ખ पूर्वु. ११ ખમાં जि નથી. १२ उपार्जि.

१२. नवम व्रत उपर कथा.

सामायिक व्रत विषइ केसरि नाम श्रावक पुत्र कथा लिखियइ।

क्रूराचारोपि संसारकारया मुच्यते द्रुतम्।
केसरीवत् त्रुटत्कर्म्मदामा सामायिकव्रतात्॥

5 तथाहि–कामपुरु नामि पुरु। तिहां विजउ नामि राजा, सिंहदत्तु नामि श्रेष्टि। अनेरइ दिवसि सिंहदत्तु श्रेष्टि राजेंद्ररहइ प्रणमी करी वीनवइ–'महाराज! केसरी नामि माहरउ पुत्रु चोरु छइ, पाछइ मूरहइ दूषणु म देजिउ। हउ तुम्ह आगइ वीनवी करी निरुत्तरु हूयउ[1], राजा केसरी-रहइं देसवटउ दियइ। सु पुण केसरी राजेंद्रतणा भयलगी नगर हूतउ नीसरिउ, देसातरि गयउ। श्रातु हूंतउ किणिहिं वनगहनि स्वच्छ शीतल स्वादु जल सरोवर तीरि बइठउ चीतवइ–'मइं 10 जन्म लगी चेतना समवि हूयइ हूतइ अचोरिउ पाणी ऊ[2] पीधउ नहीं! अहो अकार्य! धिग्[3] मूरहइं आजु मइ सु[4] अचोरिउं पीवउं। [इसउ][5] मनमाहि चींतवतउ हूंतउ सु चोरु श्रातु कातार-सरोवारि जलु पियइ। स्नानु पुण करइ। तउ पाछइ श्रमरहितु हूतउ सरोवर-पालि-स्थितु चूततरु ऊपरि चडिउ फल खाई[6] तृप्तउ हूयउ[7] हूंतउ मनमाहि चीतवइ–'हहा मूरहइ किम आजू नउ दिवसु चोरी पाखइ जाइसिइ। इसउं तिणि चोरि चीतवतइ हूंतइ एकु को[8] योगींद्रु 15 मन्त्र-सिद्ध-पादुकु आकाश हूतउ सरोवरि ऊतरिउ। पादुका तीरि मूकी [ओरहउ[9] परहउ जोई] करी भूमि लागता पगहकरी सरोवरमाहि पइठउ। तदाकालि तिणि चोरि वृक्ष ऊपरि बइठइ थिकइ[10] इसउं चीतविउ–'एह योगीरहइ गगन गमन विषइ ए पादुकाइ जि[11]कारणु, नहीत किम ईंह पाखइ भूमि-गतिहिं जि हींडइ। तिणि कारणि ए पादुका चोरउ, दिनु सफलु करउं।' इसउ चीतवी चूत हूतउ ऊतरी पादुका पादे पहिरी गगनि[12]गमनु करइ। तउ पाछइ दिनु 20 किणिहिं वनि गहनि रही करी राति समइ ति पादुका पादे पहिरी आपणइ घरि गयउ। जनक सिंहदत्त श्रेष्टि आगइ कहइ–'राउ वीनवी करी तइ हउ नगर हूतउ कढावियउ।' इसउ भणी करी ता दंडे करी मारइ, जा मरइ। मूयउ बापु मूकी करी जि जि महर्द्धिक घर तींह तींहं हूंतउं सारु सारु अपहरइ। इसी परि त्रिन्हि पहर रात्रि सीम स्वेच्छाचारि तेह पुरमाहि विचरइ। रात्रि तणइ चउथइ पहरि पुनरपि दुर्गमारण्य-मडनि तिणिहिं जि सरोवरि[13] गयउ। इसी 25 परि राति राति सु चोरु तेऊ जु नगरु विविध प्रकारह करी लूटइ। पापबुद्धि हूंतउ साधु सती मुख्य[14]लोक रहइ सतावइ। तउ पाछइ जिम जमागमु भयकरु हुयइ तिम तिणि नगरि निसा-

---

१ ख हुअउ २ खमा ऊ नथी ३ खमा धिग् धिग् बे वार छे ४ खमा सु मइं ५ कमा इसउ शब्द पडी गयेल छे ६ खमा काई ७ खमा आ शब्द नथी ८ ख कोई ९ कमा आ पाठ नथी १० ख वइठउ थिकउ. ११ ख पादुकाहिजि. १२ ख गगन-विषइ १३ ख सरोवरोवरि. १४ ख सतीई मनुष्य.

गमु हुयइ। तेहनउं स्वरूपु नगराधिपति जाणी करी तलारु बोलावइ। तलारु विलक्ष्य वदन हूंतउ अधोमुखु होई करी वीनवइ–'महाराज! जे भूमि-गोचरु चोरु हुयइ तउ माहरइ पाडि हुयइ। एउ खेचरु चोरु माहरइ पाडि नही। तउ पाछइ राउ कोपाग्नि ताप संतप्तु आपणउं मुक्खु दुक्खितलोक दर्शनि करी हुई छइ कृपा तेह लगी नेत्रहं हूंता नीसरइ छइ जि अश्रुजल तींहंकरी शीतल करइ। तपोधनहंतणा जि छइं तपोधर्म्म, शीलवती जि छइं युवती तींहंतणा 5
छइं शीलधर्म्म, तींहंतणइ प्रभावि सु चोरु मूरहइं दृष्टिगोचरु होइजिउ।' इसउ भणी करी अल्प परिवारु राउ आपणपइं पुरी माहि फिरी चोरु जोयइ। जि के देवकुल, जि के आश्रम पद, जि के जन-समवाय पद, जि के वेश्या पाटक, जि के कलाल पाटक, तिहां सगले जोइउ जउ न लाधो[1] तउ राउ[2] नगर बाहिरि नीसरिउ। वापी कूप तडागारामादि स्थानि फिरिउ जउ तिहांई न लाधो तउ राउ वनमाहि[3] गइउ। तिहां दिव्यु गंधु उपलभी करी[4] गधानुसारि जायतउ 10
हूंतउ वन बहुमध्यि चंडिका-भवनु देखइ। तेहमाहिं चंडिका-मूर्त्ति चंपकादि दिव्य कुसुम संभार संपूजित देखइ। धूपोत्क्षेपु करतउ हूंतउ पूजारउ राय कन्हइ आविउ। राइ तेहतणा दिव्य वस्त्र देखी करी विस्मयापन्नि हूंतइ पूछिउ–'आजु किसइ उच्छवि,[5] किसइ पर्वि, किणि भावियइं इसी पूजा करावी छइ। इसी विभूषा देवीरहइं करावी छइ। तूरहइं देव दूष्यावतार तार वस्त्र किणि दीधा?" इसइ राइ पूछतइ हूंतइ पूजा कारकु भणइ–'महाराज! मू दुक्खितरहइं देवी चंडिका 15
तूठी। प्रभाति देवी पूजा निमित्तु आवउं अनइ देवी तणां पादहं आगइ वर्त्तमान स्वर्ण-रत्न-संतान लहउं। तिणि कारणि त्रिहुंकाले देवीरहइं पूजउं। देवी प्रभावि धनद धनजय कारकु धनु लहउं।' तउ राजा चित्ति चीतवइ–निश्चइंसउ रात्रि समइ देवी पूजा निमित्तु चोरु ईहां आवइ। देवी आगइ सुवर्ण रत्न मूकइ[6]। इसी परि चोर-संचारु तिहां संभावी करी प्रभात समइ राउ वासर कृत्य करिवा कारणि आपणइ आवासि आविउ। रात्रि समइ सारु[7] परिवारु 20
सहितु भयरहितु निज नगरहितु राउ चंडिका देवकुलि आविउ। शूरशूर सुभट पूर[8] दूर रहावी करी आपणपइ स्तंभातरितु होई करी देवकुल माहि रहिउ। बिहुं पहर राति समइ पादुकासिद्ध तेह तस्कररहइं तिहां आविया हूंता राउ देखइ। पादुका युगलु ऊतारी, वामि करि लेई, देवकुल माहि जाई सु चोरु प्रधान रत्नहं करी देवीपूजा करइ। पूजा करी देवी आगइ कहइ–'स्वामिनि! चोरी कारिया स्वेच्छाचारिया मू रहइं प्रभूत धनदा क्षणदा सदा होइजिउ।' इसउं 25
भणी पाछउ वली सु महाबली जागतउ हूंतउ द्वारु रूधी करी रहितु हूंतउ राउ तिणि बोलाविउ–

---

१ ખ ०धउ. २ ખમા राउ નથી. ३ ખમા राउ नगरबाहिरि वनमाहि આવો પાઠ છે. ४ ખમા આ વાક્ય પડી ગયેલ છે ५ ખ उत्सवि. ६ ખ मुकइ. ७ ખ सार. ८ ખ पूरइ.

'रे जीवतउ नहीं जाइ।' इसी परि राइ धर्षितु हूंतउ बोलाविउ हूतउ सु चोरु प्रस्तावोचितु हथियारु पादुका-युगलु रायना भालस्थल उद्देसी करी लाखइ। तेहनइ प्रहारि करी वेदनाक्रांति राइ हूंतइ[1] "एउ हउं जीवतउ जायउ छउ।" इसउ भणतउ सु चोरु बाहिरउ नीसरिउ। क्षणांतरि राइ वेदनारहिति हूयइ हूतइ "जाइ, जाइ" इसी परि राइ भणतइ हूंतइ पाखतियां 5 राहविया हूंता जि उद्भट सुभट ति तेह रहइं केडइं धाया। आकाशगति हेतु पादुका-युगलु मंत्रि वचनइतउ ले करी राउ पुणि चोर पूठि द्रवडिउ। सु चोरु गतिवेगि करी दूर-मुक्त शूरपरु पुर ग्रामांतर मार्गांतर लोक संचार माहि पग गोपविवा कारणि गयउ। भयवशइतउ कांई एकु वैराग्यि गयउ हूतउ चीतवइ "आजु माहरउ पापु निश्चइसउं फलिउ।" कही[2] एक ग्राम तणइ आरामि ध्यान तत्त्वु उपदिशतउ छइ मुनि तेह तणउ इसउ वचनु सांभलइ—

10 सर्वत्र ध्यानसमतारुचिर्मुच्येत पातकैः।
जनः सद्योपि तिमिरैः कृतदीप इवालयः॥

जिम दीवइ कीधइ आलउ घरु तिमिरहं अंधकारहं मेल्हियइ तिम जन लोकु ध्यान वशइतउ सर्वत्र[3] समता रुचि—किसउ अर्थु, सर्व भाव विषइ समानबुद्धि-परिणामु, न कही[4] विषइ सरागु, न कही विषइ सद्वेषु जु जुयइ सु सर्वत्र समतारुचि कहियइ। इसउ समता वर्तमानु 15 जनु पातकहं पापहं, सद्य.—किसउ अर्थु, ते तीही जि वार मुच्येत मेल्हियइ। इसउं ध्यान तत्त्वु साभली करी सु चोरु तिहाई जि रहितु सार वस्तु ति असार वस्तु, निंदा विरहितु, मध्यस्थ भाव निमग्नु, शेष रात्रि आगामिउ दिनु ध्यानस्थितु थाकउ। तिम, जिम परमात्मानइ विषइ मनु स्थिरु हूयउ। घातिकर्म्म क्षयवशइतउ शुक्लध्यानांतरिका वर्त्तमान हूंता संध्या समइ केवल ज्ञानु ऊपनउं। तथा च भणित—

20 तव तविए जव जविए बहु-विह-कालेण हुंति सिद्धीओ।
निद्दहिय-पुन्न-पावं झाणेण तक्खणा सिद्धी॥

तथा ध्यान समता ऊपहरउ ससारि सुखु पुण काइ नथी। तथा च भणित—

जं च कामसुहं लोए जं च दिव्वं महासुहं।
वीयरायसुहस्सेहंऽणतभागं न अग्घई॥
25 अज्जं वा कल्लं वा केवलनाणं भवेइ का तत्ती।
समरसतत्ते पत्ते किं अहिअं भणसु मुक्खे वि॥

तेतलइ प्रस्तावि राउ पुण सर्वत्र जोयतउ हूंतउ तिहा आविउ। तउ पाछइ एक

१ ખભા राइ हुयइ हुंतइ २ ખ कहीं ३ ખ सर्व जीव

गमा सार-सुभट-संभार परिवृतु 'मारि मारि' करतउ राउ तेह कन्हइ आवइ। बीजा गमा वि-
मानाधिरूढ देव विद्याधर तेह महात्मारहइं केवल ज्ञान महिमा करिवा काराणि तेह कन्हइ
आवइं। तउ पाछइ देव-निर्मित हेम-कमलोपरि बइठउ देव-सेवितु सु चोरु देखी करी रा-
जादिक मारिवा आवता हूंता ति सगलाई सेवा कारिया हूया। तउ पाछइ [1]साधु केसरी दंत-
कांति करी चंद्रकांति सुभिक्षु करतउ हूंतउ धर्म्मदेशना करइ। देशनावसानि राजा पूछइ— 5
'भगवन्! किहां सु तुम्हारउं चोर चरित्रु, किहां एउ साधु-चरित्रु। तत्रापि हिं किहा एउ केवल
ज्ञान समुदउ?'। तउ पाछइ केवली कहइ—

राजन्ना जन्मतस्तादृक्पापभाजोप्यभून्मम।
श्रीरियं मुनिवाग्लब्धसामायिकमनोलयात्॥
यद्वर्षकोटितपसामप्यच्छेद्यं तदप्यहो!। 10
कर्म्म निर्मूल्यते चित्तसमत्वेन क्षणादपि॥

इसी परि राउ स्तुति करी पाछउ वली आपणइ नगरि गयउ। अनेक भविक लोक प्रतिबोध
करतउ केसरी केवली वसुंधरातलि विहरिउ।

पितृघातकरे सर्वजनसंतापकारिणि।
चोरेपि दत्तनिर्वाणं सेव्यं सामायिकं बुधैः॥ 15

॥ इति सामायिक व्रत विषइ केसरी चोर कथा समाप्त॥

१३. दशम व्रत उपर कथा.

देशावकाशिक व्रत विषइ सुमित्र मंत्री कथा लिखियइ--

देशावकाशिकं यावत् कुरुते श्रद्धया सुधीः।
तदन्यत्रात्मनां तेनाभयं दत्तं भवेदिति॥ 20
प्रभावात्तस्य नश्यंति विघ्नाः शुद्धात्मनामिह।
सुमित्रस्यैव जायंते परत्र च शुभश्रियः॥

तथाहि—मालव्य देश मंडन[2] चंद्रिका नामि नगरि। तारापीडु इसइ नामि राजा
तिहां राज्यु करइ। सुमित्रु नामि तेह तणइ मंत्री। सु पुणि जिन-धर्म्म-काचकर्पूर-पूर-वासित-
सप्त-धातु परम सुश्रावकु। शास्त्र-रत्न-दीप-दीपिति जेहतणइ हृदय-मंदिरि जीवाजीवादि वस्तु 25
स्फुटइ जि वर्त्तइ। तारापीडि राजा नव तारुण्यवंतु पुण्यकर्म्म-पराङ्मुखु हूंतउ, सुमित्र

१ ખમા साधु केसरी सुकेसरी दंतकांति करी चंद्रकांति આ જાતનો ગડબડતો પાઠ
છે. २ ખ मंडनदेशि.

मंत्रि प्रति भणइ–' देवपूजा गुरुपाद-वंदना दानादि धर्म्म करी किसइ कारणि गुधा आपणउं जन्मु नींगमइ। तू जिम दिफटहं इंह धर्म्म हं करी सुवर्ण आपणउ देहु कउणु दहइ?' इसी परि राइ भणतइ हूतइ सुमिन्नु मंत्री विकसित वदनु हूंतउ राजेंद्र प्रति भणइ–' महाराज ! इसी परि अनुचितु वचनु तुम्हे काइ बोलउ। हउ तुम्हहींरहइ धर्म्म विषइ उद्यमु कराविवा वाछउं, तुम्हे पुण मूंहीरहइं धर्म्मोद्यमु राखिवा वाछउ। हा महा विषादो मम। सु धर्म्मु किम विफलु हुयइ, जेह तणा प्रसादइतउ स्वर्ग मोक्ष तणा सुख पुण जीव हेलांई लाभइं।' अथ[1] राजा प्राह–'महामात्य ! मूरहइं विपत्ति-निवृत्ति संपत्ति-प्रवृत्ति लक्षणु धर्म्म-फल प्रत्यक्षु दिखालि।' मंत्री प्राह–'महाराज ! तउ राजा, अनेरा ताहरा सेवक लोक,एउ प्रत्यक्षु धर्म्मतणउ फलु किसउ न हुयइ।' तउ राउ मंत्रि प्रति भणइ–' एकि पाखाणि वि खंडि कीधइ हूंतइ एकि खंडि देवता
10 मूर्त्ति हुयइ, बीजइ खडि सोपानु हुयइ। भणि[2] महामात्य! किसउ एकि खडि पुण्यु कीधउं, बीजइ खडि किसउं[3] पापु कीधउ छइ। तिणि कारणि स्वभावही जि तउ विश्वरहइं भव्या-भव्यता व्यवस्थापिवी।' इसइ वचनि राइ भणिइ हूतइ मंत्री भणइ–' राजन् ! पाषाणु अ-जीवु, तेह तणउ दृष्टांतु न हुयइ,[4] काईं जउ धर्म्मी जीवु हुयइ तउ धर्म्म पुण्य पाप हुयइ। तथा जइ सजीवु पाषाणु कहियइ–' पुढवि चित्तमंतमक्खाया ', ' अणेगे जीवा पुढो सत्ता ',
15 ' अन्नत्थ सत्थ परिणएण ' इसा आगम वचनइतउ। तउ तींहीं जि आगम वचनइतउ[5] अ-नेक-जीवरूपु सु पाषाणु, न पुनरेक-जीवरूपु। तउ पाछइ तीहींरहइ भव्याभव्यता धर्म्मा-धर्म्म विनिर्मितइ जि जाणिवी।' तउ राउ भणइ–' महाभाग ! तइं हउ वचनि करी[6] निरु-त्तरु कीधउ। तथापि हिं प्रत्यक्ष दृष्टि हिं जि धर्म्मि फलि करी हउ निःसदेहु धर्म्मु मानउ। अनेरइ प्रकारि मानउ नहीं।' इसी परि राइ अनइ मंत्रिरहइ नितु धर्म्मविषइ विवादु हुयइ।
20 तउ सु विवादु प्रसिद्धउ हूयउ। एक वार सर्व वासर-कर्म्म नीपजावी करी पाक्षिक प्रतिक्रमण करिवा कारणि सध्या समइ आपणइ आवासि आविउ। मंत्री गृहावधि देशावकाशिकु व्रतु करइ। प्रतिक्रमणु विधिवत् सामाचारी करी शुद्ध धर्म्म-ध्यान-परायणु पच परमेष्टि नमस्कार परावर्त्तनु करिवा लागउ। तदा कालि राइ-प्रतीहारु आवी मंत्री आगइ कहइ–' महामात्य ! गुरु कार्य [7]कारणि राउ तुम्हरहइ तेडइ। तउ मंत्री प्रतीहार आगइ कहइ–' प्रभातसीम मंत्री गृह
25 बाहिरि जाइवा नियम-निश्चउ-चित्तु हूंतउ रहिसिइ घरि हि जि। प्रभाति राजासमीपि आ-विसिइ।' इसउ भणी करी पडिहाररहइ मोकलइ। पचपरमेष्टि महामत्र संस्मरण सुधासेकि करी मनुष्य जन्मु कल्पवृक्षु मंत्री तदा कालि विशेषि करी सींचइ। अथ पुनरपि पडिहारु

१ ખમા અથ નથી २ ખ भणइ ३ ખમા આ શબ્દ પડી ગયેલ છે ४ ખ हुइ. ५ ખ वचननउं. ६ ખમા આ શબ્દ નથી. ७ ખમા कार्यं करिवा.

आवी करी भणइ–'मंत्रिन् ! तुम्हारउं कथनु सांभली करी आज्ञा-भंग-करक जिम तुम्ह ऊपरि राउ रूठउ । वली हउं मोकलिउ । मंत्री न आवइं तउ म आवउ । तउं माहरी सर्वाधिपत्य मुद्रा ले आवि । इणि कारणि हउं मोकलिउ।' इसउं प्रतीहार तणउं वचनु साभली करी हसतउ हूंतउ जिम दु:शील दासी आपणा घरहूंती बाहिरि कीजइ तिम राजमुद्रा मोकलइ । मंत्रि-मुद्रा कौतुकी हूंतउ करि पहिरी करी प्रतीहारु हर्षितु हूंतउ आपणां पायकहं आगइ कहइ– 5
'हउं[1] मंत्री हूयउ ।' 'मंत्रि-मस्तक-मुकुट शनैः शनैः पाउधारउ'–इसउं भणता भट्टहं परिवृतु घर हूंतउ प्रतीहारु राजमंदिर ऊपरि चालिउ जेतलइ, तेतलइ दैव जोगइतउ कींहीं एकहं सुभटहं निःकासिताऽसिदंडहं कूटी करी पाडियउ । यम-मंदिरि मोकलिउ । जि नाठा सि नाठा, जि केतलइ रहिया, प्रतीहार तणा जण हूंता तेहे वैरी पुण मारिया। 'प्रतीहारु मारिउ २'–इसउ कोलाहलु ऊछलिउ। राजा कोलाहलु साभली करी क्रोधांध-लोचनु हूंतउ चित्ति चीतवइ–'प्रतीहारु 10
अम्हारउं काजु करतउ दुष्टि मंत्री मारिउ । एह मंत्रीतणउं मस्तकु आपणइ हाथि छेदी करी उलालउं दडानी परि, तउ मूरहइ वलवंत पणउं सफलु[1] हुयइ; निवृत्ति पण हुयइ।' इसउं बोलतउ कोपाटोप-संयुक्तु गोपति जिहां ति प्रतीहार घातक घातार्त्त कंठ-गत-प्राण पडिया छइं तिहां आविउ। 'महामात्य तणा ए घातक अथवा[2] अनेरा के वैदेशिक सुभट होइसिइं'–इसउं ध्यायतउ हूंतउ राउ दीप-दीपिताशावकाशु ति देखी करी बोलावइ–'कउणि तुम्हे, किसइ कारणि 15
प्रतीहारु मारिउ ।' तउ पाछइ ति भणइं–'महाराज ! अम्हे वंठ कंठागत प्राण हूया, अम्हहइं किसउं[3] पछइ दैव दुराचारु पलि जिणि अम्हारा स्वामीतणउ मनोरथ निष्फल कीधउ । तिणि

तिणि कारणि आजु कल्याणकारक पुण्य कर्म्म तणउ फलु प्रत्यक्षु[1] मइं दीठउ। चिरकाल संचितु धर्म्म विषइ मोहु मूरहइ ऊतरिउ।

सुकृतं जीवितव्यं ते व्रतेनानेन पोषितम्।
शोषितं त्वत्कृतेनाद्य दुष्कृतं दुर्यशश्च मे॥
तत्सहस्वापराधं मे प्रसीद वद सात्विक!।
धर्म्मं कारय मां तात! तारयाशु भवार्णवम्॥

इसी परि राइ खमावतइ हूंतइ मंत्री भणइ—'महाराज! जु तूरहइं एवडउ अनुतापु हूयउ, तिणि करी तूरहइ अपराधु को नहीं।' तउ पाछइ राउ तूठइ हूतइ पुनरपि सर्वाधिकार मुद्रा सुमित्ररहइ दीधी। सुमित्र प्रेरिति हूतइ राइ पूर्णचंद्र गुरु समीपि गृहिधर्म्म-मुद्रा लीधी। अथवा युक्तउं छई, राइ अधर्म्मि हूतइ संसारागदेश-मुद्रा महामात्यरहइ दीधी। महामात्यि सधर्म्मि हूतइ प्रत्युपकार करण वांछा करी रायरहइ मोक्षागदेश-मुद्रा गुरुकन्हा दिवारी। तउ धर्म्म विषइ एक चित्तता हुई हूंती तींहरहइ धर्म्म प्रोत्सर्प्पणा करता [2]कालु जायइ। सु वृत्तांतु जाणी करी अनेरइ दिनि शूरसेनु सुमित्र—भयभीतु हूंतउ काधि कुहाडउ करी रायनी सेवा करिवा आविउ। राइ सन्मानितु हूतउ भक्तु सेवकु हूयउ। राजा देवार्चा दान सुध्यान तीर्थयात्रा तीर्थ-प्रभावनादि धर्म्म-कर्म्मह मंत्रि-प्रदर्शितह करी आपणउ जन्मु जीवितु पवित्रु करइ।

तत्र स्वामिनि बालोपि चंडालोपि न सो भवेत्।
न यो जिनाधिनाथोक्तधर्म्मैकर्म्मठतां गतः॥
इत्थं मंत्री च भूपश्च कृत्वा धर्म्मं विशुद्धधीः।
महाविदेहे मर्त्यत्वं प्राप्य लेभे शिवश्रियम्॥
ततः सुमित्रदीपेन गमितेऽस्मिन् प्रकाशताम्।
देशावकाशिकपथे संचरंतु सुखं बुधाः॥

इति देशावकाशिक व्रत विषइ सुमित्र मंत्रिवर कथा समाप्त॥

---

१ ખ मा આ શબ્દ નથી. २ ખ करता.

१३. एकादश व्रत उपर कथा.

पौषध व्रत फल विषइ मित्राणंद नाम मंत्रीश्वर कथा लिखियइ–

तच्च शुद्धोक्तचारित्रव्रतवत्परिपाल्यते ।
अहोरात्रमथाशेषां रात्रिं यावत् जितेंद्रियः ॥
भवोरग-गदच्छेदे पौषवत्पोपधव्रतम् ।
आपत्तापभिदे मित्रानंदमंत्रिपतेरिव ॥ 5

यथा–पुष्पपुरु इसइ नामि पुरु । जिणि आपणी काति करी भानु जीतउ सु भानु इसइ नामि तिहां राजा । तेह तणइ मित्राणंदु इसइ नामि मंत्री अति विख्यातु हूंतउ; जिणि आपणइ बुद्धि-बलि करी बृहस्पति जीतउ। एक वार सभामांहि राजेंद्र मंत्रींद्रहं[१] रहइं पुण्य व्यवसाय विषइ विवादु हुयउ । यथा–राजा कहइ–'व्यवसाऊ जु सर्व समीहित संपादकु ।' मंत्री 10 कहइ–'पुण्यू जु समस्त मत संपूरकु ।' तउ पाछइ मंत्रि वचनि करी सकोप[२] गोपति मंत्रिपति प्रति[३] भणइ–'जइ किमइ व्यवसायु प्रमाणु नहीं, पुण्यू जु प्रमाणु; तउ महामात्य ! पुण्य-बल-गर्जितु हूंतउ तउं[४] माहरउं राज्यु छइ[५]। जि[६] को तूरहइ अनुगमनु करिसि,[७] तेहना प्राण माहरउ खड्गदंडु अपहरिसिइ । जा महामात्य, तुच्छ-मति-मंदिर आपणउं वचनु प्रमाणु करि; घरि जाइवउं नहीं, ईहांई[८] जि हूंतउ अनेरइ थानाकि जा[९] । माहरउ देशु मेल्हि ।' 15 इसी रायतणी आण लही करी महामात्यु आपणा वचन विषइ सनेठाहु हुंतउ तिहांई जि हूंतउ पादचारिहिं जि एकल्ल जु देशांतरि चालिउ । जेहे पाए आगइ भुइं छिवी न हुंतीइ तेहे पाए भूमि माथइ[१०] नहीं, हींडतउ[११] पुण्य प्रमाण प्रकटिवा तणइ कारणि रायतणी अग्र महिषी छइ मही, तेहनइ माथइ जाणे पगधर[इ][१२] छइ । इसी परि जायतउ हूंतउ मध्यंदिन समइ श्रांतु हूंतउ तृसियउ[१३] हूयउ हूंतउ जिसउ चंद्रकला कोटिहिं करी घटितु[१४] 20 हुयइ इसउं महासरोवरु एकु देखइ । भृंग-भृंगारव शब्दहं करी सहित[१५] छइं कमल तेई भणित मुखर बोलता मुख हूया, चाल्ता छइं लोल कल्लोल तेई भणित हाथ हूया, तेहे करी तृषित लोकरहइं जाणे सु सरोवरु करुणाकर पुरुष जिम हकारइ छइ । तिणि सरोवरि स्नानु पानु करी पालि तरुवर-तलि रहितु आकाशहूंतउ अतिवेगि ऊतरतउ आपणपा आगइ आविउ दिव्यु पुरुषु एकु देखइ । "संध्या समइ मनोवांछितु सैन्यु तू रहइं एउ मणि देसिइ । 25

१ ખ मंत्रीरहइं. २ ખ सकोपु. ३ ખ मंत्रि प्रति. ४ ખમા નથી ५ ખ लहइ. ६ ખ जु. ७ ખ करिसिइं. ८ ખ ईहाई. ९ ખ जाहि. १० ખ माथिइ. ११ ખ हींडइ. १२ કમા इ નથી. १३ ખમા तृसिउ. १४ ખમા આ શબ્દ નથી. १५ ખ तहिं.

पाछइ पूजितु समाराधितु हूंतउ प्रभूत लक्ष्मी पुण देसिइ"—इसउं भणी चिंतामणि हाथि दे करी 'किसउ किसउ' इसउ[1] आश्चर्यु चित्ति चींतवतइ[2] मत्री तेह आघउ काई अकहिऊ जु करी सु पुरुषु आकासि ऊपरमिउ। अथानंतरु चपकादि-तरु-कुसुमे चिंतामणि पूजी करी मित्राणंदु सानंदु सभृतु हूंतउ चतुरगु सैन्यु करावी करी सन्या समइ गज वाजि रथ पदाति लक्षण चतुरंग दल सहितु प्रबल निस्वान निस्वनह करी दस-दिसि-मुख मुखर करतउ आपणा पुर[3] प्रति पाछउ आविउ। जिम महोरगु उदिररहइं वेढु घातइ तिम पुररहइं वेढु घाती रहिउ। 'कउणि पुर वेढु घातिउ'—इसउ भणी करी राइ हेरक मोकलिया हूता, हेरक कटक माहि आविया। मित्राणंदि मलिपतिइं देखी करी ओलखिया। भणिउं—'अहो हेरकउ! भुजागर्व-गर्वितु छइ भूपति, सु तुम्हे माहरइ वचनि भणउ "पुण्य प्रभावि संप्राप्त सैन्य-संभारु मित्राणदु मत्रींद्रु बाहिरि आविउ छइ। जइ किमइ तउ विक्रमाक्रांत समुद्रांत महीतलु छइ, तउ विहल्उ[4] प्रहारु करिवा निमित्तु ढूकि।" इसी परि हेरक आभीपी करी वस्त्रालंकारह संभूषि करी राजेंद्र कन्हइ मत्रींद्रि मोकलिया। ति पुण हेरक पाछा नगर माहि आवी करी राजेंद्ररहइं तिमहिं जि वीनवइ। तउ पाछइ राउ अति विस्मय-रस सप्रेरितु हूतउ सुस्थ-चित्तु होई करी केतलाई[5] लोकह परिवृतु हूतउ जिहा मित्राणदु मत्रींद्रु छइ तिहा आविउ। मित्राणंदु पूर्व प्रतिपन्नता लगी रायरहइ सामुहउ ऊठिउ। "इष्ट विरोधु तां हुयइ जां दर्शनु न होइं सतह रहइ।" प्रणमी करी राउ सिंहासनि बइसालिउ महतइ। महतउ राइ बलात्कारि हिं बइसाली करी भणिउ—

> वरेण्यं पुण्यमस्त्येव शौर्यादिव्यवसायतः।
> पुण्यभाजां हि जायंते किंकरा व्यवसायिनः॥
> भवद्भाग्योदयः कश्चिद् यस्मादीदृक् चमूचयः।
> येनाहं तव भर्त्तापि भृत्यवद् यामि तेऽग्रतः॥

इसी परि राउ भणी करी पूछइ—'भणि मत्रीवर! ए असभृतिक विभूति तूरहइ किहा हूती हुई?।' मत्री भणइ—'महाराज! पुण्यप्रभावि किसउ किसउ[6] न हुयइ।' दिव्य पुरुष तणउ वृत्तांतु कहिउ। तउ पाछइ राउ रुलियायितु थिउ। महामहोत्सवि मत्रींद्र-सहितु राजेंद्रु साश्चर्य पुरलोक विलोकीतउ हूंतउ पुरमाहि आविउ। तेह दिवस लगी चिंतामणि प्रभावि पूर्ण मनोवाछित लक्ष्मीकु छइ मित्राणदु मत्री, तेहसउ रायरहइ महामैत्री हुई[7]।

---

१ આ બે શબ્દો નથી. २ ખ चींतवइ छइ ३ ખ पुरु ४ ખ वहि० ५ ખ केतलाई एकहं. ६ ખમા બે વાર નથી ७ ખ हुयई

एक वार भानु भूपतिसउं सभामाहि बइठां हूंता महामात्यरहइं उद्यानपालु आवी रायरहइं वधावइ–'महाराज ! सीमंधरु इसइ नामि यथार्थाभिधानु गणधरु तुम्हारइ क्रीडोद्यानि समोसरिउ'। उद्यानपालरहइं सर्वांग-विभूषणु बहु द्रविण वितरणु करी भानु भूपतिसउं मित्राणंदु मंत्रीश्वरु मुनिवंदन-निमित्तु उद्यानि पहुतउ। तिहा नेत्रामृत-वृष्टिकारक मुनिवररहइं राजेंद्र मंत्रींद्र वांदी करी देशनामृत-पानविधान-निमित्तु उचित स्थानकि बइठा । देशनावसानि राजेंद्रु 5 मुनि कन्हा पूछइ-'भगवन् ! मित्राणंदरहइं विपत्ति समइ[1] संपत्ति किसा पुण्यनइ प्रभावि हूई[2] ?'। मुनि भणइ-'महाराज ! जिसी लक्ष्मी भारि करी भूमि पतित अमरावती हुयइ इसी पद्मपत्रा नामि पुरी हूई। स पुण लोकमाहि अति प्रसिद्ध हूई। तिहां प्रतापि करी जिसउ ग्रीष्म ऋतु आदित्यु हुयइ इसउ आदित्यु नामि महीपति हूयउ । राजेंद्ररहइं प्रतिबिंब समानु सुदत्तु इसइ नामि श्रेष्ठि हूयउ। सु पुणु जिणधर्म-धुरंधरु हूयउ । पर्व-दिवसि पाप-संताप-निर्वाप[3] 10 विषइ महौषधु पौषधु लेकरी बिहुं पहर राति समइ समता-वर्तमानु गृहतणइ एक देशि रहिउ छइ। तदाकालि को एकु तस्करु अवस्वापिनी-विद्या-विशारदु प्रभूत भूतभैरव सुभट परिवार परिवृतु तेहनइ घरि धाडि पइठउ। चोरनी विद्या करी बीजा लोकरहइं नींद्र वाशि करी मूर्च्छा आवी। पंचपरमेष्ठि नमस्कार महा-मंत्रानुभावि सुदत्त श्रेष्ठि विषइ विद्या न प्रभवियइ। तेह सुदत्त श्रेष्ठि देखतारहइं अदेखता हूंता ति तस्कर गृह-सारु समस्तु हर्षित थिका[4] मुसइं। कपाट 15 फाडिवा लागा, मंजूस ऊघाडिवा लागा, द्रव्य तणइ कारणि भूमिगृह पुण फोडिवा लागा।

अहो महात्मनस्तस्य धर्म्मावष्टंभयंत्रितम् ।
जातेऽप्युत्पातजातेऽपि न ध्यानाच्चलितं मनः ॥
अनागतेष्वथागत्य गृह्णत्सु धनपद्धतीः ।
तेषु यातेषु च ध्यानभेदोऽभूत्तस्य न क्वचित् ॥ 20

प्रभात समइ धननाशु देखी करी सकलि गृहजनि शोकु करतइ हूंतइ श्रेष्ठि पोसहु पारी करी दिवस कृत्य विधिसउं करिवा लागउ। पुण्यानुभावि तेहनइ घरि वली [5]घणाई जि धन हूयां। अनेरइ दिनि सु अवस्वाप विद्याचोरु सेठिना घरहूंती ज वस्तु चोरी हूंती तेह वस्तु माहिलउ एकु अमूल्किु मुक्ताफलनउ हारु ले करी तिणिहिं जि नगरि वीकिवा आविउ। सु हारु सुदत्तु श्रेष्ठि तणइ वाणउत्रि ओलखिउ। सु चोरु धरी करी तलाररहइं आपिउ। सु चोर-धरण-वृत्तांतु 25 सुदत्तु जाणी करी इसउं चीतवइ–

---

१ ખમા रहइ આનો પાઠ છે. २ ખમાં हुयइ. ३ ખ निर्वापि. ४ ખમાં थका.
५ ખમાં घणां.

[1]न सत्यमपि भाषेत परपीडाकरं वचः ।
लोकेऽपि श्रूयते यस्मात् कौशिको नरकं गतः ॥

इसउं चींतवी वेगि आवी चोररहइ मेल्हावइ । किसी परि आपणा वाणउत्र ऊपरि कोपु करतउ हूंतउ तलार आगइ कहइ–'एउ अम्हारउ वाणउत्रु काईं जाणइ नहीं । मइं पूर्विहि एकि दिनि एउ हारु एहरहइ मूलि दीधउ हूतउ । एउ किसउं इसउं माणुसु छइ जिसउ चोरी करइ । एह वात माहि कांईं छइ नहीं । तुम्हे एउ परहउ मेल्हउ ।' तलारि चींतविउं–'जु धणी जाणइ सु पाडोसी न जाणइं । तिणि कारणि सेठि साचउ, वाणउत्रु कूडउ । अनइ द्वादशव्रत-धारी श्रेष्ठि कूडउं बोलइ नहीं ।' तिणि कारणि श्रेष्ठिनइ कथनि तलारि चोरु मेल्हिउ । बुद्धिमंत तणी बुद्धिरहइ असाध्यु काईं नहीं । श्रेष्ठि चोरु आपणइ घरि आणी जीमाडी कापड पहिरावी मोकलिउ । कहिउ–'वली राखे चोरी करतउ । मइ दया लगी[2] मेल्हाविउ छइ । पुण बीजउ कोइ मेल्हावसि नही[3] ।' इसउं भणी करी घरि मोकलिउ[4] । श्रेष्ठिनइ उपकारि करी[5] चोरहीं[6] तणउं मनु भीनउ । तउ पाछइ अकृत्य-करण-भय-तणी जाणिवा वाछा ऊपनी । यदुक्तं–

जो जारिसेण संगं करेइ अचिरेण तारिसो होइ ।
कुसुमेहिं संवसंता तिला वि तग्गंधया हुंति ॥

जेतलइ नगर बाहिरउ नीसरिउ तेतलइ उद्यानमाहि धर्म्मोपदेशामृत वृष्टि करी[7] भव्य पादपवनी सींचतउ शुद्धप्रभाभिधानु प्रधानु मुनि देखइ । वादी धर्म्म-देशना साभली कृत्या-कृत्य-विवेकु जाणी करी तीही जि कन्हइ दक्षु दिक्षा-ग्रहणु करइ । सुद्ध चारित्रु प्रतिपाली करी अंतकालि समाधि सहितु आयु पूरी सौधर्म्मे[8] देवलोकि महर्द्धिकु देवु हूयउ । सुदत्तु श्रेष्ठि पुण आपणउं आयु पूरी महाराज ! एउ तुम्हारइ मित्राणंदु मंत्री[9] हूयउ ।

संपत्सु ह्रियमाणासु यद्बभंज न पौषधम् ।
पदे पदे च तेनाथं विचित्राः प्राप संपदः ॥
स तु चौरः सुरीभूतः स्मरन्नुपकृतीः कृती ।
चिंतार्त्ताय ददौ रत्नं प्रस्तावं प्राप्य मंत्रिणे ॥

राजा भणइ-'भगवन् ! वली तेह देवरहइ मंत्री देखिसिइ ।' मुनि भणइ-'मंत्रिरहइं जदा[10] कालि [11]जीवितातु होइसिइ, तदा कालि तेह देवतणउ दर्शनु मुक्तिहेतु होइसिइ ।

---

१ ખમા આ શ્લોક નથી અને એ પછીનુ વાકય પણ નથી २ ખ करी. ३ ખ को नहीं मेल्हावइ. ४ ખમા આ શબ્દો છુટી ગયા છે ५ ખમા નથી ६ ખમા हीं નથી. ७ ખમા નથી ८ ખમા सौधर्म्मि ९ ખમાં मंत्रो मित्राणंदु १० ખમા यदा. ११ ખમા तुम्हे०

जिणि कारणि नंदीश्वरि तीर्थि देववंदना-मनोरथि मंत्रीरहइ हूयइ हूंतइ प्रस्तावड़ सु देवु विमानु आणी देसिइ। तिणि विमानि चडिया मंत्रिरहइं जायता हूंता शुद्ध शुक्ल ध्यानानुभावि लवण समुद्र ऊपरि थिका केवल ज्ञानप्राप्ति,आयु क्षिइ, मुक्ति होइसिइ।' इसउं मुनि वचनु सांभली करी राजादिक लोक महाधर्म्म-वास-वासित मानस हूंता सानंद निज निज मंदिरि गया।

श्रीमित्राणंदमंत्रींदोः श्रुत्वा पौषधसत्फलम् । 5
सुमेधसः स्थिरध्यानास्तत्कुर्वंतु सुपर्वसु ॥

॥ इति पौषधव्रत विषइ मित्राणंदकथा ॥

१५. द्वादश व्रत उपर कथा.

अतिथि-संविभाग व्रत विषइ सुमित्रा नाम परम श्राविका तेहतणी कथा लिखियइ–

तथाहि–एकावयवतोप्येतत्सेवितं श्रद्धयाधिकम् । 10
सुमित्राया इवोन्नत्यै जायते द्वादशं व्रतम् ॥

श्रीवसंतपुरु इसइ नामि पुरु। अतिविक्रमवंतु[१] इसइ नामि अति विक्रमवंतु[२] राजा तिहां राज्यु करइ। तेह तणइ वसु इसइ नामि मंत्रीश्वरु हूयउ। सदा विकसिति जेह तणइ बुद्धि-कमलि राज्यलक्ष्मी सुखिहिं वसी। जिनदासु नामि राजारहइं अति वल्लभु श्रेष्ठि हूयउ। सु पुण[३] जिण-धर्म्म-धुरा-धौरेउ, कल्याण-तणउं निधानु सकल-पौर-जन-प्रधानु वर्तइ । तिणि एतलाके 15 सुवर्णरत्न उपार्जियां जेहे करी क्षितिमाहि अनेकि मेरु पर्वत अनेकि रोहण पर्वत उपाइयइं । "यक्षराजु धनाध्यक्षु" इसी परि जाचक लोकि भणिउ । धनदु जिनदासु एकु संस्तविउ । वाणारसी नगरी वास्तव्यु धनु नामि छइ सार्थवाहु, तेहतणी रत्नवती नामि दीकिरी कलावती लीलावती तिणि परिणी । जिनदासरहइं विश्वासपात्रु लक्ष्मीधरु इसइ नामि ब्राह्मणु जिसउ लहुडउ भाई हुयइ इसउ परम मित्रु हूयउ । राजेंद्र अतिविक्रमवंतरहइं तिम न मंत्री न 20 पुत्रु न कलत्रु वल्लभु जिम जिनदासु वल्लभु । एह जिनदास मित्ररहइं राउ कदा कालि मंत्रिमुद्रा पुण आपिसिइ–इसी परि वसु सचिवेश्वरु मनमाहि संभावी करी जिनदासरहइं मारिवा विषइ मनु करइ। जिणदासु पुण दक्षतालगी चक्षुर्मनो-विकारादिकहं लक्षणहं करी आपणपा ऊपरि विरुद्धउ जाणइ । तउ पाछइ राजेंद्ररहइं मोकलावी करी तीर्थयात्रा-व्याजांतरि भार्या रत्नावती पीहरइ[४] मोकलइ। वसुमंत्रींद्रि पुण तेह माराविवा कारणि रात्रि तेहतणा घरतणउ 25 मार्गु आपणां जणहं कन्हा रूंधाविउ। जिणदासु पुण मार्गु वाधुउ[५] जाणी करी अतिसप्रभाव

१ ખ अति विक्रम. २ ખમા આ શબ્દ નથી. ३ ખ पुणि. ४ ખ परिहरि. ५ ખ वाधउ.

[1]न सत्यमपि भाषेत परपीडाकरं वचः ।
लोकेऽपि श्रूयते यस्मात् कौशिको नरकं गतः ॥

इसउं चींतवी वेगि आवी चोररहइ मेल्हावइ। किसी परि आपणा वाणउत्र ऊपरि कोपु करतउ हूंतउ तलार आगइ कहइ—'एउ अम्हारउ वाणउत्रु काईं जाणइ नहीं। मइं 5 पूर्विहि एकि दिनि एउ हारु एहरहइ मूलि दीधउ हूंतउ । एउ किसउं इसउं माणुसु छइ जिसउ चोरी करइ। एह वात माहि काईं छइ नहीं। तुम्हे एउ परहउ मेल्हउ।' तलारि चीतविउं—'जु धणी जाणइ सु पाडोसी न जाणइ । तिणि कारणि सेठि साचउ, वाणउत्रु कूडउ । अनइ द्वादशव्रत-धारी श्रेष्टि कूडउं बोल्इ नहीं ।' तिणि कारणि श्रेष्टिनइ कथनि तलारि चोरु मेल्हिउ। बुद्धिमंत तणी बुद्धिरहइ असाध्यु काईं नहीं । श्रेष्टि चोरु आपणइ 10 घरि आणी जीमाडी कापड पहिरावी मोकलिउ। कहिउ—'वली राखे चोरी करतउ। मइ दया लगी[2] मेल्हाविउ छइ। पुण बीजउ कोइ मेल्हावसि नही[3]।' इसउ भणी करी घरि मोकलिउ[4]। श्रेष्टिनइ उपकारि करी[5] चोरहीं[6] तणउ मनु भीनउ । तउ पाछइ अकृत्य-करण-भय-तणी जाणिवा वाछा ऊपनी। यदुक्तं—

जो जारिसेण संगं करेइ अचिरेण तारिसो होइ ।
15 कुसुमेहिं संवसंता तिला वि तग्गंधया हुंति ॥

जेतलइ नगर बाहिरउ नीसरिउ तेतलइ उद्यानमाहि धर्म्मोपदेशामृत वृष्टि करी[7] भव्य पादपवनी सींचतउ शुद्धप्रभाभिधानु प्रधानु मुनि देखइ। वादी धर्म्म-देशना सांभली कृत्या-कृत्य-विवेकु जाणी करी तीहीं जि कन्हइ दक्षु दिक्षा-ग्रहणु करइ। सुद्ध चारित्रु प्रतिपाली करी अंतकालि समाधि सहितु आयु पूरी सौधर्म्मे[8] देवलोकि महर्द्धिकु देवु हूयउ । सुदत्तु श्रेष्टि पुण 20 आपणउं आयु पूरी महाराज ! एउ तुम्हारइ मित्राणंदु मंत्री[9] हूयउ।

संपत्सु ह्रियमाणासु यद्बभंज न पौषधम् ।
पदे पदे च तेनार्थं विचित्राः प्राप संपदः ॥
स तु चौरः सुरीभूतः स्मरन्नुपकृतीः कृती ।
चिंतार्त्ताय ददौ रत्नं प्रस्तावं प्राप्य मंत्रिणे ॥

25 राजा भणइ-'भगवन् ! वली तेह देवरहइ मत्री देखिसिइ।' मुनि भणइ-'मंत्रिरहइं जदा[10] कालि [11]जीवितातु होइसिइ, तदा कालि तेह देवतणउं दर्शनु मुक्तिहेतु होइसिइ ।

---

१ ખમા આ શ્લોક નથી અને એ પછીનુ વાક્ય પણ નથી. २ ખ करी. ३ ખ को नहीं मेल्हावइ ४ ખમા આ શબ્દો છુટી ગયા છે ५ ખમા નથી ६ ખમા हीं નથી. ७ ખમા નથી ८ ખમા सौधर्म्मि ९ ખમા मंत्री मित्राणंदु. १० ખમા यदा. ११ ખમા तुम्हे०.

जिणि कारणि नंदीश्वरि तीर्थि देववंदना-मनोरथि मंत्रीरहइ हूयइ हूंतइ प्रस्तावज्ञ सु देवु विमानु आणी देसिइ। तिणि विमानि चडिया मंत्रिरहइं जायता हूंता शुद्ध शुक्ल ध्यानानुभावि लवण समुद्र ऊपरि थिका केवल ज्ञानप्राप्ति,आयु क्षिइ, मुक्ति होइसिइ।' इसउं मुनि वचनु सांभली करी राजादिक लोक महाधर्म्म-वास-वासित मानस हूंता सानंद निज निज मंदिरि गया।

श्रीमित्राणंदमंत्रींदोः श्रुत्वा पौषधसत्फलम् । 5
सुमेधसः स्थिरध्यानास्तत्कुर्वंतु सुपर्वसु ॥

॥ इति पौषधव्रत विषइ मित्राणंदकथा ॥

१५. द्वादश व्रत उपर कथा.

अतिथि-संविभाग व्रत विषइ सुमित्रा नाम परम श्राविका तेहतणी कथा लिखियइ–

तथाहि–एकावयवतोप्येतत्सेवितं श्रद्धयाधिकम् । 10
सुमित्राया इवोन्नत्यै जायते द्वादशं व्रतम् ॥

श्रीवसंतपुरु इसइ नामि पुरु। अतिविक्रमवंतु[1] इसइ नामि अति विक्रमवंतु[2] राजा तिहां राज्यु करइ। तेह तणइ वसु इसइ नामि मंत्रीश्वरु हूयउ। सदा विकसिति जेहं तणइ बुद्धि-कमलि राज्यलक्ष्मी सुखिहिं वसी। जिनदासु नामि राजारहइं अति वल्लभु श्रेष्ठि हूयउ। सु पुण[3] जिण-धर्म्म-धुरा-धौरेउ, कल्याण-तणउं निधानु सकल-पौर-जन-प्रधानु वर्तइ। तिणि एतलाके 15 सुवर्णरत्न उपार्जियां जेहे करी क्षितिमाहि अनेकि मेरु पर्वत अनेकि रोहण पर्वत उपाइयइं। "यक्षराजु धनाध्यक्षु" इसी परि जाचक लोकि भणिउ। धनदु जिनदासु एकु संस्तविउ। वाणारसी नगरी वास्तव्यु धनु नामि छइ सार्थवाहु, तेहतणी रत्नवती नामि दीकिरी कलावती लीलावती तिणि परिणी। जिनदासरहइं विश्वासपात्रु लक्ष्मीधरु इसइ नामि ब्राह्मणु जिसउ लहुडउ भाई हुयइ इसउ परम मित्रु हूयउ। राजेंद्र अतिविक्रमवंतरहइं तिम न मंत्री न 20 पुत्रु न कलत्रु वल्लभु जिम जिनदासु वल्लभु। एह जिनदास मित्ररहइं राउ कदा कालि मंत्रिमुद्रा पुण आपिसिइ–इसी परि वसु सचिवेश्वरु मनमाहि संभावी करी जिनदासरहइं मारिवा विषइ मनु करइ। जिणदासु पुण दक्षतालगी चक्षुर्मनो-विकारादिकहं लक्षणहं करी आपणपा ऊपरि विरुद्धउ जाणइ। तउ पाछइ राजेंद्ररहइं मोकलावी करी तीर्थयात्रा-व्याजांतरि भार्या रत्नावती पीहरइ[4] मोकलइ। वसुमंत्रींद्रि पुण तेह मारिविवा कारणि रात्रि तेहतणा घरतणउ 25 मार्गु आपणां जणहं कन्हा रूंधाविउ। जिणदासु पुण मार्गु वाधुउ[5] जाणी करी अतिसप्रभाव

१ ખ अति विक्रम. २ ખમા આ શબ્દ નથી. ३. ખ पुणि. ४ ખ परिहरि. ५ ખ वाधउ.

बहुमूल्य रत्न ले करी लक्ष्मीधर मित्र सहितु कर्म्मकर-वेपु करी पुरु हूंतउ नीसरिउ । मार्गु अजाणतो भयवशइतउ निरंतरु जायतउ हूंतउ आरिण्य[1] माहि पडिउ । तिहां जउ अतिश्रांतु तृषाक्रांतु हूयउ तउ वस्त्राचल वद्ध सप्रभाव रत्न-परपरा मित्र-लक्ष्मीधर-कारि आपइ । जिसउं साक्षात्कारि तेह तणउ जीवितव्यु हुयइ तिसी स रत्नपरपरा छइ । तउ पाछइ आपणपइं
5 किणिहिं कूपि पाणी जोयतउ हूंतउ रत्नतणइ लोभि तिणि लक्ष्मीधरि मित्रि पगे धरी ऊपाडिउ हूंतउ कूपि पडिउ। पडतउ हूतउ 'कउणु इउ' इसइ वचनि करी बोलाविउ हूतउ आपणी प्रियतमा रत्नवती ओलखी करी भणइ-'प्रियतमि! तउ पुण एह कूप माहि किसी परि पडी। सु ताहरउ[2] परिवारु किहा गयउ। हा हा धिग धिग्! विधि-विडंवनारहइं।' सा ई अवस्था पतितु कातु संनिधि-सप्राप्तु देखी करी हर्षविषादास्रु-संकर-सकीर्णु लोचनु करइ । प्रियतम
10 मेलापकइतउ धन्यु आपणपउ, तिहाईं[3] मनती हूती भणइ-'ए हउं रत्नवती ताहरी सुंदरी प्रिया। तिहा हूती जायती हूंती अटवी माहि आवी सगल्ड सार्थु चोरे लसिउ। सु परिजनु नासी करी गयउ। चोरे जेतीवार माहरा शीलभग करिवा कारणि समुद्यमु कीधउ, तेतीवार हउ धाई करी शील-रक्षाकारणि आकुली हूंती कृतात-मुख प्रतिरूप एह कूपमाहि पडी । तुम्हारा वदनालोक भोक्तव्य कर्म्महकरी जीवी। कहउ न, तुम्हरहइ एह कूपमाहि किसीपरि पतनु हूयउं।
15 तिणि सचिवि विद्वेषियइ तुम्हरहइं विरोधइतउ किसउं कीधउं[4]।' जिनदासु कहइ तिणि सचिवि मारणोत्सुकि हूयइ हूतइ हउ कर्म्मकर वेषि एकल्उ नीसरिउ। निरंतरि विहारि ईंहां आविउ। तृसिउ हूंतउ एह कूपमाहि पडिउ, पाणी देखतउ पादस्खलना वसइतउ।' निर्जल तेह कूपमाहि नाहि-प्रमाणु जलु हूयउ, पुण्य प्रभावइतउ। जिसुउ[5] खीरु हुयइ इसउं सु नीरु पी करी ति बे स्वेद खेद तृस उपसमावी करी अतिसुप्रीत चित्त हूया। अथ क्षणातरि
20 तिहा[6] सार्थु एकु आविउ । जिसउ तीहं तणउ पुण्यकुभु हुयइ तिसउ कुंभु रज्जु बांधी करी पाणी काढिवा कारणि तेह कूपमाहि किणिहिं मूकिउ । सु कुंभु माहि जेतीवार साहिउ तेतीवार तिणि पुरुषि माहि माणसु[7] जाणी[8] अपर पुरुष आणी ताणी करी बाहिरि, जिम जमसुख हूता काढियइ तिम, काढिया। बे जण जेतलइ ति कूया हूतां नीसरिया तेतलइ आगिलइ गमइ रहितु छइ सार्थु सु "कूया हूंतउ मिथुनु नीसरिउ" इसउ कोलाहलु करइ । तेह शब्दइतउ
25 कौतुकी सार्थवाहु पुण तिहां आविउ। भर्त्तार सहित दीकिरी देखी करी मनमाहि विस्मया-पन्नु हूयउ। जिणदासु पुण 'सुसुरउ एउ' इसी परि धन सार्थवाहरहइं ओलखी करी चमत्कृत-चित्तु हूंतउ प्रणामु करइ। 'किसउ एउ' इसी परि सविस्मय थिका सार्थवाहरहइ

१ ખ अरण्य. २ ખ ताहरुं ३ ખ तिहाईं. ४ ખમા આ શબ્દ નથી. ५ ખ जिसउ. ६ ખમા નથી ७ ખ माणुसु ८ ખ जाणी करी.

पूछतां हूंता जिणदासि आपणउ वृत्तांतु मूल लगी सगळ कहिउ । तिणि स्वजनि संबंधि हूयइ हूंतइ व्यसन तणउं दुहेलउं सगळ गली गयउ । ति सव्वे पुटकुटी माहि सुखिहिं रहियां । आथमण मिसांतारि जाई करी आदित्यि तीहं तणइ आश्चर्य कारकि इसइ चरित्रि कहियइ हूंतइ जाणे जोएवा[1] कारणि उदयमिसि संध्या समइ शशी आविउ । अथ चंद्रोदय समइ जिनदासु देह-चिंता करिवा प्रचुरतरु वणांतारि गयउ । तिहां लक्ष्मीधरु सूतउ देखी[2] जोयइ, तउ मूयउ देखइ । अक्षितु[3] सु देखी करी मित्रवच्छलु सर्प्प-डंकु तेहरहइं जाणी करी दुक्खितु हूयउ । तेह कन्हा सुप्रभाव[4] रत्न ले करी पाणी ओहली तेहरहइं पाई जीवाडइ । तउ क्षणांतारि सु जीवितु देखी जिनदासु रलियायतु थिउ ।

उपकृत्युपकुर्वाणा भ्रियंते धरया न के ।
अपकृत्युपकारी यस्तेन तु भ्रियते धरा ॥

लक्ष्मीधरु जीविउ हूंतउ जिनदासरहइं देखी करी लज्जावनम्रमुखु हूयउ । तउ पाछइ जिनदासु तेह आगइ कहइ–' मित्र ! हउं तइं कूया माहि न घातिउ किंतु पदस्खलन लगी हउं आपहे कूया माहि पडिउ । तउं आपणा मन माहि किसीयइ लाज म करि । किसउं को कुणही मरता पूठि मरी सकइ छइ ? । मूरहइं अधुना धनु सार्थवाहु मिलिउ । हउं तेहसउं बाणारसीं नगरीं जाइसु । तउं ईहांई हूंतउ आपणइ थानकि जा । इसी परि परि छविउ हूंतउ सु लक्ष्मीधरु ब्राह्मणु सलज्जु थिकउ[5] वसंतपुरि गयउ । जिणदासु धनसार्थवाह सरसउ लाजतउ हूंतउ बा-णारसी ऊपरि चालिउ । जेतलइ लक्ष्मीधरु वसंत पुरि गयउ तेतलइ जिणदास तणइ वियोगि दुक्खितु अतिविक्रमवंतु नामि महीरक्षितु देखइ । तउ पाछइ लक्ष्मीधरु जाई करी राय आगइ जिनदासु अनइ [महा][6] मात्य बिहुं तणउ संबंधु कहइ । सु वृत्तांतु सांभली करी अतिविक्रमवंति राजेंद्रि वसुनामि महामात्यु गुप्ति कीधउ । जेतीवार जिणदासु देखतउ[7] हुयइ जिम तेतीवार तेह तणउ वइरी मारउं–इसा कोपवशइतउ महा दुक्खि घातिउ ।

अथ घडिया[8] जोयणी सांढि चडी करी पुरुष-द्वय-सहायु रायु आपणपइं बाणारसीं नगरीं जिणदास लेवा गयउ । जिम को[9] जाणइ नही तिम जाई जिणदासु मनावी सरसउ [ले][10] करी राउ वसंतपुरि आविउ । जिणदासु मन माहि चींतवइ वसु पुनरपि मइं[11] महामात्य पदि थापिवउ । तउ पाछइ राजेंद्र कन्हा जिणदासु सर्वैश्वर्य मुद्रा लही करी जण-नायकु[12] वीनवी करी मंत्रिपदु वसुरहइं अपावइ । अनेरइ दिनि उद्यानपालि आवी राउ वधाविउ-

१ ખ जोइवा २ ખ देखी करी. ३ ખ अक्षतु. ४ ખ स्वभाव स्वकीय.
५ ખ थकउ. ६ કમા महा શબ્દ પડી ગએલ છે. ૭ ખ देखतु. ८ ખ अथ वाडिया.
९ ખ कोई. १० કમાં પડી ગએલ છે. ११ ખમાં આ શબ્દ નથી. १२ ખ नाराउ.

बहुमूल्य रत्न ले करी लक्ष्मीधर मित्र सहितु कर्म्मकर-वेषु करी पुरु हूंतउ नीसरिउ । मार्गु अजाणतो भयवशइतउ निरंतरु जायतउ हूंतउ अरिण्य[1] माहि पडिउ । तिहां जउ अतिश्रांतु तृषाक्रांतु हूयउ तउ वस्त्रांचल बद्ध सप्रभाव रत्न-परपरा मित्र-लक्ष्मीधर-कारि आपइ । जिसउं साक्षात्कारि तेह तणउं जीवितव्यु हुयइ तिसी स रत्नपरंपरा छइ । तउ पाछइ आपणपइं
5 किणिहिं कूपि पाणी जोयतउ हूंतउ रत्नतणइ लोभि तिणि लक्ष्मीधरि मित्रि पगे धरी ऊपाडिउ हूंतउ कूपि पडिउ। पडतउ हूतउ 'कउणु इउ' इसइ वचनि करी बोलाविउ हूंतउ आपणी प्रियतमा रत्नवती ओलखी करी भणइ-'प्रियतमि! तउ पुण एह कूप माहि किसी परि पडी। सु ताहरउ[2] परिवारु किहां गयउ। हा हा धिग धिग्! विधि-विडंबनारहइं।' सा ई अवस्था पतितु कांतु संनिधि-संप्राप्तु देखी करी हर्षविषादास्रु-संकर-सकीर्णु लोचनु करइ । प्रियतम
10 मेलापकइतउ धन्यु आपणपउ, तिहाईं[3] मनती हूंती भणइ-'ए हउं रत्नवती ताहरी सुंदरी प्रिया। तिहा हूंती जायती हूंती अटवी माहि आवी सगळ सार्थु चोरे लसिउ। सु परिजनु नासी करी गयउ। चोरे जेतीवार माहरा शीलभंग करिवा कारणि समुधमु कीधउ, तेतीवार हउ धाई करी शील-रक्षाकारणि आकुली हूंती कृतात-मुख प्रतिरूप एह कूपमाहि पडी । तुम्हारा वदनालोक भोक्तव्य कर्म्महकरी जीवी। कहउ न, तुम्हरहइ एह कूपमाहि किसीपरि पतनु हूयउं।
15 तिणि सचिवि विद्वेषियइ तुम्हरहइ विरोधइतउ किसउं कीधउं[4]।' जिनदासु कहइ तिणि सचिवि मारणोत्सुकि हूयइ हूतइ हउं कर्म्मकर वेषि एकलउ नीसरिउ। निरतरि विहारि ईहां आविउ। तृसिउ हूतउ एह कूपमाहि पडिउ, पाणी देखतउ पादस्खलना वसइतउ।' निर्जल तेह कूपमाहि नाहि-प्रमाणु जलु हूयउ, पुण्य प्रभावइतउ। जिसुउ[5] खीरु हुयइ इसउ सु नीरु पी करी ति बे स्वेद खेद तृस उपसमावी करी अतिसुप्रीत चित्त हूया। अथ क्षणातरि
20 तिहां[6] सार्थु एकु आविउ । जिसउ तीह तणउ पुण्यकुभु हुयइ तिसउ कुंभु रज्जु बांधी करी पाणी काढिवा कारणि तेह कूपमाहि किणिहिं मूकिउ । सु कुंभु माहि जेतीवार साहिउ तेतीवार तिणि पुरुषि माहि माणसु[7] जाणी[8] अपर पुरुष आणी ताणी करी बाहिरि, जिम जममुख हूता काढियइ तिम, काढिया। बे जण जेतलइ ति कूया हूतां नीसरिया तेतलइ आगिलइ गमइ रहितु छइ सार्थु सु "कूया हूंतउ मिथुनु नीसरिउ" इसउ कोलाहलु करइ। तेह शब्दइतउ
25 कौतुकी सार्थवाहु पुण तिहा आविउ। भर्त्तार सहित दीकिरी देखी करी मनमाहि विस्मयापन्नु हूयउ। जिणदासु पुण 'सुसुरउ एउ' इसी परि धन सार्थवाहरहइ ओलखी करी चमत्कृत-चितु हूंतउ प्रणामु करइ। 'किसउ एउ' इसी परि सविस्मय थिका सार्थवाहरहइं

---

१ પ્ર अरण्य. २ પ્ર ताहरुं ३ પ્ર तिहाई ४ પ્રમા આ શબ્દ નથી. ५ પ્ર जिसउ. ६ પ્રમા નથી. ७ પ્ર माणुसु ८ પ્ર जाणी करी

पूछतां हूंता जिणदासि आपणउ वृत्तांतु मूल लगी सगळ कहिउ। तिणि स्वजनि संबंधि हूयइ हूंतइ व्यसन तणउं दुहेलउं सगळ गली गयउ। ति सव्वे पुटकुटी माहि सुखिहिं रहियां। आथमण मिसांतारि जाई करी आदित्यि तीहं तणइ आश्चर्य कारकि इसइ चरित्रि कहियइ हूंतइ जाणे जोएवा[१] कारणि उदयमिसि संध्या समइ शशी आविउ। अथ चंद्रोदय समइ जिनदासु देह-चिंता करिवा प्रचुरतरु वणांतारि गयउ। तिहां लक्ष्मीधरु सूतउ देखी[२] जोयइ, तउ मूयउ देखइ। अक्षितु[३] सु देखी करी मित्रवच्छलु सर्प्प-डंकु तेहरहइं जाणी करी दुक्खितु हूयउ। तेह कन्हा सुप्रभाव[४] रत्न ले करी पाणी ओहली तेहरहइं पाई जीवाडइ। तउ क्षणांतरि सु जीवितु देखी जिनदासु रलियायतु थिउ।

उपकृत्युपकुर्वाणा ध्रियंते धरया न के।
अपकृत्युपकारी यस्तेन तु ध्रियते धरा॥

लक्ष्मीधरु जीविउ हूंतउ जिनदासरहइं देखी करी लज्जावनम्रमुखु हूयउ। तउ पाछइ जिनदासु तेह आगइ कहइ–'मित्र! हउं तइं कूया माहि न घातिउ किंतु पदस्खलन लगी हउं आपहे कूया माहि पडिउ। तउं आपणा मन माहि किसीयइ लाज म करि। किसउं को कुणही मरता पूठि मरी सकइ छइ? । मूरहइं अधुना धनु सार्थवाहु मिलिउ। हउं तेहसउं वाणारसीं नगरीं जाइसु। तउं ईहांईं हूंतउ आपणइ थानकि जा। इसी परि परि छविउ हूंतउ सु लक्ष्मीधरु ब्राह्मणु सलज्जु थिकउ[५] वसंतपुरि गयउ। जिणदासु धनसार्थवाह सरसउ लाजतउ हूंतउ वा-णारसी ऊपरि चालिउ। जेतलइ लक्ष्मीधरु वसंत पुरि गयउ तेतलइ जिणदास तणइ वियोगि दुक्खितु अतिविक्रमवंतु नामि महीरक्षितु देखइ। तउ पाछइ लक्ष्मीधरु जाई करी राय आगइ जिनदासु अनइ [महा][६] मात्य बिहुं तणउ संबंधु कहइ। सु वृत्तांतु सांभली करी अतिविक्रमवंति राजेंद्रि वसुनामि महामात्यु गुप्ति कीधउ। जेतीवार जिणदासु देखतउ[७] हुयइ जिम तेतीवार तेह तणउ वइरी मारउं–इसा कोपवशइतउ महा दुक्खि घातिउ।

अथ घडिया[८] जोयणी सांढि चडी करी पुरुष-द्वय-सहायु रायु आपणपइं वाणारसीं नगरीं जिणदास लेवा गयउ। जिम को[९] जाणइ नहीं तिम जाई जिणदासु मनावी सरसउ [ले][१०] करी राउ वसंतपुरि आविउ। जिणदासु मन माहि चींतवइ वसु पुनरपि मइं[११] महामात्य पदि थापिवउ। तउ पाछइ राजेंद्र कन्हा जिणदासु सर्वैश्वर्य मुद्रा लही करी जण-नायकु[१२] वीनवी करी मंत्रिपदु वसुरहइं अपावइ। अनेरइ दिनि उद्यानपालि आवी राउ वधाविउ-

१ ખ जोइवा. २ ખ देखी करी. ३ ખ अक्षतु. ४ ખ स्वभाव स्वकीय. ५ ખ थकउ. ६ કમા महा શબ્દ પડી ગએલ છે. ७ ખ देखतु. ८ ખ अथ वाडिया. ९ ખ कोई. १० કમાં પડી ગએલ છે. ११ ખમાં આ શબ્દ નથી. १२ ખ नाराउ.

'महाराज ! तुम्हारइ क्रीडोद्यानि तपु तपता हूंता शकरनाम महऋषिरहइं केवल-ज्ञानु ऊपनउं।' महातु प्रीति-दानु उद्यानपालरहइं दे करी अतिविक्रमवतु नरेश्वरु जिनदास सहितु उद्यान वनि पहुतउ। मुनि प्रणमी करी धर्म्मोपदेशु साभली राउ पूछइ-'भगवन् ! माहरा मित्र[1] जिनदासरहइं आपद सहित संपद किसा कारण लगी हुई ।' मुनि भणइ-'कौशाम्बी
5 नामि नगरी, तिहा मातृभक्तु धनदत्त[2] नामि वाणियउ। सुमित्रा नामि तेहनी माता। जया नामि दयिता। "दानु एकु गृहस्थहरहइ धर्म्मु मुख्य-वृत्ति करी कर्त्तव्यु"-इसउ वचनु सुमित्रा तेह आगइ कहइ। एकदा तिणि मतिमति मातातणउं मनु दानाभिमुखु जाणी करी भार्या सहिति हूंतइ माता आगइ कहिइ-'माता[3] ! सुपात्रहं अनइ[4] कृपापात्रहंरहइं यथारुचि आपणइ हाथि करी दानु दइ।' तउ पाछइ वासना-परायण हूती सुमित्रा श्राविका[5]
10 कृपापात्रह सुपात्रह रहइं यथारुचि दानु आपणइ हाथि करी दियइ। जिम जिम माता दानु दियइ तिम तिम हर्षितु[6] चित्तु हूंतउ दत्तु कहइ-"दइ, दइ, ताहरइ पसाइ माहरइ [घरि][7] घणउं धनु धान्यु छइ।" तदनंतरु दानफलु निश्चितु जाणी करी सनियमु अभिग्रहु तिणि लीधउ। विधिवत् ज्ञान-दर्शन-चारित्र-पात्रहं अनइ कृपापात्रहं प्रति दानु दे करी तउ भोजनु करीसु। तथा चोक्त-

15 अभयं सुपत्तदाणं अणुकंपा-उचिय-कित्तिदाणं च।
दोहिं वि मुक्खो भणिओ तिन्नि वि भोगाईयं दिंति॥

तउ पाछइ पुत्रि अनइ वहू त्रिहुं बहू-कृत भक्ति अनुमत हूंती निवारितारति समाधि-सहित निजु अभिग्रहु पूरती हूंती, स केतलु एकु कालु वोलइ। अनेरइ दिनि नैमित्तिके दारुणि दुर्भिक्षि काहियइ हूतइ जयानामि वहू आपणा भर्त्तार दत्त आगइ कहइ-'धुरिहिं दारुणु दुर्भिक्षु दीसइ,
20 ताहरउ घरु पुत्र पौत्रादि परिवार संपूरितु वर्त्तइ। तिणि कारणि आपणी जणणी, हे कुटुंबाधार ! दान हूंती निवारि।' अथानतरु दत्ति माता दान हूंती निवारी। अथवा स्त्री-वशंगत निसत्त्व सत्त्व किसउं किसउं[8] न समाचरइं। सुमित्रा पुण तदा कालि इसउ अभिग्रहु मनमाहि करइ-'जे मूरहइ प्राण मुक्ति हुयइ तोई भोजन मात्रहीं तणइ दानि अकीधइ हूंतइ हउ भोजनु करउ नहीं।' आठ उपवास जउ सुमित्रारहइं हूया, तउ पाछइ दुर्यशोवाद शंकित हूंती
25 जया तेहनउ वृत्तातु दत्त आगइ कहिउ। तउ पाछइ वधु-वर्गु सहितु दत्तु सुमित्रारहइं पारणा कारणि महा निर्बंधु करइ। तउ सुमित्रा पारणा करिवा[9] कारणि उपवेशिति हूंती चित्ति

---

१ ખમા मित्ररहइं २ ખમા दत्त શબ્દ નથી, ३ ખ मात ४ ખમા આ શબ્દ નથી ५ ખ सुश्रा० ६ ખ हर्षित ७ કમા આ શબ્દ છુટી ગએલ છે ८ ખમા किसउ એક જ વાર લખેલુ છે. ९ ખમા આ શબ્દ પડી ગએલ છે.

चींतवइ–' अभोजन विषइ पात्रदानाभावरूपु कारणु जाणतु हूंतउ पुत्रु मूरहइं दानु दिवारइ नहीं। धिग् धिग् माहरा कर्म्मविडंबनरहइं। जइ किमइ एह आपणा परीसिया भोजनमाहा कहीएक महाऋषि रहइं अथवा दयापात्र कहीएकरहइं संविभागु करावउं तउ माहरउं अभिग्रहु पूजइ,[1] अपि तु श्लाघनीउ हुयइ। पुत्रु पुण्यवंतु अश्लाघ्यु न हुयइं।' इसउं ध्यायती सुमित्रारहइं जिसउ मूर्त्तिमंतु पुण्यराशि हुयइ, इसउ महामुनि एकु गृहांगणि आगिलइ गमइ आविउ देखइ। तदाकालि रोमांच-कंचुकित-गात्रु हूंती हर्षास्रु-विंदु वृष्टि नयन हूंती मूकती भाजनु बिहुं हाथे ऊपाडी करी सामुही उठी करी[2] महऋषि आगइ भणइ–' भगवन्! महांतु अनुग्रहु मू ऊपरि करउ, पात्रु धरउ। प्रासुकेषणीउ आहारु विहरउ।' महासत्तु प्रासुकेषणीउ जाणी करी विहरइ। तउ तेह तणइ सत्त्वि करी संतुष्ट हूंती श्री शासनदेवता गंधांबु वृष्टि गृहांगणि करी प्रत्यक्ष होइ करी कहइ–' धन्ये! मासोपवासी महऋषि जु तइं पारणउं कराविउ। तेह ताहरा सत्व प्रभावइतउ संभूतु दानु जु धर्म्मु[3] तेह तणा महात्मइ[4]तउ दुर्भिक्ष हेतुक ग्रह उपशात हूया।' इसउ गल्गर्जितु करी देवी मेहु वरसाविउ। दुर्भिक्षु प्रवासाविउ। राजा आवी करी महा महोत्सवु करावइ। सकल लोकु सनालिकेराक्षत-पात्र-पाणि दत्त-माता वधावइ। दत्तु जया सहितु पाए लागी सुमित्रारहइं खमावइ। ति त्रिण्हिइ अथानंतरु निरंतरु[5] उत्तरोत्तरु धर्म्मु समाचरी करी आपणउं[6] आयु संपूर्ण्णु भोगवइ। तींहं माहा सुमित्रा-जीवु महाराज तउं हूयउ। दत्तात्मा जिनदासु ताहरउ मित्रु हूयउ। जयात्मा रत्नवती जिनदास तणी युवती हुई। दान-धर्म्म निरोधइतउ ताहरा मित्ररहइं लक्ष्मी सांतर हुई-।' इसी परि पूर्व भवु सांभली गुरु नमस्करी[7] राजादिक सकल लोक नगरि गया। धर्म्मध्यानपर अतिविक्रमवंत राजेंद्र जिनदास रत्नवती जीव तिणिहिं जि भवि संयमु प्रतिपाली केवल ज्ञानु ऊपाडी मोक्षि गया।

पात्रार्थया रचितया रमया सुमित्रा–श्राद्धया महानरवरेंदिरया सहेह।
लेभे महोदयरमापि तथा भवद्भिर्लभ्येत हंत भविका भविकास्यपुण्याः॥

॥ इति अतिथि संविभाग व्रत विषइ सुमित्रा कथा समाप्त॥

---

१ ખમાં भाजइ नहीं આવું વાક્ય છે અને તે જ વધારે શુદ્ધ લાગે છે. કમાં पूजइ પછી नहिं ही આવો શબ્દ પ્રથમ લખેલો પણ પાછળથી છેકી નાખવામાં આવ્યો છે. ૨ ખમાં આ શબ્દ નથી. ૩ ખ जु दानधर्म्मु. ४ माहात्म्यइ. ૫ ખમાં માત્ર अथ निरंतरु આવું વાક્ય છે. ૬ ખ आपणपउं. ૭ ખમા० स्करी करी.

प्रकीर्ण कथा.

१६. एक क्षुल्लक शिष्यनुं उदाहरण.

यथा—गच्छि एकि लघु क्षुल्लकु एकु वरसालइ बाहिरि वाल्कहं माहि वाहलइ त्रेपणउं पेट हेठइ देई अनइ तरिवा लागउ। महात्मा आविया, चेला तरता देखी करी वढइं[1]ति।
5 तेतलइ गुरु आविया। गुरि कहिउ—'महात्माउ चेलउ लहुडउ, भोलउ, भागडउ। म [2]अडवडाउ।' ते ती वार चेलउ परहांसिउ। गुरे भणिउं—'म वच्छ! उगउ रहि। को काई नही कहइ।' तउ चेलउ घणेरउ परहंसिउ। गलसरण भरिवा लागउ। गुरे माथइ हाथु देई करी आपणपा आगइ कीधउ। वसति आविया। गुरे इरियावही थिर थिका आखरि आखरि अर्थु चीतवता हूता पडिक्कमी गमणागमणउ आलोइउ। तउ पाछइ वर्ति ए पुणि आलो-
10 इउं। चेला आगइ गुरे कहिउं—'वच्छ! इरियावही पडिक्कमतां छप्पन्नसइं त्रीस मिथ्या-दुष्कृत पद जाणी करी सवहीं जीवहंरहइं मिच्छामि दुक्कडु दीजइ।' तउ पाछइ चेलउ गुरु वचन तणइ अनुसारि इरियावहीनउ अर्थु चीतवतउ सवहीं जीवहंरहइं मिच्छामि दुक्कडु देयतउ इरियावही पडिक्कमतउ शुक्लध्यानाधिरोहइतउ केवल ज्ञानु ऊपाडी अनेक भविकलोक प्रतिबोधी करी सिद्धि गयउ।

15
१७. समाधि विषये जिनदत्त कथा.

समाधिगुण प्रकटीकारकु जिनदत्त श्रेष्ठि कथानकु लिखियइ—वैशाली नामि नगरी। तिहा छद्मस्थु श्रीमहावीरु एकवार उद्यानवनि वर्षाकालि देवकुलमाहि काउसग्गि रहिउ। तिणि नगरी परम श्रावकु जिनदत्तु नामि हूतउ। श्रेष्ठिपद-भ्रष्टु हूतउ जीर्णश्रेष्ठि इसइ नामि सुविख्यातु हूयउ। भिक्षा भ्रमण तणइ अभावि करी श्रीवीरु उपोषितु जाणी करी वादी करी
20 घरि आविउ। इसी परि नितु नितु करतइ वरसालउ तिणि लाघिउ। आपणा मनमाहि चीतवेवा लागउ—'जइ किमइ आजु माहरइ घरि श्रीमहावीरु पारणउ करइ तउ हउं तारिउ हुयउं।' इसउं ध्यायतउ हूंतउ विशुद्ध भावि हर्षित चित्तु घर बारि रही करी चींतवइ [जइ][3] इहां श्रीमहावीरु आवइ जगम कल्पद्रुम जिम, तउ हउं मस्तकि बद्धांजलि हूंतउ भगवतरहइं संमुख

१ ખ चिढई. २ ખ वडवडा. ૩ કમાં આ શબ્દ નથી.

जाउं, त्रिन्हि प्रदक्षिणा दे करी सपरिवारु थकउ[१] वांदउं। तउ पाछइ घर माहि पाउधारविउं।[२] जंगम निधानु जिम[३] [जिन][४] प्रधानहं प्रासुकेषणीयहं पान्नान्नहं करी भक्तिवसइतउ भवसिंधु तारणउं पारणउं करावउं । [५]पुनरपि नमस्करी करी केतलाईएकि पग भगवंतरहइं अनुगमनु करउं । पाछइ आपणपउं[६] धन्यु मानतउ हूंतउ आपणपइं रोषु ऊगरिउं धान्यु हर्षितु थिकउ जीमिसु । इसी परि मनोरथमाला जिनदत्तरहइं मनमाहि करता हूंता अभिनव श्रेष्ठिनइ घरि भिक्षानिमित्तु श्रीमहावीरु आविउ । अभिनव श्रेष्ठि चेडी हस्तगत कोमासहं करी पाराविउ । सुपात्र दान प्रभावि पंच दिव्य तींहां हूयां । तिहां राजादिक लोक मिलिया । अभिनवु श्रेष्ठि प्रशंसिउ । भगवंतु श्रीमहावीरु पारणउं करी अनेरइ थानकि विहरिउ । जिनदत्तु देवदुंदुभि निनादु सांभली करी चिंतविवा लागउ—' धिग् मूरहइं ! अधन्यु हउं जु माहरइ घरि भगवंतु न आविउ ।' इसी परि महाविषादु करतउ जिनदत्तु लोकि जाणिउ । किं बहुना; राजेंद्रि 10 पुणि जाणिउ । धन्यु जिनदत्तु जु[७] इसीपरि भावना भावइ । तदा तिणि नगरी केवली आविउ । राजादिके लोके वांदी पूछिउ—' भगवन् ! जिनदत्तु पुण्यवंतु; किंवा अभिनवु पुण्यवंतु ? ।' केवली कहइ—' जिनदत्तु पुण्यवंतु ।' लोकु कहइ—' भगवन् ! भगवंतु अभिनवि पाराविउ, जिनदत्ति न पाराविउ । ' केवली तेहनी भावना मूल लगी कही करी कहइ—'भावइतउ जिनदत्ति पाराविउं; द्रव्यतउ पुणि अभिनवु; अच्युत देवलोक-योग्यु पुण्यु उपार्जिउं। 15 जइ देवदुंदुभि निनादु सांभलत नहीं तउ तेतींहिं जि वार केवलज्ञानु ऊपाडत[८] । भावरहिति अभिनवि पुणि सुपात्रदान प्रभावि सुवर्णवृष्ट्यादिकु फलु लाधउं । समाधि रहितु जीवु ईहिकू[९] जु फलु लहइ । समाधि सहितु पुणि स्वर्ग मोक्षादिकु फलु लहइ । तउ पाछइ जिनदत्तनी प्रशंसा करी राजादिक लोक घरे गया ।

॥ समाधि विषइ जिनदत्त कथा ॥

---

१ ખમાં આ શબ્દ નથી. २ ખ पाउधारउं. ૩ ખમાં નથી. ૪ કમાં આ શબ્દ પડી ગયો લાગે છે. ૫ આ બે અંક વચ્ચેનો પાઠ ખ પ્રતિમા છુટી ગયો છે. ૬ ખમાં નથી. ૭ ખ માં નથી. ८ ખ ऊपार्ज्जत. ९ ખ इहलोकि.

१८. शास्त्राभ्यास विषयक कथा.



एकि गच्छि गगातटि वास्तव्य बि भाइ संयमधर हूंता विहरइं । तींहं माहा एकु बहुश्रुतु हूतउ सूरि हूयउ । पाठक शिष्यहं तथा सूत्रार्थ वाछकह सदा सेव्यमानु हूतउ विश्रामु कदाचित्त ल्हइ नहीं । रात्रि समइ पुणि सूत्रार्थ चिंतन प्रच्छनादिकह करी विश्रामु न ल्हइ । 5 तेहनउ बीजउ भाई मूर्खु सदा सुखी रहइ । आचार्यु तेहनउ सुखु देखी दुर्बुद्धि-बाधितु हूंतउ चिंति चींतवइ—अहो ! माहरउ भाई सुखिउ । ज्ञान-विज्ञान हीनता करी किणिहिं ऊद्वेगियइ नहीं । हउं पुणि पलास-कुसुम जिम[1] निष्फलि ज्ञानि करी दुक्खितु हूयउ । तथा च किणिहिं तेह सरीखइ पडिति पढिउ—

मूर्खत्वं हि सखे ममापि रुचितं तस्मिन् यदष्टौ गुणाः
निश्चिंतो बहु भोजनोऽत्रपमना नक्तं दिवा शायकः । 10
कार्याकार्यविचारणेंधवधिरो मानापमाने समः
प्रायेणामयवर्जितो दृढवपुर्मूर्खः सुखं जीवति ॥

इसउं पुणि न चींतवइ—

नानाशास्त्रसुभाषितामृतरसैः श्रोत्रोत्सवं कुर्वतां,
15 येषां यांति दिनानि पंडितजनन्यायामखिन्नात्मनाम् ।
तेषां जन्म च जीवितं च सफलं तैरेव भूर्भूषिता;
शेषैः किं पशुवद्विवेकविकलैर्भूभारभूतैर्नरैः ॥

इसी परि ज्ञान प्रद्वेषवशइतउ तिणि ज्ञानावरणीउ कर्मु निबद्धु प्रमादु लगी बाधउं । सु ज्ञानातिचारु अणआलोई चारित्रु पली मुयउ । चारित्र प्रभावि देवलोकि देवु हुयउ । 20 चवी करी भरतक्षेत्रि किणिहिं आहीर कुलि पुत्रु हुयउ । अनुरूप कन्या परिणिउ । तेहनी दीकिरी जाई । सुरूप-तरुण-पुरुष-लोचन-मनोहारिउ जूवनु[2] सप्राप्त हुई । गाडानइ धुरि स दीकिरी वइसारी तेहनउ पिता नगरि चालिउ । आहीरह सरिसउ[4] घी विक्रय करिवा कारणि । तेहनउ रूपु देखता हूता अनेरा आहीरह तणा मनह जिम गाडां पुणि अपमार्गि जायता भागा । घी रेडाया । तउ विलक्षथका आहीर तेहना पिता आगइ कहइ—" अशकटा 25 शकटापिता ।" इसउ उपहास वचनु वली २ कहइ । एहनउ किसउ अर्थु—जेहनइ शकटु न

१ ખ મા નથી २ ખ जौवनु ३ ખ वइसाली ४ ખ सरसउ.

हुयइं स अशकटा; अथवा ए कन्या नामि करी शकटा नही इति अशकटा । तथा–अशकटा पिता, अशकटानउ पिता जनकु अशकटापिता । अथवा शकटापित–शकट प्रापित हूंता अम्हे इणि, अशकटापित–शकट रहित कीधा । इसउ अर्थु सांभली करी लघुकर्मता लगी वैराग्य प्राप्तु हूंतउ दीकिरी कहीइसउं[1] परिणावी करी धनु तेहरहइं दे करी व्रत-संप्राप्तु हूयउ । कही आचार्यकन्हइ योग वहता हूंता, आदर परायण पढता हूंता, जहिंवार उत्तराध्ययन सिद्धांतनउं 5 चउथउं अध्ययनु "असंखउ" इसइ नामि पढिवा आरंभिउं, तेतीवार पूर्वभव[2]वद्ध ज्ञानावरण कर्म उदइ आविउं। वि दीह आंबिल करी पढतउ थाकउं तेहंरहइं वृत्त तोई आनियां नहीं । किंबहुना एकूपदु आविउं नहीं। बीजइ दिनि अनुज्ञा समइ गुरु कहइ–'किसानी अनुज्ञा तूरहइं दीजइ?' सु कहइ–' भगवन् ! किसउ तपु एहनउ ?' गुरु भणइ–' जां आवइ नहीं तां आंबिलु तपु ।' तउ सु भणइ–' भगवन् ! मूहरइं अनेरइ तपि करी सरिउ[3] । सिद्धानि पुणि अनेरइं सरिउं । 10 जां एउ नहीं आवइ तां आंबिलइ जि करिसु ।' तउ पाछइ निश्चल चित्ति[4] हूंतइ बारह वरिस आंबिल समाधि पूर्वक कीधां; तउ तेह कर्मनउ क्षउ हुयउ । सुखिहिं सगछ श्रुतु पढिउं । श्रुतभक्ति करी इहलोकि परलोकि सुखभाजनु हूयउ ।

१९. गौतम अष्टापद गमन कथा.

तथा–चंपा विहारु करतइ श्रीमहावीरि साल महासाल राजऋषिइं सरसउ श्रीगौतमस्वामि 15 गणधरेंद्रु पृष्ठचंपा मोकलिउ । तिहां गागलि राजा, पिठरु गागलि तणउ पिता, यशोमती माता । निजमातुल साल महासाल अनइ श्री गौतम वांदिवा आविउ । वंदी धर्म्मु सांभली पुत्रु राजि बइसाली मायवाप सहिति गागलि श्रीगौतम कन्हइ दीक्षा लीधी । श्रीमहावीर वांदिवा चपा आवता भावना भावतां मार्गि पांचहीं रहइं केवल-ज्ञानु ऊपनउं । समवसरणि श्रीगौतम स्वामि त्रिन्हि प्रदक्षिणा दे करी पाछउं जोयइ, तउ पांचइ केवलि-सभा ऊपरी जायता देखइ । 20 तउ भणइ–'ओरहा आवउ; श्रीमहावीरु वांदउ ।' भगवंतु भणइ–' गौतम ! केवलि आशातना म करि ।' तउ गौतमि खमाविया ।

अथ श्रीगौतमस्वामि जनमाहि भगवंत श्रीमहावीर तणउं वचनु सांभलिउं—

उसहस्स भरहपिउणो तिउलुक्क-पयासनिग्गय-जसस्स ।
जो आरूहुं वंदइ चरमसरीरो य सो साहू ॥ 25

१ प्र-कहीसउ. २ प मां भव नथी.. ३ प सरिसउं. ४ प चित्तसमाधि.

जु तपोलब्धि करी अष्टापदि चडी श्रीऋषभ जिनरहइं वांदइ सु चरम सरीरी–तिणिहिं जि भवि मुक्तिगामी हुयइ। तउ जेतलइ अष्टापद यात्रा मनोरथु गौतमस्वामि मनमाहि करइ तेतलइ भगवंति यात्रा विषइ आदेसु दीधउ। तउ गौतमु अष्टापदि चालिउ। जिनवचनु पूर्वभणितु साभली करी अनेराइं कौंडिन्य दिन्न सेवालि नाम पांच पाचसइं तापस मुक्ति-निमित्तु[1] तिहा चालिया। तीहमाहि कौडिन्यु कुलपति पांचसइ तापस संहितु एकोपवासकारी पारणइ आर्द्र-मूल-फलाहारी, पहिली मेखला गयउ। दिन्नु कुलपति पाचसइं तापस सहितु त्रिउं उपवासकारी पारणइ शुष्क-मूल-फलाहारी, बीजी मेखला चडिउ। सेवाली कुलपति पाचसइं तापस सहितु त्रिउ उपवासकारी पारणइ शुष्क-सेवालाहारी, त्रीजी मेखला गयउ। त्रिन्हइ कुलपति ऊपहरा चडिवा असकता हूता पूर्विहिं तिहांई जि रहिया छइं। तींहरहइं तिहा र-हिया हूंतां श्रीगौतमस्वामि मूर्तिमतु जिसउ पुण्यरासि हुयइ तिसउ उपचित-सर्व-देहावयवु कायकांति करी दीपित-दसदिसावकासु आविउ। ति तापस सवइ गौतमरहइ देखी करी चित्ति चीतवइ–'अम्हे तपि करी सोसिय-काय ईंहां चडी नही सकता, एउ इसउ उपचिति देहि करी यथाकामभोजी[2] संभावीतउ किसी परि चडिसिइ।' इसउ तींहं त्रिहुं तापसहं रहइं चीतवता हूता श्रीगौतमु गणनायकु रविकिरण अवलंबी करी अष्टापदि पर्वति चडिउ। तींह-रहइ[3] मनि महातु विस्मउ ऊपनउ। तउ पाछइ मनमाहि चीतवइं–'जइ किमइ पाछउ वल-तउ अम्हमाहि आविसिइ तउ अम्हे एहना शिष्य होउसिउ[4]।' श्रीगौतमस्वामि दक्षिणद्वारि सास्थित संभव, अभिनंदन, सुमति, पद्मप्रभ नाम चत्तारि जिन वादइ। पश्चिमद्वारि संस्थित सुपार्श्व, चंद्रप्रभ, सुविधि, शीतल, श्रेयास, वासुपूज्य, विमल, अनत नाम आठ जिन वदइ। उत्तरद्वारि सास्थित धर्म्म, शाति, कुंथु, अर, मल्लि, मुनिसुव्रत, नमि, नेमि, पार्श्व, वीर नाम दस जिन वादइ। पूर्वद्वारि सास्थित ऋषभ, अजित नाम बि जिन वांदइ। चउवीसइ जिन निज-निज-वर्ण-प्रमाण-लांछन-सहित देव-दानव-विद्याधर नरेश्वर-महित विधिसउ वांदतउ सस्तवतउ हूंतउ विशिष्ट भावना भावतउ सगळ दिवसु सीम देवगृह सिंहानिषद्यायतन नाम प्रसिद्ध माहि रहिउ। संध्या समइ देवगृह बाहिरि शुद्ध शिलातलि बइठउ समाधिसउं प्रतिक्रमणु करी स्वाध्याउ करइ। तेतलइ प्रस्तावि चैत्यवंदना-निमित्तु समागतु धनदयक्षु श्री गौतमस्वामि देखी करी भावइतउ वांदी आगइ वइठउ। श्रीगौतमस्वामि तदाकालि साधुगुणस्तव संसूचकु पांचसइ ग्रथ प्रमाणु पुडरीकाध्ययनु वखाणिउ। धनद तणउ इद्र-समानिकु पुंडरी-काध्ययनु सांभली करी मुखि अणावइ। अर्थु हियामाहि धरइ। सम्यक्त्वु तदाकालि तिणि उ-पार्जिउ। सु आयुः क्षयि मरी करी दश पूर्वधरु श्रीवज्रस्वामि हुयउ। बजिइ दिनि प्रभात

---

१ ખગા આ વાક્ય નથી. २ ખ भोगी. ३ ખ तीहनइं. ४ ખ होइसइ.

समइ पुनरपि चउवीस जिन वांदी करी श्रीगौतमस्वामि तीणि हिं जि मार्गि आवतउ हूंतउ तापसहं माहि आविउ। तापसे वादी करी वीनविउ–'भगवन्[1]! पसाउ करी अम्ह रहइं दीक्षा दियउ।' गौतमस्वामि योग्यता जाणी करी सर्वे दीक्खिया। पारणावसरि पूछिया–'वच्छउ! किसी इच्छा तुम्हरहइं छइ?' तेहे चीतविउं–अम्हारी आंत्र भूख करी दाधी छइं, जउ मागिउं भोजनु लाभइ तउ मनोवांछितु कांइं न मागियइं–इसउ चीतवी करी परमान्न भोजन मागिउं। श्रीगौतमस्वामि पात्रु प्रतिलेखना पूर्वु ले करी विहरिवा पहुतउ। किणिहिं संनिवेसि कुणही कुटुंबी[2] तणइ आपणइ भावि परमान्नु नीपनउं हूतउं तेतलइ प्रस्तावि तेह तणइ घरि श्रीगौतमस्वामि आविउ। तिणि कुटुंबी आपणपउं धन्यु मानतइ हूंतइ भावि करी श्री गौतमु परमान्नु पात्रपूरि विहराविउ। खीरि थोडी, टीला पुणि एतलीं खीरि अम्हरहइं नीपजइं नही। अथवा अचिंतनीय महिमा महात्मा तणउ छइ। इसउं चीतवी करी पारणा करिवा गौतमि अनुज्ञात हूंता बइठा। अखीण महाणसी लब्धि तणइ प्रभावि जांसीम आपणउ अंगूठउ बाहिरउ काढइ नही तासीम पात्रु ठालउं थाइ नहीं; तिणि कारणि भगवंतु गौतमु तीहं रहइं परीसइ। तउ पाछइ जि त्रिहुं उपवासे करी पारणउं करतां सेवाली तापस तीहंरहइं पारणउं करतां गौतम गुण अनुमोदतां शुक्ल ध्यान-धारा वर्तमानहं हूतां केवलज्ञानु ऊपनउं। जे बिहुं उपवासे पारणउं करता दिन्न तापस तीहं रहइं मार्गि आवतां–जेह तणउ गौतमु शिष्यु इसउ लब्धिपात्रु छइ सु गौतम तणउ गुरु किसउ छइ–इसी परि चितवतां शुक्लध्यान धाराधिरोहइतउ केवल ज्ञानु ऊपनउं। जि एकि उपवास पारणउं करता कौडिन्य तापस तीहं रहइं समवसरणु देखी श्रीमहावीर देशनाध्वनि सांभली करी शुक्लध्यान लाभइतउ केवलज्ञानु ऊपनउं। श्रीगौतमस्वामि श्रीमहावीरु वांदी करी पाछउं जोयइ तउ सवइ तापस केवलि सभा ऊपरि जायता देखी भणइ–'वच्छउ आवउ, श्रीमहावीरु वांदउ।' भगवंतु भणइ–'गौतम! केवलि आशातना म करि।' तउ गौतमस्वामि खमावी यथास्थानि पहुतउ। श्रीमहावीरि मुक्ति पहुतइ हूंतइ गौतमस्वामि छिन्न-गुरुस्नेह बंधनु हूंतउ केवलज्ञानु उपाडी बारे[3] वरसे पाछइ मुक्ति पहुतउ।

॥ श्री गौतम कथा समाप्त ॥

---

[1] ५ प्रभु. [2] ५ कुडंवी [3] ५ वार.

२०. विद्या विषये काश्यप अने ब्राह्मण कथा.

विज्जाए कासवसंतीयाइ दगसूयरो सिरिं पत्तो ।
पडिओ मुसं वयंतो सुयनिन्हवणाइय अपेच्छा ॥

काश्यपु नावी तेहरहइं किणिहिं विद्याधरि तूठइ हूंतइ विद्या दीधी । तेह्नइ प्रभावि तेह्नी भांडी आकाशि थिकी तेह सरसी चालइ । अनेरइ दिवसि दगसूकरु—भणियइ ब्राह्मण तिणि दीठी । तउ तिणि ब्राह्मणि तेह्नी सेवा कीधी । विद्या तेह कन्हा ब्राह्मणि लीधी । विद्या प्रभावि तेह्नी घोयती आकाशि थिकी तेह सरसी चालइ । तउ लोकु आगेइ ब्राह्मणरहइं भक्ति करतउ, ते उ आश्चर्यु देखी करी घणेरउं तेह ब्राह्मणरहइ भक्ति-पूजा-सत्कार-बहुमान करिवा लागउ । इसीपरि ब्राह्मणु काश्यपनी विद्या करी श्रीप्राप्तु हूयउ । अनेरइ दिवसि अनेरइ किणिहिं पूछिउ सु ब्राह्मणु—'भगवन् ! महंतु तुम्हारउ प्रभावु, सु तपतणउ प्रभावु किंवा विद्यातणउ प्रभावु ?' । ब्राह्मणु भणइ—'विद्यातणउ प्रभावु एउ ।' 'ए विद्या किहां हूंती लाधी ?' विप्रु भणइ—'हिमवंत गिरि वर्तमानि गुरूयइ गुरि तूसी करी आपी ।' इसा कथन समकालिहिं जि आकाशि हूंती घोयती भूमि पडी । पाछइ सु ब्राह्मणु लघुता प्राप्तु हूउ ।

२१. लोभालोभ विषयक कथा.

अत्र महापरिग्रहारम निवृत्तानिवृत्तहं बिहुं श्रेष्ठिहिं तणउ कथानकु गुणदोष-विकासिकु कहियइ । नारिक्यु नामि नगरु । तिहां नद नामक बि श्रेष्ठि वाणिज्य-कला-कुशल हूया । तींहंमाहि एकु गृहि-धर्म्म-परायणु व्यवसाय सुद्धि जुक्तु हूंतउ आपणां गुणहकरी धर्म्मनंदु इसी ख्याति प्राप्ति हूयउ । बीजउ लोभाभिभूतु कूट वाणिज्यकला लगी लोभनंदु इसी ख्याति प्राप्तु हूयउ । अनेरइ दिवसि सरोवरि खणीतइ पूर्व सगोपित सुवर्णमय कुसा नीसरिया । लोहमइ बुद्धि वसइतउ महतइ खनकहंरहइं आपिया । तेहे पुणि ति कुसा ले करी धर्म्मनंदि रहइ दिखालिया । कहिउ—'ईहवडइ अम्हरहइ घृत तेल धान्यादि विसाहणउं आपि ।' तिणि पुणि अतिभारादि कारणि करी सुवर्णमय जाणी करी भणिउ—'एहे मूरहइ काजु नहीं ।' तउ पाछइ तेहे ति लोभनदिरहइ दिखालिया । तिणि पुणि ति सुवर्णमय जाणिया । पाछइ शीघ्रु हाटमाहि लांखी करी तींहरहइ विसाहणउं घणउ दीधउ । तीहं कन्हा कुशानी उत्पत्ति

पूछी करी कहइ–' मूरहइं लोहमाहि काजु छइ । तुम्हे कुशा मूहींजिरहइं देजिउ । हउं तुम्हं-रहइं घणउं विसाहणउं देसु । ' तउ पाछइ ति ओड्ड हृष्ट तुष्ट हूंता तीहींजिरहइं नितु नितु कुशा आणी दियइं । विसाहणउं लियइं । अति लोभ वसइतउ अल्प मूल्य वडइं सुवर्ण कुशा लियतउ तृप्तउ न थाइं । पुत्रहं पूछताई हूंतां कुशानउ परमार्थु कहइ नहीं । अनेरइ दिवसि कुशा ग्रहण विषइ शिक्षा पुत्रहंरहइं देकरी प्रत्यासन्नग्रामि मित्रनइ विषइ प्रेमु वहतउ वीवाहि 5 गयउ । खनके कुसा त्रि आणी करी श्रेष्ठिपुत्रहं हाथि आपिया । तेहे कोप वशइतउ आस्फाली करी फोडिया । सुवर्णमय झल्हल्ता देखी करी लोकु घणउ मिलिउ । तेतलइ श्रेष्ठि पुणि गाम हूंतउ आविउ । सु वृत्तांतु जाणी करी श्रेष्ठि अति विषादवंतु हूयउ । रीस वसइतउ श्रेष्ठिइं आपणाई जि पग पाहाणि आहणी भागा । किसइ कारणि, जइ ए न हुउतइ तउ हउं गामि न जायतइ । धिग हुउ ईहंरहइं । इति पाद-निंदा करतउ आर्त्त-रौद्र-ध्यान परु हूयउ । राज 10 पुरुषहं कुशावृत्तांतु राजा आगइ सांभालिउ । राजेंद्रि खनक पूछिया । तेहे सगळ वृत्तांतु कहिउ । तदनंतरु धर्म्मनंदु पडिहार कन्हा तेडाविउ । लोभनंदु निग्रहाविउ । कृत-प्रणाम धर्मनंद आगइ राजेंद्रि कहिउं–' कुशा किसइ कारणि तइ न लीधाई । सुवर्ण तणा किसइ कारणि न कहियाई । तिणि भणिउं–परिग्रह-प्रमाण-व्रत-भंग-भय-वसइतउ तथा चोरित-वस्तु-ग्रहण-नियमइतउ न लीधाई । असत्य-वचन-भाषण-नियमइतउ न कहियाई । तओ राजा श्रेष्ठिगुण-रंजितु हूंतउ 15 धर्म्मनंदनी प्रशंसा करइ–' अहो पाप भीरुता ! अहो निर्लोभता ! अहो विवेकिता !; श्रेष्ठिन् ! तउं सर्व ही पूज्यु ।' इसी परि वार वार सभामांहि वर्णवी करी वस्त्रालंकार-सत्कार-करण-पूर्वु आवासि धर्म्मनंदु पाठविउ । लोभनंद आगइ राजा कहइ–' रे पश्यतोहर ! अज्ञान खनक किसइं कारणि तइं मुसिया ? ' इसउं भणी करी सर्वस्व-हरणु विडंबनादिकु करी महाकष्टि लोभनन्दु राजेंद्रि मेल्हिउ । धर्म्मनंदु लोभ-वर्जितु इह परत्र कीर्त्ति सुपुण्य भाजनु हूयउ । लोभनंदु 20 लोभाभिभूतु इह परत्र अकीर्त्ति अधर्म भाजनु हूयउ ।

२२. जीवित मरण आशंशा विषय कथा.

जीविताशंशा मरणाशंशा विषइ धर्मघोष धर्मयश इसा नामहं करी प्रसिद्ध छइं महऋषि तींहतणी कथा लिखियइं–

इहीं जि भरतक्षेत्र माहि कौशांवी नामि नगरी हूंती । तिहां अजितसेनु नामि राजा । धारिणी नामि राणी । अनेरइ वरसि वहु श्रुत गुण विश्रुत धर्म्मवसु इसइ नामि आचार्य संजम 25

गुण समाहित तिणि नगरी वृद्धावासि रहिया। तींहं तणा बि शिष्य एकु धर्मघोषु बीजउ धर्म-
यशु बिहुं तींह महासत्तह सलेखना करिवा आरंभी। तिहा विगतभया इसइ नामि यथार्थ नाम
प्रवर्तिनी हूंती। तिणि सघु पूछी करी अणसणु लीधउं। चमत्कारकारिणी तेहरहइं प्रभावना
संघि करावी। तिणि देवलोकि गई हूती पुनरपि तेह तणा कलेवररहइं सज्जनानन्दकारिणी
5 पूजा पौरजनह करावी। सु पूजाडंबरु देखी करी धर्म्मघोषु ऋषि मनमाहि चींतवइ—'धन्य
धन्य ए प्रवर्तिनी, जेह जीवतीही मृतहीरहइ इसी प्रभावना हुई। एह पुरीमाहि किमइ हउं हिवडा
अणसणु करउं तउ मूरहरइ पुण इसी परि प्रभावना हुयइ।' इसउं चीतवी करी धर्मघोषि
अणसणु लीधउं। बीजउ धर्मयशा मुनि चीतवइ—लोकि जाणावियइ किसउ छइ, हउं आपहे
एकाति जाई साधना करउं। तथा च भणितं—

10 **किं परजण बहु जाणावणाइ वरमप्पसक्खियं सुकयं।**
इय भरहचक्कवट्टी—पसन्नचंदो य दिट्ठंता॥

इसउ चीतवी करी गुरुनी अनुमति ले करी उज्जयिनी अनइ वच्छगा नदी अंतरालि
गिरिकंदरि जाई करी पादपोपगमनि अनशनि रहिउ। जिम सिंहु निर्भीकु हुयइ तिम थाई एकाकी
सुस्थिर चित्तु हुयउ। एतलइ प्रस्तावि उज्जयिनी नगरी-मंडनु चडप्रद्योत-नंदनु धारिणी कुक्षि
15 संभवु पालकु इसइ नामि अवनिपालकु हूयउ। तेहनउ लहुडउ भाई गोपालु इसइ नामि
युवराजा लघुकर्ममावइतउ सु सुगुरु-पादमूलि दीक्षा-ग्रहणु करइ। पालक तणा अवन्तिवर्द्धन
राष्ट्रवर्धन इसा नामह करी विख्यात बि पुत्र हूया। ति पुत्र राज्यि अनइ यौवराज्यि थापी करी
पालकि पुण दीक्षा लीधी। धारिणी नामि राष्ट्रवर्द्धन तणी भार्या रूपि करी जिसी मभार्या
हुयइ तिसी हुई। अवतिसेनु इसइ नामि तेह तणउ पुत्रु हूयउ। अनेरइ दिनि उद्यानवनि क्रीडा
20 करती धारिणी अवतिवर्द्धनि ज्येष्ठि निजनेत्र कौमुदीसमान रूप दीठी। तउ पाछइ सकामु
थिकउ दूतिकामुखि प्रार्थिवा लागउ। धारिणी भणिउ—'महाराज! जे आपणी लाज नहीं तउ
किसउं भाई तणी लाज नहीं।' तउ पाछइ अवतिवर्द्धन कामातुरि हूंतइ आपणउ भाई राष्ट्र-
वर्द्धनु कूड्ड करी मारिउ। अथवा कामी किसउं किसउ न करइ।

सन्मार्गे तावदास्ते प्रभवति पुरुषस्तावदेवेन्द्रियाणां
25 **लज्जां तावद्विधत्ते विनयमपि समालंबते तावदेव।**
भ्रूचापाकृष्टमुक्ताः श्रवणपथयुषो नीलपक्ष्माण एते
यावल्लीलावतीनां न हृदि धृतिमुषो दृष्टिबाणाः पतंति॥

तदाकालि धारिणी गर्भ-धारिणी आसन्न-प्रसव हूती निजशील-रत्न-सर्वस्व-रक्षा कारणि राष्ट्रवर्द्धन
नाम मुद्रा सहित हूती नासी करी तेतीहिजवार वेगिकरी कौशाबी नगरी गई। राय तणं

यानशाला माहि रही हूंती महासती तींहंकन्हइ दीक्षा लीधी। दीक्षा-विघ्नकारणि गर्भु कहिउ नहीं। पाछइ प्रवर्तिनी गर्भि जाणियइ हूंतइ प्रच्छन्नवृत्ति सराहवी। प्रस्तावि जिम मेरुभूमि कल्पतरु प्रसवइ तिम तिणि पुत्रु जाइउ। साध्वीरहइं पुत्रु अनर्थु जाणी करी जिम को जाणइ नहीं तिम राजगृहांगणि नाम मुद्रांकितु पुत्रु तिणि मेल्हिउ। प्रभात समइ अजितसेनु राजा जिसउ मणिपुंजु हुयइ इसउ सु बालकु कांतिमंतु देखी करी अपुत्र छइ आपणी राणी तेहरहइं 5 हर्षितु थिकउ पुत्रु करी आपइ। गूढ-गर्भा राणी हूंती इसी परि प्रकाशी करी पुत्रजन्म महोत्सवु अजितसेनु राजेंद्रु करावइ। मणिप्रभु इसउं नामु यथार्थु नामु करइ। प्रवर्तिनी पूछी हूंती धारिणी भणइं—'मृतु पुत्रु जाइउ सु हवडांई जि लाखी करी हउं आवी। अथ पुत्रप्रेमभाव-इतउ राणीसउं धारिणी प्रीति करइ। अजितसेनि दिवंगति हूंतइ मणिप्रभु राजा हूयउ। सु अवंतिवर्द्धनु अनुज राष्ट्रवर्द्धनरहइं धारिणी तणइ कारणि मारी करी राष्ट्रवर्द्धन युवराजेंद्र अनइ 10 धारिणी विहूं हूंतउ भ्रष्टु हूयउ हूंतउ अति वैराग्य भावइतउ भाईनउ पुत्रु अवंतिसेनु राज्यि बइसाली करी दीक्षा लियइ। अनेरइ दिनि अवंतिसेनि उज्जयिनी नायकि कौशांबीनायकु मणि-प्रभु दूतमुखि भणाविउ—'मूरहइ क्रमागतु दंडु दे करी सुखिहिं निर्भयथिकउ राज्यु भोगवि।' तउ पाछइ मणिप्रभु भणावइ—'सव्याजु ताहरउं राज्यु हउं लेसु।' इसउं भणी करी तिणि दूतु पाछउ मोकलिउ। तउ पाछइ दूतमुखइतउ सु अवंतिसेनु राजेंद्रु सांभली करी जिम कलकलतउं 15 घृतु जलबिंदु-पाति झाल मेल्हइ तिम कोपि करी प्रज्वलतउ हूंतउ सर्वाभिसारि मणिप्रभ ऊपरि कटकी करइ। त्वरित-गति आवी कौशांबी—विद्वंसबुद्धि हूंतउ स बिंहुगमा वेढु घाती रहिउ। मणिप्रभु पुण संग्राम-सज्ज सुभटवज्ज करी परसुभट तृणसमानइ अवमनतउ हूंतउ कोट्टमाहि प्रगुणु थाई रहिउ। तदाकालि नगर लोकु परकटक भयातुरु हूयउ। निखातोत्खात चिंता करी व्याकुल हूयउ। विहारोच्चार-भूमिरहइं संकीर्णता-भावइतउ यतिलोकु असमाहितु हूयउ। 20 पदि २ संयम-विराधना आत्म-विराधना च होइवा लागी। तउ पाछइ जिणि धर्मघोष मुनि अनसणु कीधउं हूंतउं तेहरहइं सुख-तप सुख-संयम वार्तारहइं पूछणहारु को हूयउ नहीं। जीविताशंशी सु धर्मघोषु मुनि पूजा प्रभावना तणा अभावइतउ आर्तध्यानि वर्तमानु हूंतउ मूयउ। जिम पाषाणु लांखियइ तिम कोट ऊपरवाडइ ऊलालीकरी लांखिउ। अथ धारिणी मणिप्रभु वृत्तांतु मूललगी कही करी प्रवर्तिनीरहइं वीनवइ—'ए सहोदर भाई बे अज्ञान भावइतउ राज्य- 25 कारणि विढइं छइं। जु उ तुम्हे भणउ तउ हउं वारउं।' तउ पाछइ प्रवर्तिनी अनुज्ञातु हूंती धारिणी साध्वी मणिप्रभ आगइ सर्व स्वरूपु कही करी भणइ—'तूरहइं वडा भाईसउं युद्ध करिवा न वूझियइं।' इसी परि भणिउ हूंतउ अभिमान लगी जउ निवर्तइ नहीं तउ पाछइ धारिणी अवंतिसेन कन्हइ शीघ्रु गई। अवंतिसेनि प्रणमी करी पूछी हूंती धारिणी सगलउ वृत्तांतु

कहइ—'वच्छ ! आपणा अनुज ल्हुडा भाईसउ किसउं झूझु।' तउ पाछइ संग्राम संरंभु मूंकी करी मणिप्रभ मिलिवा निमित्तु अवंतिसेनु ससेनु हूंतउ चालिउ। मणिप्रभु पुण अवंतिसेनु मिलिवा आवतउ साभली करी साम्हउ आविउ। जेतीवार दृष्टिमेलावउ हूयउ तेतीवार वे वाहन हूंता ऊतरी करी आपणपा माहि हियामाहि जिम पइसणहार हुयइं तिम साई ए आविया। महाप्रवेशक महोत्सवपूर्वु नगरी माहि आविया। केतलाई दिवस प्रेमानुबध वश हूता तिहा रही करी अवंती ऊपरि चालिया। तींहं समा मंत्रित हूती व्रतिनी पुण सरसी चाली। मार्गि जायतां हूतां वच्छगा नदीनइ तटि कटक वासिया। ति महासती गिरिकंदर हूतउ उतरतउ चडतउ लोकु अस्तोकु देखी पूछइं। लोक मुखइतउ धर्मयशा मुनि तिहां पादपोपगमनि अनसनि वर्तमानु साभलइ। तेहे राजेंद्रह आगइ कहिउं। तउ पाछइ राजेंद्र सहित हूंती व्रतिनी गिरिकंदरि पहुती। मुनि नमस्कारिउ। महिमा महात करावी। राजेंद्र चालणहार हूंता व्रतिनी पुण सरसी तेडइ। व्रतिनी भणइं—'अम्हे अनसनी मुनि मूंकी करी नहीं आवउ।' तउ पाछइ राजेंद्र पुण रहिया। नितु नितु महात्मारहइ वादइं पूजइं। रास भास गीत नाच पूजा करावइं। महासती आराधनामृतपानु करावइ। पंच परमेष्टि महामंत्रु समरावइं। इसी परि धर्मयशा महऋषि रहइं निस्पृहवृत्ति भाविहिं हूतइ धर्मानुभावि शून्याहिं स्थानि महिमा हूयउ। समाधि सहितु सु महाभागु स्वर्गसुख भाजनु हूयउ। जिणि धर्मघोषि महऋषि पूजा तणी स्पृहा कीधी तेहरहइ अपभ्राजना हुई।

छिन्नोर्वीरुहपातवन्निजवपुः कृत्वा मनोऽप्यस्पृहं
येनैवं मुनिपुंगवेन विदधे प्रायो व्रतं निस्तुषम्।
शून्येऽभून्महिमाऽस्य धर्मयशसोऽन्यस्याऽन्यथाऽन्यत्र तु
श्रुत्वेति क्रियतां तदित्थमसुमानुच्चैर्गतिं लभ्यताम्॥

॥ इति जीवितमरणाशंशा विषइ धर्मयश कथा ॥

२३. एक वृद्ध डोसीनुं उदाहरण.

ग्रामि एकि अति दरिद्रताकरी दुक्खित डोकरि एक हूंती। हंसउ इसइ नामि तेहनउ दीकिरउ एकु हूतउ। सु आजीविका कारणि ग्रामलोक तणा वाछरू चारतउ। अनेरइ दिनि संध्यासमइ उद्यानवन हूंतउ वाछरू ले आवतउ हूंतउ सु सर्पि डसिउ, मूर्च्छा आवी, तिहा ई जि महाविषवेग सगतु हूतउ हेठउ ढलिउ। जिम काष्टु निश्चेष्टु हुयइ तिम थाई महीपीठि

पडिउ। किणिहिं एकि ग्राममाहि आवी करी डोकरी आगइ कहिउ—ताहरउ दीकिरउ सर्प्पि डसिउ। बाहि रि अचेतनु थाई पडिउ छइ। तउ पाछइ स डोकरी तेतींहीं जि वार मंत्र तंत्र यंत्र पंडित मेली करी रोयती हूंती दीकिरा कन्हइ आवी। मांत्रिक तांत्रिकादिक सु बालकु मृतकु इसउं जाणी करी जिम गया हूंता तिमहीं जि पाछा आविया। डोकरी पुण स एकलियं जि शोक शंकु संकीलित-चित्त हूंती तिहां रही। पुत्र तणइ कर्ण्णमूलि होई करी जिम दिगंगना रहइं पुण रुदनु आवइ तिम करुणस्वरि उच्चैस्वरि " हा पुत्र ! हंस, हंस " इसी परि अश्रांत स्वांत बोलावती हूंती किणिहिं एकि महासंतापि संतापितांग हूंती सकल रात्रि अतिक्रमावइ। " सुत वत्स ! हंस, हंस, ऊठि " इसी परि पुत्र आगइ भणती तेह डोकरिरहइं जिम एक गमइ पूर्वदिसि-सुख-शोभावतंसु हंसु सहस्रकरु ऊगिउ; तिम तेहनउ पुत्रु बीजइ गमइ हंसु पुण ऊठिउ। तउ पाछइ कमळवण जिम तिणि समइ विहसइं तिम तेह डोकरितणां नयन पुण विहसियां। सु बालकु जीविउ इसउं सांभली करी ग्रामलोकु सगलो धाई तिहां आविउ। प्रभात समइ मांत्रिक तांत्रिकादिक पुण तिहां आविया। मनमाहि आश्चर्यु करता हूंता तेह डोकरि आगइ इसउं कहइ-'तइं एहरहइं किसउं कीधउं ?' वृद्धा भणइ—मइ " हंस हंस " इसी परि एहनइ कर्णि मूलि जपती रोयती थिकी रात्रि नीगमी। गारुड मंत्र माहि " हंस हंस " ए बीजाक्षर छइ। तींहंनइ प्रभावि विषु उपशमिउं। इसउं गारुडिके जाणिउ।

॥ इति वृद्ध डोकरि एकनउ उदाहरणु ॥



श्रावक व्रतादि अतिचार

[लेखन समय-विक्रम संवत् १४६६.]

॥ सर्वज्ञाय नमः ॥

नाणंमि दंसणंमि य०—ज्ञानाचारि दर्शनाचारि चारित्राचारि तपाचारि वीर्याचारि
5 पंचविध आचारि जु को अतीचारु पक्ष-दिवस माहि सूक्षम बादर हूउ ते सवि हु मनि वचनि
काइं करी मिच्छामि दुक्कड ॥ १ ॥

१. तत्र ज्ञानाचारि आठ अतीचार—**काले विणए**—ज्ञान थिरावली, पडिकमणसूत्र, उपदेश
माला, कालवेला तथा काजु अणउधरिइ पढिउ, विनयहीन पढिउ, उपधानहीनु पढिउं, बहुमान-
हीन पढिउं। अनेरा कन्हइ पढी अनेरु गुरु कहिउ। देववदण वांदणइ, पडिक्कमणइं सज्झाउ
10 करतां, पढतां, गुणतां कुडउ अक्षर कान्हइ मात्रि ओछओ आगलु भणिओ। कूडउ अर्थ
बेकूडा कहिया। ज्ञानोपगरण पाटी, पोथी, ठवणी, कमली, सांपुडां, सांपुडी, दस्तरी, वही,
ओलीयां प्रति पग लागु, थूकु लागउं। थुंकिइ अक्षर मांजउ, सीसइ दीधउ। कान्हि छतइं
आहार नीहार आशातन हुई। ज्ञानवतसिउ प्रद्वेक्षितु प्रज्ञापराधि विणासिउ। विणसतउ ऊवे-
खिउ। हुंती शक्ति सारसंभाल [न] कीधी। ज्ञानवतसिउं प्रद्वेष मत्सर चींतविउ। आसातन
15 कीधी। पढतां गुणता अंतराय नीपजावउ। प्रज्ञाहीनइतउ वितारिकिउ। आपणा जांणवानु
गर्व चींतविउ। ज्ञानाचार विषइ जु को अती० ॥

२. दर्शनाचारि आठ अतीचार—**निस्संकिय**—देव, गुरु, धर्म तणइ विषइ निसंकपणउं
न कीधउं। तथा एकात निश्चय न कीधउ। धर्मसबाधिया फलतणइ विषइ निसदेह बुद्धि धरी
नही। तपोधन तपोधनी मलि (?) मलिन देखी दुगछ नीपजावी। मिथ्यात्वी तणी प्रभावना
20 देपी मूढ दृष्टिपणउ कीधउ। सघमाहि गुणतणी अनवृहणा अस्थिरीकरण, अवात्सल्य, अप्रीति
अभक्ति आशातन, साधर्मिकसिउ कलह कर्मबध कीधु। देवद्रव्य, गुरुद्रव्य, साधारणद्रव्य
भाक्षितु ऊपेक्षितु। प्रज्ञापराधिइ विणासिउ। विणसतउ ऊवेखिऊ। हूती शक्ति सारसंभाल न
कीधी। अपवित्र धोति विण मुखकोस पाखइ देवपूजा कीधी। बिंब प्रति वासकुंपी धूपधाणा
कलसतणउ ठवकउ लागउ। बिंब हाथ विछूटउ। माल नेचा तणउ द्रव्य वाहिलउ न पिउ।
25 देहरइ पोसालइ मल श्लेष्मा छाहिउ। हासां खेड कतूहल विकथा कीधी। जिनभवनि चुरासी
आसातन, गुरुप्रति तेत्रीस आसातन महि ज कांई हुइ। ठणहरी हारविउ, हाथ पाडिउ।
पडिलेहवु वीसारिउ। पडिलेहतां आलस कीधउं। अनेरू जु को० ॥

३. चारित्राचारि आठ अतीचार—**पणिहाण जोगजुत्तो**०—ईर्या समिति, भाषा समिति, एषणा समिति, आदाननिक्षेप समिति, परिष्ठापनिका समिति—पाच समिति; मनोगुप्ति, वचन-गुप्ति, कायगुप्ति-त्रिणिगुप्ति; चारित्रनउ योग गुणवंत प्रति सदैव जोईइ वशेष सामाइकि पोसइं लीधइं। निश्चउ पालतां ज कांई खंडन विराधन हुइ, पक्षदिव० ॥

४. विशेषतश्चारित्राचारि तपोधनतणइ धर्मि—**वयछक्क कायछक्कं**—व्रतषट्कि पहिलइं प्राणाति- 5
पात विरमण व्रति सूक्षम बादर त्रस स्थावर जीवसंघ संघट परिताप उपद्रव हूउ। बीजइं मृषावाद विरमणव्रति क्रोध, लोभ, भय, हास्य लगइं जूठउं बोलिउं। त्रीजइ अदत्तादान व्रति—"स्वामि जीवादत्तं, तित्थयरदत्तं तहेव य गुरूहिं"—स्वामि अदत्त, जीव अदत्त, तीरथंकर अदत्त, गुरु अदत्त चिहुं अदत्तमांहि अणमोकल्याविउं कांइं लीधउं। चउथइ मैथुन परिहारव्रति—' वसहि कह०—' नव ब्रह्मचर्य गुप्ति तणइं विषइ खंडन विराधना हुई। पांचमइ परिग्रह विरमण व्रति—' इच्छा 10
मुच्छा गहिय० '—धर्मोपगरण ऊपरि इच्छा मूर्छा गृद्धि आसक्ति धरी, अधिक उपगरण पर्वातिथि पडिलेहुं नहि। छठइ रात्रिभोजन विरमण व्रति असूर पाणी वावरिउं। पात्रइं पात्राबंधि छांटु रहिउ, खरहंटु रहिउ, लेप ओषड संनिधि लागी हुइ। अनेरु छठइ व्रति ज को०॥ काय षट्कि गांम तणइं पइसारि नीसारि पग पडिलेहा नही। माटी मींठा पाषाण चातलीनु खेरउ चंपा-णउ। अपकाय सूक्ष्म बादर मध्यम ठाघारी फोसणा लागां। जलावगाहुउ। ऊलषु हालिउ, 15
लोटउ ढलिउ। ठार हरतण धूंहरिनी विराधना हुई। तेउकाय वीज देवा ऊजेही लागी। विहरतां उंबाड हालिउं छांटा लागा, तेउकाय विराधना हुई। वाउकाय ऊघाडि मुखि बोलिउं, फूंक दीधी, महावाय वाजतइ कल्प कांबलीना छेहडा ऊडिया हुइं। वनस्पतिकाय नीलि फूलि सेवाल हरीका बीका फलफूल तणा संघट्ट हूया। त्रसकाय बेंद्री, तेंद्री, चउरिंद्री पंचेंद्री जीव दूहविउ हूइं। परिताप उपद्रव हुउ। काक बक बीहावियां। ढोर लंउंडिया, विलाडां त्रासवियां हइं। 20
कायषट्कि विषईउ अनेरु० ॥

५. अकल्पनीय पिण्ड शय्या वस्त्र पात्र भोगवियां। शय्यातर पिंड लागउ। उपयोग कीधा पाखइ विहरिउ। दात्री दोष त्रस बीय संसक्त पश्चात् कर्म पूर्व कर्म शंकित पिंड भोगविउ हुइं। गृहस्थनुं भाजन भांजिउं। वली पाछुं नापिउं। सूतां सुखार्थ अधिक उपकरण घातिउं। देशतः सर्वतः स्नान वांछिउं। मुषि भीनु हाथ लगाडिउ। सय(री)रनउ मल फेडिउ। नख रोम समा- 25
रिया। अनेरी राढा विभूषा कीधी हुइ पक्षदिवस मांहि० ॥

६. **आवसइ सज्जाए०**—आवशक उभय काल पडिकमणुं सावधान पणइं न कीधउं। दिवसमांहि च्यारि वार सज्झाउ न कीधउ। पडिलेहण असूर सवारइ भणी कीधी, अस्तोवस्तइं

कीधी। धर्मध्यान शुक्लध्यान कीधउं नही। आर्त रौद्रध्यान ध्यायिउं हुइं। विहरतां ४२ दोषाहार सुधउ जोउ नही। असूज्झतउं भातपाणी लीधउं। हुंती शक्ति पर्वतिथि उपवासादिक न कीधउ। उपाश्रय पइसतां नीसरतां निसीही आवसीही प्रमुख दसविध चक्रवाल सामाचारी न साचवी। वइसतां अणुजाणह जस्सग्गहो संडासा कीडीनां नगरां सोधियां नही। केवली
5 भूमि बइठा। सथाराविधि भणी नही। संथारा ऊत्रेटणु अणपडिलेहियां वावरियां। उघउ मुहपत्ती चोलपटउ सघटिउ। स्त्रीतिर्यंची तणा संघट हूया। साधु सामाचारी विषइ जु को अतीचार पक्ष दिवस माहीं० ॥

७. विशेषत' श्रावकतणइ धर्मि सम्यक्त्व मूल बार व्रत। सम्यक्त्व तणा पांच अतीचार–संका कख विगंछा०–संका श्री अरिहत तणा बल अतिशय, ज्ञान, लक्ष्मी, गभीर्यादिक गुण,
10 शाश्वती प्रतिमा, चारित्रीयानां चारित्र, जिनवचन तणउ संदेह कीधउ। आकंक्षा ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, क्षेत्रपाल, गोगउ, आसपाल, पाद्रदेवति, ग्रहपूजा इत्येवमादिक ग्रामि, गोत्रि, देशि, नगरि जूजूयां देव देहरांडां प्रभाव देषी रोगि आतंकि इहलोकि परलोकार्थ पूज्यां, पूजिवा विमासिआं। बौद्ध, सांख्यादिक,संज्ञा(न्या)सी,भरडा, भगवत लिंगिया,योगी, दू(द)रवेस, अनेराइ दर्शनीयानउं कष्ट, मत्र–चमत्कार देषी परमार्थ जाणिया विणु मूलाव्या मोहिया। कूशास्त्र
15 सीख्या सांभल्यां। सिराध, संवत्सरी, होली, बलेव, माही पूनिम, धण तेरसि, आजा पडवे, आदित्यवार,ऊत्रायणि,नवोदकी जाग भोग ऊतारणां [कीधा]। पींपलि पाणी घालियां। घरि बाहरि, कूइ, तलावि, नदी, समुद्रि कुडि पुण्यहेतु स्नान कीधां। अजाणतां अनेराइ व्रत व्रतूलां कीधां, कराव्यां। विचिगिच्छा, धर्म संबंधीया फल तणुं सदेह कीधु। जिन अरिहंत धर्मना आगार, विश्वोपकार, मोक्षमार्ग दाता, इअशा गुण भणी नइ पूज्या। इहलोक परलोक संबंधीया भोग
20 वांछते पूजा कीधी। रोगि, आतंकि, कष्टि आविइ खण वचन भोग मानिया। महात्माना भात पाणी मल शोभा निंदा कीधी। कुचारित्रीया देषी चारित्रीया ऊपरि अभाव हूउ। मिथ्यात्वी तणु प्रभाव प्रभावना तपु देखी प्रशंसा कीधी। प्रीति मांडी। दाक्षिण्य लगइ तीहनउं धर्म मानिउ। श्री सम्यक्त्व विषइउ अनेरु जु को पक्ष दिवस० ॥

८ पहिलइ प्राणातिपाति व्रति पाच अतीचार–वहबंध छविच्छेए०–द्विपद चतुष्पद
25 प्रति रीस वसि गाढइ घाउ घाल्यिउ। गाढइं बधनी बांधियां। घण भारि पीडियां। निर्लंछन कर्म कीधउं। चारि पाणी तणी सार सभाल वेलां न कीधीइ। लहिणइ देणइ कणहूं उहाडिउ, लघाविउं। तीणइ भूषिइ आपणि जिमिया। सुल्यां धान वस्तु रूडइ सोधी न वावरियां। अणगलि पाणी छाडिउ। गलणउ रूडउ न कीधउ। इघण अणसोधिं ज्वालिं। साप, खजूरा, वींछी, सूलहला, जूया, गोगीडा मूआ। फेडाता दूषाणा। रूडइ न लांखियां।

कीडी, मंकोडी, ऊदेही, घीमेली, कात्रा, चूडेलि, पतंगीया, डेडिर, अलसलां, ईली प्रमुख जि के जीव विणासिया, चांप्या, दुहव्या हालतां चालतां पाणी छांडतां अनेराइ काजकाम करतां निद्वंधसपणउं कीधउं। जीव रक्षा न कीधीइ। प्राणातिपात व्रत विषइं अनेरू ज को पक्ष दिवस० ॥

९. बीजइ मृषावाद व्रति पांच अतीचार–सहस्सा रहस्स दारे०–सहसात्कारि कुणहं प्रति अयुक्तउं आल दीधउं। स्वदार मंत्र भेद कीधउ। अनेराइ कुणहइनउ मंत्र आलोच मर्म प्रकासिउ। कुणहिरउ उपाय पाडिउ। उपायि पाडिवा कूडी बुद्धि दीधी। कूडउ लेख लिखिउ। जूठी साषि भरी। थांपणि मोसउ कीधु। कन्या, ढोर, भूमि संबंधि लहिणइं देणइ व्यवसाय वाद विढवाडि करतां जूठउं बोलिउं। अनेरु ज को पक्ष दिवस० मृषावाद व्रति० ॥

१०. त्रीजइ अदत्तादानि व्रति पांच अतीचार–तेनाहडपयोगे०–घरि बाहरि क्षेत्रि खलइं पीयारउं अणमोकलाविउं लीधउं, वावरिउं। चोर पव्हाई वस्तु वउहरी। चोर धाडीत प्रतिं संकेत कहिउ। संबल दीधउं। तीहनी वस्तु लीधी। विरुद्ध राज्यातिक्रम कीधउ। नवां पराणां सरस विरस जीव निर्जीव वस्तु तणा भेल कीधा। कूडइ तूलि मानि मापि वुहरिउं। लेखइं पलेखइं कुणहूं बरांसाविउ। साटइ लांच दीधी। कूडउ करु विश्वासघात अनेरीइ परवचना क(की)धी। अदत्तादानव्रति अनेरु पक्ष दिव० ॥

११. चउत्थइ स्वदार संतोष परस्त्री विरमणव्रति पांच अतीचार-अपरिगहिया इत्तर०-अपरगृहीता गमन, इत्वर परिगृहीता गमन, विधवा वेस्या परस्त्री कुलांगना स्वदार सउकि तणइ विषइं दृष्टिविपर्यास कीधउ। सराग वचन बोलियां। विकल्प चींतविउ। अनंगक्रीडा हुइ। पराया वीवाह जोडीया। कामभोग तणइ विषइं तीव्राभिलाष कीधउ। अष्टमी चतुर्दशी पर्वतिथि तथा अनेराइं नियम भागा। चउथइ परस्त्री विरमण व्रति अनेरु जु को अतीचार पक्ष दिवस० ॥

१२. पांचमइं परिग्रह परिमाण व्रति पांच अतीचार–धण धन्न खित्त वत्थु०–धन, धान्य, क्षेत्र, वास्तु, रूप्य, सुवर्ण, कुप्य, द्विपद, चतुःपद–नवविध परिग्रह तणा नियम अपरांति वृद्धि देखी मूर्छा लगइ समासण नीपजावी। माता, पिता, पुत्र, कलत्र तणइ लेषइ कीधउं। परिग्रह परिमाण लेइ पढिउं नहि। पढी वीसारिउं, अलीढउं मेल्हिउं, नियम वीसारिया। परिग्रह परिमाण व्रति अनेरु जु को० ॥

१३. छठइ दिगु व्रति पांच०–गमणसउ परिमाणे०–ऊर्ध्वदिसि,अधोदिसि,तिर्यगादिशि जायवा तणउ नियम जु कोइ अणाभोगि भागउ विस्मृति लगइ अधिक भूमि गया। पाठवणी आघी मोकली। छठइ दिगव्रति अनेरु जु को० अती० ॥

१४. सातमइ भोगोपभोग व्रति भोजनत'–पाच, कर्मतः पनर–एवं वीस अतीचार–सचित्ते पडिबद्धे०–सचित्त तणा नियम अपराति सचित्त प्रतिबद्ध, अपक्क आहार, दुपक्क आहार, तुच्छोषधी तणां भक्षण, उला, ऊंबी, पहुक, पापडी, सलेया धान, बावीस अभक्ष, बत्रीस अनतकाय मांहि ज काई भक्षण नीपजाविउं। असूर वियाळं कीधउं। उदय विण जिमिया।

5 'सचित्त दव्व विगइ वाणह तंबोल वत्थ कुसुमेसु।
वाहण सयण विलेवण बभं दिसि नाणुभत्तेसु॥'

ए चउद नियम दिन प्रति संभारिया संक्षेपिया नही। विस्मृति लगइ भागा। 'इंगाली वणसाडी, भाडी फोडीसु वज्जए कम्मं'। एवं पांच कर्म, पांच वाणिज्य, पांच सामान्य। बहुरगिणी लीहाला आगरणि ईट वाहक रसण वृक्षच्छेद कीधा। गाडां वाहण 10 दंताल हल नीपजाविया। भाडां कीधा, भूमि फोडी, शंख नख चीड चमर पोर मुक्ताफल दंतादिक आगारि वउहरिया। लाख गुली लूण अरणेटउ आभूया मणसिल हरियाल संख सुहागउ सुलियां धान, वस्तु अनंतकाई, मीण मुहूडां प्रभृति मधु मांखण विस द्विपद चतुप्पद लोह विषादिकतणा विणज कीधा। यत्र घाणी घरट्ट कोल्ह वाहिया। बल्द कीधा। नाक फोडियां फोडावियां। कर्ण कंधल छेद कीधा, आंक पाड्या। दव लगाडिया। कूया वावि सरोवर द्रह 15 सोसिया। दास कमारां छोरुनां कुद्रव्य सातिया। मासी(छी) कसाई तेली वागुरीसुउं विवहार कीधा। दाण वउलावी गाम लीधां। आकरा कर कीधा। स्वान कुर्कट माजार पोसिया। एहे पनर खरकर्मि बहु सावद्य अनेराइ जि काई अतीचार० ॥

१५. आठमइ अनर्थदडि व्रति पाच अतीचार–कंदप्पे कोकइए०–अनर्थदंड कहीइ जि काज पाषइ मुहियां पाप लागइं। मुखि हास्य खेड कुतूहल अंगि कुचेष्टा कीधी। निरर्थक लोक 20 रहइ करसण गाडा वाही गाम गामंतरां कमवायनी बुद्धि दीधी। कण कुवस्तु ढोर लिवारियां। अनेरु पापोपदेश दीधउ। खांडां, कटारां, कुसि, कुहाडा, रथ, ऊषल, मूसल, घरट्टी यात्रिक काजु करी मेली मेल्हिवा मागियां आलियां। अंगोहलि न्हाणूइ दातणि पगधोअणि खलि पाणी अधिक छाडियां अथवा झीलिया। जू रमिया। हींडोले हींचिया। नाटक पेषणां एवविध जोयां। पुरुष स्त्रीना हावभाव शृगाररस वषाणिया। राजकथा, देशकथा, पराई ताति कीधी। 25 कर्कश वचन बोलियां। भइसा हुड कूकडा मनक्ष झूझता कलह करता जोयां। लोकतणी उपार्जना सुख कीर्ति देखी अदेपाइ चिंतवी। खाधि लगइ पराइ वस्तूनां मूल अधिक उच्चां धरियां। अथवा अनेरीइ परिहाणि कीधी। लूंण माटी कण कपासिया काज विण चांपिया। आल्हिं वनस्पति खूटी। वाउ अगीठां कष्ट विणु कीधा। ध्रासि पाणी रस घीउ तेल गुल

आमल वेतस बेरजी आदिक तणा भाजन ऊघाडां मेल्हियां। मांहे कुंथूआ कीडी माखी मंकोडा उंदिर घिरोली प्रमुख जीव विणठा । सूडा साल्ही क्रीडा हेतु अनेराइ जीव बंधि राखीया। रागद्वेष लगइं एकरहइं रिद्धि परिवार वांछियां, एकि रहइं मृत्यु हाणि विमासियां। अनर्थदंड विषइउ अनेरु जु को अतीचार० ॥

१६. नुमइ सामायक व्रति पांच अतीचार—तिविहे दुप्पणिहाणे—सामाइक लीधइं मनि आहट दोहट चिंतविउं। वचनि सावद्य बोलिउं। सयरु अणपडिलेहउं हलाविउं। छती वेलां सामाइक लीधउं नही। ऊघाडइ मुखि बोलिउं। ऊंघ आवी। विकथा कीधी। वीज दीवा तणी ऊजेई लागी। कण कपासिया माटी तणा संघट्ट हूया। स्त्री तिर्यंची आभडी। मुहपत्तीऊ संघट्टी। सामाइक अणपूगउं पारिउं। पारिवउं वीसारिउं। सामायिक व्रति अनेरु जु को अतीचार० ॥ 5

१७. दसमइ देसावगासिक व्रति पांच अतीचार—आणवणे पेसवणे—नियमी भूमिका माहिला गमा कांइ बाहिर थकउं आपणकन्हइं अणाविउं। आपणपा कन्हलि थकउ बाहरि मोकलिउं। अथवा रूप दिखाडी, काकरउ लांखी, साद करी, आपणपउं छतउं जणाविउं। दसमइं देसावगासिक व्रति अनेरु जु को अतीचार० ॥ 10

१८. इग्यारमइं पौषधोपवासव्रति पांच अतीचार—संथारुच्चारविही—पोसह लीधइं संथारा तणी भूमि बाहिरलां थंडिल स दीसइं सोधियां, पडिलेहियां नही। थंडिल वावरतां, मातरां परिठवतां चींतवणी न कीधी। 'अण(णु)जाणह जस्सग्गहो' न कहिउं। परिठविया पूंठिइं वोसिरइं भणिउं नही। पोसालमांहि पइसतां निसीही, नीकलतां निसीही (?) आवसीही कहिवउं वीसरिउं। पुढवि अप तेउ वाउ वनस्पति त्रस कायतणा संघट्ट परिताप उपद्रव कीधा। संथारा पेरिसि तणउ विधि भणिवउ वीसारिउ। अविधि संथरिउं। पारणादिकतणी चिंता नीपजावी। कालवेला देव न वंदाणा। पोसउ असूर लीधउ। सवारहि पारिउ। पर्वतिथि पोसउ लीधउ नही। पौषधोपवासि व्रति अनेरु ज को अतीचार पक्ष० ॥ 15 20

१९. बारमइ अतिथि संविभाग व्रति पांच अतिचार—सचित्ते निक्खमणे—सचित्त वस्तु हेठि ऊपरि छतां तपोधन तपोधना प्रति असूझतउं दान दीधउं। देवा तणी बुद्धि असूझतउं फेडी सूझतुं कीधउं। पराइ वस्तु धणीनेइं अणकहि अथवा आपणी भणी दीधी। अणदेवातणी बुद्धिइं सूजतुं फेडी असूज[तुं] कीधउं, आपणउं फेडी पिरायउं कहिउं। विहरवा वेला टली रहिया। असूर करी महात्मा तेडिया। मच्छर लगइ दान दीधउं। गुणवंत आविइ भक्ति न साचवी। सीदातउ साधर्मिक, अनेराइं धर्मक्षेत्र छती शक्ति उधरियां नही। दीण क्षीण प्रति अनुकंपा दान न दीधउं। अतिथि संविभागव्रति अनेरु ज को पक्ष दिवस० ॥ 25

२०. संलेखणा तणा पांच अती०—इहलोए परलोए—इहलोकि धर्म तणा प्रभावलगइं राजारिद्धि वांछिया। परलोकि देवेन्द्र अहमिंद्र पदवी वाछी। सुखि जीविवानी, दुखि मरिवातणी वांछा कीधी। कामभोगनी प्रार्थना कीधी। अनेरु संलेषणा व्रत अतिचार पक्ष दि० ॥

२१. तपाचारि बार भेद:—छ बाह्य, छहिं आभ्यंतरि—अणसणमूणोदरिया—उपवासादिक कीधा 5 नहीं। उणोदरी व्रत साचवि नही। द्रव्य सखेप विगइ परिहार आसनादिक कायक्लेश कीधु नही। संलीनता अगोपाग संवृत कीधां नही। पाटलु डिगतु फेडिउ नही। पच्चखाण पारिवां वीसारियां। आंबिल नीवी एकासणां प्रमुष पच्चखाण भागउ। वमन हूउं। बाह्य तपि अनेरु ज को अतीचार० ॥

२२. आभ्यंतरि तपाचारि—पायछित्तं विणउ—गुरुकन्हइ सुधी आलोअण लीधी नही। गुरुदत्त 10 तप सघलु कीधउं नही। देवगुरु धर्मवंत प्रति विनउ साचवीउ नही। वृद्ध ग्लान तपस्वी प्रति वेयावच्च कीधउ नही। वाचना प्रच्छना परावर्तना अनुप्रेक्षा धर्मकथा लक्षण स्वाध्याय कीधउ नही। धर्मध्यान शुक्लध्यान ध्यायां नही। आर्त रौद्र ध्यान ध्यायां। कर्मक्षय निमित्त विशेष कायोत्सर्ग कीधउ नही। अनेरु जु को अतीचार पक्ष दि० अभिंतरि तपि हुओ ॥

२३ वीर्याचारि त्रिनि अतीचार—अणिगूहिअ बिल विरिउ०—पढवइ गुणवइ विनय वेयावच्चि 15 देव पूजा सामायकि पोसहि दान शील तप भावनादिकि धर्मकृत्य मन वचन कायतणउं छतउं बल छतउं वीर्य गोपविउ। रूडां खमासण दीधा नही। वांदणाना आवर्त विधिइ साचविया नही। वइठा पडिक्कमणं कीधउं। वीर्याचारि अनेरु ज को अतीचार पक्ष दिव० ॥

२४. पडिसिद्धाणं करणे—जिन प्रतिषिद्ध जीवहिंसा, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्य, रति, अरति, परपरिवाद, 20 माया मृषावाद, मिथ्यात्व शिल्य कीधा हुइं। कृत्य प्रतिक्रमण विनय दानादिक कीधां नही। जीवाजीवादिक सूक्ष्म विचार सद्दहियां नही। आपणी कुमति लगइ उत्सूत्र प्ररूपणा कीधी। ए विहु प्रकारि अनेरु जु को अतीचार पक्ष दि० ॥

२५. एवं कारइ श्रावकतणइं धर्मि सम्यक्त्व मूल बार व्रत चउवीससउ अतीचार मांहि जु कोइ सूक्ष्म वादर जाणतां अजाणता पक्ष दिवस मांहि [हूउ] ते सविहु मनि वचनि काइ 25 मिच्छामि दुक्कडु ॥

॥ श्रावक अतीचार संवत १४६६ वर्षे ॥

उपदेशमाला ग्रंथमांनी केटलीक कथाओ

[कर्ता–सोमसुंदर सूरि; समय विक्रम संवत् १४५७–१४९९.]

१. परशुरामनी कथा.

[धर्म छे ते आत्म साक्षिए करेलो होय ते ज सुंदर फळ आपनार होय छे, अन्यने जणाववानी खातर करेलो धर्म सुफलप्रद थतो नथी, ए उपर ग्रंथकार दृष्टांतो सूचवे छे.– 5
संपादक]

मूल गाथाः–किंपरजणवहुजाणावणाहिं वरमप्पसाक्खिअं सुकयं ।
इअ भरह चक्कवट्टी पसन्नचंदो अ दिट्ठंता ॥ १९ ॥

विवरणः—किंपर०–परजन अनेरा लोक तेहनी विद्या प्रामी तीणइं करी परशुराम नामिइं प्रसिद्ध हूउ । तीणइं अन्यायिणी भणी बेटा सहित आपणी माता रेणुका मारी । अनंतवीर्यइ आवी तेहनउ आश्रम विणासिउ । परशुरामिइं अनंतवीर्यनउं मस्तक छेदिउं । अनंतवीर्यनु बेटउ कार्तवीर्य गजपुरि राजा हूउ । तीणइं बापनइं वइरिइं आवी यमदग्नि मारिउ । परशुरामिइं कार्तवीर्य मारी राज्य लीधउं । इसिइ कार्तवीर्यनी एक कलत्र तारा साधान थकी नाठी । तापसनइ उडवलइ गई, भूंइहरइ राषी, तिहां बेटउ जायु । सुभूम नाम दीधूं । परशुरामि सात वार निःक्षत्रिणी पृथ्वी कीधी । इसिइ अवसारि परशुरामि नैमित्तिक पूछिउ । माहरुं केहनइं हाथिइं मरण हूसिइ । ए क्षत्रीनी दाढ भरी थाल मूंको; जीणइं आविइं दाढ फीटी खीर थाइसिइ; ते खीर जे जिमिसिइ तेहनइं हाथिइं मरण । पछइ परशुरामि सत्तूकार मंडावी ते थाल सिंहासन ऊपरि मूंकिउं । इसिइ मेघनाद विद्याधारि आपणी बेटीनु वर नैमित्तिक कन्हइ पूछिओ । तीणइ सुभूम वर कहिओ । तेह भणी ते विद्याधर सुभूमनी सेवा करइ, विद्या सीष(ख)वइ । सुभूम माय कन्हइ पूछइ–मात! भूमि एतलीइजि छइ। माताई रोतीइं पाछिलु सघलु वृत्तांत कहिउ । पछइ सुभूम असि(भि)मान लगइ । जणाविवइं किसिउं तेहे भलउ कहिउ, विरुउ कहिउ तेऊ कांई नहीं. (आ कथा आगळ ऊपर फरी आववानी छे तेथी अहिं प्रस्तुत प्रसंगना सूचन पुरती ज आपेली देखाय छे.–**संपादक**)

(१.) वरम०–सु सुकृत पुण्य आत्म साक्षिकइज भलुं। जिहां आपणउं मन साक्षि दिइ–ए रूडउं कीधउं मिइं; तेहू ज पुण्य सफल । एह ऊपरि भरथेश्वर चक्रवर्ति प्रसन्नचंद्र राजर्षिनु दृष्टान्त जाणिवु। भरथेश्वर चक्रवर्ति गृहस्थवेषि अन्तःपुरमाहि आदर्श भवनि रूप शोभा जोता अनेरे संसार भावि वर्ततउ गणिउ। तीणइं पुण मुद्रिका पडीइं आंगुली निःश्रीक देषी बीजां आभरण ऊतारतइं शरीरनी असारता चिंतवतइं वैराग्य भावथी केवल ज्ञान प्रामिउं ।

(२.) अनइं प्रसन्नचंद्र राजर्षि काउसग्गि रहिउ । आतापना लेतउ महाध्यानि वर्ततउ श्रेणिक महाराइं विस्मयथिकइं मोक्ष ऊपार्जितउ भणी वांदिउ । तेणिं पुण तेणी वेलाइं सुमुख दुर्मुखनां वचन साभली आपणा बाला बेटानइं पराभव जाणी सीमाला रायसिउं मनि युद्ध करतइ रौद्रध्यान वर्ततइ सातमी नरक पृथ्वी जोगि ऊपार्जिउं । एह भणी बीजा लोकनुं जा-
5 णिउं कांई प्रमाण नही । आपणउ आत्मा जिहा साक्षि दिइ ते कर्त प्रमाण ।

२. बाहुबलीनी कथा.

हिवइं धर्मानुष्ठान करतां शुभ ज भाव करिवउ, क्रोध अहंकारादि दूषित अशुभ भाविइ काज न सरइ, तेह ऊपरि बाहुबलिनु दृष्टान्त कहइ छइ—

मूलगाथाः—धम्मो मएण हुंतो न वि सीउन्हवाय विज्झडिउ ।
10 संवच्छरमणसिओ बाहुबली तह किलिस्संतो ॥ २५ ॥

विवरण—धम्मो०—जइ अहंकारिइं कीधइं धर्म हुइ, तो न वि सीओ०—तउ बाहुवलि राजर्षि, सीउ०—एवडां सीत टाढि उष्ण लूय वाय करी, विज्झडिउ—आहणिउ, संवच्छर—वरस दीस, अणसिअउ—आहारपाणी रहित उपवासी काउस्सग्गि रहिउ । कलि०—क्लेश दुख न प्रामत, तत्काल जि केवलज्ञान ऊपार्जित । बाहुबलिनइ मनि दीक्षा लीधी पूठिइं इशुं अभिमान
15 हूउ—जउ हवडां श्री आदिनाथ कन्हलि जाइसु तो माहरि लघु ९८ भाईए दीक्षा लीधी छइ ते वादवा थासिं । तेह भणी केवलज्ञान ऊपना पाखइ नहीं जाउं । केवलज्ञान ऊपना पूठिइं केवली को केहनइ वांदइ नहीं, इसी व्यवस्था छइ । ईणइ अभिमानिं बाहुबलिनइ वरस दीस केवलज्ञान न ऊपनु । जेती वारइ श्री आदिनाथनइ आदेसिइ ब्राह्मी सुंदरी महासती ए बिहु बहिने आवी कहिउं—बाधव ! हाथीथिकु ऊतरि । तिह्वारेइ तीणइं चींतविउं—अभिमान ज हा-
20 थीउ । ते मूकी जेतलइ पग ऊपाडिउ तेतलइं केवलज्ञान ऊपनू ।

३. सनत्कुमार कथा.

सनत्कुमार चक्रवर्तिनउ रूप एक वार इंद्रि वखाणिउं । ते जोवा बि देव ब्राह्मणनां रूप करी आव्या । तेहे रूप वखाणिउं । चक्रवर्ति गर्वि गयो । तेतलइं चक्रवर्तिनइ शरीरि कर्म लगइ
25 सात महारोग संक्रम्या । तिसिं ते ब्राह्मण रूप जोवा तेड्या । सभामाहि विशेष आभरण शोभा

करी चक्रवर्ति गर्विउ बइठउ छइ । तिहां ते देव सरोग सरीर देषी कालमुहा थआ । ताहरइ सरीरि आज लगइ क्षणि क्षणि सात रोगे करी रूपनी हाणि हुइ छइ । इसिउं तेह देवे कहिउं । अम्हे देव तम्हारुं रूप ज जोवा भणी आव्या हूता । पहिलुं जिसिउं इंद्रि ताहरुं रूप वर्ण्णविउं तेहवूं ज हूतउं । हिवि क्षणि क्षणि विणसइ छइ । जे कांई जाणि ते करिं; इम कही देव स्वर्गि गया । एतलइं वचनमात्रिइं चक्रवर्ति बूझउ । राज्य छांडी दीक्षा लीधी । सातसइ वरस रोग अहियासिया । तेह ज बिहुं देवे वैद्य रूप करी परीक्षा कीधी पुण न क्षुभिउ । तपनइं महात्मइं थूंकिं आपणी आंगुली सुवर्णमय करी लब्धि देषाडी पुण चिकित्सा कराविवा ऊपरि मन न हवुं । रोग आफणी विलय गया । पछइ लाख वर्ष दीक्षा पाली सनत्कुमार ऋषि सनत्कुमारनामइं त्रीजइ देवलोकि पहुतु ।

४. जासासानी कथा.

वसंतपुरि अनंगसेन सोनार [५००] स्त्री मेली, एकिनइं बाहरि नींसरवा न दिइ । एकवार मित्रिइं किसइ पगराणि घरि तेडउ, निवरुं देखी, सविहुं स्त्रीए स्नान विलेपन करी आभरण पहिरियां, हाथि आरिसा लेई बइठी, तेतलइं ते सोनार आविउ । तीणइं रीसाविइं एक स्त्री मर्मि आहाणी मूंई । बीजी ए बीहतीए तेह भणी आरीसा लेई नांख्या, ते सोनार मूंओ । लोकापवाद वीहती बीजी सघली जमहर करी मूंई । एकि पालिइं एकिं ऊणा पांचसइ चोर थयां । जे स्त्री पहिलुं मूंई ते एकिं गांमि कहिनु बेटउ थयो । सोनारनु जीव तेहनी बहिन हूओ । ते पाछिला भवनइं अभ्यासिं उत्कट रागिइं रोती रहइ नहीं । एक वार भाईनउ हाथ गुह्य देशि लागु, रोती रही । पेलइं ते उपाय जाणिउ । वली वली तिम करतउ देखी माय बापे काढिउ । तेहइ चोरमाहि मिलिउ, मूलगु चोर थउ । एक वार तेहे चोरे धाडि गए ते स्त्री यौवनवय प्राप्त दीठी, ते स्त्री आफणी आवी तेह चोरमाहि मिली पांचसइंनी कलत्र हवी । एक वार तेहनीं दयां लगइ चोरे बीजी स्त्री आणी । तीव्र राग लगइ तीणीइं नवी स्त्री सांसई नहीं, भोलवी कूइ पाडी । ते वात जाणी तेहनइं भाई पल्लीपतिइं चिंतविउं । इसी तीव्र रागि किसिउं; ते ए माहरी बहिन नहीं । इसिइ श्रीमहावीरि सर्वज्ञ पाउधारिया सांभली समोसरणि आवी पूछिउं—भगवन् ! ते पापिणी ए माहरी बहिन न होई?। परमेश्वरि कहिउं—ए तेह ज । इसिउं सांभली वैराग्य लगइ बूझिउ । बीजाइं जीव घणा बूझ्या । इति कथा ॥

५. मृगावतीनी कथा.

कोशांबी नगरीइ श्रीमहावीरनइ समोसरणि चंद्र-सूर्य आपणे मूलगे ज विमाने आविआ। तीणइं अजूआलइ मृगावती महासतीइ वेला न जाणी। बीजी चंदनबाला प्रमुख महासती वेलाइं ज उपाश्रइ आवी। चदनबाला प्रवर्तिनी पडिकमणउ करी सज्झाय करी पोरिसी भणी
5 संथारइ पुढी छइ, तिसिं चंद्रसूर्य गयां। पूठि घाइसिउं अंधारु प्रसिरिउ देखी मृगावती उपाश्रयिं आवी चदनबालानइ पगि लागी। चंदनबालाइं शिक्षा दीधी तेहनइं। कुलीननइ एवडी रात्रि एकलां बाहीर रहिवु न बूझीइ, पछइ मृगावती आपणउ दोष सम्यग् पडिवजी। आज पूठिइ वली एहवु अपराध नहीं करू। इसिउं कहती चंदनबालानइ पगि पडी तेतलइं चंदनबालानइं निद्रा आवी। मृगावतीनइं क्षमावतांइंज केवलज्ञान ऊपनूं। इसि अंधारइ
10 संथारा ढूकडओ साप जातउ दीठउ। चंदनबालानु हाथ परहउ कीधउ। चंदनबाला जागी। पछइ पूछइ-तहे का माहरु हाथ हलाविउ ? । मृगावतीइं कहिउं-साप जाइ छइ, तेह भणी। चदनबाला साप न देखइ। मृगावतीनइ कहिउ-तुं किम देखइं ?। तुझनइं कांई ज्ञान छइ ?। तीणइं कहिउं-केवलज्ञान। पछइ चदनबाला पश्चात्ताप करती मृगावतीने पगे लागी। खमावतां तेहनइं केवलज्ञान ऊपनू। जिम मृगावतीनइ शिक्षा देतां कषाय न ऊपनु, इम बीजाइ जेहनइं
15 कषाय न ऊपजइं ते उत्तम।

६. चिलातीपुत्र कथा.

20 राजगृह नगरि धनश्रेष्टिनी बेटी सुंसुमा, तेहनु पालणाहार चिलातीपुत्र नामिं दास। ते विरूई चेष्टा करतउ देखी श्रेष्टिं बाहिरु काढिउ। पालिं जई पल्लीपति चोर थओ। एकवार घणा चोर मेली राजगृहि धनश्रेष्टिनइ घरि पइठउ। बीजा चोर लक्ष्मी लेई गया। तीणइ सुंसुमा बेटी ऊपाडी। मार्गि जाता केडां वाहर ढूकडी देखी सुंसुमानुं मस्तक छेदी लीधु। धनश्रेष्टि पांच बेटा सहित वाहरइ आवतु हूतउ ते पाछउ वलिउ। चिलाती पुत्रि आगलि माहात्मा काउस्सगि रहिउ दीठउ। खाडउ ऊगामी धर्म पूछिउ। माहात्माइ धर्म कहिउ। उपशम १, विवक २, संवर ३-त्रिहु पदे धर्म कही आकाशि ऊडिओ। चिलाती पुत्र त्रिहु
25 पदनु अर्थ विमासतु खांडउं अनइ स्त्री मस्तक परहु मूकी तेह ज महात्माना पगलेई

काउसग्गि रहिउ। लोहीनी गंधिइं वज्रतुंड कीडी नींकली। तेहे खाजतउ अढाई दिन महा कष्ट सही आठमइ देवलोकि पुहुतउ।

७. ढंढणकुमार कथा.

जिम चिलाती पुत्रि आपणी प्रतिज्ञा निर्वही तिम अनेराइ विवेकीया निर्वहइ–तेह ऊपरि ढंढणकुमारनउ दृष्टांत कहइ छइ– 5

मूलगाथा–पुप्फिय फलिय तह पिउघरम्मि तण्हा छुहा समणुबद्धा।
ढंढेण तहा वि सढा विसढा जह सफलया जाया॥ ३९॥

विवरण–पुप्फिय०–ढंढणकुमारना बाप श्रीकृष्णनुं घर फूलिउं, धन धान्य लक्ष्मी करी समृद्ध दातार छइ। कृपणनुं घर लक्ष्मी करी फूलिउं हुइ, पुण दीजइ भोगवीइ नहीं; तेह भणी फलिउं न कहीइ। इहां वि वांनां छइ। एहवइ बापनइ घरि छतइ, तण्हा छुहा०–तृषा अनइ 10 भूष, समणुबद्धा–निरंतर, ढंढे०–ढंढणकुमारि, तहावि०–तिम किमइ सही, विसढा०–निर्माय-पणइं, जह स०–जिम सफल हुई।

कथा कहीइ–ढंढणकुमारि पाछिलिइ भवि पांचसइं हल ऊपरि रायनइं अधिकारीइं छतइ मध्याह्नवेला भात चारि पाणी आवियां पूठिइं एकेकु चास आपणइ क्षेत्रि दिवरावतइ पनरसइं जीवनइं अंतराय कीधुं। ते कर्म ढंढणकुमारनइं भविं श्रीनेमिनाथ कन्हइ दीक्षा लीधा पूठीइं 15 उदय आविउं। नव वारी द्वारिका नगरीइं माहि सूझती भिक्षा न लहइं। तउ अभिग्रह लीधउ–परायु आणिउ आहार मइं न लेवु। आपणी लब्धिइं जउ सूझतउ आहार लहउं तउ लिउं; नही तरि न ल्युं। इसिउ अभिग्रह पालतां घणउ काल गउ। एकवार श्रीकृष्णि श्रीनेमिनाथ कन्हइ पूछिउं–एतला महात्मामहि कुण गाढउ दुष्करकारक?। परमेश्वरिइं कहिउं–ढंढणकुमार। पछइ कृष्ण महाराय भक्ति लगइ नगरनी सेरीमाहि ढंढणकुमार वांदिउ। ते देषी एकइं श्रेष्टि 20 मोटा भणी मोदक विहराविया। ढंढणकुमारि श्रीनेमिनाथ भगवन पूछिआ–माहरु अंतराय कर्म क्षय गउं?। परमेश्वरि कहिउं–ए कृष्णनी लब्धि, ताहरी लब्धि नहीं। पछइं नमाह मांहिं मोदक परठवतां कर्म क्षय गउं। केवल ज्ञान ऊपनूं। जिम ए ढंढणकुमार महात्मानइं आहारनइं विषइं प्रतिबंध न हूओ, अनइ काज सरिउं; तिम सवि हुं माहात्मानइं आहारादिकना प्रतिबंघ ऊपरि अधिकार नहीं। 25

वमता भुइं पाडिया । कोलाहल सांभली भद्रा तिहां आवी कहइवा लागी—रे पापीयाओ ! ए किशुं कीधुं [2] न जांणु ए महा तपस्वी ते जीणइं हुउं रायनी बेटी तृणानी परइं रोलवी रात्रि सघली भोगवी । एहनइं यक्ष सानिध्य करइ । पगिं लागी क्षमावु नहीं तु ए तुम्हनइ विगोसिं, चेटक मूंकसि । पछी भयभीत ब्राह्मणे पगि लागी मनाव्यु । महात्मा कहइ—पहिलुंइं अनइं हवडांइं माहरइं मनिं नहीं कोप, यक्षजनउं कर्तव्य । पछइ ब्राह्मणे सर्व अन्न पान ते ऋषिनइं 5 घातिउं । यक्षना हर्षनइ कारणि महात्माइ षाधुं । यक्ष गंधोदक पुष्पवृष्टयादि महोत्सव करइं, ते देषी घणा जीवनइं धर्मनउ प्रतिबोध हूओ ॥

१०. वयरस्वामि कथा.

पाडलीपुरि धन सार्थवाहनइं घरि रही महासतीनइं मुखि श्रीवयरस्वामिना गुण सांभली सार्थवाहनी बेटी इसी प्रतिज्ञा करइं-आंणइं भविं श्रीवयरस्वामि टाली बीजानउं पाणिग्रहण न करउं। 10 इसिं एकवार श्रीवयरस्वामी तीणइ नगरि पाउधारिया । धन सार्थवाह अनेक सुवर्ण रत्ननी कोडि सहित आपणी कन्या लेई श्रीवयरस्वामि कन्हइ आविउ । भगवंति ते सार्थवाह बूझविउ । तेहनी बेटी बूझवी दीक्षा लेवरावी, लगारइ मनि लोभ नांणिउं ॥

११. नंदिषेण कथा.

नंदग्रामिं दालिद्री निर्नाम ब्राह्मणनु बेटओ नंदिषेण तेह जातमात्रनां माय बाप मूआं । 15 माउलानइ घरि काजकाम करइ । माउलानइं सात बेटी छइं । माउलइ ते सातइ नंदिषेणनइं ओडवी; पुण कहि—वरि अह्मे प्राण छांडुं, पणि ए नंदिषेणनइं नहीं परणउं । इस्युं आपणउं दौर्भाग्य देषी नंदिषेणिं दीक्षा लीधी । पांच सईया गच्छनां वेयावच्च मिइ ज करिवां—इसओ अभिग्रह लीधओ । निरंतर छठ छठ पारणउं करइं । एक वार इंद्रिइं तेहनी प्रशंसा कीधी । ते अणसद्दहता देव २ परीक्षा करिवा आव्या । नंदिषेणनइं छठनूं पारणउं करिवा वइसतां 20 एक देवइं महात्मानइं रूपिं आवी कहिउं—एक माहात्मा गाढओ अतीसारीओ ग्लान वाहिरि वनमांहिं छइ । तउं तउ एवडउ अभिग्रह लेईनइं निश्चित थिकु खावा वइसइ छिं ! । तु नंदिषेण

८. स्कन्दक शिष्य कथा.

श्रावस्ती नगरीइ जितशत्रु रायपुत्र स्कदक । तीणइ आपणी बहिन पुरदरयशानु भर्तार दडकरायनु पुरोहित पालक धर्मनिंदा करतउ जीतउ । पछइ स्कंदक कुमारि पांचसइं पुरुक्ख सहित श्री मुनिसुव्रत स्वामि कह्हलि दीक्षा लीधी। आचार्य हूआ । बहिन बहिनेवी बूझविवा 5 कुंभकारकृत इसिइं नामिइ नगरि आविआ । पालकि गुरु रहिवानइ थानकि भूमिमाहि हथियार सताविंयां । दंडकिरायनइं कहिउं-ए आचार्य चारित्र भागउ पाचसइ योधी सुभट लेई आविउ छइ । तुहारु राज्य लेसिइ । न मानइ तु जोइ, हथीआर भुइमांहिं सातिआ छइं । ते काढी देषाडिआं । पछइ राजां तेहजनइ आदेश दीधउ-तउं जिम जाणिं तिम करि । पछइ तीणइ पालकिं अभाव्यि पांचइसइ महात्मा घांणइ घाली पीलिआ । क्षमा लगइ केवलज्ञान ऊपार्जी 10 मोक्षि पुहुता । छेहडइ श्रीस्कंदकसूरि एक चेलानइं इसिउं कहिउ-एकनइ पच्छइ घातजे । पहिलुं मुझर (?) नइं पीलि । तीणइं दुष्टिं पहिलुं चेलु ज पीलिउ । ते हू मोक्षि गयु । पछइ आचार्य पीलिआ । ते रीस लगइ अग्निकुमार देवता हूआ । ते हे पालक सहित देस सघलुइ बालिउ । तिहां दंडकारण्य हूउ । जीम श्रीस्कंदकाचार्यना शिष्य प्राणे जाते कुपिआ नहीं तिम बीजे ऊ महात्माए कोप न करिवु ।

15

९. हरिकेशीमुनी कथा.

पाछिलइ भवि पुरोहित ब्राह्मणनउ जीव जातिमदिइ करी हरिकेश बल मातग थउ । जातिस्मरण प्रामी वैराग्य लगइ महात्मा थओ । महा तपनइ प्रमाणि देवताए सेवीइ । एकवार वाणारसी नगरी बाहिरि यक्षना भवन ढूकडउ काउसग्गि रहि छइं । इसिं रायनी बेटीइं भद्रा यक्ष पूजिवा आवीइ दीठउ । मलिन देह भणी थूकिउ । यक्षिइ रीसाविं तेहनुं मुख वांकु 20 कीधउ । शरीरि महापीडा ऊपजावी । राजाइं अनेक उपाय उपचार कराव्या पणि गुण किमिहि न हुइ । तु पछइ यक्ष प्रत्यक्ष होई बोलइं-तउ ए साजी थाई, जउ एह ज ऋषिनु पाणि ग्रहण करइ । राजा मानिउ । यक्षिइं महात्मानउं सरीर अधिष्ठीनइ परिणी विडंबी रातिइ महात्मा छांडी नाठओ । राजा ऋषिपत्नी भणी भद्रा पुरोहितनइ दीधी । केतलइ कालिं तीणइ पुरोहितिं याग माड्या। ब्राह्मण घणा मिल्या छइ। दैवयोग लगइ तेह ज मातग ऋषि भीक्षानइ अर्थि तीणइ २५ यज्ञि पाटकि आविउ । मातंग मइलु कुरूप देखी ब्राह्मण मारवा लागा । यक्षइ रीसावइ लोही

वमंता भुइं पाडिया । कोलाहल सांभली भद्रा तिहां आवी कहइवा लागी–रे पापीयाओ ! ए किशुं कीधुं [2] न जांणु ए महा तपस्वी ते जीणइ हुउं रायनी बेटी तृणानीं परइं रोलवी रात्रि सघली भोगवी । एहनइं यक्ष सानिध्य करइ । पगिं लागी क्षमावु नहीं तु ए तुम्हनइ विगोसिं, चेटक मूंकासिं । पछी भयभीत ब्राह्मणे पगि लागी मनाव्यु । महात्मा कहइ–पहिलुंइं अनइं हवडांइं माहरइं मनि नही कोप, यक्षजनउं कर्तव्य । पछइ ब्राह्मणे सर्व अन्न पान ते ऋषिनइं 5 घातिउं । यक्षना हर्षनइ कारणि महात्माइ षाधुं । यक्ष गंधोदक पुष्पवृष्टयादि महोत्सव करइं, ते देषी घणा जीवनइं धर्मनउ प्रतिबोध हूओ ॥

१०. वयरस्वामि कथा.

पाडलीपुरि धन सार्थवाहनइं घरि रही महासतीनइं मुखि श्रीवयरस्वामिना गुण सांभली सार्थवाहनी बेटी इसी प्रतिज्ञा करइं-आंणइं भविं श्रीवयरस्वामि टाली बीजानउं पाणिग्रहण न करउं । 10 इसिं एकवार श्रीवयरस्वामी तीणइ नगरि पाउधारिया । धन सार्थवाह अनेक सुवर्ण रत्ननी कोडि सहित आपणी कन्या लेई श्रीवयरस्वामि कह्इ आविउ । भगवंति ते सार्थवाह बूझविउ । तेहनी बेटी बूझवी दीक्षा लेवरावी, लगारइ मनि लोभ नांणिउं ॥

११. नंदिषेण कथा.

नंदग्रामिं दालिद्री निर्नाम ब्राह्मणनु बेटओ नंदिषेण तेह जातमात्रनां माय बाप मूआं । 15 माउलानइ घरि काजकाम करइ । माउलानइं सात बेटी छइं । माउलइ ते सातइ नंदिषेणनइं ओडवी; पुण कहि–वरि अह्मे प्राण छांडुं, पणि ए नंदिषेणनइं नहीं परणउं । इस्युं आपणउं दौर्भाग्य देषी नंदिषेणिं दीक्षा लीधी । पांच सईया गच्छनां वेयावच्च मिइ ज करिवां–इसओ अभिग्रह लीधओ । निरंतर छठ छठ पारणउं करइं । एक वार इंद्रिइं तेहनी प्रशंसा कीधी । ते अणसद्दहता देव २ परीक्षा करिवा आव्या । नंदिषेणनइं छठनूं पारणउं करिवा वइसतां 20 एक देवइं महात्मानइं रूपिं आवी कहिउं–एक माहात्मा गाढओ अतीसारीओ ग्लान वाहिरि वनमांहिं छइ । तउं तउ एवडउ अभिग्रह लेईनइं निश्चिंत थिकु खावा वइसइ छिं ! । तु नंदिषेण

कवल परहु मुंकी ग्लाननइ काराणिं पाणी वहिरवा गिओ । देव पाणी असूझतु करई । त्रीजी वारइ फिरतइ सूझतुं पांणी लाधउं । ते लेई ग्लान माहात्मा कन्हलि गओ । ते महात्मा अनेक कर्कश वचन बोलई, तु नंदिषेण आपणओ ज दोष मनमाहि चिंतवतओ ते महात्मानुं शरीर वस्त्र धोतइं तेहनइ षांधि चडावी नंदिषेण उपाश्रय भणी चालिओ । ग्लान महात्मा दुर्वचन बोलतउ महा दुर्गंध विष्ठा मूंकइ । नंदिषेणनइं सरीरि रेला वहइं, तु हू नंदिषेण मनि इशुं चींतवइं–किम ए महात्मानइं समाधि करिसु, किम ए साजउ थास्यि । देव तेहनूं मन देषी हर्षिओ । देवतानूं रूप प्रकट करी अशुचि परहुं संवरी कुसुमवृष्टि करतउ क्षमावई । इंद्रनी प्रशसानूं स्वरूप कही स्थानकिं जाइ । नंदिषेण वेयावच्चनउ अभिग्रह पालतओ १२ सहस्र वर्ष महा तप करी छेहडइं निआणूं करइ–हूं आवतइं भविं स्त्रीवल्लभ हुयो, इसउं कहइ । तिहां थिकुओ मरी समुद्र विजयादिक दसभाई दशार्ह मांहिं दसमु भाई वसुदेव नामिं हूओ । महा सोभागी तीणइं ७२ सहस्र कन्यानां पाणिग्रहण कीधा । ए तपनुं फल ॥

१२. गजसुकुमाल कथा.

द्वारका नगरीइं श्रीकृष्णदेवनी माता देवकीनइं आपणा छ बेटा महात्मा समान रूप अने थिं वाव्या त्रिहुं संघाडे विहरवा आव्या देषी, स्नेह उल्लसिओ । श्रीनेमिं मुखिइं स्वरूप जांणी एक बेटओ आपणाइ हार्थि लालु पालु–इसी इच्छा ऊपनी । श्रीकृष्णमहारायइ हारिणेगमेषी देव आराधिओ । तेहनइं वचनिं देवकीनइ बेटउ हूओ । गयसुकुमाल नाम दीधउं । अपार रूपवंत भणी सोमल ब्राह्मणनी बेटी परणाविओ । पछइं श्री नेमिनाथनइ वचनि वैराग्य लगइ दीक्षा लेई तीणइ ज दिनिं मसाण भूमिं काउस्सगि रहिओ । सांझनइ समइ सोमल ब्राह्मणि दीठओ । एणइ पापीइ माहरी बेटी परणीनइ मूंकी । एह भणी तेहनइ मनि रीस ऊपनी । गयसुकुमालनइं माथइ माटीनी पालि करी ठीब भरी चहिना अगार घाती नाठओ । गयसुकुमालनिं मनि कोप न ऊपनु । सरीर बल्उि अनइ कर्मइ बल्उि । केवलज्ञान ऊपनूं । गयसुकुमाल मोक्षि पुहतु । इम अनेरे महात्माए क्षमा करवी ।

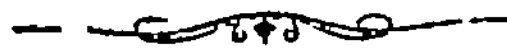
१३. सिंहगुहावासी मुनि कथा.

पाडलीपुरि श्रीसंभूतिविजय सूरिना शिष्य वरसालइं चतुर्मासानु अभिग्रह लिइं । एक सीह नी गुफां, बीजओ सापनइ बिलि, त्रीजओ कूआनइ विचिलइ भारवटिं, चउथओ श्रीस्थूलभद्र पूर्व परिचित कोशानइं घरिं रहइं । चउमासउं करी ते च्यारिं गुरु कन्हइं आविया । गुरे पहिलां त्रिहुंनइं 'दुष्करकारक आवु' इम कहिउं । श्रीस्थूलभद्ररहइं बि वार 'दुष्कर दुष्कर कारक आवउ' इम कहिउं । सीहगुफावासी महात्मानइं मनि ईर्ष्या ऊपनी । बीजइं वरसि श्री स्थूलभद्रनीं परिइं अभिग्रह लिइं । गुरे वारी, तुइं कोशानी बहिन उपकोशानइं घरिं गयु । तेहनां रूप देषी क्षुभिओ । वेश्या कहइ—अम्हारइ अर्थ जोईइं । तेहनइं वचनिइं वरसालामांहिं नेपाल देसिं जई गाढइं कष्टिं रायकन्हइं रत्नकंबल लेई आविओ । रत्नकंबल कोशारहइं आपिउं । कोशाइं अशुचि खालमाहिं घालिउं । माहात्माइं वारी । वेश्या वलतुं इंम कहइं—तुं आपणपउं नथी जोतओ । अह्मारां शरीर अशुचि खाल सरीखां तेहमांहिं आपणउं चारित्र रूपीउं रत्न नीगमइं छइं । तेहनइं वचनि बूझ्यो । घणउं मनि झूरइं । आवी गुरुने पगि लागी खमावइं । आलोअण लिइं ॥

१४. पीठ महापीठ कथा.

महाविदेह क्षेत्रि चक्रवर्ति महात्मा श्रीवइरनाभ आचार्य १४ पूर्वधर हूआ । तेहना ल्हुडा भाई वाहु सुवाहु पीठ महापीठ ११ अंगना धारक हूआ । तिहमांहिं वाहु पांचसइं महात्मानइं भात पांणी आंणी दिइं । सुवाहु वीसामण करइं । वीजा तप सज्झाय करइं । एक वार गुरू वाहु सुवाहुना साचा गुणनी प्रशंसा करइं । पीठ महापीठ मनि मत्सर धरइं । पांचइ जण चारित्र पाली सर्वार्थसिद्धि विमानिं ऊपना । तिहांथी च्यवी वज्रनाभ गुरुनो जीव श्री आदिनाथ हूआ । वाहु सुवाहुना जीव भरत वाहुबलि हूआ । पीठ महापीठना जीव ईर्ष्यानइं कर्मि स्त्री व्राह्मी सुंदरी हूआं । इम ईर्ष्या लगइं जीव हीनपणउं प्रामइं ॥

१५. तामली तापस कथा.



ताम्रलिप्ती नगरीइ तामलि श्रेष्ठि वैराग्यइं तापसी दीक्षा लिइ । नदीनइं तटिं साठि वर्ष सहस्र तप करिं पारणइं भिक्षा चिहुं भागिं करइ । एक भाग मत्स्यादिक जलचररहइ दिइ । बीजो भाग गोग्रास—स्थलचररहइ दिइ । त्रीजो भाग काकादिक खेचररहइ दिइ । चउथु
5 भाग २१ वार पाणीइ धोई पारणउ करइं । एवडइ तपनइं क्लेशिइ अल्प कषाय भणी अनइ अनुकंपा पर भणी ईशानेंद्र थिओ । सम्यक्त्व लाधुं । छ जीव दया सहित जउ एवडउ तप करत [तओ] मोक्षिं ज जाओत, जओ अल्पकषाय न हुंत तओ एटलइं न लहत, दुर्गति ज प्रामत ॥



१६. अवन्ति सुकुमाल कथा.

उज्जयनी नगरीइ भद्रा सार्थवाहीनइ घरि यानशाला श्रीआर्यसुहस्तिसूरि ऊतरिया । रातिइं
10 नलिनीगुल्म-विमाननउं अध्य[य]न गुणतां भद्रानइ बेटइ अवंतिसुकुमालि साभलिया । जातिस्मरण ऊपनूं । पाछिलइ भविं ते नलिनीगुल्म-विमानि देव हुंतओ । ते सांभरिउं । बत्रीस कलत्र मूंकी गुरुकन्हइ आवी दीक्षा लीधी । कंथेरिना वनमांहिं जई तत्काल पादपोपगमन अणसण लीधु । अति सुकुमाल भणी मारगि जातां काटा काकरा डाभसीं करी पगे लोही नींकलिउं । तेणी गंधिइ घणा बालक सहित सीआलणी आवी तेह महात्मानू सरीर
15 षाधू । लगारइ हालिउ नहीं । मरी नलिनीगुल्म-विमानि देव ऊपनु । इम अनेराइ महात्मा धर्मनइ कारणि सरीर छाडइ ॥



१७. मेतार्यमुनि कथा.



राजगृह नगरि मेतार्य महात्मा भिक्षानइ कारणि सोनारनइ घरि पइठओ । इसिं सोनार श्रेणिक महारायनि देवपूजानइं कारणि अष्टोत्तर सु सुवर्णना जव घडइ छइ । ते मेहली भिक्षा
20 विहराविवानइं कारणि घरमांहिं गिओ । तेतलइ ते यव क्रौंच पक्षीइ—कूकडइ चुणिया । सोनार भिक्षा लेई आविओ । यव न देखइ । मेतार्य महात्मानी शका करइ । महात्मा दया लगइ पक्षीइ चुणिया इम न कहइ । सोनारिं महात्मा घरमांहिं घाली नीलइ वाध्रिं मस्तक गाढउ

बांधिउं । आंषि नींकली पडी । महा दया लगइं कष्ट सहितओ केवलज्ञान ऊपार्जी मोक्षि पहुतओ । जिम ए महात्मा सोनार ऊपरि न कुपिओ तिम अनेरे ए न कुपिवुं ॥

१८. वज्रर्षिनी (बीजी) कथा.

श्री वयरस्वामि जातमात्रे छ मसवाडा रोई सुनंदा माता ऊभजाडी । तेणइं धनगिरि महात्मा-तेह्ना बापनइं बालिक आपिओ । तीणिइं गुरुनइं समोपिओ । माहा सतीनइं उपाश्रयिं 5 वाधइं । महासती गुणती सांभलतां तेह्नइं ११ अंग आवडयां । माइं तेह पाछो लेवानूं कंदल कीधउं । तेह भणी गुरु रायसमक्ष लुहुडाइंरहइं दीक्षा दीधी । एक वार महात्मा विहर-रवा गिआ छइं । चेलु उपाश्रयिं छइं । गुरु बहिर भूमिं जै आविआ । चेलु महात्मानी वींटि-मांडी तेह आगलि इग्यार अंगनी परिवाडि देतो दीठओ । गुरे जाणिउं एह्नइं ११ अंग आवडइं । महात्मा रषे एनइं अवज्ञा करि—इम महात्मानिं जणाविउं । पछइं गुरु ढूकडइं 10 गामिं विहार करिवा लागा । महात्माए पूछिउं—भगवन ! अम्हनइं वाचना कुण देस्यि । गुरे कहिउं—वयर चेलु देस्यि । ते वचन तेहे सुशिष्ये साचउं ज सुणि पडिवाजिउं । संदेह न आणिओ । गुरु चाल्या पूंठिं वयर चेलानइं गुरुनी पिरिं विनय करिवा लागा । चेलाइं ११ अंगनी परिवाडि दीधी । गुरु विहार करी आविआ । महात्मा पूछिआ—तुम्हनइं वाचना हूई । तेणे कहिउं—अम्हनइं वाचना घणी सांचरी । ए ज चेलु वाचनाचार्य करी आपओ । गुरे 15 काहिउं—चेलइं योग नथी वहिया, ए तुम्हनइ जणाविवा भणी कीधउं ॥

१९. संगमसूरि कथा.

कुल्लइरि पुर नगरि श्रीसंगमसूरि गुरि दुर्भिक्ष भणी गच्छ देशांतरि विहार कराविओ । आपणपइं अजंगम भणी क्षेत्र अनइं उपाश्रय नव भाग करी तीणइ ज क्षेत्रि रहिया खरउं चारित्र पालिइं । केतलइं कालि दत्त नामिइं शिष्य गुरुनी सुद्धि जोवा आविओ । तीणइं ज 20 उपाश्रयि गुरु देषी जांणइं गुरु ओसन्ना थया । तेह भणी आपणपइं ढूकडइं जूइं उपाश्रयि रहिओ । गुरु साथिं विहरवा गओ । घरे फिरिओ; दुर्भिक्ष भणी विशेष वस्तु कांई लाभइं नहीं । पछइ ते देषी एक मोटइ घरि गिआ । तिहां वालक व्यंतरी-गृहीत निरंतर रोतुं । गुरे चापडी वजावी वालक रोतउं राषिउं । माय बापे हरिषे मोदक विहराव्या । ते मनमाहि चींतवइ

मूंरहइं मोकली अनइं ए गुरु सारउं विहारिस्यिं । सांझनइ पडिक्कमणइ गुरे काहिउं तइं धात्री-पिंड भोगविउ, ते आलोइं । मनमाहि चींतवइ ए गुरु माहरा सूक्ष्मइ दोष देषइं । आपणा नित्यवासादिक मोटाइ दोष देषतओ नथी । इसिउ चींतवतु पडिक्कमी आपणइ उपाश्रयि गिओ । गुरुभक्ता देवता महा अंधकार प्रबल वायु वर्षा विकुर्विओ । गुरुकन्हइ आवइं
5 अंधारइ देषइं नहीं । गुरु लब्धिइ करी आंगुली दीवानी परिं झल्हलती देखाडी दया लगइ । ते कुशिष्य चींतवइं—गुरुनइ दीवओ छइ । पछइ देवता प्रकट थई काहिउं—रे पापीया कुशिष्य ! इस्या चारित्रिया गुरु पराभवतु दुर्गति जाइसि । देवतानइ वचनइ बीहतउ गुरु खमाविया । प्रायश्चित्त पडिवजिउं ॥

---

२०. प्रदेशी नृप कथा.

10 श्वेतंबिका नगरी, प्रदेशी राजा नास्तिक । तेहनइ चित्र नामिं मुहुंतओ सुश्रावक । एकवार श्रीपार्श्वनाथना संतानीया केशी गणधर वनमांहिं पाउधारिया । चित्रगुप्त मुहुतइं घोडा खेलाविवा विश्राम लेतइं राजाइं धर्म देशना करता गुरु दीठा । कुतिगिं गुरु कन्हइं गिओ । नास्तिकमत प्ररूपतओ गुरे अनेक हेतु—दृष्टांत देषाडी जीव अनइं परलोक स्वर्ग मोक्षादिक पदार्थ मनाविओ । गाढओ सुश्रावक राजा कीधओ । एक वार राजाइं पर्वतिथइं पोसह
15 लीधओ छइ । पारणानइ दिहाडइ सूर्यकांता तेहनी कलत्रइं—अन्य पुरुष ऊपरि आसक्तीइ विस—दीधउ । राजा मरी नइ देवलोकिं सूर्याभविमानि देव हूओ । आमलकल्पां नगरीइं आवि श्रीमहावीर तणइं समवसरणिं बत्रीस बद्ध नाटिक कीधउं । जओ ते प्रदेशी रायनइं केशी गणधरनु संयोग न हुंत तओ नरगिं ज जाओत ॥

---

२१. कालिकाचार्य कथा.

20 तुरुमिणी नगरीइ दत्त ब्राह्मणिइं मुहुतइ राज्य आपणइ वसिं करी आगिल्ड जितशत्रु राजा काढी आपणपइ राज्य अधिष्ठिउं । धर्मनी बुद्धिं घणा याग यज्या । एक वार दत्तना माउला श्री कालिकाचार्य गुरु भाणेज राजा भणी तीणइ नगरि आविया । मांमु भणी दत्त गुरु कन्हइं गयु । —नु फल पूछिवा लागु । गुरे काहिउ—जीवदया लगइ धर्म हुइ । दत्त कहइ—यागनु फल

कहु । गुरे कहिउं–हिसा दुर्गतिनु हेतु हुइ । पेलुं कहइ–आवडउं कां कहु; यागनूं फल कहु । गुरे मरण आंगमीनइं कहिउं–यागनूं फल दुर्गति कहीइं । दत्त कहइं–हूउं नरगि जाएसि । गुरे कहिउं–कुण संदेह; सातमइं दिहाडइं कुंभीमांहिं पचीतओ नरगि जाएसि । किसिउं अहिनाण ? । सातमइं दिहाडइं ताहरइं मुखि विष्टा पडिस्यि–ए अहिनाण ! दत्ति कहिउं [तउं] मरी किहां जाएसि ? । गुरे कहिउं–देवलोकि जाइसु । तउ दत्तइं रीसाविइं गुरु पाषती जण मूंक्या । चींतवइं छइं–सातमइं दिहाडइं गुरु ज मरस्यि । इसिउं चींतवी घरमांहिं पइंसी रहिओ । राजाइं मार्ग चोषलाविया । तिहां पुष्प प्रकर कराविया । एकइं मालीइं गाढइं काजि ऊपनइं विष्टा [मार्ग] माहि करी ऊपरि फूलनूं डालुं लांषिउं । ते दत्त आठमा दिहाडानी भ्रांतिं सातमइं ज दिनिं गुरु मारिवा नीसरिउ । घोडानु पग विष्टा ऊपरि पडिओ । विष्टा ऊछली तेहनइं मुहुडइं पडी । बीहनु पाछओ वलिओ । सामंत मंडलीके तेह ऊपरि विरक्त हूते बांधि कुंभीमाहिं पचीतु नरकिं गिओ ! सामंते वली आगिलु जितशत्रु राजा थापिउ । तीणइं श्री कालिकाचार्य पूज्या । चारित्र आराधी देवलोकि पुहुता । जिम कालिकाचार्यें साचउं बोलिउं तिम अनेरइं ऊं धर्म साचउं ज कहिवुं ॥

२२. महावीर पूर्वजन्म कथा.

श्री महावीरनु जीव श्री आदिनाथनइं भरतेश्वरनउ बेटओ मरीचि नामि हुंतउं । श्री आदिनाथ कन्हइं मोकली दीक्षा लिवरावीओ । एक वार ग्लान थिओ । मनमांहि जाणिउं–को सरवाईओ करउं । पछइं कपिल क्षत्रीरहइं धर्म कहइं । बूझ्या । पूंठि श्री आदिनाथ कन्हइ दीक्षा लेवा मोकलइं । ते पूछइं–तूं कहइं किसिउं धर्म नथी, श्री आदिनाथ कन्हइं कां मोकलइं । पछइं मरीचि कहिउं–कपिल धर्म इहांइं छइं; परइं छइं । इसिउं माइउं गोईउं वचन बोलिउं, तीणइं करी मरीचि कोडाकोडि सागरोपम भमिओ । पछइं श्रीमहावीर थिओ ॥

२३. बलदेवमुनि कथा.

श्रीकृष्णदेव परलोकि पुहुता पूठि बलदेवि दीक्षा लीधी । एक गामि भिक्षा जातओ हूंतओ कूआनइं कांठइं एक स्त्री बलदेवनूं रूप देषी मोही । जेह साहामूं जोती घडानइं थानकि

आपणा बालकनइं गलइं दोर बांधइ । बलदेव निवारइ । इसिउं चिंतवइं—ए माहरूं रूप अनर्थ हेतु । गाममाहिं आविवानु अभिग्रह लिइ । बाहरिथी भिक्षा ल्यिउं, नहींतरि नहीं । तेहनइं तपिं घणा जीव बूझ्या । एक मृगलु जातिस्मरणनु धणी तेह ऋषिनी सेवा करइ । इसिं एक रथकार काष्ट लेवा आविओ । वनमांहिं ऊतरिओ छइ । बलदेव माहात्मा मास क्षपणनइं पारणइं तेहनी भोजननी वेलां गिओ । रथकार हर्षिओ । दान देवा लागओ । मृगलओ मनमांहि चींतवइं—ए भाग्यवंत रथकार, इसी अनुमोदना करइं छइं । इसिं प्रस्तावि अध-छेदी वृक्षनी डाल वायुइं करी त्रिहुं ऊपरिं पडी । त्रिण्हिइ मरी पांचमइ देवलोकि देव ऊपना ॥

२४. वारत्तक ऋषि कथा.

सुंसुमार नगर, धुंधुमार राजा, तेहनी बेटी अगारवती । तीणइ परिव्राजिका एक वादि जीती । तीणइं रीसाविइ तेहनुं रूप चित्र पट्टि लिखी चंडप्रद्योतनइं दिखाडीउं । चंडप्रद्योत मोहिओ । बलिइं मागइ । कटक करी सुंसुमार पुरि आवी गढ रोहिओ कीधओ । धुधुमार राजा नैमित्तिकपांइ निमित्त जोवराविउ । तीणइ सेरीमांहि आवी बालक बीहाविआं । बालक नासतां नागदेवतानइ भवनि पइठां । तिहां वारत्तक महात्मा काउसगि छइं । तीणइं घाइंसिउं कहिउ—रे म बीहु, ते वचन लेई नैमित्तिकइ रायरहइं कहिउ—तुम्हरहइ जय छइं । धुंधुमारि राजा रातिइ धाडउ दीधउ । चंडप्रद्योत धरी जीवतु उ घारे आणिउ । अंगारवती परिणाविओ । ते एक वार तीणइ पूछी—ताहरइ बापिइ थोडइं कटकिं किम हु जीतओ । तीणीइं कहिउं—महात्मानइ वचनिं । मारगि जातउ वारत्तक माहात्मा देषाडिओ । चडप्रद्योते—'नैमित्तिक महात्मा ! वांदिउ' इम कही हासइ नमस्कार कीधओ । महात्मारहइ साभरिउ—मिइं वरांसइं बालकरहइ कहिउ 'म बीहउ' तेहनु दोष ए जे राय हसइ ॥

२५. चन्द्रावतंसक कथा.

तीणइं ए उपवासी हुतइ रातिइं 'जा ए दीवउ उज्वालइ तां मइं काउसगि रहिवु'—इसिओ अभिग्रह लीधओ अनइ काउसागि रहिउ । जेतलइं झामलु थाइ तेतलइ दासी 'माहरउ स्वामी अंधारइं किम रहास्यि' ईणइ अभिप्राइ वली वली दीवइ तेल सींचइं । दीवउ सघलीइ

रात्रि प्रज्वालिओ। राजा सघली रात्रि काउसग्गि ज थाकउ। अनइ दीस ऊगतइ दीवउ ओल्हाणउ। राइं काउसग्ग पारिओ। सुकुमाल शरीर भणी प्राण ग्यां। मरी देवलोकि पुहुतओ। दृढाई लगइं इम काज सरिउं॥

२६. सागरचंद्र कथा.

द्वारकां नगरीइं बलदेवना बेटानु बेटओ सागरचंद्र कुमार। तेह्नइं नारदिं चित्रामि लिखी कमला देषाडी। तेह्नइं अनुराग हूउ। ते कन्या आगइं नभस्सेन कुमाररहइं दीधी छइं। इसिं सांबकुमारिं पाछलि आवी सागरचंद्रनी हासइं आंखि ढांकी। सागरचंद्रि कहइउं 'कमलामेला मूंकि।' सांबिइं कहिउं 'हुं कमलामेला नहुं, हुं कमलामेलानुं मेलणहार।' सागरचंद्र वचन छल लेई कहइं–हिवि कमलामेला मेलि। इसिं साबकुमारि विवाहनी वेलां विधानइं वलि कन्या अपहरी। वनमांहिं आंणी। सागरचंद्र परणाविओ। श्री नेमिनाथनइं मुखिं धर्म सांभली सागरचंद्र सुश्रावक थिओ। एकवार पर्वदिनि मसाण ढूकडओ काउसग्गि रहिओ नभस्सेनि दीठओ। रीस लगइं सागरचंद्रनइं माथइं माटीनी पालि बांधी खइरना अंगार घाल्या। धर्मनी दृढाई लगइं सागरचंद्र मरी देवलोकिं गिओ॥

२७. दृढप्रहारि मुनि कथा.

दृढप्रहारि पल्लीपति धाडि सहित एकिं गामिं पडिओ। एक ब्राह्मणनइं घरि क्षीरनुं भोजन ब्राह्मणी अनइं बालक वाहावतां हूतां लीधउं। तेतलइं ब्राह्मण स्नान करिवा गिओ हूंतओ ते आविओ। तीणइं रीस लगइं भोगल लेई केतलाइ चोर विणासिया। पछइं दृढप्रहारि रीसाविइं खड्गि करी ते ब्राह्मण विणासिओ। तेतलइं तेहनइं घरिं नव प्रसूत गाइं छइं ते धाई, तेहइं विणासी। पछइं साधान ब्राह्मणी गालि देती आवी, तेहइं विणासी। तेहनु गर्भ फडफडतओ पाडिओ। ते देषी पश्चात्तापिं पूरिओ पाछओ वलिओ वनमांहिं गुरुनइं वचनिं वैराग्य लगइं दीक्षा लीधी। अभिग्रह लीधु–जे मिं ईणइ ज गामि रहिवु। जां लगइ ए पाप सांभरइं तां अन्नपांणी मिं न लेवुं। इसिउं पछइं तीणइंज गामिं छ मसवाडा निरंतर लोकनां आक्रोश मारिवां कूटिवां सही, क्षमा लगइं निराहार थिकु पाप मल धोइं, केवलज्ञान ऊपार्जी मोक्षि पुहुतओ॥

२८. सहस्रमल्ल कथा.

एक रायनइ वीरसेन नामिइं पायक । तीणइ तेह रायनउ वइरी गाढओ दुर्जेय कालसेन इसिं नामिं जीवतओ बांधी आंणी रायनइं आपिओ । राजाइ हर्षिइ अनेक लाष गांम दीधां । सहस्रमल्ल इसिउं नाम दीधउं । तीणइं सहस्रमल्लि श्रीसुदर्शनसूरि गुरु कन्हइ दीक्षा लीधी । 5 जिनकल्प पडिवजिओ । कालसेनिं वनमांहि काउसग्गि रहिओ दीठओ । रीस लगइं तीणइं अनेक परिं कदर्थाविओ । तेह महात्मान्हइ क्षमा ज आवी । कदर्थतां प्राण गिआ । मरी सर्वार्थसिद्धि विमानिं देव हूओ एकावतारी ॥

२९. स्कंदकुमार कथा.

श्रावस्ती नगरी कनककेतु रायनु बेटओ स्कदकुमार । तीणइ वैराग्यइ श्रीविजयसेन 10 सूरि कन्हइ दीक्षा लीधी । बाप मोहलगइं आपणा पुरुष पांइ सदैव छत्र धरावइं । पछइं ते महात्मा जिनकल्पी थई कातीनगरीइ गिओ । तिहा ते महात्मानी बहिन घणा कालनी परिणी सुनंदा नामिं राणी छइं । ते महात्मा दीटओ । स्नेह लगइ वडी वार साहमु जोइउ । महात्मानइं मनि लगारइ मोह न आविओ । अजाणतइ वहिनंवी राइ इर्ष्या लगइ ते महात्मा माराविओ । तेहवु वृत्तात जांणी वहिन गहिली थई । मंत्रीश्वरि घणे उपक्रमि करी साजी 15 कीधी । महात्मा एहवा निर्मोह हुइं ॥

३०. ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती कथा.

कांपिल्यपुरि ब्रह्मराजा चुलणी राणी । तेहनइं चउद स्वप्न सूचित ब्रह्मदत्त बेटओ ल्हुडओ छइ । इसिं ब्रह्मराजा परलोकि पहुतओ । तेहना मित्र दीर्घ राजान्हइ राज्यनी सार करिवा रहिया हुंता चुलणीसिउ संबंध हूओ । ते जाणी ब्रह्मदत्त तेह देषतां काग कोइलादि- 20 कसिउं संबंध करावइ । खड्गिइ विणासइ । अन्य जातीयसिउं संबंध-ए न्याय हुं सासहुं नहीं ।

चुलणीइं ब्रह्मदत्त एक कन्या परिणाविओ । लाषनउं धवलगृह कराविउं छइं । चुलणीइं तिहां ब्रह्मदत्त राषिओ । इसिं पट्टभक्त धनु महुंतइं नगर बाहरिं थिकी लाष घर लगइ सुरंग खणावी मूंकी छइं । आपणा वरधन बेटान्हइं जणावी छइं । ते बेटओ ब्रह्मदत्तनओ अंग-ओलगू कीधओ छइं । चुलनीइं रात्रि तीणइं लाष घरि आगि लगाडी । ब्रह्मदत्तइं वरधनु मित्रनइं वचनइं भुंइं पाटू देई सुरंग प्रकट कीधी। कन्या सूती मूंकी बे जण नीकल्यिां । सणंगनइं मुहुडइं 5 धनइं मुहुतइं बे तेजी घोडा राष्या छइं, तेहे चडी बे जण देशांतरि गया । भाग्यलगइं ब्रह्मदत्तिइं ६४ सहस्र कन्यानां पाणि ग्रहण कीधां । राज्य प्रामिउं । दीर्घराय संग्राम मांहि विणासी दिग्विजय करी छ खंड साधी कांपिल्यपुरि चक्रवर्ती हवओ ॥

३१. कनककेतु राजानी कथा.

तेतलिपुर नगरि कनककेतु राजा राज्यनइं लोभिं जे जे आपणा बेटा जन्मइं ते ते 10 विनंगी राज्यन्हइं अयोग्य करी मूंकइं; नाक कांन आंखि हाथ पगादिक अवयवनइं छेदवइं करी । तेह रायनी एकइं पद्मावती राणीइं आपणओ जातमात्र बेटओ प्रच्छन्न तेतलिसुत मुहतान्हइं आपिओ । ते मुहुंतानइं तीणिइं ज अवसरिं पोटिला भार्याइं बेटी जाई । ते राणीइं आंणी रायन्हइं देखाडी । मुहुंतइं ते रायना बेटान्हइं कनकध्वज नाम दीधुं । कनककेतु राजा मूआ पूंठिं ते राजा हूओ । तेतलइं मुहुतओ तेहनइं सर्व राज्यनओ धणी मांन हूउ ॥ 15

३२. कोणिक राजानी कथा.

राजगृह नगरि, श्रेणिक राजा, चिल्लणा पट्टरांणी । तेहनइं एक वार गर्भि पुत्र ऊपनओ । पाछिला भवनां वैरानुसंबंध भणी गर्भनइं महात्मइं भरतारनां आंत्रडां पावानु डोहलु ऊपनु । अभयकुमार मुहुतइं कारिमां आंत्र खवरावी डोहलु पूरिओ । जातमात्र बेटओ ऊकरडइं नखाविओ । तिहां तेहनी आंगुली कूकडइं लगारेक करडी । श्रेणिक महाराइं 20 पाछओ अणाविओ । अशोकचंद्र नाम दीधउं । तेहनी आंगुली कुही, ते रोइं । आंगुली श्रेणिकराय पिरू वहती मोह लगइं मुहडइं घातइं । ते बेटओ रोतओ रहइं । आंगुली साजी थई । आंगुली कुही भणी तेहन्हइं बीजउं नाम कोणी इसिउं प्रासिद्ध हूउं । इसिइ अभयकुमार मुहुतइं दीक्षा

लीधी। पूठिइं श्रेणिक महाराय कोणीन्हइं राज्य देवा वांछतइं पहिलु ज सम्यक्त्वनी परीक्षा देवतानओ आपिओ हार १ कुंडल २ अनइ अवधिज्ञानी सेचनक हाथीओ–एतलां वांनां हल्लविहल्ल बेटान्ह[इ] आपिआ। कोणीनइं मनि मच्छर ऊपनु। सामंत सघलाइ आपणइं वसि करी बाप काष्टपजरि घाती राज्य लीधउ। बापन्हइ नित्य पाच पांचसइं नाडीए मरावइं। 5 इसिं कोणीरायनइ बेटओ जायु छइ। ते खोलइ लेई कोणीराय जीमवा वइठओ। बेटइ भांणामांहि मूंत्रिओ। ते पन्हुं करी जिमवा लागइ। कोणीराय चिल्लणा माय-न्हइं कहइं–मात! दीठओ तइं माहरु बेटा ऊपरि स्नेह। चिल्लणा मात रोती कहइ–सिओ ताहरु स्नेह। ताहरा बापन्हइ तुं ऊपरि एवडउ स्नेह हूंतओ, ताहरी कुही आंगुली पिरू वहती आपणइ मुखि घाततओ। ते वात जाणी कोणीरायनइं मनि पश्चात्ताप ऊपनु। कुठार लेई 10 बापनीं अठील भाजवा गिओ। रखवाले आवतओ देषी श्रेणिकन्हइ काहिउ। श्रेणिकि महारायि चींतविउं–न जाणीइं ए वली कुणही कदर्थना मारास्यि। एह भणी तालपुट विस खाई मूंओ। आगइ आऊषा बाध्या भणी पहिली नरक पृथ्वीइ गिओ। कोणीरायन्हइ महा पश्चात्ताप हऊ-ओ। पछइं कोणीराय हल्ल विहल्ल भाईनइ कीधइं चेडा महाराय सार्थि महायुध करी पाप ऊ-पार्जी ६ नरक पृथ्वीइ गिओ॥

15

३३. चाणाक्य कथा.

चाणाक्य ब्राह्मणिं चंद्रगुप्त क्षत्रीपुत्र राज्य योग्य भणी संगठिओ छइं। अनइं एक पर्वतक राजा मित्र कीधओ छइं। तेहनइ बलिं चाणाक्यइ कटक करी पाडलिपुरि आवी नंदराय काढी राज्य लीधउं। पर्वतक अर्ध राज्यनु लेणहार भणी एक नदरायनी बेटी लक्षणे करी विषकन्या जांणीनइं परणाविओ। चन्द्रगुप्त विसना उपचार करतओ वारिओ। तिम अनेराइ आपणां 20 काज सरिया पूठिं मित्रन्हइ अनर्थ करइ॥

३४. आर्यमहागिरि कथा.

श्री आर्यमहागिरि सूरि जिनकल्प विच्छित्ति गइ हुतइ विशेष वैराग्य लगइ श्री आर्यसुहस्ति सूरिन्हइ गच्छ समोपी* नि संग थिका जिनकल्पनी तुलना करइ छइं। अनइ जे गाममाहिं

* 'સમોપી' શબ્દ ઉપર પાછળથી કોઇ વાચનારે 'આપી' આવુ ટિપ્પણ, ઉપરના હાસિયામા કરેલું છે.

गच्छ रहइ ते गाम बाहरि रहइ–इम गच्छनी निश्रा रहइं। एक वार पाडलिपुरि आव्या। क्षेत्र ६ भागि करी पांच दिन एकेकइं भागि वहिरवा जांइं। छांडीती भिक्षा लिइं। एकवार श्री आर्यसुहस्ति सूरि अभिनव श्रावक वसूभूति श्रेष्ठिनइ घरिं तेहनां कुटंब बूझविवा पुहता छइं । धर्म कथा कहइं छइं। इसिं श्री आर्यमाहागिरि सूरि भिक्षावृत्ति तीणइ ज घरि पुहता। श्री आर्यसुहस्ति-सूरि तेहन्हइं धांइंसिउं अभ्युत्थान कीधउं। श्री आर्यमहागिरि सूरि पाछा वलिआ । वसुभूति श्रेष्टिं पूछिउं–भगवन् ! ए कुण महात्मा ?। श्री आर्यसुहस्ति सूरिं कहिउं–ए अम्हारा गुरु । गरूआ जिनकल्पनी तुलना करइं छइं। बीजइं दिहाडइं भक्ति लगइं घरि २ उज्झित भात पाणी कराविउं। श्री आर्यमहागिरिइं दीठउं । तेहेनुं गुरे न लीधुं । अनइं श्रीसुहस्तिसूरिन्हइं आवी कहिउं–तुम्हे विरूउं कीधउं। अम्हारइं भिक्षा असूझती कीधी। कालि जे अभ्युत्थान कीधउं तीणइं कीधइं। आज पूठिइं आपणपइं एकइं क्षेत्रि न रहिवुं। इम कही गुरे अनेरइ क्षेत्रि विहार कीधओ। गच्छनिश्रा मूंकी अनिश्रित तप कीधओ। इम अनेरे करिवुं ॥

३५. मेघकुमार कथा.

राजगृह नगरि श्रेणिक महारायनइं धारिणी रांणीनइं गर्भि बेटओ ऊपनु। अकालि मेघनु डोहलु ऊपनु। अभयकुमारिं देवता आराधी डोहलु पूरिओ। बेटओ जायु । मेघकुमार नाम दीधउं। यौवनवइं तीणइं आठ कन्या परणी, मेल्ही, श्री महावीर कन्हइं दीक्षा लीधी। ते स्थविर महात्मानइ सीषविवा आपिओ। सांकडइं उपाश्रयि संथारवानी वेलां मेघकुमारनु संथारओ बारणइं आविओ। तिहां अनेक महात्मानां पग हाथ दंडासणां वाजइं; रज माहिइं आवइं। सुकुमाल सरीर भणी निद्रा लगारइं न आवी। राती दोहिली विहांणी। मन भागउं । इसिउं चिंतविउं–श्री महावीर पूछीनइं वली गृहस्थवासिं जाइसु। विहाणइं स्थविर साथिइं समोसरणि श्री महावीर कन्हइं आविओ। कुलीन भणी वचन ऊचरी न सकइं । श्री महावीरइं बोलाविओ–हे मेघकुमार ! राति तूंहरइं दोहिली विहांणी। पुण ए किसिउं दुःख !। तइं एह भवथी पाछिलइं त्रीजइ भवि हाथीइं छतइं अनइं दवनइं तापिं तृषाक्रांत हूंतइं पांणि कारणि सरोवरमाहि पइठइं कादवमांहिं पइठइं, कादवमांहि कालिइं वइरी हाथीआनां मारिवां कूटिवां ७ दिन सहियां। मरी वली हाथीउ ज हूओ। दव देखी जाति स्मरण ऊपनूं। त्रिणि स्थंडिल कीधां। एकवार दव लागइं ७ सइं हाथिणी सहित तिहां जई रहिओ। दवने त्रासवे

जीवे ते स्थानक भराणउं । इसिं कान खंजूआलवा हाथीइं पग ऊपाडिओ । इसिं ससलउ एक अणमातओ पगनइ थानकिं आवी रहिओ । तु तेहनी दया लगइ त्रिणि दिन पगलु ऊपाडिओ ज थकुओ । मरी श्रेणि करायनु बेटउ हूओ । इस्या पाछिला भव सांभली मेघकुमारन्हइं जातिस्मरण ऊपनूं । अभिग्रह लीधु । आजपूठिं महात्मानां हाथ पग दडासणां लागओ मनि
5 करी दूहवण न आंणउं । अभिग्रह पाली गुणरत्न संवत्सरादिक तप करी सर्वार्थसिद्धि विमानि पुहतो ॥

---

३६. सत्यकि विद्याधर कथा.

चेडा महारायनी बेटीइं सुज्येष्ठा दीक्षा लीधी । अगासइं आतापना लिइं छइं । इसिं पेढाल विद्याधरिं आवी अधकार विकुर्वी भ्रमर रूपिं तेहनी योनिं वीर्य मूकिउं । बेटओ ऊपनु ।
10 तेहनूं सत्यकि इसिउ नाम दीधुं । महासतीमाहिं वाधइं । कानझटइं घणउ सिद्धांत पढिओ । एक वार कालसंदीपकि मोटइ विद्याधरिं श्री महावीर पूछिआ—भगवन् ! मूंहन्हइं कहिनु भय ? वीरिं कहिउ—सत्यकिनओ । तीणइ अवज्ञा करी ते सत्यकि बालक आपणइ पगि पाडिओ । सत्यकि तेह ऊपरि रीसाविओ । सत्यकिन्हइ पेढालिं विद्या दीधी । रोहिणी विद्या साधवा लागओ । कालसंदीपक उपसर्ग करतओ विद्याइं ज वारिओ । आगइ ते रोहिणी विद्या छइं भवे
15 साधी हुंती, पुण थोडा आऊषा भणी सीझतीइ पडिवजी नहि । इसिउं कहिउ हूंतउ—तु आवतइ भवि सीझिजें, तेह भणी तत्काल सीधी । निलाडनइ मार्गि तेहनइ सरीरि पइठी । तिहां त्रीजउं लेचन हवुं । तीणइ महासतीनउ व्रत भंग कीधउ तेह भणी पेढाल बाप मारिओ । तीणइं काल संदीपक विद्याधर नासतओ तेहनूं विकूर्विउं मायारूप त्रिपुर बाली लवण समुद्रिं पाताल कलशिं पइंसतओ मारिओ । सत्यकिइ श्रीमहावीरकन्हइं सम्यक्त्व प्रामिउं । गाढउ देव
20 गुरु भक्त हुइं । पुण तु ऊ विषयनु वाहिओ रायनी लोकनी रूपवंत स्त्री भोगवइ । बलीआ भणी, एकवार चडप्रद्योतिं सभामांहिं कहिउ—को एहन्हइ मारस्यि । पडह वजाविओ । ओमा-नामि नगरनायका मारिवउं पडिवजिउ । इसिं सत्यकिइं रूपचातुर्यनु वाहिओ ओमानइ घरि वसइं । ओमाइ पूछिउ—ए विद्या तुम्हथी केतीय वारइं अलगी थाइ ? । तीणइं वीससिइं हूंतइं कहिउ—कामसेवानी वेला अलगी थाइ । ते वात ओमाइ चंडप्रद्योतनइ जणावी । तेहना
25 उदर ऊपरि कमलपत्र छेदी देपाडिउ—तुंहन्हइ राखसिउ, तेहजन्हइ मारिसिउं । इसओ वीसास

ऊपजाविओ । ओमा राय-हइं विषय सेवानी वेलां जणावी । राजा आपणा सनद्ध बद्ध प्रच्छन्न आगइं पुरुष राषिआ छइं । तेहे ओमा-सत्तिकि बे रायनइं ओदसि विणासिआं । सत्तिकिनइं शिष्य नंदीश्वर विद्याधरिं रीसाविइं नगर ऊपरि शिला विकुर्वीनइं लोक प.इं तेह बिहुंनी तीणइं ज अवस्था स्थानकिं २ मूर्ति करावीनइं पूजावी । लोके बीहते तिम कीधउं । सत्यकि मरी नरगि गिओ ॥ 5

३७. चंडरुद्रनी कथा.

उज्जयनी नगरीइ श्रीचंडरुद्र गुरु प्रकृतिइं गाढओ रीसाल भणी महात्मा थिकु अलगउ एकलउ ज बइंसिइं । इसिं एक व्यवहारीयानु बेटओ नव परिणीत तेवड तेवडे मित्रे परिवरिओ आवी महात्मा वांदइं । मित्रे हासइं कहिउं-एहन्हइं दीक्षा दिओ । महात्माए कहिउं गुरु कह्लि जाओ । ते गिआ । गुरे नव परिणीतनइं माथइ लोच कीधु, दीक्षा दीधी । मित्र 10 विलषा थिआ, घरि गया । नव दीक्षित चेल्लु गुरुप्रतिं कहइं-भगवन् ! अनेथि जईइ । माहरा संसारीयां आवतां हुस्यि । रातिं गुरुनइ वडा भणी खांधि चडावी चालिओ । अंधारइं ऊंचा नींचइं पग पडइं । गुरु रीसाविआ । माथइं दांडइं आंहणइं । लोही नीकलइं । ते सुशिष्य मनमांहि चिंतवइं-ए गुरुआ गुरुन्हइं माहरइं कीधइं एवडउं कष्ट आविउं । इम चींतवतां केवलज्ञान ऊपनूं । मारगि पाधरओ हींडिवा लागु । गुरे पूछिउं-अंधारिं पाधरु किम हींडइ 15 छइं ? । कांइं अतिशय ? । हा भगवन् ! । किसिओ-प्रतिपातीओ अप्रतिपातीओ ? । भगवन् ! अप्रतिपातीओ । पछइ गुरुन्हइं पश्चात्ताप लागु । खांध थिकु ऊतारी खमावतां गुरुन्हइं केवलज्ञान ऊपनूं । जिम तीणइं शिष्यि विनय कीधउं तिम अनेरे शिष्ये विनय करिवु ॥

३८. अंगारमर्दकनी कथा.

श्रीविजयसेनसूरिने शिष्ये महात्माए सुउणामांहिं सूअर पांचसइं कलभे परिवरिओ 20 दीठओ । प्रभाति स्वपन गुरुनइं कहिउं । गुरु तेहनु अर्थ कहइं-आज को एक अभव्य गुरु सुशिष्ये परिवरिओ आविस्यि । इसिंइ रुद्रदेव नामिं अभव्य आचार्य पांचसइं सुशिष्ये परिवरिओ आविओ । गुरे ते महात्मानइं परीक्षा देषाडवानइं कारणि मात्रा लेवानी भूमिकां लीहाला नंखाविआ । महात्मा मात्रउं लेवा ऊठिआ । जेतीवारइं लीहाला चंपाइ, तेती वारइं

पश्चात्ताप सहित मिच्छामि दुक्कड दिइ। तिसिं रुद्रदेव आचार्य ऊठिओ मात्रानइं कारणि। लिहाला चपाणा कसकसाट करइ। घाइसिउं कहिउं-अरिहतनां जीवडां मरइं छइ। ते वात सांभलीनइ महात्माए गुरु अभव्य जाणिओ। श्री विजयसेनसूरिंइ ते बाहिरि काढिओ। पाचइ सइं शिष्य तप करी देव लोकि पुहुता। तिहांथी चवी वसंतपुरि दिलीपरायनां पांचइसइं
5 बेटा हूआ। एकवार गजपुरि नगरि कनकध्वजरायनी बेटीनइ स्वयंवरा मंडिपिं गिया। तिहां ते अंगारमर्दकाचार्यनु जीव ऊट थिओ भार वहतओ वाहवतओ दीठओ। करुणा लगइ पांच-सइ रायना बेटान्हइ जातिस्मरण ऊपनू। पाछिला भवनु अभव्य गुरु जांणी मूकाविओ। तीणइं वैराग्यि पांचसइं दीक्षा लीधी। थोडइं कालिं मोक्षि जास्यि॥

३९. पुष्पचूला कथा.

10 पुप्फभद्र नगरि, पुष्पकेतु राजा, पुष्पवती राणी। तेहनइ पुष्पचूल पुष्पचूला इंसिं नामिं बेटओ बेटी युगल जाइउ। तेह बिहुंइ परस्परइ महामोह देषी राजाइं बिहिं माहोमाहिं परणावियां। ते असमंजस देषी पुष्पवती रांणी दीक्षा लेई मेरी देवलोकि पुहता। ताहरां छोरू एहवु पाप करी नरगि म जाउ-एह भणी पुष्पचूला रांणीनइं सुउणा मांहि नरग देषाडई। ते बीहती पुष्पचूल रायनइं कहइं। राजा सर्वदर्शनी कन्हइ नरगनूं स्वरूप पूछइं। ते कहइं
15 पुण सुउणासिउं मीलइ नहीं। पछइ श्री अन्निकापुत्रि सूरि नरगनऊ स्वरूप कहिउ। जिसिउं रांणी सुणामाहिं दीठउं तिसिउं ज मिलिउ। वली देवताइं रांणीरहइ सुणामांहिं देवलोक देषाड्यां। तेहइं अनेरा दर्शनीकहिनां कहिया मिलिया नहीं। श्री अन्निकापुत्र सूरिनां कहियां मिलिया। वैराग्य ऊपनइ पुष्पचूला रांणीइ दीक्षा लीधी। रायना कदाग्रह लगइं रायनइं आवासिं ज रही दीक्षा पालइ। इंसिं श्री अन्निकापुत्र सूरि जघाबल परिक्षीण भणी तीणइं ज नगरिं रहिआ।
20 बीजा महात्मा विहार कराविआ। गुरु वहिरी न सकइ। पुष्पचूला महासती सूझतु आहार आणी दिइ। एक वार वरसतइं मेघिं भातपाणी लेई आवी। गुरे कहिउं-तु किम आवी? भगवन्! अचित्त पाणीमाहिं आवी। गुरे कहिउ-ए वात किम जाणी। तीणइ कहिउं-तुम्हारा प्रसाद लगइ मून्हइ केवलज्ञान उपनू, तीणइ करी अचित्त पाणी जाणिउ। पछइं गुरे पूछिउं-मूहन्हइं केवलज्ञान किम हुस्यि। तीणी महासतीइं कहिउं-गंगा नदी उतरता हस्यि।
25 ते जाणी गुरु गंगा नदीइ जई बेडीइ चडिया। एक वइरी देवता जीणइं पासइं गुरु बइसइं तीणइं पासइं बेडी बोलइं। जओ गुरु विचालइ वइठा तु बेडी सघलीइं बूडवा लागी।

अनार्यलोके गुरु पांणीमांहि लांषिया । देवता हेठलि त्रिसूल धरिउ । गुरुनइं मनि दया— माहरी सरीरनइं खारिं करी आहा पांणीना जीव विणसइं छइं । इसिउं चिंतवता केवलज्ञान ऊपनूं मोक्षि पुहुता ॥



४०. सुकुमालिकानी कथा.

वसंत पुरि सहस्रयोधी रायना बेटा बि ससग भसग इसिं नांमिं । तेहे दीक्षा लीधी । गीतार्थ हूआ । तेहे आपणी बहिनि सुकुमालिका अपार रूपवंति दीक्षा लेवरावी । तेहनां रूप जोवा अनेक तरुणा पुरुष आवइं । बीजी महासती राषी न सकइं; ते बिहिं भाई राषइं । एक बारणइ रहइं; एक भिक्षा लेई आवइं । इसी परिं भाई रहइं । एवडओ क्लेश देखी वैराग्य लगइं सुकुमालिका अणसण लीधउं । एकवार क्षीण सरीर भणी गाढी मूर्छा आवी । भाईए बिहुं महात्माए मुई जांणीनइं वनमांहिं परिठवी । तिसिं सार्थ सहित एक सार्थवाह तिहां आवी ऊतरिओ । महासतीन्हइं वनने टाढे वायुए करी मूर्छा वली । सार्थवाहिं स्त्रीरत्न भणी लीधी । आपणी कलत्र कीधी । आपणइं नगरि लेई गिओ । केतलइं एक कालि ससग भसग बेई महात्मा फिरता तेह सार्थवाहनइं घरिं वहिरवा आव्या । ते स्त्री महात्मानइं पगे पडी वांधा । ओलषी तेह महात्माए सार्थवाह बूझवीनइं मूकावीनइं वली दीक्षा लेवरावी । तप करी देवलोकि पुहुती ॥

---

४१. मंगू आचार्यनी कथा.

मथुरा नगरी, मंगु इसिं नांमिं आचार्य । तीणइं नगरि वारू आहार रसवती भिक्षा लाभइं । तेह भणी जिह्वानइं रसिं वाहिओ ते आचार्य तीणइं नगरि नित्य वासिं रहिओ । केतले दिने मरी नगरना खाल ढूकडइं यक्षनइं भवनिं अधिष्ठायक व्यंतर हूओ । विभंगज्ञानि पाछिलु भव जाणी पश्चात्ताप करइं । यक्षना भवन आगलि महात्मा बाहिर्भूमि जाइं । तेहन्हइं पाषाणमइ यक्षनी मूर्ति मुंहुडइं जीभ काढी देषाडइं । महात्मा पूछइ । ते यक्ष कहइ—हउं तुम्हारु गुरु, जीभनइं दोषिं व्यंतर थिओ । तुम्हे रक्खे जीभ वाहो, एहवो अनर्थ रषे प्रांमओ । इम कही अदृश्य थिओ ॥

---

४२. बे शुकोनी कथा.

कादबरी अटवीइं वटवृक्ष २ सूडा सगा भाई हूता । एक सूडओ भीले लीधओ । पर्वत पालि मांहिं वाधिओ तेह भणी गिरि-शुक कहिवराइ । बीजओ सूडओ तापसे लीधओ तेहना तपोवनमाहिं वाधिओ तेह भणी ते पुष्प-शुक कहीई । एकवार वसंतपुरनु स्वामी विप-
5 रीत शिक्षित घोडइ अपहारिओ । अटवी मांहिं आविओ । गिरिशुक रायन्हइं कहइ—भो ! धाओ, घोडा आभरण सहित राजा जाइ छइ, तुम्हे लिओ । ते वात सांभली राजा गाढओ बीहनु । राजा चाली ऊतावलु तापसनइं आश्रमि गिओ । तिहा पुप्पशुक कहइ—भो तापसो ! ऊठओ, तुम्हारइं अतिथि राजा आविओ, आसन माडओ, परहुणाई करओ । तापसे आसन मांडिउं, वन फल वारू भोजन कराविउं । राजा सुरिथओ थिकु पूछइ—तुम्हे बिं सूडा सरिषा ज देपु
10 छु, अनइ एवडउ बोलवानू आंतरुं काइ । पुप्पशुक कहिवा लागओ—राजन् ! ए संसर्गनु विशेष । नही तु अम्हे बेहू सगा भाई । सांभलि, अम्हारूं स्वरूप—

मातान्प्येका पिताप्येका मम तस्य च पक्षिणः ।
अहं मुनिभिरानीतः स च नीतो गवाशनैः ॥ १ ॥
गवाशनानां स गिरः शृणोति, अहं तु राजन्! मुनिपुंगवानाम् ।
15 **प्रत्यक्षमेतद्भवनापि दृष्टं, संसर्गजा दोषगुणा भवन्ति ॥ २ ॥**

इसिउं सूडानूं वचन सांभली राजा हर्षिओ । वली आपणइं स्थानकि पुहुतु । एहवा बेहु सूडानइं उदाहरणि दृष्टांति संसर्गज दोष गुणनू स्वरूप जांणत ॥

---

४३. शैलकऋषि कथा.

शैलपुर नगरे, शैलक राजा, मडूक बैटान्हइ राज्य देई पाचसइं परिवारिओ दीक्षा दिइ ।
20 गीतार्थ हूओ । आचार्य पदि स्थापिओ । एकवार तेहनइं सरीरि रोग ऊपनु । मंडूक राज बेटइं आपणइं नगरि रापी पडीगाविओ । साजो थिओ पछी रस सुख लंपट पणइ प्रमादिओ हूंतु तीणइज नगरिं रह्यु, विहार न करइ । बीजे शिष्ये सविहु छांडिओ । पथक इसिं नामिं शिष्य एक कन्हलि रहिओ । आगइ राज्यावस्थाइ ते तेहनइ मुहुतओ हूतओ । एकवार चउमासानइ दिहाडइ ते गुरुवार करी साझनइं समइ गाढी निद्रा सुतओ छइ । पथक शिष्यइ चउमासी
25 पडिकमणउ करतइं पगि लागी गुरु कन्हइ खामणउ कीधउं । गुरु जागिओ, रीसावओ—रे कुण-

इ पापीइं जगाडिओ । पंथक शिष्य कहइं—भगवन् ! आज चउमासा भणी पगि लागी खामणउं कीधउं । वली एह्वओ अपराध नहीं करउ । इसिउं कहितओ पगि लागी खमावि । इसिं गुरु-रहइं चेत वलिउं; इशुं चींतवइं—एह सुशिष्यनी एवडी क्षमा, इसी गुरु भक्ती, अनइं मूं पापी-यानु एवडओ प्रमाद; इसिउं निर्विवेकपणउं ! । इशुं चींतवइं वैराग्य प्रामिउं। पंथकन्हइं कहइं वत्स ! तिइं आज संसारमाहिं पडतओ उद्धरिओ—इसिउं कही घणओ काल विहार करतओ 5 खरूं चारित्र पाली पांचसइं परिवारि परिवरिओ । ते श्री शैलकाचार्य श्री शत्रुंजय ऊपरि सिद्धि गिओ ॥

४४. नंदिषेण कथा.

श्रेणिक महारायनु बेटओ नंदिषेण चारित्रावरणीय कर्म छता भणी देवता वारी तु दीक्षा लेई गीतार्थ हूओ । एकाकीआ पणानी तुलना करतओ एक वार वरांसइं गणिकानइं घरि 10 वहिरवा पइंठओ । धर्मलाभ दीधओ । गणिका कहइं—अम्हारइं अर्थलाभ जोईइं । तेतलिं नंदिषेणिं कर्मनइं वाहिइं अभिमान लगइ आपणी लब्धि नेवनूं तृणउं काढी सुवर्णनी वृष्टि बार कोडि पाडी जावा लागु । गणिका धरिओ; द्रव्य देई जावा न दिउं । पछइं नंदिषेण तेह गणिकानिं वचनिं भेदिओ तेहनइं घरि रहिओ । दिहाडी दिहाडीना दस दस प्रतिबोधी दीक्षा लिवरावइं--इशु अभिग्रह लीधु । बार वरस रहिओ । एकवार ९ मिल्या पुण दसमु न मिलि । 15 भोजनवेला अतिक्रमइं । नगर नायका हसिउं—दसमा तुम्हेऊ ज हूआ । हविं भोजन करओ । तिसिं कर्म क्षयिं गिइं हूतइं बूझ्यो । ते नगरनाइका छांडी खरूं चारित्र आराधी मोक्षि पुहतु ॥

४५. कंडरीक पुंडरीक कथा.

पुंडरीकिणी नगरीइं कंडरीक पुंडरीक बेइ भाई राजा छइं। एकवार गुरुनी धर्म देशना 20 सांभली पुंडरीक बूझ्यो, दीक्षा लेवा वाछइ । लहडओ भाई कंडरीक कहइं--हुंउ दीक्षा लेइसि । पछइं पुंडरीक राज्यचिंता करइं । मन पाषइं रहिओ । कंडरीकिं दीक्षा लीधी । वर्ष १ सहस्र दीक्षा पाली । एकवार परीषह थिकु भागओ । कर्मि करी विषय-इच्छां वाहिओ । राज्य वांछ-तओ आपणइं नगरि आविओ । वनमांहिं वृक्षनी डालि उपकरण विलाइ बइंठओ । पुंडरीकि

राजा वांदिवा आव्यु। तीणइं लक्षणे करी कंडरीक चारित्रि थिकु भग्न-परिणाम जाणिओ। राज्य तेहन्हइं आपीउ। दीक्षानु वेष तेहनु आपणपइं लेई राजा पुंडरीक गुरुभणी चालिओ। कंडरीक अतिलोभ लगइ स्निग्ध मधुर घणओ आहार जिमिओ पेटि व्यथा ऊपनी। गूढ विशूचिका हूई। दीक्षा छांडी भणी परिवारन्हइं अगमतओ हूंतओ वैद्यादिके कुणहइं सार न
5 कीधी। ते ऊपरि रौद्रध्यानि वर्ततओ मरी ७ नरक पृथ्वीइं गयु। पुंडरीक गुरुकन्हइं जई निष्कलंक चारित्र पालिसुं—इशु चींतवतओ मारगि भूष तृषा परीषह सहतओ शुभ ध्यानि वर्ततओ सुकुमार देह भणी तीणइज दिहाडइं मरी सर्वार्थ सिद्धि देव हूओ। इसि परिं शुभाशुभ कर्मना विपाक कहिया॥

---

४६. शशिराजानी कथा.

10 कुसुमपुरि नगरि, शशी सूरप्रभ बे भाई राजा हुंता। एक भाई श्रीविजयघाष सूरिनी धर्मदशना सांभली सूरप्रभ बूझ्यो। वडा भाई शशीन्हइं कहइ—बांधव! आपणपे धर्म कीजइ। शशी हसीनइं कहइ—कुणिहिं धूतारइ तउ विप्रतारिउ! लाधा सुख छांडीनइ परलोकनां अदृष्ट सुखनइ विषइं कुण अजाण खप करइ। सूरप्रभ कहइ—बांधव! संदेह म आंणि। जगमांहि धर्म छइ, धर्म पापना फल देखीइ छइ। एक जीव सुखीया, एक जीव दुखीआ दीसइ छइं।
15 एक सरोग, एक नीरोग। एक जीव सुरूप, एक कुरूप। एक सधन, एक निर्धन। इत्यादिक भाव पुण्य पापइज थिका हुइ। इसिं परि अनेक प्रकारिं बूझविओ पुण शशी बुझइ नहीं। सूरप्रभिं दीक्षा लीधी। तप करी पांचमइ ब्रह्म देवलोकि देव हूओ। शशी अविरत हूतओ मरी त्रीजी नरक पृथ्वीइ नारकी हूओ। भाई देविं स्नेह लगइ तिहा जई पाछिला भवनओ वृत्तात तेहन्हइ जणाविओ छइ। शशी पश्चात्ताप करइ—मिं सरीरनइ सुखि वाहिइ तप अनइ
20 अनेरीइ विरति न कीधी। बाधव! ते सरीर माहरू कदर्थि कष्ट सहविरावि, जिम आहा हउं नरकनां दुक्ख छूटउ। ए वात कहइ छइ—

नरयत्थो ससिराया वहुं भणइ देहलाहणा सुहिओ।
पडिओमि भए भाऊ अतो मे जाएह तं देहं॥
को तेण जीवरहिएण संपयं जाइएण हुज्ज गुणो।
25 जो डसि पुरा जायं तो नरए नेव निवडंतो॥

नरय०—नरकि रहिओ शशी राजा बहु अनेक प्रकारिं भाईन्हइं कहइं, दह०—भाउअं—बांधव ! आपणा शरीरनउं जे छइं लालवुं तेणइं करी सुखिओ हूंतओ, पडिओमि भवे—नरकनां दुक्खमाहिं पडिओ छउं, तो मे जा०—तेह भणी माहरूं सरीर, जाएह—कदर्थी पीड सहिवरावि, इम कहइं छइं । भाई देव तउं कहइं छइं—को ते०—तीणइं ताहरइं जीविं रहित सरीरिइं ? जाइए०—कदर्थिइं हूंतइं कुण गुण हुइं-सिओ लाभ हुइं । कांई न हुइं । 5
जइ सि०—जओ पहिलउं जीवतां हुंतां ते सरीर तप चारित्र कष्ट सहिवरावत, तो तु नरक मांहिं न पडत । इसिउं कही सूरप्रभदेव भाइनुं दुःख फेडिवानइं विषइं असमर्थ हूंतओ वली पाछओ देवलोकि गिओ ॥

४७. श्रेणिक अने नापितनी कथा.

राजगृह नगरि, श्रेणिक राजा, चिल्लणा पट्टराज्ञी । तेहन्हइं एक स्तंभ आवासनु 10
डोहलु ऊपनु । ते अभयकुमारिं देवता आराधी तेहपाहिं सर्वर्तुक वनसहित एक स्तंभ आवास करावी डोहलु पूरिओ । इसिं एक मातंगनी कलत्रन्हइं अकालि आंबानु डोहलु ऊपनु । तीणइं मातंगिं अवनामिनी वियानइं वलि सर्वर्तुक वनना आंबानी डाल नमाडी आंबा लेई डोहलु पूरिओ । ते आंबानु चोर अभय कुमारिं वृहत्कुमारीनी कथा कही बुद्धिनइं वलि प्रकट कीधु । तेहन्हइं श्रेणिकराइं कहिउं-जइ विद्या दिइं तु मूंकुं । तीणइं मानिओ । श्रेणिक सिंहासनिं 15
बइठओ विद्या पढइं । घणी वार मातंगिं विद्या कही पुण आवइं नहीं । अभयकुमारिं कहिउं—मातंगन्हइं सिंहासनि बइसारी विद्या लिओ, तु आवइं । पछइं मातंग सिंहासनि बइसारी बे हाथ जोडी श्रेणिक महाराय आगलि ऊभु विद्या लिइं । एकवारनी पढी ते विद्या अवी । इम अनेरे ऊ विद्या लेते विनय करिवु ।

एक नापित वियानइं वलि आपणओ छरपलु आकाश मंडलि राषइं । ते कन्हइं एकइं 20
त्रिदंडीइं ते विद्या लीधी । त्रिदडीओ विदेशी जई तीणी वियाइं आपणां त्रिदंड आकाश मंडलिं राषइं । ते देषी विस्मय हूंतु लोक तेहन्हइं पूजा भक्ति करइं । एकवार लोके पूछिउं—ए वियानुं तुम्हारइं गुरु कुण ? तणिइं लाजतइं नापित न कहिओ । इम कहिउं—हिमवंतवासी माहरु वियानु गुरु । तीणइं गुरुनइं ओलविवइं करी त्रिदंड खडखडाट करतउं भुंइं पडिउं । लोके सहूए हसिओ । तेह भणी बीजे गुरुनओ निह्नव न करिवु ॥ 25

४८. मेतार्यमुनिनी पूर्व कथा.

उज्जयिनी नगरीइ चंद्रावतंसकरायनइ बेटइ सागरचंद्रि आपणा ओरमाई भाई गुण-
चंद्रन्हइ राज्य देई दीक्षा लीधी । एकवार उज्जयिनीथी आविओ महात्माए इम काहिउं-राय
अनइ पुरोहितना बेटा* बेउ उज्जयिनीइं मुहात्मान्हं ऊचाटइं । ते साभली सागरचंद्र महात्मा
5 उज्जयनीइ गिउ । रायनइ पुरोहितना बेटा बिहुन्हइ शिक्षा देई बलिइ दीक्षा दीधी । पुरोहित-
नउ बेटउ ब्राह्मण भणी ल्गारेक जातिमद करइ । बेइ जण चारित्र पाली देवलोकि गिया ।
जे पहिलउ च्यविइ ते बीजइं बूझविवउ-इम सकेत करइं । पहिलउं पुरोहितना बेटा*नउ जीव
च्यविउ । मेइणिनइ गर्भि अवतरिओ । राजगृह नगरि ते मेइणि एक सेठनइं घरिं वुहरइ वि-
णजइं । सेठिणिनइ छोरु जीवइं नहीं । मेइणिइ प्रीतिइ आपणओ बेटओ जात मात्र सेठिणिन्हइं
10 आपिओ । सेठिणिनी बेटी जाति मात्र आपणपइं लीधी, ते वात सेठ न जाणइ । ते बेटानू मेतार्य
नाम दीधू । सोल वरसनु मित्र देवि बूझविओ, बूझइ नहीं । इसिइ आठ व्यवहारीयानी कन्या
वरिओ । फूलके हुते देवता मेआणिनउ सरीर अधिष्ठी-ए माहरु बेटओ असिरीषी कन्या कांइ
परणइं-इम काहितइ शबिका थकउ ऊपाडी मेइणिइ घरिं आणिओ । देवता कहइं-तु बूझि ।
मेतार्य कहइ-तओ बूझउं जओ मूहनइ महत्वि चडावइं । ते वात देवताइं पडिवजी । पछइ
15 देवताइ मेइणिनइ घारि एक बोकडओ लींडीनइं थानकि रत्नइज मूंकतओ विकुर्विओ । मेइणि
रत्ने थाल भरी त्रिणि दिहाडा रायनइ भेट करइं । अभयकुमारि मत्रीश्वरिं कारण पूछिउ,
कहइ-माहरा बेटारहइ रायनी बेटी दिओ । पछइ तेह पाइ राजाइ नगर पाखती सोनानु
गढ अनइ वैभारगिरि पर्वतिं पाज करावी । पछइ क्षीरसमुद्रनू पाणी अणावी मेतार्य नह्वरावी
सूझाडी आपणी बेटी राजाइ दीधी । ते अनइ वली बीजीइ आठ व्यवहारीआनी कन्या परणी ।
20 हवडा मजन्हइ विषय सुख भोगविवा दिं । पछइ जे काईं तु कहिस्यि ते करोसि--इम कही
देवतान्हइं मनावी २४ वरस गृहस्थवासि रही दीक्षा लीधी । जिम सोनारि उपसर्ग करतइं
केवलज्ञान ऊपार्जीनइ मोक्षि पुहुतु ते वात आगइं कही+ ॥

---

* મુખ્ય પ્રતિમા આ બે ચિન્હ વચ્ચેનો પાઠ લખતી વખતે છુટી ગયો છે
× જુઓ પાન ૭૬.

४९. हरिकेशि मुनिनी पूर्व कथा.

मथुरा नगरीइं स्वामी शंखराजाइं दीक्षा लीधी । ते गीतार्थ हूओ। भिक्षावृत्ति हस्तिनागपुरि आविओ। सोमदेव पुरोहित कन्हलि मार्ग पूछिओ । तीणई द्वेष लगइ व्यंतराधिष्टित अग्निमय सेरी देषाडी । महात्मा तीणइंज मार्गि गयु । व्यंतरु महात्मानइं प्रभावि नाठओ । सेरी शीतल थई । सोमदेव पुरोहितनइं मनि धर्मनु प्रभाव देषी पश्चात्ताप थिओ । महात्माने पगि लागु 5
खमावइं। तीणइं महात्मानु उपदेश साभली दीक्षा लीधी । चारित्र खरउं पालइं। पुण लगारेक ब्राह्मणपणानी जातिनओ मद करइं । मरीनइं देव हूओ। तिहां थिकु च्यवी नीचगोत्र कर्मनइं उदयइं गंगातटि बलकोष्ट नामि मातंगनु ठाकुर तेहनी कलत्र गौरी तेहनु बेटओ हरिकेशी बल आंवानइं स्वप्ने करी सूचित । एकवार ते वसंतोत्सवि बालकमाहि रमतओ वढवाडिओ भणी बाहरि काढिओ । एकि स्थानकि तीणइं सविप साप लेके मारिओ दिठओ । निर्विष 10
जीवतु मूकीओ दीठओ । हलुकर्मा भणी इसिओ विचार ऊपनइं--जीव सवलाइं आपणे ज दोप दुःखिआ थाइ; आपणे ज गुणे सुखिआ थाइं । इसिउं चिंतवतां महात्मा मिलिआ। धर्म सांभलिओ । वैराग्य ऊपनूं। दीक्षा लीधी। देवन्हइं सेवनीय थिओ । जिम यज्ञ पाटकि धर्मनु महिमा देखाडी ब्राह्मण बूझवी केवलज्ञान ऊपार्जी मोक्षि पुहुतु—ए वात आगइ पहिलइं 'सइं न कुलं इत्थ पमाणं' ईणइ गाथा कथा कही छइं *॥ 15

५०. धूर्त ब्राह्मणनी कथा.

उज्जयनी नगरीइं अघोरशिव इसि नामि धूर्त ब्राह्मण चर्मकार देशि गिओ । चोररहइं मिलइं । इसिउं कहइ—हूं मुनिवेष लेई तपस्वी थाउं छउं । तुह्म्यो मुजन्हइं वषाणियो जिम सुखिं लोक वंचाइं । चोरे मानिउं । पछइं ते ब्राह्मण परिव्राजकनु वेष करी त्रिहुं गाम विचालइं वनमांहिं थई रहिओ । चोर लोक देषतां वखाणइं तेहनइं । ए मासोपवास करइं 20
तापस—इम कही तेहनइं पूजा करावइं । लोक तेहनइं घरि तेडी जिमाडइ । महा तापस भणी मानता आपणा घरनी लक्ष्मीनूं स्वरूप तेहन्हइं कहइं अनइं आगामीया लाभादिकनउं स्वरूप पूछइं । पछइं ते लोकनी लक्ष्मी हेरीनइं रात्रिनइं समइं बीजां चोर साथि लोकनां घर मुंसइं। एकवार तेह माहिलओ एक चोर साहिओ । तीणइं मारीतइं बीजाइं चोर सघलाइं कहिया । लोके सघलाइ धरिया मारिया । परिव्राजक भणी आपि काढी मूंकिओ । पछइं ते वेदनाक्रांत 25

* જુઓ પાન ૭૨.

हूंतओ लोके निंदीतु पश्चात्ताप करइं । मरी नरगि गिओ । इम अनेरु ऊ जि को वचइं ते इम शोचइं-पश्चात्ताप करइ ॥

---

५१. दर्दुरदेवनी कथा.

राजगृह नगरिं श्रीमहावीर समोसरिया। वांदिवा सपरिवार श्रेणिक महाराय चालिओ।
5 इसिं नगरनइं पोलीइ आपणा सेवक सेडूआ ब्राह्मणन्हइ कर्मनइ विशेषि कोढिया थियान्हइं द्वार-देवता आगलि जे बली ढूकी छइ ते यथेष्ट जीमाडीनइ-'तुं पोलि रहिजे, किहाइ अनेथि म जाइसि' इम कहीनइ पोलिइ राषिओ । पोलिओ समोसरणि गिओ । सेडूआ ब्राह्मणरहइ गाढी त्रस लागी। पोलि मूकी अनेथि पांणी पीवा जवराइं नहीं। तृषाइं जि मरीनइ ढूकडा वावि डेडक ऊपनु । एक वार पाणीहारिनिइ मुखि-श्रीमहावीरनइ अम्हे समोसरणि जाइसिउं-
10 इसि वात पाणीहारि कहिता साभळता तेह डेडकन्हइं जातिस्मरण ऊपनूं। ते डेडकू समोसरण भणी चालिओ । वाटइं श्रेणिक महाराय असवार घोडानइं खुरि चंपाणु । श्रीमहावीरनइं ध्यानि मूंओ । प्रथम देवलोकि दर्दुरांक नामिं देव थिओ । श्रीवीरनइ समोसरणि आविओ । इसिं इंद्रइ श्रेणिक राजा सम्यक्त्व दढाई आश्री प्रशंस्यो छइ । ते परीक्षा जोवानइं कारणि तीणइं देविं कोढिआनूं रूप कीधुं। परमेश्वर ढूकडओ आवीनइं बइठओ । आपणा सरीरनी रसी
15 परमेश्वरनइं पगिं लगाडइ । इसिं अवसरि परमेश्वरनइ छीक आवी । तीणइं देवइ कहिउ-पर-मेश्वर मरि ! । पछइं श्रेणिक महारायन्हइं छीक आवी । तेतलइ ज देवइ कहिउं-चिर जीवि। इसिं अवसरि महामत्रीश्वर अभयकुमारनइं पुण छींक आवी । तीणइं देविं कहिउं-जीवि भावइं मरि ! । तणिइं अवसरि वली कालिक सूरीआ खाटकीनइं छीक आवी । तीणइ तेह-न्हइ कहिउं- मा जीवि, मा मरि ! । इसिइ श्रेणिक राजा ते कोढिआ ऊपरि रीसाविओ ।
20 ईणइ पापीइ श्रीमहावीरनइं मरि कहिउं, तेह भणी आपणा अग ओलगून्हइं कहिउं-कुष्टि मारिज्यो इसि आपणा सुभटरहइ आदेश दीधु । समोसरणनइ द्वारि नीकलता ते अदृश्य थइ गिओ । सुभटे धराणु नही । श्रेणिक महाराय श्रीवीर पूछया-भगवन् ! ए कुंण ? । श्रीवीरिं तेहनु पाछिलु वृत्तात सघलुऊइ कहिओ-ए, ताहरी अह्म ऊपरि भक्तिनी परीक्षा जोवानइ काजइं कोढीआनूं रूप देषाडिउं । रसी काइ लगाडतु हूतु ?। परमेश्वर कहइ-ते गोशीर्ष चंदन लगा-
25 डतु हूंतु । श्रेणिक महाराय कहइ-तह्मरहइ 'मरि'कां कहिउं ? । परमेश्वरइं कहिउ-एणइं

भक्तिइं करी कहिउं । तुह्मन्हइं संसारमांहिं छतां शरीर कष्ट छइं, मूंआ पूठिं मोक्षि गिआं अनंत सुख छइं; एह भणी 'मरि' कहिउं । अनइं तुंहन्हइं इहां जीवतां सुख छइं, मूंआ पूठइं तु नरगि जाएसि; तेह भणी तुह्मनइं 'चिरंजीवि' कहिउं । महामंत्रीश्वर अभयकुमार मरी अनुत्तरि विमानि जास्यिं; तेह भणी 'जीवि, भावइं मरि' कहिउं । कालकसोरिआनइं 'म मरि म जीवि' जे कहिउं—ए पापी षाटकी जीवतु घणा जीवनी हिंसा करस्यिं अनइं मूंआ पछी तु सातमीइं नरगि जास्यि ॥ 5

५२. कालसौकरिकना बेटानी कथा.

राजगृह नगरिं कालसौअरिओ खाटकी दिनप्रति पांचसइं भइंसा मारइं । तेहनु बेटओ सुलस अभयकुमार मुहतानी संगतिं जीवदयानु मनि निश्चओ आणइं । कालसौअरिओ कृष्ण लेश्या वर्त्ततओ मरी सातमइं नरगिं गिओ । कुटुंब परिवार सहू मिली सुलसन्हइं कहइं—तुं 10 आपणा बाप खाटकीनूं काम करि । सुलस कहइं—पाप लागइं, तेह भणी हूं न करउं । कुटुंब कहइं—पाप ताहरूं थोडउं थोडउं अम्हे विंहिचि लेसिउं । पछइं तेहे १ भइंसु दोरे बांधी पाडिओ । सुलस हाथि कुठारु आपिओ—तुं पहिलु घाउ दि; पछइं अम्हे सहू करिसिउं । सुलस फरसी लेई आपणु ज पग आंहाणिओ । कहिवा लागु—कुठार माहरा हाथथी पडिओ, मूहन्हइं गाढी पीड, तुम्हे थोडी थोडी वहिंची लिओ, विलंब म करु । कुटुंब कहइ—तुं भोलउ थिओ, 15 पीडा कहिनी कुणहिं लेवराइं छइं ? इसिउं सुलस कहइ—पीड लेई नथी शकता, पाप किम लेसिओ ? । इम कही कुटुंब परिवार सहू प्रीछव्युं । सुलस खरी जीवदया पाली देवलोकि पुहतु ॥

५३. आजीवक जमालिनी कथा.

आजीवगगणनेया रज्जसिरीए पहिऊण य जमाली ।
हियमप्पणो करंतो, नय वयणिज्जे इह पडंतो ॥ 20

विवरण–आजीव०–बाह्य वेष मात्रिं ज जीवइं एह भणी आजीवग निन्हव कहीइं। ते निन्हवना गण–समूहमांहि नेता–नायक मूलगु। रज्जसिरिं० श्री महावीरनउ जमाई जमालि एवडी राज्यलक्ष्मी छांडी दीक्षा लेई सिद्धांत पढीनइं। हियमप्पणो०–जओ आपणउं हित करत, परमेश्वरनूं वचन ऊथापत नही, आपणइं अहंकारिं न वाहात, तओ; नय वयणिज्जे०–वचनीयताइ लोकमांहिं अनइं शासनमांहिं न पडोत–निंद्यपणउं न लहत। 5

कथा–कुंडपुर नगरिं श्री वीर वर्धमाननु जमाई जमालि मोटो राजा राज्य छांडी पचसइं सहित दीक्षा लिइं। तेहनी कलत्र अनोधा श्री महावीरनी बेटी सहस्र परिवार सहित दीक्षा लिइं। जमालिइ ११ अंग पढिआं। श्री वीर पूछी परिवार सहित श्रावस्ती नगरीइं गिओ। तिहां तिंदुरु वनमांहि कोष्ठ यक्षनइं भवनिं ऊतरिओ। एकवार तेहन्हइं ज्वर चाढिओ। आसणि 10 बइसी न सकइं। सथारु घतावइ। महात्मान्हइं संथारु घाततां जमालि पूछइं–संथारओ घातिओ ?। महात्मा कहइं–घातिओ। जमालि आविओ, देषइं अध घातिओ; कहइं–तुम्हे कांइ कूडु बोल्डि ?। महात्मा कहइं–परमेश्वरि कहिउ छइं "कीजता साहमुं कीधउं कहीइं।" ते वात साभली जमालि कहिवा लागु–ए वचन परमेश्वरनूं कूडउं। महात्मा कहइं–गामिं जावा लागु पुरुष गामि गिओ कहीइ। थोडइं कटकइं भागइं भाजन भागुं कहीइ। छेहडइं 15 मात्रिं फाटे वस्त्र फाटउं कहीइं। तिम अधूरइ ऊ कार्य कीधइ काज कीधूं ज कहीइं। इसी अनेक युक्ति करी प्रीछवइं, पुण प्रीछइं नहीं। पछइं महात्मा छांडी श्री महावीर पासिं गिआ। अनुघा महासतीइन्हइं जमालिनु कदाग्रह लागु। ढक कुंभार श्रावकनइं उपाश्रइं महासती रही छइं। वार करता कांबली आडी बांधी। तीणइं कुंभारिं कांबली भणी अंगारुउ नांखिओ। कांबलीइ छिद्र पडिउ। महासती कहइं–श्रावक! अम्हारी कांबली कांइं बाली ?। श्रावक ढक 20 कहइं–श्री महावीरनइ मतिं बली कहीइ, पुण तह्मारइं मतिं बलवा लागी छइ, पूरी बली हूइं तु बली कहीइ। तीणइं वचनिं महासती बूझी। मिच्छामि दुक्कड दिइ। महासती जई जमालिनइं बूझवइं पुण बूझइं नहीं। निन्हव थिओ। तप घणाइ कीधा तु ऊ अनतउ संसार ऊपार्जिओ। महासती श्री महावीर कन्हइ जई चारित्र आराधी सुगतिं गई। इसी परी जमालिं विपरीत प्ररूपक निन्हव इसी वचनीयता प्रामी मरी किल्बिषीओ देव हूओ। इम जीव उन्मार्गि 25 वर्तता महत्वथी पडइ॥

योगशास्त्रमांनी केटलीक कथाओ.

[कर्ता—सोमसुन्दर सूरि]

१. द्रव्यमोह ऊपर बे भाईनी कथा.

आगइ एकइ गामि बि भाईं हुंता । पहिली मेघनी वृष्टिइं एक भाई नदीनइ तीरी काष्ठादिक काढिवा गिउ । इसिइ पूर वही गिउं छइ नदीनइ तटि एक सोनीया भरी कडाहि दीठी । ते लेई कादम खरडिया भणी निवरइ द्रहमाहि धोवा लागउ । तेतलइं ते हाथ हुंती विछूटी । द्रहमांहि पडी । तेहनी मूर्छाइं करी पेल्उ गहिल्उ थिउ । इमइ जि कहइ " आंहां धोतां गई २ । " पाछउ घरि आविउ । जि को बोलावइ तेहन्हइं " धोतां गई २ (धोतां गई) " इम जि कहइ । पछइ सगे ते ओरडी माहि घाती केतलाइ दीहाडा भूषिउ राषिउ । भूषइं करी ते गहिलपणउं गिउं । बडा भाई आगलि सोनईआ भरी कडाहिनउ वृत्तांत कहिउ । तेहन्हइं ते वात सांभलतां मोहइं करी गहिलपणउं थिउं । इम जि कहइ—" तइं कांइं धोई " जि को बोलावइ तेह आगलि ईम जि कहइ " तइं कांइं धोई " । पछइ सगे ते हू ओरडी मांहि घाती भूषइं सूकाविउ । तेहइनउं गहिलपणउं इम गमिउं । इमं जीव अणछतीइं वस्तइं मोहइं करी गहिलउ थाइ । पछइ मरी दुर्गतिइं जाइं ॥

२. हिंसाना फल ऊपर सुभूम अने ब्रह्मदत्तनी कथा.

श्लोक—श्रूयते प्राणिघातेन, रौद्रध्यानपरायणौ ।
सुभौमो ब्रह्मदत्तश्च, सप्तमं नरकं ययौ ॥ १ ॥

व्याख्या—श्रूयते० सिद्धान्तमांहि इसिउं साभलीइ । प्राणीया जीवनी हिंसाइं करी रौद्रध्यान–परायण हुंता आठमउ चक्रवर्त्ति सुभौम अनइ बारमउ चक्रवर्त्ति ब्रह्मदत्त–ए बेई चक्रवर्त्ति सातमी नरक पृथ्वीइं गिया ।

अत्र कथा—पहिलुं सुभौम चक्रवर्त्तिनी कथा कहीइ छइ ।–देवलोकि बि देव मित्र हुंता । एक देव वैश्वानर इसिइं नामिइं महासम्यक्त्वधारी । बीजउ देव धन्वन्तरि इसिइं नामिइं महामिथ्यात्वी तापसभक्त । बेई आपणउ २ धर्म वषाणता इम कहइं–धर्मनी परीक्षा कीजसिइ । इम कही ते बेई देव पृथ्वीमंडलिमाहि आवइं । इसिइं अवसरि मिथिला नगरीनउ पद्मरथ

राजा राज्य छांडी श्रीवासुपूज्य बारमउ तीर्थंकरदेव ते कन्हलि दीक्षा लेवा जातउ नवउ देषी पहिलउ तेह्नी परीक्षा करिवा लागा । अनेक अन्न पाणी विशेष सरस दिषाडिया । भूषिइ तरसिइं तीणइं महात्माइ ते न लीधा । सत्त्वथिकउ चलिउ नहीं । पछइ वली तेहे देवे एकइं मार्गि काकरा कांटा विकुर्व्या । एकइ मार्गि डेडकी विकुर्वी । ते महात्मा देडकीनउ मार्ग छाडी
5 काकरा काटानइ मार्गि चालिउ । पग लोहिइ झर्झर हूआ तु हू क्षुभिउ नहीं । पछइ तेहे देवे गीत नाटक इत्यादिक रूपि करी क्षोभवी जोइउ, पुण ते न क्षुभिउ । पछइ तेहे देवे नैमित्तिकना रूप करी ते महात्मान्हइ कहिवा लागा—अम्हे नैमित्तिक शास्त्रनइ बलिं वात जाणउं । तम्हारउं आऊषउ घणउ छइ । हिवडां यौवन वयि छतइ भोग भोगवि । पछइ वडपणि तप लेयो । हिवडा तूम्हइं सौख्यनी वेला । तेह्वे वचने महात्मा क्षुभिउ नहीं । वलतउं महात्माइ कहिउ—
10 जइ मूम्हइ घणउं आऊषउं, तउ घणउ काल चारित्र पालिसु । घणउ पुण्य हुसिइ । अनइ यौवन वयि जे तप कीजइ ते तप श्लाघ्य । जरा आवी पुठिइ शेष श्लाघ्य न हुइं । तेह्नी दृढाई देषी हर्ष्या । जिनशासन प्रशंसवा लागा । पछइ जमदग्नि इसिइं नामिइ जूनउ तापस वनमाहि जटाधारी घणा काललगइ तप तपतउ ध्यानि रहिउ दीठउ । तेह्नी परीक्ष्यानइं कारणि चिडकलउ चिडकलीनउ रूप करी ते बेई देव ऋषिना कूंचमाहि अंगीसलउ करी
15 रहिया । इसिइ चिडकलइं मनुष्यनी भाषाइं चिडकली प्रतिइ कहिउं—हउं हिमवत पर्वति जाउं छउं । चिडकली न मानइ । कहइ—तउं वलतउ नहीं आवइ । चिडकलउ गौहत्या बालहत्या स्त्रीहत्या ब्रह्मदत्यादिकना सम करइ । जउ वलतउ न आवउं तउ हुं एहे पापे लीजउ । चिडकली ते एकू सम न मानइ । चिकली कहइ—जइ न आवं तउ एह ऋषिनइ पापिं लीजइ, ए सम जु करइं तु जावा देउं । ते वात सांभली ते जमदग्नि ऋषि रीसाविउ । हाथ
20 कुचि माहि घाती ते बेई साहीनइ कहिवा लागउ—अरे कहउ हु सिइं पापी [?] । चिकली कहिवा लागी—हे ऋषि ! तु कोप म करि । आपणा शास्त्र जोइ—'अपुत्रस्य गतिर्नास्ति' अपूत्रीयान्हइ गति नथी । तउ अपूत्रीउ, तूम्हइ गति किहा छइ । ते वचन साभली ऋषि ते वात साची मानी क्षुभिउ । मनि इम जाणइ—पाणी ग्रहण करी पुत्र उपजावउ । तप मूंकी कोष्टकि नगरी जितशत्रु रायनइ घणी बेटी साभली कन्या मागिवा चालिउ । धन्वन्तरि देव
25 ते रिषि क्षुभिउ देषी जिनधर्म साचउ मानतउ श्रावक हूउ । जमदग्नि ऋषि जितशत्रु राय कन्हलि जई कन्या मागी । राजा कहइ—माहरइ सउ कन्या छइ, जे तह्मनइ वाछइ ते लेई जाउ । पछइ ते ऋषि कन्यानइ अत पुरि गिउ । कन्याए ते जटाधारी दूबलउ असंस्कृत देह देषी थूंकी २ गई । ऋषिं रीसाविइ तपनइ बलि ते सघलीइ कुत्सित कूबडी कीधी । रीसाविउ पाछउ वलिउ । आंगणइ धूलि माहि रमती रायनी बेटी एक दीठी । तेम्हइ बीजुरउ देषाडिउं ।
30 पेलीइं बीजउरा भणी हाथ अघउ कीधउ । ऋषिं कहिउ ए मूम्हइ वाछइ । इम बोली ऊपाडी

लेई चालिउ । राजाइं शापभइं वीहतइं ते कन्या, सहस्र गाइनउं गोकुल, दास दीकोला सहित ऋषिन्हइं दीधी । बीजी सउ कन्या साली भणी थाकता तपनइं वलिइं साजी कीधी । इम तप सघलउइ नीगमिउं । पछइ ते बालिका वनमाहि लेई आश्रमस्थानक करी तिहां लाली पालीनइ यौवन वय प्राप्त करी पाणिग्रहण कीधउं । ऋतुकाले तेन्हइं कहिवा लागउ–एक वस्तु मंत्रिइं साधी तून्हइं आपउं । जिसिइं तान्हइ वारू ब्राह्मण बेटउ हूइ । रेणुका कहइ–मंत्रिइं करी बि वस्तु साधउ । जिसिइं एकइं क्षित्रिय बेटु हूइ । कांइं, क्षित्रिय बेटानी वस्तु माहरी बहिनी हस्ति नागपुरि परणी छइं तेन्हइं आपिसु । पछइ तीणइं ऋषिं बि वस्तु साधी आपी । पछइ रेणुकाइं माहरउ बेटउ शूर थाइ–तेह भगी क्षत्रिय चारु षाधउ । ब्राह्मण चारु बहिनिन्हइं हस्तिनाग पुरि मोकलिउ । ते तीणइं षाधउ । रेणुकानइं राम इसिइं नामिइं बेटउ हूउ । बहिननइं कृतवीर्य इसिइं नामिइं बेटउ हूउ । तिसिइं एक विद्याधर अतीसारीउ तीणइं आश्रमि आविउ । ते रामिं पडीगिउ । तेहनी सार कीधी । तीणइं विद्याधरि हर्षिइं थिकइ परशुविद्या आपी । ते रामिं साधी । तीणइं करी परशुराम भणी प्रसिद्ध हूउ । देवताधिष्ठित कुठार ते हथीयार लीधइं हींडइ । रेणुका बहिननइं मिलिवा हस्तिनागपुरि गई । तिहां बहिनेवीसिउं तेहनइ संबंध मिलिउ । तिहां वली बेटउ जायउ । बेटा सहित जमदग्नि ऋषिं रेणुका पाछी आणी । परशुरामिइं रीसाविइं हुंतइं बेटा सहित ते मा मारी । पछइ अनंतवीर्य राजा रीसाविउ ते आश्रम आवीनइ विणासिउ । ऋषि मारिउ । पछइ परशुरामिइं कुठारनइं बलि आपणउ भाई कृतवीर्य मारी हस्तिनागपुरनउं राज्य लीधउं । इसिइं कृतवीर्य रायनी राणी एक साधान नाठी । वनमांहि तापसे आपणइ अड्डइ भुइंहरामाहि घाती राषी । तिहां तीणइं चउद स्वप्न सूचित बेटउ जायउ । तेन्हइ सुभूम इसिउं नाम दीधउं । तेतलई परशुरामि क्षत्रिय ऊपरि वापनइ वइरि फिरी २ सातवार निःक्षत्रियाणी पृथ्वी कीधी । क्षत्रियनी दाढ लेई २ स्थाल भरी मूकिउं । इसिइं एकइं नैमित्तिकि परशुरामन्हइं कहिउं छइ–जीणइ पुरिषि आविइ ए दाढ खीर रूप थासिइ, अनइ ते जिमसिइ, तेहनइ हाथिं तूंन्हइं मरण छइं । पछइ ते वयरी ओलखवानइं कारणिं परशुरामिं सत्तूकार मंडाविओ । क्षित्रियनी दाढनउं स्थाल सिंहासन ऊपरि मांडी मूंकिऊं छइ । इसिइं अवसरि वैताढ्यपर्वति मेघनाद विद्याधरि आपणी बेटीनइ कारणि नैमित्तिक कन्हलि वर पूछिउ । नैमित्तिकिं सुभौम कहिउ । ते विद्याधर आपणी बेटी लेई आविउ । सुभौम परणाविउ । तिसिइ सुभौमिं भुइंहरामाहि छतइ माइ कन्हलि पूछिउं–पृथ्वी एतलीइ जि छ ? इसिउं माइं कहिउं–हे वत्स ! ताहरउ वाप मारी हस्तिनागपुरनउं राज्य परशुरामिइं लीधउं । तेहनइ भयइं आपण बे भुइंहरामाहि नासी रहिया छउं । ते वात सांभली सुभौम रीसाविउ । भुंइहरामांहि हुंतउ वाहरि नीसरिउ । मेघनाद विद्याधर सहित हस्तिनागपुरि सत्तूकारि गिउ ।

क्षत्रियनी दाढ क्षीररूप थई । तेह जि जिमवा लागउ । परशुरामना रषवाल मारिवा धाया । मेघनादि विद्याधरिं ते त्रासव्या । परशुरामिं ते वात जाणी आविउ । सुभौमनी दृष्टिं तेहनउ कुठार ओल्हाणउ । सुभूमिं परशुराम भणी थाल मूकिउं । ते थाल फीटी चक्र थिउ । तीणइं परशुराम पूरउ कीधउ । परशुरामनइं वइरिं एकवीसवार निब्राह्मणी पृथ्वी कीधी । चक्र रत्ननइ
5 बलि छइ खंड साधी चक्रवर्त्ती हूउ । लोभनउ वाहिउ धातकीखंडनूं भरतक्षेत्र साधिवा भणी चर्मरत्न ऊपरि कटक चडावी लवणसमुद्रमांहि चालतउ देवताए मेल्हिउ । समुद्रमाहि बूडउ । मरी हिंसानइ प्रमाणिं सातमी नरक पृथ्वीइ गिउ ॥

बीजी ब्रह्मदत्तनी कथा लिषीइ छइ । कांपील्यपुरि ब्रह्मदत्त इसिइ नामिं बारमउ चक्रवर्त्ती हूउ । राज्य करता इसिइ अवसरे पाछलि दीर्घरायनइ भयइ एकला फिरता अटवीमाहि
10 तृषाक्रान्त ब्रह्मदत्तनइ एकइं ब्राह्मणइं पाणी पायउ हुतउं, ते ब्राह्मण चक्रवर्त्ति कन्हलि आविउ। चक्रवर्त्तिइं घर २ प्रतिइ भोजन वस्त्र १ दीनार दाक्षिणा दिवराविउ । इम काल जातइं एकवार तीण जि ब्राह्मणिं चक्रवर्त्तिन्हइ कहिउ--जे तउ भोजन कर, ते भोजन मून्हइं दिवारि । चक्रवर्त्तिइं कहिउ--ते भोजन बीजान्हइं जरइ नहीं । ते ब्राह्मण कहइ--तउं किसिउ कृपण छं, जिमण देई न सकं । पछइ चक्रवर्त्तिइं ते ब्राह्मण सकुटुंब आपणउं जिमण जिमाडिउ । घरि आविउ ।
15 रात्रि तीणइ आहारि करी काम विह्वल सघलाइ थिया । परस्परिइ पशुनी परिइ प्रवर्त्तिया । प्रभाति हूइ लाजता परस्परिइ एक एकन्हइ मुहडउ देषाडी न सकइं । ते ब्राह्मण चक्रवर्त्ति ऊपरि रीसाविउ । नगर बाहरि नीकलिउ । तीणइ एक पशुपाल गोला धणुहडी करी पीपलनां पान काणां करतउ दीठउ । पछइ ते पसूआलन्हइ गर्थ मानी इसिउं कहिउं--राजा मार्गिं हाथीइ चडिउ जे जाइ, तु गोला मूकी तेहनी आषि काढिजे । पछइ लोभ लगइ पसूआलिइं
20 ते वात पडिवजी । किहाएक छांनउ थई रहिउ । इसिइ रेवाडीइं जातइ धनुहडीइ करी समकाल वि गोला मूकी चक्रवर्त्तिनी बेई आंषि काढी । राजपुरुषे पशूआल धरिउ । तीणइं मारीतइं ब्राह्मण देषाडिउ । रीस लगइ सकुटुंब ते ब्राह्मण मारी, बीजा ब्राह्मण सघलाइनी आंपि काढी थाल भरी मू आगलि मूकउ--इम आदेस दीधउ । तिवारइं बीजाइ ब्राह्मणनी आंपि काढीती देषी दया लगइ मंत्रीश्वरे लेसूआ गुंदानी कुलीआ स्थाल भरी चक्रवर्त्ति आगलि
25 मूंकीइ । ते ब्राह्मणनां लोचननी बुद्धिइ मर्दतु हर्षीइ । इम सोल वरस रौद्रध्यानि प्रवर्तीनइ मरी सातमी नरक पृथ्वी गिउ । तीणइं सर्वायु सातसइं सोलोत्तर वरस सघलउंइ आऊषउं भोगविउ । ए हिंसानां फल कहिया ॥

---

३. कालक सूरिआ खाटकीनी कथा.

राजगृह नगरि श्री महावीर समोसरिया । श्रेणिक महराय अभय कुमार मंत्रीश्वर समोसरणि आविया । कालक सूरीउ षाटकी समोसरणि आविउ छइ । इसिइ अवसरि श्रीमहावीरनइं छींक आवी । तिसिइ अवसरि दर्दुरांक देव तीणइं इम कहिउं—परमेश्वर ! तउं मरि । तिसिइ श्रेणिकरायन्हइं छींक आवी । तिहां देविं कहिउं—चिरं जीव । एतलइ अभयकुमारन्हइं छींक आवी तेहन्हइं इम कहिउं—जीव भावइ मरि । एतलइ कालिसूरिया षाटकीन्हइं छींक आवी । देविइं कहिउं—म जीवि म मरि । तिसिइ धर्मदेशनानइ प्रांति ते देवता परमेश्वर वांदी गिउ । अदृश्य थिउ । श्रेणिक महाराइं श्री महावीर पूछिया—ईणइं देविइं तुम्हन्हइं मरि कांइ कहिउं ? परमेश्वर कहइं—ईणइ भक्तिइं कहिउं । जेह भणी, अम्हन्हइं आंहां संसारमाहि रहियां सयरनी अबाधाइं करी छइ; मूआ पूठिइं केवलां मोक्षनां सुखइ जि छइं । तेह भणी भक्तिइं 'मरि' इसिउं कहिउं । तुम्हन्हइं जे 'जीवि' इसिउं कहिउं । ते एह भणी—तुम्हन्हइं जीवतां आहां सुख छइं; मूआ पूंठिइं नरगि जाएसि । तीणइं करी दुःख । अभयकुमारन्हइं धर्म करतां जीविवउं मरिवउं वे रूडां । कालसूरीयान्हइं पाप करतां पांचसइं भइंसा मारतां ए जीविउं विरूउं, अनइ मूआ पूंठिइं सातमी नरकपृथ्वी जाइसिइं; तेह भणी एहन्हइं जीविवउंइ मरिवउंइ वेई विरूआं । ए वात सांभली श्रेणिक महाराय परमेश्वरनइं वीनवइ—स्वामी ! तइं ठाकुर छतइं नरकि काइं जाउं ? परमेश्वरि आइस दीधउं—तइं पहिलउं आगइं नरगनउं आऊषउं वांधिउं, पछइ सम्यक्त्व पामिउं । ते सम्यक्त्वनइं वलिइं आवती चउवीसीइं श्री पद्मनाभ पहिलउ तीर्थंकर थाएसि । तउ तेह भणी मनमांहि खेद म करसि । वली श्रेणिक महाराय कहइ—कांई उपाय कोई छइ, जीणइं कीधइं नरगि न जाउं ? स्वामी वली कहइ—ताहरइ घरि जे कपिला दासी छइ ते जइ भक्तिपूर्वक महात्मान्हइं दान दिइ, अथवा कालसूरिउ षाटकी दिनं प्रति पांचसइं भइंसा विणासइ छइ ते जइ न विणासइं तउ तून्हइं नरक टलइ । ए वात सांभली श्रेणिक महाराय हर्षिउ, उठिउ । कपिला दासी प्रतिइं इसिउं कहिउं—तउं महात्मानइं भक्ति दान दइ । कपिला कहइ—केती वारइं तुं मून्हइं सर्व सुवर्णमय करइ, अथवा तउं मून्हइं जइ निटोलइ मारइं तउ एह अकृत्य हुं न करउं ।

रूसउ सेणीराओ अहवा रूसउ जिणवरो वीरो ।
कपिला न देइ दाणं इह भवे परभवे चेव ॥१॥

पछइ राजाइ कालसूरीउ षाटकी वोलाविउ । तेहन्हइं कहिउं—भावइ तेतलउ द्रव्य मागि, पाणि जीवहिंसा परही मूंकि । कालसूरिउ षाटकी कहइ—ए आपणी कुलक्रमागत हिंसा

आवी ते मूकउ नहीं । एहमाहि सीउ दोष छइ, जे घणा जीवलोक वाछइं । पछइ राजाइं ते अंधकूपमाहि घाती अहोरात्र राखिउ । राजाइं परमेश्वर वीनविया-एक अहोरात्र ए मइ हिंसा करतउ राषिउ । परमेश्वरि कहिउं-ईणइं कूआमाहि माटीना पाचसइं भइंसा करी विणासिया, तउ ए जिमिउ । श्रेणिक महारायनइं मनि ते वात जाणी खेद थिउ । चींतविउ-नरग जावा-
5 नूं कर्म अन्यथा न हुइं । पछइ ते कालसूरीउ मूकिउ । पाच पाचसइं भइंसानउ विणास सदैव करतां तेहनइं पोतइ पापनउ ढिग वाधिउ । छेहडइ दारुण रोग आविया । तीणइं पीडिउ-आक्रन्द करइ । जे जे सुखकारीया पदार्थ ते ते दुःखमय देषइ । सुलस आपणा बापन्हइ समाधि वांछतउ अभयकुमार मंत्रीश्वर कन्हइ बुद्धि पूछिवा गिउ । अभयकुमार कहइ-ताहरइ बापि जीवहिंसादिक अतिमोटां जि पाप कीधां तीणइं करी सातमी नरकपृथ्वीइं जाइसिइ । तेह
10 भणी ते नरगनी लेश्या साही आवी । हिव जे जे विपरीत भक्ति करिसि ते ते रूडी भणी मानिसिइ । ए वात जाणी सुलसिइ कालसूरिउ कडूआ तीषा रस जिमाडइ । उन्हा दुर्गन्ध विरूआ पाणी पाईइ । दुर्गन्ध विष्ठादिके विलेपीइ । उभा कांटाना झाषरां ऊपरि सूआरिउ । अनेरउं इ जिम जिम विपरात करइ तिम तिम ते रूडउं मानइ । इम जि करतां मरी सातमीइ नरगि गिउ । सुलसि मनि चींतविउं-बापन्हइं पापनउ फल देषी हुं हिव हिंसा नहीं करउं । पाणीवार हूआ पुंठिइं सगा
15 सणीजा कुटुंब मिली सुलसन्हइं कहइं-तउं बापनउ पद अंगी करि । महिषनइं पहिलउ घाय तउ मूकि । पछइ आपहणी अम्हे मारिसिउ । सुलस कहइ-जिम मारा प्राण मून्हइं वल्लभ तिम सवि हउ जीवन्हइं आपणा २ प्राण वल्लभ । तेह भणी आजीविकानइं कारणि एवडउ पाप कुण उपार्ज्जइ । सगा कहइं-जीव मारतां जे पाप लागिसिइ ते अम्हे थोडउं २ विहंची लेसिउ । इम कही बलात्कारिइ महिष मारवा भणी सुलस हाथि कुठार आपिउ । सुलसि ते
20 कुठार ऊपाडी आपणी जि जाघ छेदी । मूर्छा आवी पडिउ । मूर्छा वाली पछउं कहिवा लागउ-अहो स्वजनो, माहरइ पगि गाढी पीडा ते तुम्हे थोडी २ विहंची सघलाइ ल्यिउ, जिसिइ हउं पीड रहित थाउ । सगा सणीजा कहइं-सुलस तुं भोलउ थिउ ! कहिनी पीड कुणहइं किम लेवराइ छइ ? वली सुलस कहइ-एतली पीडमात्र तुम्हे लेई नथी सकता, माहरउं पाप तुम्हे किम लेअत ? । कुटुंबनइ कारणि पाप करी एकलउ हउं नरगि दुःख सहउं,
25 तुम्हे आंहां जि रहिसिउ । तेह भणी कुलक्रमागतइ आवी हिंसा हउं नहीं करउं । बाप जइ आंधलउ हुइ तउ वेटइ आघलइ हवउ ? वाप जइ कुइ पडी मूंउ, तउ वेटइ कूइ पडी मरिवउं ? इसिइ अवसरि अभयकुमारि मंत्रीश्वरि आवीनइ सुलस प्रशंसिउ । धर्मनइ विषइ स्थिर कीधउ । सम्यक्त्वमूल वारव्रत आराधी सुलस देवलोकि पहुतउ ॥

४. वसुराजानी कथा.

शुक्तिमती नगरी, तिहां क्षीरकदम्बक इसिइं नामिइं उपाध्याय ब्राह्मण । तेह कन्हलि त्रिणि छात्र शास्त्र पढइं छइं । एक तेहजि उपाध्यायनउ बेटउ पर्वतक, बीजउ रायनउ बेटउ वसुनामिं, त्रीजउ ब्राह्मण पुत्र नारद । एकवार ते त्रिणिइ पाढनइं श्रमिइं थाका आवास ऊपरि सूता छइं। तिसिइ चारण-श्रमण महात्मा बि आकाशें जातां परस्परिइ इसी वात कहइ-ए त्रिहुंमांहि एक स्वर्गि जाइसिइ, बि नरगि जाइसिइं । क्षीरकदम्बक उपाध्याय ते वात सांभली-नइ तेहनी परीक्षा करइ। पीठाना कूकडा करी ते त्रिहुं छात्र-हइं आपइ। इसिउं कहिउं-जिहां कोइ न देषइ तिहां मारी आवउ । वसु पर्वतक बे मारी आविया । नारद कूकडउ आपउ लेई आविउ । गुरु प्रतिइं कहइ—

यतः—**आदित्यचन्द्रावनिलोऽनलश्च द्यौर्भूमिरापो हृदयं यमश्च ।**
अहश्च रात्रिश्च उभे च सन्ध्ये धर्मो हि जानाति नरश्च चिन्हम् ॥१॥

ते स्थानक नथी जिहां कोइ न देषइ । ए मूंन्हइं देषइ, हउं एहनइं देषउं । वली ज्ञानी देषइ । तेह भणी मइं जाणिउं गुरे मराविउ नथी । एह भणी आषउ जि आणिउ । गुरइं जाणिउं-दयावंत भणी ए स्वर्गि जासिइ । माहरउ बेटउ रायनउ बेटउ वसु ए बेई नरगगामी। तीणइं वैराग्यइं उपाध्याय अनइ अभिचंद्र राजाइं बिहु जणे दीक्षा लीधी । पर्वतक उपाध्यायनइ पदि बइठउ । अनेक छात्र भणावइ । रायनइ पाटि वसुराजा हूउ । सत्यवादी भणी लोकमाहि तेहनी ख्याति हुइ । एकइं आहेडीइं वनमाहि फिरतइं एक स्फटिक शिला देषाडी । ते राइं छानी अणावी आपणा सिंहासण हेठलि मंडावी । राजानउं सिंहासन आकासि रहिउं देषी लोकमाहि गाढेरी प्रसिद्धि-ए सत्यनउ महिमा, इसी वात विस्तरी । एकवार नारद मित्र भणी मिलिवा पर्वतक कन्हलि आविउ । तिसिइ पर्वतक छात्र आगलि 'अजैर्यष्टव्यं' ए वेदना पद मांहि अज शब्दि बोकडा कहीइं, तेहे याग करिवउ, इसिउं कहितउ साभली नारदिं वारिउ । जउ गुरे अज शब्दिइं त्रिवरसी अचित्त धान्य कहिया छइं। पर्वतक अहंकारि चडिउ न मानइं। पछइ इम कहइ-जे कूडउं कहितउ हुसिइ तेहनी जिह्वा छेद कीजसिइ-इसी प्रतिज्ञा करइ । वली कहइ ईणइं विषइ साषीउ वसुराजा प्रमाण। इसिइ वसुराजा पर्वतकनी माताइ जई इसिउं मनाविउ । जाउ तम्हारा बेटानउ पक्षपात करिसिउं । बीजइ दीहाडइ पर्वतक अनइ नारद बे समुदाय सहित राय कन्हलि आव्या । वसुराजाइं पर्वतकना वचननी कूडि साषि दीधी। देवताए कुपीए ते शिला सिंहासन सहित चूर्ण कीधी । वसुराजा पडिउ, मरी नरगि गिउ । देवताए रीसावे हुंते तेहना आठ पिरीआ मारिया । नारद सत्यवादी भणी पूजिउ ॥

५. ऋषिद्वय कथा.

एक लौकिक ऋषि कौशिक नामिइ सत्यवादी भणी लोक माहि प्रसिद्ध थिउ। वनमाहि तप तपइ छइ। एकवार चोर गाम मुसी ऋषि आगलिइ नीकल्या वन माहि नाठा। तेह केडइं वाहर आवी। तेहे सत्यवादी भणी ऋषि पुछिउ-चोर केहीं गिया ? ऋषिइं
5 कहिउं-एह वनमाहि पइठा छइं। ते वात जाणी ते वाहरू सन्नद्ध बद्ध थई वनमांहि पइसी, चोर विणासी वल्या। ते ऋषि एह्वइ परपीडा करीइं वचनिइ इसिइ बोलिवइ नरगि गिउ। जीणइ वचनिइं जीव ऊगरइ तेहवउ माइउ गोइउं बोलतां पुण्य जि हुइ। जिम एक लोकिक ऋषि वनमाहि तप तपतउ हुंतउ। आहेडीना त्रासिव्या हिरण तेह ऋषि आगलिइ गिया। केडइ आहेडी आविया। तेहे ऋषि पूछिउ-मृगला केहीं गया। ऋषिइं दया
10 लगइ इसिउं कहिउं-

"या पश्यति न सा ब्रूते, या ब्रूते सा न पश्यति।
अहो व्याध ! स्वकार्यार्थी किं मां पृच्छसि मुहुर्मुहुः॥"

जे आंषि देषइं ते बोलइ नहीं। जे जीभ बोलइ ते देषइ नहीं। इम कही ते आहेडी वीयारिया; मृगला ऊगारियां। एह्वइं माइं गोइं वचनिइं बोलिवइं, जीव रक्षा हेतु भणी, ऋषि
15 स्वर्गि पहुतउ॥

६. बे चोरनी कथा.

बेणातटि नगरि, मूलदेव राजा। एकवार लोके विनविउ-स्वामी ! को एक चोर नगर ल्हसइ छइ, पुण चोर जाणीइ नहीं। राजाइं कहिउं-थोडा दिहाडा माहि चोर प्रगट करिसु। तम्हे असमाधि म करिसिउ। पछइ राजाइं तलार तेडी हाकिउ। तलार कहइ-मइ
20 अनेक उपाय कीधा पुण ते चोर धराइ नहीं। पछइ राजा आपणपइ रात्रिइं नीलउ पटउलउ पहिरी नगर वाहरि जे जे चोरने स्थानके फिरतउ, चोर जोतउ, एकइं स्थानकि जई सूतउ। तेतलइं मडिक चोरिइं दीठउ, जगाडिउ, पूछिउ-कउण तउ ? तीणि कहिउं-हु कापडी भीषारी। मंडिक चोरि कहिउ-आवि तउ मू साथिइ जिम तुम्हइं लक्ष्मीवंत करउं। राजा तेह केडा लागउ जाइ। मडक चोरिइ नगरमाहि पइसी, एक सेठिनइ घरि खात्र दीधउ। सर्वस्व लेई
25 पोटल वाधी रायनइ माथइ देई जूनउं उद्यान तेह भणी चालिउ। तिहा एक गुफानउं वार ऊघाडी मोस लेई माहि पइठउ। दिव्य रूप धारिणी आपणी वहिनिन्हइं तीणइ कहिउ-परहुणाना

पग पखालि। अन्यात कूआनइ कांठइ आसण माडी ते रायना पग धोवा लागी । सुकुमाल लक्षणोपेत रायना पग देषी सानुराग थकी रायनइ कहइ–जइ मझरइ परिणं तु एक वात कहउं। राइं कहिउं–परणिसु । पछइ ते कहइ–आगइ जे पोटलउ ऊपाडी आवइ तेहनइं पग धोवानइं मिसिइं पाछलि तेहनइं कूइ लांषउ । ताहरइ रूपि मोही कहउं छउं–तम्हे जाउ। राजा ऊठी जावा लागउ । तीणइं स्त्रीइं वाहिविउं परहणउ नाठउ। एतलइं मंडिक चौर 5
कंकलोहनउं खांडउं लेई केडां धाइउ। राजाइं एक ठुंठउ आपणइ वस्त्रि आच्छादी थांभउ आंतरइ देई रहिउ। ठुंठउ आहणी पाडी चोर पाछउ वलिउ। राजा नीकली पाछउ अवासि आविउ। बीजइ दीहाडइ राजाइ रवाडी जातइं तूनारानउं काम करतउ ते चोर दीठउ। रात्रि दीठानइं अनुसारिइं ओलषिउ । राजाइं तेडावी अतिहिं मान देई वहिनि मागी । चोरि जाणिउं हउं राजाइं लाधउं । पछइ पेलइं अवसर जाणी वाहिन रायनइं परिणावी, 10
मान्य हुई। राजाइं तेहनी बहिन पाहिइं वस्त्र आभरणादि सर्व अणाविउं । मउडइं २ सहू लेई पछइ ते मंडिक चोर अनेके विडंबनाए विडंबी २ विणासिउ। सगउ सालउ छतउ इ पणि सांसहिउ नहीं। इम अनेराइ चोरीना दोषइं सगाइ अनर्थ प्रामइं ॥

७. रोहीणेय चोर कथा.

राजगृह नगरि, श्रेणिक राजा, अभयकुमार मंत्रीश्वर, तिसिइ वैभारगिरि पर्वति 15
लोहखरउ चोर रहइ। राजगृह नगरनी सर्वलक्ष्मी स्त्र्यादिक चोरी आणइ। तेहनइ रोहिणी कलत्रनउ बेटउ रोहिणीउ इसिइ नामिइं छइ । इसिइ लोहखरइं मरतां तेहन्हइं इसी शीष दीधी–जे समोसरणि बइठउ त्रैलोक्यना लोक आगलि वषाण करइ तेहनउं वचन काने म सांभलसि । रोहिणीउ ते बापनउं वचन पालतउ राजगृह नगरु निरंतर मुसइ। एकवार स्वामी श्री महावीर वैभारगिरि ढूकडा समोसरिया । रोहिणीउं राजगृह जातउ जोइ। तउ 20
बीजी वाट एकू नही तेह भणी समोसरण आगलिइं जि कान आगुलीए ढाकी जावा लागउ। तेतलइं पगि कांटउ भागउ। आंगुली कानतउ काढी कांटा काढतां श्रीमहावीरनउं वचन सांभलिउं। तिसिइ स्वामी देवनां लक्षणनी गाथा बोली तीणइ सांभली,–

> अणमिसनयणा मणकज्जसाहणा पुप्फदामअमिलाणा।
> चउरंगुलेण भूमिं न छिवंति सुरा जिणा विंति ॥ 25

ते गाथा घणउ इ वीसारिवा हींडइ पुण वीसरइ नही। हिव निरतर नगरमाहि चोरी करइं। एकवार श्रेणिक रायन्हइं नगरने लोके वीनविउं–स्वामी, चोरे नगर मुसीइ छइ। ते वात साभली राजाइं तलार ऊपरि कोप कीधउ। तलार कहइ–स्वामी सिउं कीजइ, चोर घराइ नहीं। पछइ अभयकुमारइं तलारन्हइं बुद्धि दीधी। केतल्उंइ कटक गढमाहि राषि केतल्उं इ गढ बाहरि राषि–इम माहि थकउ त्रासविउ चोर बाहिरिलां सुभटइ नग्रही पडिसिइ। ते बुद्धि तलारे कीधी। तीणइं दीहाडइ रोहिणीउ गामि गिउ हुंतउ। रातिं आविउ। अजाणतउ नगर माहि पइसतउ माहिले सुभटे आकुलाविउ। किरण देई बाहिरि पडिउ। तलारे धरी अभयकुमारन्हइं आपिउ। अभयकुमार कहइ–एह कन्हलि चोरीनी वस्तु कांई दीसइ नहीं। तेह भणी अणविचारिइ निग्रह किम कराइ। पछइ पूछिउ–तउं किहांनउ, किम निर्वहइ [2] रोहिणीइ कहिउ–सालिग्रामि दुर्गचंद्र इसिइ नामिइं कुलबी। काज विशेषिइ अहां आविउ। ऊमनउ भणी देवकुलि सूतउ। निद्रा आवी। घणी रातिइ जागिउ। आपणा गाम भणी जातां तलारे साही तुम्हन्हइ आपिउ। पछइ राजाइं सालिग्रामना लोक तेडाविआ। पूछिया–तेहे कहिउं अम्हारइ गामि दुर्गचंद्र कुणुंबी छइ, भलउं माणस। अभयकुमारिइ चींतविउं–ए रोहिणीउ चोर तउ एहु इ जि। देषउ केवडु एहनउ प्रपंच। जां लगइ आपणइं मुखिइं चोरी न मानइ, तां एहन्हइ निग्रह कराइ नहीं। तेह भणी मद्य पाइउ। अचेत थिकउ सप्तभूमिक आवासि दिव्य शय्याइं देवदूष्य वस्त्र आभरण पहिरावी पउढाडिउ। पाषती च्यारि देवांगना समान इसी दासी अलंकरी विभूषी राषी। बीजीइ देवलोकनी रचना कीधी। मद्य परिणमिया पूठिइ तत्काल रोहिणीउ जागिउ। देवांगना-रूप-धारिणी दासी कहइं–अम्हारइं भाग्यइं करी इणइ देवलोकि तउ अवतरिउ। आहां इसी स्थिति छइ–पहिल्उं आपणा पाछिला भवना पुण्य पाप सहु कहीइ। पछी देवलोकना आचार करावीइ। ते साभली रोहिणीउ शकाणउ। हउं देव थिउ कि ना। श्रीमहावीरनउ वचन संभारी तउ साचउं कहिसु, ईमइ नही कहउं। पछइ जोअइ, सविहुनी आखि मेषोन्मेष करती देषइ। फूलनी माल कुरुमाणी देषइ। सविहुना पग भुइं लागता देषइ। पछइ जाणिउ, सही ए अभयकुमारनउ कपट छइ। तेह आगलि कूडउं इ जि कहिवा लागउ। मइ पाछिलइ भवि सुपात्रि दान दीधा, प्रासाद कराव्यां, बिंब भराव्या, तप तपिउ इत्यादि। परिवार वली कहइ–कांई पाप कीधउ हूइ ते हू कहीइ। रोहिणीउ कहइ–जउ पाप कीधा हुइ तु एवडा सुख किम लाभइ। ते वात अभयकुमारि साभली मंत्रीश्वर श्रेणिक राजान्हइ कहइ–ए चोर तु हुइ जि पुण प्रगट न थाइ ता निग्रह न कराइ। इसिउं नीतिशास्त्रि छइ। पछइ राजाइ रोहिणीउ छोडिउ। आपणइ स्थानकि गिउ। चींतविवा लागउ–एकइ गाहइं मून्हइ मरणादिक सकट टलिउ। अभयकुमारनी बुद्धिनइ ग्रहि न पडिउ। जइ

श्रीमहावीरनां घणां वचन सांभलत, तउ मून्हइं घणा गुण हुअत। धिग् पडउ ! एतलउ काल ईणइं पापीइं वापिइं हुं वंचिउ। इसिउं चींतवतु श्रीमहावीरनइ समवसरणि गिउ। दसविध धर्म सांभलिउ । वैराग्य ऊपनउं । जेहनी वस्तु चोरी हती ते तेहनी वस्तु सघलीइ पाछी आपी। पछइ श्रेणिक महाराइं दीक्षानउ महोत्सव कीधउ। पछइ रोहिणीइं छमासी तप लगइ तप करी छेहडइ पादपोपगमन अणसण लेई समग्र पाप धोई देवलोकि गिउ ॥ 5

८. सुदर्शन श्रेष्ठी कथा.

चंपा नगरीइं दधिवाहन राजा। तेहनइ अभया राणी। तिहां ऋषभदास श्रेष्टि। तेहनइ अर्हदासी कलत्र । तेह सेठिनु भइंसिनउ चारणहार सुभग नामिइं पींडार । एकवार माहमासि वाहरि ऊघाडउ एक महात्मा काउसगि रहिउ दीठउ । तीणइं सांजइं चींताविउं एवडी टाढि रातिइं किम सहिसिइ । इम चीतवतउ पाछिली रातिइं सवाहरे महात्मा कन्हलि 10 भइंसि लेई आविउ। तेतलइं दीस उगतइ महात्माइं काउस्सग पारिउ। 'नमो अरिहंताणं' कही आकासिइं ऊपडिउ। पेलइं आकासि गामिनी विद्याभणी 'नमो अरिहंताणं' ए पद हीइ थाहराविउं। पछइ सेठिइं पूरउ नउकार सीषविउ। एकवार भइंसि चारवा ग्यां मेघ वूठउ। विचालइ नदी पूरी आवी। पाछा वलतां भइंसि नदी तरी ऊतरी अनइ सुभगि नउकार कही आकाश गामिनी विद्यानी बुद्धिइं झांप दीधी । नदीमध्य पडिउ। कादममांहि षुतउ, खीलउ 15 एक तेहनइ मर्मि लागउ। मरी तेह जि ऋषभदास श्रेष्टिनइ घरि सुदर्शन इसिइं नामिइं वेटउ हूउ। व्यवहारीआनी वेटी मनोरमानउं पाणिग्रहण कराविउ। सुदर्शन श्रेष्टिनइं कपिल परोहित मित्र छइ। तीणइं आपणी कपिला कलत्र आगलि सुदर्शन श्रेष्ठिना गुण वषाणिया। रूप वर्णवतां तीणइं अनुरागि लीणी इ जि छइ। एकवार निवरइ कहइ—तुम्हारउ मित्र मांदउ छइ; मिलिवा तेडइ छइ। इसी परि माया करी आपणइ घरि ओरडामाहि घालिउ। वाहिरलां किमाड 20 दीधां। आपणउ अभिप्राय प्रकासिउ । सुदर्शन श्रेष्टि शील राषिवा भणी इसिउं कहिउं—हउं नपुंसक छउं। इसिउ कूडउ ऊतर करी वाहरि नीकलिउ। कपिला अपार लाजी। एकवार तीणइं नगरि इंद्रमहोत्सव हुइ छइ। तिहां अभया देवि राणी अनइ कपिला वेई सुखासणि वइठी जाइं छइं। तिसिइ सुदर्शन श्रेष्टिनी कलत्र मनोरमा छए वेटे सहित जाती कपिलाइं दीठी। अभया राणी पूछी— ए कुण, कहिना ए पुत्र? अभया राणीइं कहिउं—ए सुदर्शन श्रेष्टिनी कलत्र, अनइ एहना पुत्र। कपिलाइं 25 कहिउं-एहना वेटा किम? सुदर्शन श्रेष्टि नपुंसक छइ। अभयादेवी हसीनइ कहइ-ते नपुंसक पर स्त्री

आश्री छइ, स्वकलत्र आश्री ते महापुरुष छइ। तिवार पुंठिइ कपिलाइं आपणउ पाछिलउ वृत्तांत सघलु इ जणाविउ। अभया राणीइं कहिउं—बापडी तउं भोलवी बीआरी। इम कही हसिउं। कपिला विषवादी कहिउं—जइ तु अपार डाही सुजाणि तु जाणीसिइ जउ तेहन्हइं क्षोभविसि। अभया राणीइ अहंकारि चडीइं प्रतिज्ञा कीधी—जइ तेहनइ न क्षोभवउ तउ प्राण छांडउं। एकवार
5 कौमुदी-महोत्सवि राजा रात्रिइं वनमाहि रहिउ। सुदर्शन श्रेष्ठि रायन्हइ भेट करी चउमासा भणी तीणइ दिहाडइ परमेश्वरनी पूजा स्नात्र महोत्सव करी साझनइ समइ पोसह लेई नगरनइ चाचरि काउसग करी रहिउ छइ। ते वात जाणी अभया राणी सीसकनउ मिस करी कौमुदी-महोत्सवि न गई, घरि जि रही। इसिइ पडिता दासी देवतानी मूर्ति राणीन्हइं पूजाविवानइं मिसिइ वली २ लेई जाती आवतीइं पाहरीन्हइ इम भ्रांस ऊपजावी। तीणी रात्रि सुदर्शन
10 श्रेष्ठि काउसगि रहिउ आड ऊपाडी वस्त्रि आच्छादी पालषि घाती आणिउ। अभया राणीन्हइ आपिउ। तीणइ रात्रि सघलीइ अनेकपरि क्षोभविउ। रोम मात्रइ क्षुभिओ नहीं। पछी अभया राणी नखरे आपणउं हीउ विदारी आक्रंद करइ। पाहरी आविया। तेहे सुदर्शन श्रेष्ठि बांधिउ। रायनइं आपिउ। राजाइ बि त्रिणि वार पूछिउ। अभया राणीनी दया हीयामांहि आणी बोलइ जि नहीं। राजाइ तलारन्हइ आपी सूलीइ घताविउ। मनोरमाइं आपद जाणी शासन
15 देवता उद्यसी काउसग्ग कीधउ। एतलइ सुदर्शन श्रेष्ठिनइ सूली फीटी सुवर्णमइ सिंहासन थिउ।। प्रहार फीटी हारादिक आभरण थिया। ते वात जाणी राइ आवी श्रेष्ठि क्षमाविउ। आपणइ गजेंद्रि बइसारी प्रवेश महोत्सव कीधउ। अभया राणी गला पासउ घाती मुई। वनि व्यंतरी थई। पडिता नाठी पाडली पुरि देवदत्ता नगर नायिकानइ घरि जाई रही। सुदर्शन श्रेष्ठि वैराग्यइ दीक्षा लीधी एकल्ल प्रतिमा धरतउ आपणपइ पाडलीपुरि आविउ। भिक्षावृत्तिइं
20 फिरतउ अजाणतउ देवदत्ता गणिकानइ घरि पहुतउ। पडिताइ ओलषिउ। पछइ दीहाडउ सघलउ २ तीणइ देवदत्ताइं क्षोभविउ पणि क्षुभिउ नहीं। साजइ मूकिउ उद्यान वनि गिउ। तिहा काउसगि रहिउ। अभया व्यंतरीइ दीठउ। तीणइं रात्रि सघलीइ उपसर्ग कीधा। उपसर्ग करतांइ जि शुक्लध्यान लगइ केवलज्ञान ऊपनउ। धर्मदेशना कीधी। अभया व्यंतरी, देवदत्ता, पंडिता ए त्रिणइ बूझवी ते ऋषि मोक्षि पहुतउ॥

25

९. अभयकुमार कथा.

मगधदेसि, राजगृह नगरि, श्रेणिक राजा। तेहनउ बेटउ अनइ मंत्रीश्वर अभयकुमार। ते चतुर बुद्धिनिधान। बापनउ राज्य वृद्धिवतउ करइ। इसिइ श्रेणिकराजा कहइ—

वत्स ! तउं राज्य लइ। अभयकुमार पापभए बीहतउ राज्य न वांछइ ।इसिइ अवसरि एकवार स्वामी श्री महावीर राजगृहि नगरि समोसरिया। अभयकुमारि जई पूछया—भगवन् ! ईणइं कालि जे राज्य छांडि दीक्षा लेसिइ ते छेहिल्ड राजर्षि कुण हुसिइ ? । परमेश्वरि आइस दीधउं—आ छेहिल्ड राजर्षि उदयन राजा आगइ हूउ। तीणइं राज्य छांडी दीक्षा लीधी। हवइं कोई मोटउं राज्य छांडी दीक्षा नहीं लिइं । अभयकुमारि पारिणामिकी बुद्धिइं इसिउं चीतविउं—जइ बापनइं आग्रहइं हउं राज्य लेसु तउ मूल्हइं दीक्षा नहीं हुइ। तेह भणी माहरइ राज्यइं कांई काज नथी । तु बापिइं इसिउं वचन लीधउं—माहरा कहिया पाषइ तइ जावउं नहीं । इसिइ माह मासना दिहाडा छइं । सांझनइ समइ श्रीमहावीरना समवसरण थिकी चिल्लणा राणी नगर भणी आवइ छइ। एक महात्मा सरोवरनी पालिइं काउसगि रहिउ दीठउ । चिल्लणा राणीइं चींतविउं— ए महात्मा आखी रातिनी ताढि किम सहिसिइ। इसिउं चींतवती घरि आवी । रात्रिइं सिग्याइं पउढी नीद्रमाहि एक हाथ सउडि बाहिरि रहिउ । तिसिइ जागी, हाथ ताढउ लागउ । तिसिइ ते महात्मा सांभरिउ । घाइंसिउं गाढइ इम कहितां आविउं— ते किम थासिइ। इसिउं बोलती श्रीश्रेणिक राइं सांभली चींतववा लागउ —एहनइ हीयइ अनेरउ कुण हुं छइ। ए अंतःपुर सघलउं इ विरूउं । इम चींतवतां पाछिली रात्रिइं अभयकुमारि आवी जुहार कीधउ । तेह्हइं राजाइं रीसाविइं इसिउ आदेस दीधउ— वत्स ! ए अंतःपुर सघलउं इ बालि। इसिउं कही राजा समोसरणि जई आपणइं मुखिइं श्री महावीर कन्हलि पूछिवा लागउ। एतलइं अभयकुमारि चींतविउं—ए चिल्लणादिक राणी सघलीइ महासती छइं। राजा किशाइ भणी कुपिउ बलावानउ आदेश दिइ। कांइं ईहइं कीधउं जोईइ। इसिउं चींतवी अंतःपुर ढूकडी एक जूनी हस्तिशाला लगाडी । राणी सघली एक अवासमाहि घाती, ताला देई, अभयकुमार समोसरण भणी चालीउ । एतलइं श्रेणिक महाराइं श्री महावीर पूछया— भगवन् ! चिल्लणा राणी सती कइ असती ? श्रीमहावीरि आइस दीधउं—चेडा महारायनी सातइ बेटी महासती। ते वात सांभली श्रेणिक राजा पाछउ वलिउ । अभयकुमार साहमउ मिलिउ। राजाइं पूछिउं—अंतःपुर लगाडिउं ? अभयकुमारि कहिउं—हा स्वामी ! श्रेणिकि रीसाविइं कहिउं—तउं आगिमांहि कांई न वलिउ। स्वामी ! तुम्हारउ आदेस वाट जोतउ हुंतउ। राइं कहिउं—जा वलि। हउं स्वामी ! सीली आगिमाहि पइसी आपणउं काज साधिसु। इम बोली समोसरणि जई अभयकुमारि दीक्षा लीधी । तेतलइं श्रेणिकराजा आवी जा जोइ, जूनी-हस्तिशाला बली बइठी देषइ। अंतःपुर समाधिइं जि छइ। वली श्रेणिक महाराइं चींतविउं—राषे अभयकुमारि जई दीक्षा लीधी हुई। वली समोसरण भणी धाइउ। जेतलइं समोसरणि आवइ तेतलइं अभयकुमारि थोडीसी वेला चारित्र पाली सर्वार्थसिद्धि विमानि ऊपनउ । एकावतारी हुसिइ। अभयकुमार इह संतोषिइं करी इहँ लोकि सुखीउ हूउ, अनइ परलोकि इ सुखीउ हुसिइ॥

---

१०. चुलनीपिता श्रावकनी कथा.

वाणारसी नगरीइं जितशत्रु राजा । तिहां चुलनीपिता गृहस्थ । तेहनइ शामा कलत्र । तेहनइ घरि आठ कोडि द्रव्य निधान गत, आठ कोडि घरनइ मंडाणि, आठ कोडि व्यवसायि, एवं २४ कोडि द्रव्यनउ स्वामी । तेहनइ आठ गोकुल । एकेकइ गोकुलि दस २ सहस्र गाइ । तीणइ मानि बीजउ परिग्रह जाणिवउ । तीणइं अवसरि तीणइं नगरीइ कोष्ट वनमाहि श्रीमहावीर समोसरिया । परमेश्वर वांदिवा जितशत्रु राजा प्रमुख अनेक लोक समोसरणिपहुता । चुलणी पिता गृहस्थ ई वांदिवा गिउ । एक जि वार धर्मदेशना सांभली बूधउ । श्रावकनां सम्यक्त्वमूल बार व्रत पडिवजइ । परमेश्वर वांदी घरि आवइ । शामा कलत्रन्हइं समोसरणि मोकलइ । तेह इ परमेश्वर कन्हइ बारव्रतरूप श्रावकधर्म पडिवजी घरि आवइ । चुलनीपिताइ घरनउ भार वडा बेटामाहिं मूंकी पोसह लेई घर पाछलि पोषधशाला कासगि रहइ । बि वहुर रात्रिइं एक मिथ्यात्वी देवता रौद्र रूप करी खड्ग काढी आविउ । ते इसिउं कहइ-रे एउ व्रत परहउं मूकि, नहि तउ तूं आगलि इ जि ताहरउ वडउ बेटउ मारी तेहनउं मास तेलनी कडाइमहिं पची खाइसु । तेहनउं रुधिर पीयसु । इम एकवार-बीजीवार-त्रीजी-वार कहिउं । चुलनीपिता क्षुभइ नहीं । पछइ वडउ बेटउ चोटिं धरी आणी देषाडिउ, तिम जि कीधउं । तऊ चुलनीपिता थोडउं इ क्षुभिउ नहीं । वली तीणइं देविइं कहिउं-अजी ए व्रत छाडतउ नथी ताहरउ विचिलउ बेटउ इम जि करउ छउं । इम तीणइं त्रिण्णि वार कहिउं । तऊ क्षुभिउ नहीं । विचिलउ बेटउ तिम जि विणासिउ । त्रीजउ बेटउ तेऊ तिम जि विणासिउ । तऊ ते क्षुभिउ नहीं । पछइ तीणइ दुष्टि देवि इसिउ कहिउ-हव ताहरी माइन्हइं इम करउं छउं । इम कही भद्रा इसिइ नामिइ तेहनी माता धरी रोती आणी देषाडी । देविइ इसिउं कहिउं-आ ताहरी माता, तउं देषतां मारिसु । नहींतर ए व्रत परहउं छांडि । ते वात सांभली चुलनीपिताइ चींतविउं-ईणइ त्रिण्णि बेटा आगइ दुष्ट-मारि मारिया । एतलइ ए सतुष्ट न थिउ । जो ए पूज्य वडी माता तेहन्हइ अनर्थ करइ छइ । ते राषउं । इसिउ चींतवतउ चुलनी-पिताइ कलकलाट कीधउ । देव अदृश्य थिउ । कडाहि प्रमुख माया सघली संहरी गिउ । ते कलकल साभली आवास माहि सूती ऊठीनइ भद्रा माता तिहा आवी चुलनीपिता प्रतिइं कहइ-वच्छ ! तइं कलकलाट कांइ कीधउ । चुलनीपिता कहइ-कुणइ दुष्टि देवताइं त्रिणि बेटा विणासिया । तूहइन्हइं अनर्थ करिवा लागउ । ते देषी मइं कलकल कीधउ । भद्रा माताइ कहिउ-कुणहइं मिथ्यात्वी देवताइं तउं क्षोभाविवानइ कारणि ए इसी माया कीधी । तइं कल २ जे कीधउ ते पोसह विराधिउ, ते विरूउं कीधउं । मिच्छामि दुक्कड दिउ । बेटा आपणे

स्थानके समाधिइं छइं । मूर्न्हइं कुणहइं कांई विरूउं नथी कीधउं । ए तीणइं देवताइं तूं क्षोभविवानइं काजिइं बीकइ जि देषाडिउं । तेवार पूंठिइं चुल्नीपिताइं मिच्छामि दुक्कड देई आघउ परउ पोसह पाल्उि । पछइ तीणइं श्रावकनी इग्यारइ प्रतिमा आराधी । पछइ संलेखना करी अणसण लेई मरीनइ सौधर्म देवलोकि अरुणप्रभ विमानि विहु पल्योपमनइं आउषइ देव हूउ । तिहां थिकउ च्यवी महाविदेह क्षेत्रि मनुष्य हुई चारित्र पाली मोक्षि जासिइ । एकावतारी हुसिइ । संसारमांहि साहसिकन्हइं आपणा सयरनउं कष्ट अनइ लक्ष्मीनी हाणि स्त्री गृहस्थनइं अनइ छोरुनउ मोह गाढउं । तेहनउ दुःख सहितां दोहिलउं । चुल्नीपिताइं आपणा त्रिणि बेटा विणासीता देषीनइ पोसह विराधिउ नही, ए वात गाढी दोहिली ॥

---

९. शालिभद्र कथा.

मगधदेशि, राजगृह ढूंकडउं शालिग्राम । तिहां धन्या डोकरि । तेहनइ संगमउ बालक वाछरू चारइ । एकवार किसिइ उत्सवि लोकना बालक खीर जिमता देषी माता आगलि खीरनउ आडउ मांडिउ । अणहुंति भणी माता रोवा लागी । दया लगइ पाडोसणिइं दूध सालि घी खांड परमान्ननी सामग्री मेली आपी । माताइं परमान्न रांधी संगमानइं परीसिउ । दृष्टि लागवानइं भइ माता परही थई रही । तिसिइ अवसरि एकमासोपवासी महात्मा आविउ । तेहन्हइं संगमइं हर्षिइं दान दीधउं । तेह पुण्यनइं प्रमाणिइं संगमउ मरी राजगृहि नगरि गोभद्र व्यवहारिउ सुभद्रा कलत्र तेहनइ बेटउ ऊपनउ । सालि क्षेत्रनइं सुणइं सूचित तेह भणी सालिभद्र नाम दीधउ । यौवन वय प्राप्त हूउ । व्यवहारिआनी बत्रीस कन्या परिणाविउ । गोभद्रश्रेष्टि दीक्षा लेई अणसण पाली देवलोकि गिउ । मोह लगइ ३२ वधूसहित सालिभद्रन्हइं नवनवा भोग पूरइ । नित्य नवनवा आभरण वस्त्र माल्यादिक दिव्य भोग दिइ छइ । तिसिइ नेपाल देसना वणिजारा रत्नकंबल लेई आव्या । बहुमूल्य भणी श्री श्रेणिक महारायइं एकू न लीधउं । सुभद्राइं सवे लीधा । राजाइं एक रत्नकंबल लेवा भणी अभयकुमार मंत्रि मोकलिउ । सुभद्रानइं घरि पहुतउ । एक रत्नकंबल आपउ । सुभद्राइं कहिउं– ते फाडी पगलूहणां कीधां । जूना रत्नकंबल घणाइ छइं । मूल पापइ लिउ । ते वात सांभली श्रेणिक महाराय चमत्कारिउ । सुभद्रानइं वचनिइं सालिभद्र देषिवा भणी अवासि आविउ । चउथी भुइं सिंहासणि वइठउ छइ । सुभद्रा सातमी भुइं शालिभद्र तेडिवा गई ।

कहिवा लागी-वत्स ! श्रेणिक महाराज आविउ छइ । तउं हेठलि आवि । शालिभद्र इम
कहइ-एक एहइ क्रियाणउं तम्हे जाणउ तिम ल्यिउ । हउ काई न जाणउं । सुभद्रा कहिउ-
श्रेणिक महाराय, ए क्रियाणउ नहीं । वत्स ! ए राजा, आपणउ स्वामी । जेहनी छत्र छायां
आपणि वसीइ । तीणई वचनिइ शालिभद्रनइ मनि वैराग्य ऊपनउं । माहरां पुण्य ओछां ।
5 हउ सेवक कहिवराउ, ए स्वामी कहीइ । इसीउ चींतवतउ ऊतरी रायनइ प्रणाम करइ ।
राजाइं षोलइ बइसारिउ । रायनइ घार्मि ते कुरुमाइ सुभद्रानइ वचनिइ मूंकिउ । वली वधू
सहित सातमी भूमिका जाइ । राजा सुभद्राइं भोजन करिवा राषिउ । स्नानि हुंतइ रायनी
मुद्रडी वाविमाहि पडी । सुभद्राइ वाविनउ पाणी बाहिरलइ पालि कढाविउं । राजा
जलहलता आभरण देषइ । तेह माहि ढीहाला सरीषी आपणी मुद्रडी देषइ । राजाइ पूछिउ-
10 ए किसिउं । दासीए कहिउं- ए अम्हारा स्वामीनउ नीमाल । तीणइं श्रेणिक महाराय वली
गाढउ चमत्करिउ । राजा भोजन करी आपणइ आवासि पहुतउ । एतलइ शालिभद्र
दीहाडा दीहाडानी इकेकी कलत्र अनइ शिय्या मूंकिवा लागउ । शालिभद्रनी बहिन धना
व्यवहारीयानइ घरि परिणी छइ । तिसिइ ते धनानइ स्नान करावतां अश्रुपात करती
दीठी । पूछिउ-इम कांइ ? माहरउ भाई शालिभद्र दीक्षा लेसिइ । किम जाणीइ ? दीहाडइ
15 इकेकी परिहरइ । धनइं हसतइं कहिउं-छांडवइ वात आवी तउ एकइ वारइं काइं न
छांडइ । एहवउं राक कांइ जे इकेकी छांडइ । तेतलइं धनानी बीजी कलत्रइं कहिउं-स्वामी
छाडती सोहिलउं हुइ तउ तम्हे कांइं न छाडउ । धनइं कहिउं तुम्हारउं जि वचन जोतउ
हुतउं । जउ तुम्हे इम कहिउ तउ मइ निश्चइ दीक्षा लेवी । धनउ इम कही दीक्षा लेवा
चालिउ । आठइ कलत्र धना साथिइं दीक्षा लेवा चाली । श्रीशालिभद्रिइ ते श्रीश्रेणिकरायना
20 महोत्सवपूर्वक श्रीमहावीर कन्हलि दीक्षा लीधी । बेई महात्मा छट्ठ अट्ठम दसम पाषषमण मास-
पमण चउमासी उपवास लगइ तप करता सयरि महाकाला दुवर्ण दुर्बल हूआ । एकवार श्रीमहावीर
साथिइ मासक्षपणनइ पारणइ राजगृह नगरि पहुता । विहरवा जाता स्वामीइ आयस दीधउं-
हे शालिभद्र ! आज तुम्हारी मातानइं हाथिइ पारणउ हुसिइ । ते वात सांभलीनइ ते बेई
महात्मा सुभद्रानइ घरि पहुता । तिहा कुणहइ ओलष्या नहीं । ते महात्मा पाछा वल्या । नग-
25 रनी पोलिइ तिसिइ शालिभद्रनी पाछिला भवनी माता महीयारीइ धन्याइं दीठा । तेहनइं हर्ष
लगइ थान आविउं । तीणइ दहीनउं दान दीधउ । बोधिबीज ऊपार्जिउ । ते बेऊ श्रीमहावीर
कन्हलि आवी पूछइं-भगवन् ! माइनइं हाथिइ पारणउ किम ? परमेश्वरि आयसि दीधउं-वत्स
शालिभद्र ! ए ताहरा पाछिला भवनी माता जाणि । ते वात साभलीनइ बिहु ऋषिन्हइ वैराग्य
ऊपनउ । पारणउ करी स्वामी पूछी वैराग्य लगइ वैभारगिरि पर्वत चडी सिला ऊपरि पादपोपगमन

अणसण लीधां तेहे बिहु ऋषे। तेतलइं श्रीश्रेणिक राजा अनइ सुभद्रा बत्रीस वधूसहित समो-
सरणि वांदिवा आव्या। वांदी स्वामी कन्हलि पूछिउं-धनउ शालिभद्र महात्मा किहां ? परमेश्वरि
सघलउ वृत्तांत कहिउ। सुभद्रानइ श्रेणिक महाराय वैभारगिरि चाडिया। तेहे शालिभद्रनउं कष्ट
देषी सुभद्रा वधू सहित इम किमइ रोवा लागी जिम पक्षियाइ रोयाविया। पछइ श्रेणिकि महारायि
परीछवी रोती वारी। तेहे बेई ऋषि वांदी थानकि पहुंती। राजाइ पाछउ घरे आविउ। ते 5
बेई ऋषि अणसण पाली सर्वार्थसिद्धि विमानि पहुता, एकावतारी हूआ। ए पात्रदाननउं फल ॥

१०. कामदेव श्रावक कथा.

चंपा नगरी, तिहां कामदेव गृहस्थ। भद्रा कलत्र। तेहनइ छ कोडि सुवर्ण निधान गत,
छ कोडि व्यवसायि, छ कोडि घरनइं मंडाणिः एवं १८ कोडि सुवर्णनउ धणी। तेहनइ दस
गोकुल दस २ सहस्र गाइनां। तिसिइ श्रीमहावीर समोसरिया। धर्मदेशना सांभली कामदेव 10
श्रावकिं सम्यक्त्व मूल बार व्रत पडिवज्यां। जेतलउ घरि आगइ परिग्रह छइ तेतला अधिक
परिग्रह करिवा नियम लीधउ। पांचसइं हल ऊपहरां क्षेत्रनउ नियम। पांचसइं देशांतरि
मोकलिवा योग्य शकट। पांचसइं घरि काजकाम करिवा योग्य शकट। परद्वीपि व्यवसाय
मोकलिवा च्यारि वाहण। घरना विसाहणा आणिवा योग्य च्यारि वाहण मोकला। सुगंधगंध
काषायिकादि वस्त्र टाली बीजा अंगलूहणा नीम। नीली जेठी मधु टाली दातणनउ नीम। क्षीरा- 15
मलक टाली बीजा फलनउ नियम। सहस्रपाक शतपाक टाली बीजा तेलनउ अभ्यंग कराविवा
नीम। सुगंध गंध चूर्ण टाली बीजा ऊगटणानउ नीम। आठ ऊंबिया कलश टाली अधिका स्ना-
ननउ नियम। श्वेत पट्टकूल युग्मटाली बीजा वस्त्रनउ नियम। चंदन अगरु कुंकुम कर्पूर
टाली बीजा विलेपननउ नियम। जाइना फूल अनइ अष्टदलादिक कमल टाली बीजा पुष्पनउ
नियम। काननां आभरण नामांकित मुद्रिका टाली बीजा आभरणनउ नियम। सिलारस अग- 20
रुना धूप टाली बीजा धूप नियम। घेबर टाली बीजा पक्वान्न नियम। द्राक्षादिक खाद्य टाली बीजी
सूखडी नीम। नीपनी काष्ट पेया टाली बीजी पेया नीम। सुगंध कलम शालि टाली बीजउ ओदन
नीम। उडद मुग मसूर टाली बीजा विदल नीम। शरत्कालना घी टाली बीजा घी नीम। स्व-
स्तिक मंडूकी पालंक शाक टाली बीजा फलशाक नियम। वट पूरणादिक टाली बीजा धान्यशाक
नीम। आकाश पाणी टाली बीजा पाणी नियम। चतुर्जातक टाली बीजा तंबोल नीम। ए इत्या 25

श्रीमहावीर कन्हलि नीम लेई आपणइ घरि गिउ । भद्रा कलत्र परमेश्वर कन्हलि मोकली । तीणइ श्रावकनउ धर्म पडिवाजिउ । धर्म पडिवज्या पूठिइ पनरमइ वरसि कुटुंबनउ भार वडा पुत्रन्हइं आरोपी आपणपइ पोसह लेई रहिउ छइ । इसिइ अवसरि मिथ्यात्वी एक देवता बिवहर रात्रिनइ समइ राक्षस सर्प्प हाथीआ सिंघना रूप करी ते क्षोभविउ पुण एकऊ रोममात्रइ क्षुभिउ नहीं । पछइ देव आपणउ रूप प्रकट करी प्रशंसा करिवा लागउ-भो ! कामदेव, धन्य तउं, जिसिउ इन्द्र महाराइ वखाणिउ तिसिउ जि धीर छं । माहरउ अपराध खमि । इम कही देवलोकि गिउ । कामदेव श्रावकिइ आपणी प्रतिन्या पूंठिइ काउसग्ग पारिउ । बीजइ दीहाडइ पोसह पारी कामदेव श्रावक श्रीमहावीर वांदिवा समोसरणि पहुतउ । परमेश्वरि वार पर्षद देषतां वषाणिउ । श्रीगौतमादिक प्रतिइ कहिउ-जउ गृहस्थ हुता एवडा उपसर्ग सहइ तउ महात्माए निस्संग हुते विशेषि सहिवा । पछइ कामदेव श्रावकिं श्रावकनी इग्यार प्रतिमा आराधतां दुर्बल देह हुंतउ सलेखना करतउ अणसण लेई समाधि मृत्य हुंतुं सौधर्मइ देवलोकि अरुणप्रभि विमानि चिहुं पल्योपमनइ आउषइ देव ऊपनउ । तिहां थकउ च्यवी महाविदेहि क्षेत्रि ऊपजी मोक्षि जासिइ ॥

११. आनन्द श्रावक कथा.

वाणिजक नाम ग्रामि, जितशत्रु राजा, आणंद इसिइं नामिइं गृहस्थ । तेहनइ शवनंदा कलत्र । तेहनइ च्यारि कोडि द्रव्य निधानगत, च्यारि कोडि द्रव्य व्यवसायगत, च्यारि कोडि इम घरनइ मंडाणिः-एव १२ कोडि सुवर्णनउ स्वामी । दस २ सहस्र गाइना गोकुल च्यारि । ते गामथिकउ ईशान कूणना गमा कोल्लाक ग्रामि आणंदना सगासणीजा घणा कुणबी वसइ । इसिइ अवसरि एकवार श्रीमहावीर तिहां समोसर्या । दुतिपलासि वनि जितसित्रु राजा आनन्द गृहस्थ वांदिवा पहुता । धर्मदेशना साभली आणदि श्रावकि श्रीमहावीर कन्हलि वार व्रत पडिवज्या । वार कोडि सुवर्ण, च्यारि गोकुल ऊपहिरउ नीम । बीजा नियम सघलाइ परिग्रह संवधीया कामदेव सुश्रावकनी परिं जाणिवा । पछइं शवनदा कलत्रइ वार व्रत पडिवज्यां । आनंद श्रावक धर्म पडिवजी घरि आविउ । चऊद वरस तिसिउ श्रावक धर्म पालिउ । धर्म जागरिका करता प्रतिमा आराधिवानउ मनोरथ ऊपनउ । कोल्लागग्रामि पौषधशाला करावी । वडा बेटान्हइ कुटुवनउ भार आरोपी सर्व स्वजन मोकलावी

पौषधशालां जाइ महातप करतउ श्रावकनी इग्यार प्रतिमा आराधइ । ते तप करतां अपार दुर्बल देह हूउ । धर्मजागरिका करतां अणसणनउ मनोरथ ऊपनउ । पछइ संलेखना करी पोषधशालां जई चउविहार अणसण लिइ । अणसण लीधइं अवधि ज्ञान ऊपनउं । इसिइ अवसरि स्वामी श्रीमहावीर वली दूतिपलासि वनि समोसरिया । श्रीगौतमस्वामि छट्ठनइ पारणइ भिक्षावृत्तिइं ग्राममाहि पहुता । भिक्षावृत्ति करी पाछा वलतां कोल्लाग गामि घणा लोक जाता देषी पूछिउं—लोक किहां जाइं छइं ? । लोके कहिउं—आणंद श्रावकनइं अणसण छइ तिहां वांदिवा जाइं छइं । ते वात जाणी श्रीगौतमस्वामि आनंद श्रावक वंदाविवा तिहा पहुता । श्रीगौतम-स्वामि आव्या देषी आणंद अपार हर्षिउ । इसिउं कहइ—भगवन् ! हउं ऊठी सकतउ नथी, तुम्हे ढुकडा पाउधारउ, जिम तुम्हारा पग माथइं करी स्परसउं । गौतमस्वामि ढूकडां जई बइठा । आनंद श्रावकिं त्रिधा शुद्धिइं माथउं पगि लगाडी वांदिया। आनंदिइं पूछिउं—भगवन् ! गृहस्थनइं अवधिज्ञान ऊपजइ ? । श्रीगौतमस्वामिं आइस दीधउं—हा ऊपजइ । वली आनंदि श्रावकि कहिउं—तम्हारा प्रसाद लगइ मूंन्हइं अवधिज्ञान ऊपनउं छइ । पूर्व दक्षिण पश्चिम दिसिइं लवण समुद्रमांहि पांचसइं जोअण देषउं छउं । उत्तर दिशिइ हिमवंत पर्वत लगइ । उंचउं सौधर्म देवलोक लगइ । हेठउं पहिली नरक पृथ्वी लोलुआ नरगावासा लगइ देषउं । एतलइं श्रीगौतमस्वामिइं घाइंसिउं इम कहिउं—गृहस्थनइं एवडउं अवधिज्ञान न ऊपजइं । हिवइं तेहभणी तुं मिच्छामि दुक्कड दइ । आणंद कहइ—साचीइ वस्तु कहियानउं मिच्छामि दुक्कड हुइ ? श्रीगौतमस्वामि कहिउं—न हुइ । पछइ आणंदिं कहिउं—तउ भगवन् ! तुम्हे मिच्छामि दुक्कड दिउ । तीणइं वातइं श्रीगौतमस्वामी शंकाणा । श्रीमहावीर कन्हलि पूछिवा गया । भात पाणी आलोई पूछिउं—भगवन् ! आणंद मिच्छामि दुक्कड दिइ कइ हुं दिउं ? परमेश्वरि कहिउं—वत्स गौतम ! तम्हे इ जि मिच्छामि दुक्कड दिउ । आणंदन्हइं एवडउं अवधिज्ञान साचउं इ जि ऊपनउं छइ । तिवार पूंठिइं श्रीगौतमस्वामि आणंद कन्हलि जाई मिच्छामि दुक्कड दीधउं ॥

योगशास्त्रान्तर्गत

गृहस्थ-धर्मना गुणोनुं वर्णन

[मूल-श्लोक-कर्ता हेमचन्द्रसूरि; गुजराती-विवेचन-कर्ता सोमसुन्दर सूरि]



गृहस्थ धर्म ये योग्य हुइ ते वात कहइ छइ । जेह भणी योग्य स्थानकिं धर्म
5 स्थापिउ शोभा पामइ, वृद्धि हेतु हुइ । जिम ऊजलउ दूध, दक्षणावर्त्त ऊजलउ शंख तीणइं
घालिउ अतिहिं शोभा पामइ, श्लाघ्य थाइ । तेह जि दूध रूडउ इ मद्यनइ भुंभलइ घालिउं
लोकमाहि निंद्य थाइ, तिम धर्म इ अयोग्यनइं दीधउ श्लाघ्य न हुइ । तेह भणी धर्म
स्थापिवा योग्य ये पुरुष तेहनउ स्वरूप कहइ छइ ॥ दसे श्लोके करी—

न्यायसम्पन्नविभवः शिष्टाचारप्रशंसकः ।
10 **कुलशीलसमैः सार्द्धं कृतोद्वाहोऽन्यगोत्रजैः ॥ १ ॥**

१. न्याय०–सदाचार आपणा कुलन्हइं योग्य सुवस्तनउ व्यवसाय तीणइं करी
जेहनइ विभव लक्ष्मी हुइ ते धर्मनइं योग्य हुइ । जीणइ स्वामिद्रोह मित्रद्रोह विश्वासघातकी
चोरी अन्यायि कुव्यवसायि करी जे लक्ष्मी ऊपार्जी हुइ, तेह लगई लोकमाहि वध वधादिक
अनर्थ पामइ । सशंकातउ हींडइ । परलोकि इ नरकादिक दु ख पामइ । अन्यायनी ऊपार्जी
15 लक्ष्मी आगलि परिणामिइ सोजाना मातपणानी परिं रूडी न हुइ । न्यायोपार्जित लक्ष्मी-
नउ धणी नि स्यकपणइं हींडइ । दिइ, लिइ, वेचइ, वावरइ, पहिरइ, ओढइ । न्याय लगइ ते
लक्ष्मी वृद्धिवंती थाइ । गृहस्थनइ जइ लक्ष्मी चोषी, तउ आहार वस्त्र सन्तानादिक सहू
चोषउ । धर्म इ तेहनउ चोषउ थाइ ॥

२. शिष्टाचार०–शिष्ट उत्तम तेहनउ जे आचार–लोकापवादथिकउं बीहवउ,
20 दीन दुस्थनी दया, पिराया उपकार, थोडाइनउ अणवीसारिवउं, दाक्षिण्यपणउं, आपद
आवी धीरपणउ, प्राणातिइ धर्मनउ अणलोपिवउ, कुमार्गनउ अणाचरिवउ, दु खि आविइ
दीणपणानउं अणकरिवउ –इत्यादिक जे छइ सदाचार, तेहनउ प्रशसक–अनुमोदक, तेह
ऊपरि इच्छावत ॥

३ तथा कुलशील०–जे कुल–वाप पितामहादिकनउ वश कहीइ । अनइ
25 शील–मद्यमास रात्रिभोजनादिकनउ निषेधरूप ए आचार । एहे बिहु वाने करी जे समान

सरीषा हुइं। कुलिइं करी, आचारिइं करी जे सरीषा छइं । अन्यगोत्रजैः—अनेरइ गोत्रि जे छइं तेह्वासिउं। कृतोद्वाहो—एह्वासिउं जेहनइ लोकसमक्ष विवाह कीधउ छइ । तेहउ धर्म योग्य कहीइ। जीणइं धर्म-कुलनी आन्याइं जे स्त्री आणी हुइं ते धर्म न छाडइं। कुलि आचारिइं असरीपासिउं जेहनइ विवाह कीधउ हुइ ते धर्मयोग्य नहीं॥

पापभीरुः प्रसिद्धं च देशाचारं समाचरन्। 5
अवर्णवादी न क्वापि राजादिषु विशेषतः ॥२॥

४. पाप०—इह लोकि अनर्थहेतु चोरी परस्त्री-लंपटपणउं जू-रमिवादिक; परलोकि अनर्थहेतु मद्यपान मांसभक्षण कुव्यवसायादिक, तेहथिकउ जं भीरु बीहइ, ते धर्म योग्य। जे पुण धीरठपणइं इसिउं कहइ—स्यां पाप, कुणइं दीठां । जिम एवडा लोक थासिइं तिम अम्हेऊ थाउं लगा। सातमी नरक पृथ्वी ऊपहरी आठमी तु कांई छइ नहीं। सातमी तु 10 अम्हे आंगमी छइ। इस्या जे वोलइं, अनइ समाचरइं; ते धर्मयोग्य न हुइं ॥

५. प्रसिद्धं च देशाचारं०—जे उत्तम मनुष्यमांहि प्रसिद्ध देशनउ आचार भोजनाच्छादनादिक लोकव्यवहार जे न समाचरइं ते धर्मयोग्य नही; जे समाचरइ ते धर्मयोग्य। देशाचार उल्लंघतां देशना लोकसिउं विरोध हुइ। ते एकलउ पडइ॥

६. अवर्णवादी०—क्वापि कहिनउ इ जघन्य उत्तम मध्यम लोकनउ, एकइनउ अवर्ण- 15 वाद दोषनउं बोलिवउं न करइं । पिराया दोष बोलतां ते वइरी थाइ। अनइ नीचैर्गोत्र कर्म ऊपार्जइ। यत उक्तं—

"परपरिभव—परिवादादात्मोत्कर्षाच्च वध्यते कर्म।
नीचैर्गोत्रं प्रतिभवमनेकभवकोटिदुर्मोचम् ॥"

राजादि०—राजा मंत्रीश्वर पुरोहित शेठी प्रमुख मोटानउ अवर्णवाद विशेषिं न बोलिइं। 20 ते बोलतां इहलोकि इ लक्ष्मीनी हानि, जीवितव्य विनाशादिक दोष ऊपजइं। तेहभणी कहिनउ दोप न बोलइं ते धर्मयोग्य ॥ तथा—

अनतिव्यक्तगुप्ते च स्थाने सुप्रातिवेश्मिके।
अनेकनिर्गमद्वारविवर्जितनिकेतनः ॥ ३ ॥

७. अनति०—जेहनउं घर गाममाहि अतिव्यक्त अतिप्रकट स्थानकि वर छतइ चोर 25 धाडिकादिकन्हइं धुरि जि पराभवनीय ते थाइ । तथा, अतिहि गुप्तइ प्रच्छन्न स्थानकि जेहनउं घर न हुइं अति प्रकट न हुइं ते धर्मयोग्य। अतिगुप्तइ स्थानकि घर

छतउं इ परहुणउ पही साधु दीन दुस्थितादिक को छतउं इ न जाणइ, तिम तेहनइं लाभ कांई नहीं । पाषती चउपषेर घरे छते आगि पलेवणादिक उपद्रव ऊपनइ नीसरता पइसतां दोहिलउं थाइ ॥

८. सुप्रातिवे०–जिहा रूडा सुसील सदाचार पाडोसी हुइं तिहा जेहनउ घर हुइ ते धर्मयोग्य । जेहनइपाडोसि वेस्या नट विट माळी वागुरी पुलिंद मातंग घणा मिथ्यात्वी–एहुउ कुपाडोस हुइ तेहन्हइं तेहना वचन सांभलता, तेहनी चेष्टा देषतां, तेहसिउ व्यवहार करता, तेहना संसर्ग लगइ गुणवंतन्हइ गुणनी हाणि हुइ । लहुडा बालक तेह वचन चेष्टादिके करी कुमार्ग सीषइ । तेहभणी सुपाडोसि जेहनउं घरु हुइ ते धर्मयोग्य ॥

९. अनइ, अनेक घणा नीकलवाना पइसिवाना द्वार बारणा छइ एहुउ निकेतन–घर जेहनउं न हुइं । जीणइं घरि घणा बारणा हुइं तिहा अनेक दुष्ट लोकने प्रच्छन्न पइसिवे नीकलिवे करी घरनां माणस स्त्रयादिक तणउ विणास हुइ । अनइ द्रव्यादिकनी हाणि हुइ । एह भणी थोडा बार, अनइ सुस्थानकि, सुपाडोसि, अति प्रकट नही, अति गुप्त नही, इसिउं जेहनउं घर हुइ ते धर्मयोग्य ॥

कृतसङ्गः सदाचारैर्मातापित्रोश्च पूजक ।
त्यजन्नुपप्लुतं स्थानमप्रवृत्तिश्च गर्हिते ॥ ४ ॥

१०. कृतस०–सदाचार रूडा आचारना धणी मनुष्य उत्तम तेहसिउ संगति प्रीति मैत्री छइ जेहनइ, ते धर्मयोग्य । जेहनइ जूआरी धूर्त्त नट विट भांड भट्टादिकसिउं प्रीति हुइ तेहना छताइ गुण जाइ । जेह भणी कुससर्ग लागइ, पुण सुससर्ग लागतां दोहिलउ । पाणीनइं जिम नीचउं जाइवउं सोहिलउं, पुण उचउं जावउं दोहिलउं । यत उक्त श्रीआवश्यके–

" अंबस्स य निंबस्स य दुण्हपि समागयाइ मूलाइ ।
ससग्गीइ विणट्ठो अंबो निंबत्तणं पत्तो ॥ "

एह भणी जे उत्तमासिउ संगति करइ ते धर्मयोग्य ॥

११ तथा, मातापि०–जे माइबापन्हइ भक्ति करइं, त्रिकाल प्रणाम नीपजावइं, माता पिता पाहिं धर्म करावइ, माता पितानइं आदेसिइ चालइ, रूडा आहार वस्त्रादिक माइ-बापन्हइ पहिलउं दिइ–इम जे माइबापन्हइ भक्तउ हुइ ते धर्मनइ योग्य । जेहे माए बापे जायउ लालिउ वधारिउ तेहन्हइ जे अकृतज्ञ, जे भक्तउ न हुइ ते धर्मयोग्य नहीं । जे माइबाप धर्म करावइ ते पुत्र ऊरण थाइ । ईसइ ऊरण न थाइ, इसिउं सिद्धान्तमाहि कहिउं छइ ॥

१२. त्यजन्नु०-जीर्णं गामि नगरादिकि उपप्लव उपद्रव देषइ,स्वचक्र परचक्रनइं भइं करी, दुर्भिक्षिइं करी, मरगीं करी, परस्परिं लोकमाहि कुमेलिइं करी, अस्वस्थ देषइ ते स्थानक छांडइ त्यजइ; ते धर्मनइं योग्य। तेह्वउं स्थानक जइ न छांडइ तउ आगिला ऊपार्ज्या धर्म अर्थ सुखनउ विनाश हुइ । नवां कांई ऊपार्जाइं नहीं । तीणइं करी इहलोक परलोक बेई भव विणसइं ॥ 5

१३. अप्रवृत्ति०—जे गर्हित निन्द्य देशआश्री कहइ—जिम सौवीरदेसि कृषिकर्म करसण करइ ते निन्द्य । लाडदेसि आसवा। जातिआश्री निन्द्य—ब्राह्मणनइ मद्यपान, तिल लूणादिकना क्रयविक्रय । कुलआश्री निन्द्य—सोलंकीनइ मद्यपान निन्द्य । तिम अनेरे कुलि जे कर्म न कीजइं ते जु करइं ते निन्द्य हुइं। तिहां जे न प्रवर्त्तइं—कुलनइं अयोग्य, देसनइं अयोग्य जे न करइं; ते धर्मयोग्य ॥ तथा— 10

व्ययमायोचितं कुर्वन् वेषं वित्तानुसारतः ।
अष्टभिर्धीगुणैर्युक्तः शृण्वानो धर्ममन्वहम् ॥ ५ ॥

१४. व्ययमायो०—जे गृहस्थ व्यय वरउ इहलोक अनइ धर्म आश्री आपणा आयोचित—आयपदनइं मानिइं व्यय करइं; ते धर्मयोग्य । जउ तेहनइ जउ व्यवसायनउ लाभ घणउ हुइ कांई धर्म वरउ न करइ, तउ केवलउं पापविभागीउ जि थाइ; अनइ 15 लोकमांहि निन्द्य पणउं प्रामइ । अनइ उपार्ज्जन थोडी हुइ अनइ वरउ घणउ करइ तउ थोडे दीहाडे दारिद्रय आवइ । सुख धर्म सहू चूकइ। तेह भणी मूलि इसिउं कहिउं—

“ आयादर्द्धं नियुंजीत धर्मे समधिकं ततः ।
शेषेण शेषं कुर्वीत यतस्तुच्छसमेहिकम् ॥ ”

जेतउ व्यवसाय करतां लाभ हुइ तेहनउ अर्द्ध झाझउं धर्म वरइ वेचइ । थाकतइं 20 संसारनउं काज करइ । जेह भणी संसारनउं काज तुच्छ थोडां दीहाडानउं छइ। केती वारइं इम करी न सकइं तउ ईम करिवउं। यतः—

“ पादमायान्निधिं कुर्यात् पादं वित्ताय खट्टयेत्।
धर्मोपभोगयोः पादं पादं भर्त्तव्यपोषणे ॥ ”

व्यवसाय करता जेतलउ लाभ हुइ तेहनउ चउथउ भाग पोतइ रापइ । एक भाग 25 नवा व्यवसायनइं कारणि घातइ । एक भाग धर्म वरइ करइ, अनइ सइरनइ काजि। एक भाग कुटुंबनइ भराणि पोषणि जाणिवउं। जघन्यतउ इम करइ ॥

१५. वेष वि०—वस्त्र आभरणादिक वेष जे आपणा वित्तनइ अनुसारिइ । वय अवस्था देश काल जातिनइ अनुमानिइ तेन्हइं योग्य वेष करइ, ते धर्मयोग्य । घरि लक्ष्मी न हुइ, अनइ वेष साडंबर करइ तउ लोकमाहि हसनीय थाइ । ते ईतर कहिवराइ । तेहनउं महत्त्व जाइ । अनइ घरि लक्ष्मी घणी इ नइ, कुचेल सामान्य वेषि हींडइ तउ लोकमाहि कृपण 5 कहिवराइ, निंद्य थाइ ॥

१६. अष्टभि०—आठ जे बुद्धिना गुण तेहे करी जे युक्त सहित हुइ, ते धर्मनइ योग्य । १ एक गुण, शुश्रूषा—शास्त्र साभलिवा लिषिवानी हीयइ अत्यन्त वांछा । २.श्रवण—एकाग्र थई शास्त्र सांभलइ । ३ ग्रहण—शास्त्रनउ अर्थ हीयइ राषइ । ४. धारण—शास्त्रनउ अर्थ पछइ वीसारइ नहीं । ५ ऊह—वली तेह ऊर्थनउ हीयइ विचार करइ । ६.अपोह—विरुद्ध 10 पापमय वस्तु हिंसादिक अर्थनउ निषेध करइ । ७. अर्थविज्ञान—साचउ माप्रयाईया निस्संदेह अर्थनउ जाणिवउं करइ । ८ एतला वाना करी, तत्त्व—परमार्थनउं ज्ञान ऊह युक्तिइ करी ते विचारी ते वातनउ निश्चउ करइ—आ वात आम जि । इस्ये आठे गुणे करी सहित ते पुरुष कहीइ । यत उक्तं—

शुश्रूषा १ श्रवणं चैव २, ग्रहणं ३ धारणं तथा ४ ।
15 ऊहो ५ ऽपोहो ६ ऽर्थविज्ञान ७ तत्त्वज्ञानं ८ च धीगुणा· ॥ "

केती वारइ ए आठइ गुण न लाभइ तऊ, शृण्वानो ध०—जेहनइ धर्म साभलिवा सहज छइ, ते धर्मयोग्य । जेह भणी सदैव धर्म सांभलतउ गुणि चडइ, ते धर्म लहइ । एह भणी धर्म साभलिवानउ रस जोईइ ॥

अजीर्णे भोजनत्यागी काले भोक्ता च सात्म्यतः ।
20 **अन्योन्याप्रतिबन्धेन त्रिवर्गमपि साधयन् ॥ ६ ॥**

१७. अजीर्णे०—पाछिलइ जिमइ आहारि अणजारिइ परिपाकि आव्या पाषइ नवउ आहार न जिमइ, ते कहीइ मादउ थाइ नहीं । प्राहिइ जेह भणी इम कहिउं छइ—"अजीर्ण-प्रभवा रोगा. "—रोग सघला इ अजीर्णतउ ऊपजइ । नीरोग पणउं ते धर्मनउ आग । एह भणी ए वात कही ॥

25 १८. काले भो०—कालि भूषनी वेले जिमइ, अनइ सात्म्यइं जिमइ । जेन्हइं आहारपाणी जे सहिता हुइं, तेह जि जिमइ । लोभि वाहिउ बीजा न जीमइ । तेहू भूषनइं मानिं थोडउं जि जिमइ । घणु जिमिउं अमृत ऊ विस थाइ । जेहनी जे वेला भूषनी तेहनइ ते सात्म्य कहीइ ॥

१९. अन्योन्य० त्रिवर्ग०—त्रिणि पुरुषार्थ धर्म अर्थ काम अन्योऽन्यइं, परस्परिइं, अप्रतिबंधिइं, जिम एक्ू सीदाइ नहीं तिम जे त्रिणिइ साधइं; ते धर्मयोग्य ॥

(१) जे धर्म अनइ अर्थ मूंकीनइ एकला काम सुखनी सेवा जि करइ ते आगालि धन धर्म सरीर सहूइ चूकइ।

(२) अनइ धर्म काम मूकी एक अर्थ लक्ष्मी जि ऊपार्जिवा लागइ ते लक्ष्मी अनेरा भोगवइं। आपणपइं रुली २ नइ पापजिनउ विभागीउ थाइ ।

(३) अर्थनइ काम मूंकी एकला धर्म जे ऊपीर लागउ, यति जननउ धर्म गृहस्थनइ इम निर्वहइ नही। पछइ चिंताइं पडइ।

(४) धर्म मूंकी अर्थ काम जि ऊपरि लागइ। तउ परलोकि दुःखिउ थाइ। बीजभोजी कुणबीनी परिं पुण्यनउं पोतउं त्रोडइ। पछइ अति दुःखीउ थाइ।

(५) लक्ष्मीनी ऊपार्जन मूंकी धर्म अनइ काम जि ऊपरि लागइ तउ दाणी घणाजि वाधइ। लक्ष्मी पूटी पूंठिइं ते दुःखीउ थाइ।

(६) काम मूंकी अनइ अर्थनी सेवा करइ तउ गृहस्थपणा मांहि ते न गिणाइ।

(७) केती वारइ कर्मनइं विशेषिइं गृहस्थन्हइं कामनउ योग टलिउ तउ तीणइं धर्म अनइ अर्थ बेई साधिवा।

(८) केती वारइं कर्मनइ विशेषि काम अनइ अर्थनउ योग टलिउ तउ धर्मनइ अर्थ बेई साधिवा।

(९) कर्मनइ योगि काम अनइ अर्थ बेई जाइं तऊ धर्मनउ उद्यम जीविइं न मूंकिवउ। धर्म थिकउ पछइं अर्थ काम सुलभ हुइं। परलोकि सुख भोगवइ। यत उक्तं—

"धर्मश्चेन्नावसीदेत कपालेनापि जीवितः। आढ्योऽस्मीत्यवगंतव्यं धर्मवित्ता हि साधवः॥"

यथावदतिथौ साधौ दीने च प्रतिपत्तिकृत्।
सदाऽनभिनिविष्टश्च पक्षपाती गुणेषु च॥ ७॥

२०. यथावद०—जे सदैव धर्मानुष्टान करइ तेहनइ तिथि दिहाडानउ विशेष कांइं न हुइं ते अतिथि महात्मा कहीइ। यतः—

"तिथिपर्वोत्सवाः सर्वे त्यक्ता येन महात्मना। अतिथिं तं विजानीयाच्छेषमभ्यागतं विदुः॥"

एह्वा अतिथिन्हइं, साधुयोग्य, सदाचार श्रावकन्हइं, वली दीन अंध पांगुलादिक दयामणानइं। यथावद०—यथायोग्य उचितप्रतिपत्ति अन्न पान भोजनादिके करइ। अहंकारिं करी कहिन्हइं पराभव न करइ। औचित्य पाषइ गृहस्थ शोभा न पामइ। यशवाद न लहइ।

एतलइ सर्व कहिनइं औचित्य करइ, ते धर्मयोग्य ॥

२१. सदानभि०—सदा सदैव इ अनभिनिविष्ट अहंकार रहित जोई इ। आपणा गुणनउ अहकार न आणइं।

२२. आपणा गुण छताइ जे देषइ नहीं । पिराया गुण नान्हाइ ऊपरि बहुमान
5 धरइ। गुणवतनी प्रशसा करइ। गुणपक्षपातीन्हइ इह लोकि अनइ परलोकि रूडउं जि हुइ ॥

अदेशाकालयोश्चर्यां त्यजन् जानन् बलाबलम् ।
वृत्तस्थज्ञानवृद्धानां पूजकः पोष्यपोषकः ॥ ८ ॥

२३. अदेशा०—अदेश—स्थानक विरूआ देशनइ विरूआ पाडा, अवेलां तिहां चर्या—हींडिवउ त्यजइ, न करइ, ते धर्मयोग्य। अस्थानकि अवेलां हींडतउ पुरुषनइ शंकनीय
10 थाइ। चोरादिकतउ उपद्रव पामइ ॥

२४. जानन्०—काज आरमतउ आपणउं बलाबल जाणी आरंमइ । लक्ष्मी ठाकुरु सखाईया कालनउं एटलाना बल जोई, तउ काज करइ। ईसइ काज करतां काज सीझइं नहीं, अनइ मननइं षेद ऊपजइ। साही हाणि हुइ ॥

२५. वृत्तस्थ०—सदाचारस्थ जे पुरुष ज्ञानिइं जाणिवइं करी जे वडा ते पुरुष
15 पूज्य तेन्हइ पूजा सेवा आसनदान अभ्युत्थानादिक जे करइं, ते धर्मयोग्य । सदाचारीनी ज्ञानवंतनी सेवा करता अनेक सदुपदेशादि फल पामीइं ॥

२६. तथा, पोष्यपो०—पोष्य जेहनी अवश्यचिंता कीधी जोईइ । माइ बाप कलत्र छोरु प्रमुख तेन्हइं पोषइ। भोजन वस्त्रादिकनइं देवइ जे तेहनी चिंता करइ, ते धर्मयोग्य॥

दीर्घदर्शी विशेषज्ञः कृतज्ञो लोकवल्लभः ।
20 **सलज्जः सदयः सौम्यः परोपकृतिकर्मठः ॥ ९ ॥**

२७. दीर्घ०—जे काज करतउ आघउं दीर्घकालि अर्थ-अनर्थ ऊपजतउ विमासइ, उत्तान उत्सुकबुद्धि न हुइं, ते धर्मयोग्य॥

२८. विशेष०—वली जे माणस-कुमाणसनउ वस्तु-कुवस्तुनउ कीधा-अणकीधानउ जे विशेष विहरउ जाणइ । जे काई विशेष न परीछइ ते गहिलउ, पशुसमान जाणिवउ।
25 अथवा आपणा जि कर्त्तव्यनउ जे विशेष जाणइ—मइ आ काज रूडउ कीघउ, आ मून्हइ करिवा बूझीइ, आ न बूझीइ ॥

२९. कृतज्ञ०—जे पिरायउ कीधउ उपकार जाणइ, उलवइ नहीं, ते धर्मयोग्य । कृतघ्नन्हइ कहीइ ऊरण थावउ नथी ॥

३०. लोकवल्लभः—विशिष्ट लोकनइ आपणा विनयादिक गुणेकरी जे वल्लभ, जे गमतु हुइ; ते धर्मयोग्य । जे लोकवल्लभ न हुइं तेहनउं धर्मानुष्ठान इहंलोकन्हइं अगमतउं थाइ ॥

३१. सलज्ज०—लाजनउ धणी धर्मयोग्य । लाजनउ धणी वरि प्राण छांडइ, आपणा नियमनी प्रतिज्ञा कीमइ न भांजइ ॥

३२. सदयः—दयावंत हुइ, ते धर्मयोग्य । जेहन्हइं दुःखीया जीव देपी तेहनां 5 दुःख फेडिवानी जे वांछाइ करइ ते सदय कहीइ । जेह भणी धर्ममूल एक दया जि कहीइ ॥

३३. सौम्यः—सौम्य जे हुइ, ते धर्मयोग्य । जेहनउ क्रूर आकार हुइ ते लोकनइ ऊद्वेगहेतु हुइ ॥

३४. परोप०—परन्हइं उपकार करिवानइं विषइ, जे कर्मठ—कहीइ तत्पर, जे सूरउ हुइ; ते धर्मयोग्य । ते दीठउ इ सविहुंन्हइं वल्लभ हुइ॥ 10

अन्तरङ्गारिषट्वर्गपरिहारपरायणः ।
वशीकृतेन्द्रियग्रामो गृहधर्माय कल्पते ॥ १० ॥

३५. अन्तरङ्ग०—अरि वइरी तेहनउ षट्वर्ग-छंनउ समुदाय, तेहनउ परिहार कहीइ टालिवउं, तेहनइ विषइ परायण तत्पर हुइ । अस्थानकि प्रयुंज्य काम १, क्रोध २, लोभ ३, मान ४, मद ५, हर्ष ६ ए छइ उत्तम गृहस्थनइ अंतरग वइरी कहीइं । 15

(१) पिराइ स्त्री अथवा अणपरिणी स्त्री नइ विषइ जे काम ते काम वइरी कहीइ ।

(२) जे अस्थानकि आपणपान्हइं अथवा परन्हइं आगलि ऊपजतउ अनर्थ अणवि-मासिउ जे कोप करिवउ ते क्रोध वइरी कहीइ ।

(३) दानयोग्यन्हइं जे आपणी लक्ष्मी न दिइं । निष्कारण जे पिराई लक्ष्मी तेहइ न दिइं । जे निष्कारण पिराई लक्ष्मी लेई रहइ । ए लोभ वइरी । 20

(४) जे आपणउ कदाग्रह लीधउ मूंकइ नहीं । युक्तउं वचन कहिउं जे मानइ नहीं । ते मान वइरी ।

(५) आपणाकुलनउ, अथवा ठाकुराई, रूपविद्यादिकना अहंकारनउं करिवउं । बीजान्हइं हेठउडिवउं करिवउं ते मद वइरी ।

(६) निष्कारण परन्हइं दुःखनइं ऊपजाविवइं, अथवा द्यूतादिक अनर्थनइं आश्रइवइं 25 करी जे मननउ प्रमोद ते हर्ष वइरी ।

ए छइ वइरी जे टालइ; ते धर्मयोग्य ॥

३६. तथा, वशीकृतेन्द्रियग्राम–पाचइ इंद्रिय जेहनइ वसि हुइ, स्वच्छद न हुइं । जे आपणा पाचइ इंद्रियनइ उन्माद ऊपजतउ जे राषी सकइ, ते धर्मयोग्य। जे आपणा इद्रिय निरता राषी न सकइं, ते अनर्थि पडइ, धर्म चूकइ ॥

गृहधर्मो०–एहे ३६ गुणे करी सहित जे मनुष्य हुइ ते गृहस्थधर्म सम्यक्त्व मूल बार व्रत धर्मरूप ते देवानइं काराणि, कल्पते–योग्य हुइ। एह्वा गुणना धणीनइं धर्म दीधउ अपार शोभा प्रामइ ॥



पृथ्वीचंद्र चरित्र अपर नाम वाग्विलास.

[कर्ता—श्रीमाणिक्यचंद्र सूरि, विक्रम संवत् १४७८.]



या विश्वकल्पवल्लीवल्लीलया कल्पितप्रदा ।
प्रदत्तां वाग्विलासं मे सा नित्यं जैनभारती ॥ १ ॥ 5
धर्मश्चिन्तामणिः श्रेष्ठो धर्मः कल्पद्रुमः परः ।
धर्मः कामदुघा धेनुर्द्धर्मः सर्वफलप्रदः ॥ २ ॥

पुण्यलगइ पृथ्वीपीठि प्रसिद्धि, पुण्यलइ मनवांछितासिद्धि । पुण्यलगइ निर्मलबुद्धि, पुण्यलगइ घरि ऋद्धि वृद्धि । पुण्यलगइ शरीर नीरोग, पुण्यलगइ अभंगुर भोग, पुण्यलगइ कुटुंबपरिवारतणा संयोग । पुण्यलगइ पलाणीयइं तुरंग, पुण्यलगइ नवनवा रंग । पुण्यलगइ घरि 10 गजघटा, चालतां दीजइ चंदनछटा । पुण्यलगइ निरुपम रूप, अलक्ष्य स्वरूप । पुण्यलगइ आनंददायिनी मूर्त्ति, अद्भुत स्फूर्त्ति । पुण्यलगइ भला आहार, अद्भुत शृंगार । पुण्यलगइ सर्वत्र बहुमान, घणुं किस्युं कहीयइ पामीयइ केवलज्ञान ।

एहपुण्य ऊपरि राजाधिराज पृथ्वीचंद्रतणउ कथासबध भणीयइ । ता ईणइं राजुप्रमाणि रत्नप्रभापृथ्वीपीठि असंख्याता द्वीप समुद्र वर्त्तइं । तींह माहि पहिलउ 15 जंबू द्वीप लक्षयोजन प्रमाण जाणिवउ । तेह पापलि लवण समुद्र द्विलक्षयोजन प्रमाण जाणिवउ । तेह परइ धातकीखंड द्वीप च्यारि लक्षयोजन प्रमाण जाणिवउ । तेह पापलि कालोदधी समुद्र आठ लक्षयोजन प्रमाण जाणिवउ । तेह परइं पुष्करवर द्वीप सोल लक्षयोजन प्रमाण जाणिवउ । तेह पापलि पुष्करवर समुद्र बत्रीस लक्षयोजन प्रमाण जाणिवउ । आगलि वारुणि द्वीप ६४ लक्षयोजन प्रमाण जाणिवउ । तेह पापलि वारुणी समुद्र एककोडि ·८ लक्ष- 20 योजन प्रमाण जाणिवउ । ईणि परि ठाण विमणा द्वीप समुद्र जाणिवउ । कवण कवण-क्षीरद्वीप, क्षीरसमुद्र; घृतद्वीप, घृतसमुद्र; इक्षुद्वीप, इक्षुसमुद्र; नंदीसरद्वीप, नंदीसरसमुद्र; अरुण-द्वीप, अरुणसमुद्र; अरुणवरद्वीप, अरुणवरसमुद्र; अरुणवरावभासद्वीप, अरुणवरावभाससमुद्र; इत्यादिक द्वीपसमुद्र असंख्यात । तेहमाहि पहिलउ जे जंबूद्वीप, तेहनी नाभिइं मेरुपर्वत जिसिउ प्रदीप । तेहनइं दाक्षिण उत्तरइं सात क्षेत्र, चउद महानदी, छ वर्षधर पर्वत, वर्त्तइं । 25

किसा ते क्षेत्र–भरतक्षेत्र १, हैमवतक्षेत्र २, हरिवर्षक्षेत्र ३, महाविदहक्षत्र ४, रम्यकक्षेत्र ५, ऐरण्यवतक्षेत्र ६, ऐरवतक्षेत्र ७ । किसी महानदी–गगा १, सिंधु २, रोहि-ताशा नदी ३, रोहिता ४, हरिकांता नदी ५, हरिसलिला नदी ६, सीतोदा ७, सीतानदी ८, नारीकाता ९, नरकांता १०, रूप्यकूला नदी ११, सुवर्णकूला नदी १२,
5 रक्तवती १३, रक्तानदी १४ । किस्या किस्या वर्षधर–हिमवंतपर्वत १, महाहिमवंत २, निषध ३, नीलवंत ४, रुक्मीपर्वत ६, शिखरीपर्वत ६ । हिव जे कहिउ भरतक्षेत्र तेहमाहि २५ योजनप्रमाण वैताढयपर्वत, ३२ सहस्र देश । ईहमाहि साढा पंचवीस देश आर्य, थाकता अनार्य जाणिवा । ऋषभदेवतणां पुत्रतणें नामिइ सयल देश जाणिवा । ते कुण कुण-कास्मीरदेश १, कीर २, काबेर ३, कांबोज ४, कमल ५, उत्कल ६, करहाट ७, कुरु ८,
10 क्षाण ९, क्रथ १०, कौशक ११, कोशल १२, केशी १३, कारूत १४, कारूष १५, कछ १६, कर्णाट १७, कीकट १८, केकि १९, कौलगिरि २०, कामरूप २१, कूंकण २२, कुंतल २३, कालिंग २४, करकूट २५, करकठ - ६, केरल २७, षस २८, षर्पर २९, षेट ३०, गौड ३१, अंग ३२, गौप्य ३३, गागक ३४, चौड ३५, चिछिर ३६, चैत्य ३७, जालंधर ३८, टंकण ३९, कोडियाण ४०, डाहल ४१, तुंग ४२, ताजिक ४३,
15 तोसल ४४, दशार्ण ४५, दंडक ४६, देवसभ ४७, नेपाल ४८, नर्त्तक ४९, पंचाल ५०, पल्लव ५१, पुण्ड्र ५२, पाडु ५३, प्रत्यग्रथ ५४, अर्बुद ५५, बभ्रु ५६, बर्मीर ५७, भट्टीय ५८, माहिष्मक ५९, महोदय ६०, मुरुड ६१, मुरल ६२, मेद ६३, मरु ६४, मुद्गर ६५, मंकन ६६, मल्लवर्त्त ६७, महाराष्ट्र ६८, यवन ६९, रोम ७०, राटक ७१, लाट ७२, ब्रह्मोत्तर ७३, ब्रह्मावर्त्त ७४, ब्राह्मणवाहक ७५, विदेह ७६, वंग ७७, वैराट
20 ७८, वनवास ७९, वनायुज ८०, वाल्हीक ८१, वल्लव ८२, अवंति ८३, वह्नि ८४, शक ८५, सिंहल ८६, सुम्ह ८७, सूर्पर ८८, सौवीर ८९, सुराष्ट्र ९०, सुहड ९१, अस्मक ९२, हूण ९३, हर्मोक ९४, हर्मोज ९५, हस ९६, हुहुक ९७, हेरक ९८, एव देश अट्ठाणू, अनइ आदन, हाबस, मुगदि,सुंधनगिरि, सीकोत्तर, चोल्नाट, पांड्य,तालीउ, त्रिहूति, भोट, महाभोट, चीण, महाचीण, बगाल, षुरसाण, मगध, वच्छ, गाजणा प्रमुष
25 अनेक देश वर्तइ ।

तीहमाहि वषाणीयइ मरहट्ठदेस । जीणइ देसि ग्राम, अत्यंत अभिराम । भला नगर, जिहां न मागीयइ कर । दुर्ग, जिस्यां हुइ स्वर्ग । धान्य, न नीपजइ सामान्य । आगर, सोनारूपातणा सागर । जेह देसमाहि नदी वहइं, लोक सुषइ निर्वहइ । इसिउ देश, पुण्यतणउ

निवेश, गरूअउ प्रदेश। तीणि देसि पइठाणपुर पाटण वर्त्तइं, जिहां अन्याय न वर्त्तइं। जीणइ नगरि कउसीसे करी सदाकार पार्श्वलि पोढउ प्राकार, उदार प्रतोली द्वार। पाताल भणी धाई, महाकाय पाई, समुद्र जेहनु भाई। जे लिइ कैलासपर्वतसिउं वाद, इस्या सर्वज्ञदेवतणा प्रासाद। करइं उल्लास, लक्षेश्वरी-कोटीध्वजतणा आवास। आनंदइं मन, गरुउं राजभवन। ऊपरि अषंड सुवर्ण्णमय दंड, ध्वजपट लहलहइं प्रचंड। जेह पाटणमाहि अनेक आश्चर्य वापरइं, चउरासी चउ- 5
हटां कलकलाट करइं। किस्यां ते चउहटां—सोनीहटी १, नाणावटहटी २, जवहरीहटी ३, सौगंधीयाहटी ४, फोफलिया ५, सूत्रिया ६, पडसूत्रिया ७, घीया ८, तेल्हरा ९, दंतारा १०, वलीयार ११, मणीयारहटी १२, दोसी १३, नेस्ती १४, गांधी १५, कपासी १६, फडीया १७, फडीहटी १८, एरंडिया १९, रसणीया २०, प्रवालीया २१, त्रांबहटा २२, सांषहडा २३, पीतल्गारा २४, सोनार २५, सीसाहडा २६, मोतीप्रोयां २७, साल्वी २८, 10
मीणारा २९, कुंआरा ३०, चूनारा ३१, तूनारा ३२, कूटारा ३३, गुलीयारा ३४, परीयटा ३५, घांची ३६, मोची ३७, सुई ३८, लोहटिया ३९, लेढारा ४०, चीत्राहरा ४१, पतूआरा ४२, कागलीया ४३, मद्यपहटी ४४, वेश्या ४५, पणगोला ४६, गांछा ४७, भाड- जा ४८, वीवाहडा ४९, त्रांबडीया ५०, भइंसायत ५१, मलिन नापित ५२, चोषा नापित ५३, पाटीवणा ५४, त्रांगडीया ५५, वाहीत्रा ५६, काठवीठीया ५७, चोपावीठीया ५८, 15
सूपडीया, ५९, साथरीया ६०, तेरमा ६१, वेगडीया ६२, वसाह ६३, सांथूआ ६४, पेरूआ ६५, आटीआ ६६, दालीया ६७, दउढीआ ६८, मुंजकूटा ६९, सरगरा ७०, भरथाग ७१, पीतल्हडा ७२, कंसारा ७३, पत्रसागीआ ७४, पासरीया ७५, मंजीठीया ७६, साकरीया ७७, साबूगर ७८, लोहार ७९, सूत्रहार ८०, वणकर ८१, तंबोली ८२, कंदोई ८३, बुद्धिहटी ८४, कुत्रिकापणहटी एवं चउरासी चउहटां जाणिवा। 20

जीणइ नगरि अनेक पामीयइं रत्न, जीहतणां कीजइ यत्न। किस्यां ते रत्न—अश्वरत्न, गजरत्न, पुरुषरत्न, स्त्रीरत्न, अनइं पद्मराग, पुष्पराग, माणिक, सींघलीया, गरुडोद्गार, मणि, मरकत, कर्केतन, वज्र, वैडूर्य, चन्द्रकांत, सूर्यकांत, जलकांत, शिवकांत, चंद्रप्रभ, साकरप्रभ, प्रभानाथ, अशोक, वीतशोक, अपराजित, गंगोदक, मसारगल्ल, हंसगर्भ, पुलिक, सौगंधिक, सुभग, सौभाग्यकर, विषहर, धृतिकर, पुष्टिकर, शत्रुहर, अंजन, ज्योती रस, शुभ- 25
रुचि, शूलमणि, अंशुमालि, देवानंद. स्थिरत्न, कीटपंखि, कसाउला, धूमराइ, गोमूत्र, गोमेद, लसणीया, नीला, तृणचर, खइगइ, वज्रधार. पट्कोण, कणी, चापडी, पिरोजा, प्रवाला, मौक्तिक प्रमुख रत्न करी दीसइं भरियां हाट. अनेकसुवर्णमय घाट, पिहुली वाट, चालइ घोडां-

तणां थाट, लोकनइं नहीं किसिउ ऊचाट। जिहां पुण्य विशाल, तीसी पोसाल। जिहा छात्र पढइं चउसाल, तिसी नेसाल। जिह. अध्यात्मतणी वात दृढ, तिसां अनेक मढ। जिहां लोक जिमई अपार, तिसा सत्रूकार। जिहां पाणी पियइ सर्व, तिसी पर्व। जिहां रमलि कीजइं स्वभावि, तिसी वावि। जिहां आनद हूआ, तिसा कूआ। पद्मवनखंडमडित प्रवर, महाकाय सरोवर। जिहा रंगि कीजइं रयवाडी, तिसी वाडी। जिहां सीतल फुरकइ पवन, तिसां पाघलियां वन। इसुं अन्यायरहइ दाटण, पृथ्वीपीठि प्रसिद्ध पइठाणपुर पाटण।

तीणि पाटणि राजाधिराज पृथ्वीचंद्र इसिइ नामिइ राज्य प्रतिपालइ, भुजबलि करी वइरी वर्ग टालइं। जीणि राजा गौडदेशनउ राउ गाजिउ, भोटनउ भाजिउ। पंचालनउ राउ पालउ पुलइ, कानडादेसनउ कोठारि रुलइ। ढोर समुद्रतउ ढोयणां ढोयइ, वावरउ वारि वइठउ टगमग जोयइ। चौडनउ दडि चांपिउ, कास्मीरनउ कापिउ। सोरठीयउ सेवइ, तुडि नकरउ देवइ। अंगदेसनउ अंगि ओलगइ, जालंधरनउ जीवितव्यकारणि रिगइ। घणुं किस्युं कहीयइ, रिपुकुलकालकेतु शरणागतवज्रपंजर पंचम लोकपाल। जीणं रिपु सर्वे निर्धाव्यां, दुर्ग सर्व आपणा कीधा, वयरीनइं देसवटा दीधा। इसिउं नि.कंटक साम्राज्य प्रतिपालइ। तेह नरेश्वरनइ बुद्धिनिधान, परमहसनामि प्रधान। जेउ सहिजिइं रूपिइं रूडउ, पाटरहिं नहीं कूडउ। राउलउ अर्थ सारइं, लोक ऊगारइ, वयरविग्रह वारइ। पालइ दीन दुस्थित निराधार, करइ साधुजन उपगार, शास्त्रि शास्त्रि कुशल अपार। गुहिर गभीर, अतिहिं धीर। मुहि मींठउं भाषई, काज कीधां जि दाषइ। चिहुं बुद्धितणउ निधान, सविहुं अमात्यमाहि मूलिगु प्रधान। रायतणउं प्रतिशरीर, इसिउं ते मंत्रीश्वर नरेश्वररहइं, शिवमय सुषमय कल्याणमय दिवस अतिक्रमइ।

अन्यदा प्रस्तावि राजा रातितणइं प्रस्तावि स्वप्न एक दीठउ, जेहनउं फल छइ अत्यंत मीठउ। किसिउं ते स्वप्न [2] इसिउं—जाणइ नरेश्वर सुवर्णवर्णकाति, देवरहइं मन भ्राति, षलकते नेउरि, झलकते कुंडलि, हाथि वरमाल, अर्द्धचंद्रसमभाल, रूपि विशाल, इसी बालदेवी देषइ भूपाल। जेतलइ तेहतणी वरमाला कंठ कदलि लागी, तेतलइं रायनइ निद्रा भागी। जागिउ नरेश्वर, चींतवइ अलवेसर। किसिउ स्वप्नतणउ घटइ विचार, तेतलइ प्रभातावसरि हूउ मांगलिकशंखतणउ ओंकार, हूआ तिवलितणा दोंकार, मृदगतणा धोंकार। भट्टतणा मागलिक्य ध्वनि, राजा आनंदिउ मनि। शुभहेतु स्वप्नतणउ मनि विचार धरी, पालक परिहरी। क्षणु एक राजा मल्लाषाडइ आव्या, मल्लसिउ विनोद नीपजाव्या। पछइ स्नानमज्जनादिक प्रभातकरणीय कीधु, याचकरहइं दान दीधउ। तिवारें गणनायक, दण्डनायक, पायक, वृत्तिनायक, वहीवाहक, तलवर, माडम्बिक, कौटुंबिक, इन्द्रजाली, फूलमाली, धातुवादी, मन्त्रवादी, तन्त्रवादी, यन्त्रवादी,

कपटाइत, चपटाइत, अङ्गरक्षक, अङ्गमर्दक, मीठाबोला, सुहाबोला, कथाबोला, साचाबोला, जूठाबोला, अनइ अनेक राजराजेश्वर, मण्डलेश्वर, सामन्त, तंत्रपाल, तलवर्ग, चउरासीया, महामात्य, मन्त्रीश्वर, श्रीगरणा, वयगरणा, धर्माधिगरणा, सेनाधिपति, आगरीया, व्यवहारीया, राजद्वारिक, भण्डारी, कोठारी, कापडभण्डारी, पूगभण्डारी, रसोईया, पाणहरी, श्रेष्ठि, सार्थवाह, पीठमर्द, वारवधू, वीणकार, वंशकार, उतिकार, आउजी, पखाउजी, पटाउजी, आलवणकार, लाक्षणिक, 5
तार्किक, छान्दासिक, मुखमाङ्गलिक, वैद्य, ज्यौतिषी, पाहरी, पङ्गधर, कुन्तधर, धनुर्धर, छत्रधर, वालकहार, सेजपाल, थईयात, पण्डित, कवि, लेखक, योध, महायोध, माल, मसाहणी, पाण्डव, पउंतार प्रमुख सकल लोकि करी सश्रीक राजा राजसभां वईठा।

राजसभा किसी छइ—जीणि राजसभां कूंकुमजलि छटा दीधी छइं, विविधमुक्ताफलि चतुष्क पूरिया छइं, कर्पूरतणा शंख आलिप्या छइं, कृष्णागर जवाधितणा परिमल महमहइं छइं, 10
मोतीतणी सिरि लहलहइं छइं, फूलपगर भरिया छइं, कटीप्रमाण पायपीठ संयुक्त पुरुषप्रमाण सुवर्णमय सिंहासन मांडिउं छइं। तीणि सिंहासणि राजा बइठा। किसिउ राजा दीसइ छइं—मस्तकि श्वेतातपत्र छइं, पासइं ढलइं चामर पवित्र, वाजइं विचित्र वादित्र, मस्तकि मुगट, कानि कुण्डल, हृदयि हारार्द्धहार, महा उदार, धनदतणउ अवतार, रूपतणु भण्डार। घणउं किसिउं कहीयइ—जिसउ पृथ्वीलोकतणउ इन्द्र, जिसउ सोलकलासम्पूर्ण चन्द्र, इसउ दीसइ छइ पृथ्वीचन्द्र नरेन्द्र। तिसिइ अवसरि प्रतीहार आविउ, प्रणाम नीपजाविउ। राजां साम्ही दृष्टि दीधी, 15
पुणि वीनती कीधी। जी अयोध्यानगरीहूंतउ, दूत तम्हारइ द्वारांतरि आविउ। मनि तणइ उत्साहि, जइ हुइ आदेस तु मेल्हउं माहि। हूउ राजातणउ आदेस, दूति कीधउ सभामाहि प्रवेश। राम रहइ कीधउ जुहार, अलंकरिउं योग्य आसण उदार। राजा दूतरहइ वहुमान दीधउं, कुशल प्रश्न कीधउं। आनन्द ऊपनउ अत्यन्त, हिव दूत वीनवइ कार्य विशेषवन्त। जिहां लोकरहइं नही किसिउ 20
क्लेश, जिहा नही वइरीतणउ प्रवेश, पुण्यतणउ निवेश। अनेक ग्रामनगर, सोनारूपातणा आगर, मनोहर छइ कोसलादेस।

तिहां छइं नगरी अयोध्या। किसी ते नगरी—धनकनकसमृद्ध, पृथ्वीपीठि प्रसिद्ध। अत्यंत रमणीय, सकललोकस्पृहणीय। पृथ्वीरूपिणी कामिनीरहइं तिलकायमान, सर्वसौदर्यनिधान। लक्ष्मीलीलानिवास, सरस्वतीतणउ आवास। अतुलदेवकुलि मंडित, परचक्रि अखंडित। सदा सुठा- 25
कुरि पालित, रमणीयराजमार्गि शोभित, उत्तंगप्राकारवेष्टित। सदा आश्चर्यतणउ निलय, वसुधावनितावलय। निरुपमनागारिकतणउं ठाम, मनोभिराम। जनितदुर्जनक्षोभ, सज्जनोत्पादितशोभ। पुरुषरत्नोत्पत्तिरोहिणाचल, कुलवधूकल्पलतारत्नाचल। जीणइ नगरी देवगृह मेरुशिखरोपमान, धवलगृह स्वर्गविमानसमान। अनेक गवाक्ष, वेदिका, चउकी, चित्रसाली, जाली, त्रिकलसां,

तोरण, धवलगृह, भूमिगृह, भांडागार, कोष्टागार, सत्रागार, गढ, मढ, मंदिर, पडवां, पटसाल, अधहटा, फडहटा, दडकलस, आमलसार, आचली, वंदरवाल, पंचवर्ण पताका दीपइ । सर्वोसर, मंत्रोसर, माजणहरा, सप्तद्वारातर, प्रतोली, रायंगण, घोडाहडि, अपाडउ, गुणणी, रंगमंडप, सभामंडप समूहि करी मनोहर—एवंविध आवास । जेह नगरिमाहि दोसी, नेस्ती, साह, वसाह, पटउलीया, पडसूत्रिया, पजूरीआ, वीजउरीआ, कणसारा, भणसारा, मपारा, नवकर, भोजकर, मच्छ लामा अनेक लोक वसइ । पाचसइं व्यवसाईया व्यवसायविपइ उल्लसइ । जेह नगर पाषलीया अनेकि कूया वावि सरोवर नई नीक निरुपम उद्यान आंव नींव जाबू जंवीर बीजपूर प्रमुख वृक्षावली करी प्रधान च्यारि पोलि, प्रधान कोसीसातणी ओलि । प्रभातसमइ सूर्यतणे किरणेकरी प्रासादतणे शिषिरि धजकलश झलकइ, धजऊड ललकइ । घणउं किसूं कहीइ—जिसी होइ अमरावती भोगावती अथवा अलका लंका इसी नगरी अयोध्या वषाणीइ । तीणि नगरी ईक्ष्वाकुवंशावतस विहितवयरीकुलविध्वंस निजकुलकमलराजहंस अतुलवल-पराक्रम त्रिविक्रमसमान राजा श्रीसोमदेव राज्य प्रतिपालइ, प्रजा संभालइ, अन्याय टालइ । जे राजा सत्यवाचा राजा श्रीहरिचंद, प्रतिज्ञा राजा श्रीयुधिष्टिर, निर्भय भीम, आपन्न जीमूतवाहन, विद्या बृहस्पति, लावण्य लवणार्णव, रूपि कंदर्प, प्रताप मार्त्तंड, औदार्यि वलिराजा, अद्भुत-दानि चिंतामणि, सेवकजन कल्पवृक्ष, चतुरंगवाहिनीसमुद्र । घणउ किशिउ कहीइ—महासासनु अरडकमल्ल जगझंपणउ प्रतापलंकेश्वर परराष्ट्रीरायहृदयशल्य इसिउ प्रतापीउ राजा राज्य प्रतिपालइ । तेह राजातणउ अतःपुरि माहि प्रधान गुणनिधान भर्त्तारतणी भक्तिविपय महासावधान स्त्री कमललोचना इसिइ नामि पट्टराज्ञी वर्त्तइ । जेह राणी, सहिजि मधुरवाणी, सीलवंतिमाहि वषाणी, गुणि करी जाणी घणू किसइं—इंद्राणी, जिह आगलि वहिइ पाणी । तेह राणीतणइ कुक्षितउ समुत्पन्न मदनभ्रमतणी मजरी, कुंकमि करी पिंजरी, रत्नमजरी इसइ नामिइ कन्या वर्त्तइ । ते कन्या जइ भणिवा गुणिवा योग्य हूई तु पडितरहिं आपी, तीणि आपणकह्नइ संस्थापी । पडित अणसंतापी कन्या समग्रकला व्यापी । ता ते कन्या वहुत्तरि कला जाणइ, चउसठि विज्ञान वषाणइ । किसी ते वहुत्तरि कला—लिषितकला १, पठित २, गणित ३, गीत ४, नृत्य ५, वाद्य ६, व्याकरण ७, काव्य ८, छंद ९, अलकार १०, नाटक ११, साटक १२, नखच्छेद्य १३, पत्रच्छेद्य १४, आयुधाभ्यास १५, गजारोहण १६, तुरगारोहण १७, गजशिक्षा १८, तुरगमशिक्षा १९, रत्नपरीक्षा २०, पुरुपलक्षण २१, स्त्रीलक्षण २२, पशुलक्षण २३, मंत्रवाद २४, यंत्रवाद-तत्रवाद २५, रसवाद २६, विपवाद २७, गधवाद २८, विद्यानुवाद २९, युद्ध ३०, नियुद्ध ३१, तर्कवाद ३२, संस्कृत ३३, प्राकृत ३४, उत्तर ३५, प्रत्युत्तर ३६, देशभाषा ३७, कपट ३८, वित्तज्ञान

३९, विज्ञान ४०, सिद्धांत ४१, वेदांत ४२, गारुड ४३, इंद्रजाल ४४, विनयकला ४५, आचार्यविद्या ४६, आगम ४७, दान ४८, ध्यान ४९, पुराण ५०, इतिहास ५१, दर्शन-संस्कार ५२, खेचरी ५३, अमरी ५४, वाद ५५, पातालसिद्धि ५६, धूर्त्तशंबल ५७, वृक्षचिकित्सा ५८, सर्वकरणी ५९, काष्टघटन ६०, कृत्रिममणिकर्म ६१, वाणिज्य ६२, वश्यकर्म ६३, चित्रकर्म ६४, पाषाणकर्म ६५, नेपथ्यकर्म ६६, धर्मकर्म ६७, धातुकर्म ६८, यंत्ररसवतीकर्म ६९, हसित ७०, प्रयोगोपाय ७१, केवलीविधिकला ७२, ए बहुत्तरि कला जाणइ। हिव चउसठि विज्ञान किस्यां—नृत्य १, कवित २, चित्र ३, वादित्र ४, मंत्र ५, यंत्र ६, तंत्र ७, विज्ञान ८, दंभ ९, जलकर्म १०, गीतगान ११, तालवायण १२, मेघवृष्टि १३, फलकृष्टि १४, आरामरोपण १५, आकारगोपन १६, धर्मविचार १७, शकुनसार १८, क्रियाकल्प १९, संस्कृतजल्प २०, प्रासादरीति २१, धर्मनीति २२, वर्णिकावृद्धि २३, सुवर्णवृद्धि २४, सुरभितैलकरण २५, लीलासंचरण २६, गजाश्वनिरीक्षण २७, पुरुषस्त्रीलक्षण २८, वसुवर्णभेद २९, अष्टादशलिपिपरिच्छेद ३०, तत्कालबुद्धि ३१, वास्तुसिद्धि ३२, वैद्यकक्रिया ३३, कामक्रिया ३४, घटभ्रम ३५, सारिपरिश्रम ३६, अंजन-योग ३७, चूर्णयोग ३८, हस्तलाघव ३९, शास्त्रपाटव ४०, नेपथ्यविधि ४१, वाणिज्यविधि ४२, मुखमंडन ४३, सालिपंडन ४४, कथाकथन ४५, पुष्पग्रथन ४६, वक्रोक्ति ४७, काव्यशक्ति ४८, सारवेष ४९, सकलभाषाविशेष ५०, अभिधानज्ञान ५१, आभरणपरिधान ५२, नृत्योपचार ५३, गृहाचार ५४, रंधन ५५, केशबंधन ५६, वीणानाद ५७, वितंडावाद ५८, अंकविचार ५९, लोकव्यवहार ६०, वशीकरण ६१, वारितरण ६२, पश्नप्रहेलिकाज्ञान ६३, धर्मध्यान ६४, ए कहीयइं सर्वकलाविज्ञान, जाणइ सकल शास्त्र, वषाणइ चउसठि विज्ञान।

इति श्रीअञ्चलगच्छे श्रीमाणिक्यसुन्दरसूरिविरचिते श्रीपृथ्वीचन्द्रचरित्रे वाग्विलासे प्रथमोल्लासः।

द्वितीयोल्लासः

हिव ते कुमरि, चडी यौवनि भरि, परिवरी परिकरि, क्रीडा करइ नवनवी परि। इसिइं अवसरि आविउ आषाढ, इतरगुणि संबाढ। काटइयइ लोह, घामतणउ निरोह। द्यासि घाटी, पाणी वींयाइ माटी। विस्तरिउ वर्षाकाल, जे पथीतणउ काल, नाठउ दुकाल। जीणिइ वर्षाकालि
5 मधुरध्वनि मेह गाजइ, दुर्भिक्षतणा भय भाजइ, जाणे सुभिक्षभूपति आवतां जयढका वाजइ। चिहुं दिसि वीज झल्हलइ, पथी घरमणी पुलइ। विपरीत आकाश, चंद्रसूर्य परियास। राति अंधारी, लवइं तिमिरी। उत्तरनउ ऊनयण, छायउ गयण। दिसि घोर, नाचइं मोर। सधर, वरसइ धाराधर। पाणीतणा प्रवाह पल्हलइं, वाडि ऊपरि वेला वलइ। चीषलि चालतां शकट स्खलइं, लोकतणां मन धर्म्मऊपरि वलइं। नदी महापूरि आवइ, पृथ्वीपीठ प्लावइ। नवां किसलय गहगहइं,
10 वल्लीवितान ल्हलहइ। कुटुंबीलोक माचइ, महात्मा वइठां पुस्तक वाचइ। पर्वततउ नीझरण विछूटइं, भरियां सरोवर फूटइं। इसिइ वर्षाकालि राजा सोमदेवतणऊं कराविउ सरोवर भराणुं, समुद्रसमाणउं। वधावणीउ धायउ, राजाकन्हइ आयउ। राजा मनि गहगहतउ, सरोवर जोइवा पुहुतउ। दीठउं भरिउं सरोवर, ऊपनउ आनंदभर। जोसी तेडी महोत्सवतणुं मुहूर्त्त लीधउं, अभीष्ट जनरहइं तेडउं कीधउं। इसिउं करता आविउ आसो मास, दिसि सप्रकास, कमलवन
15 उल्लास, हंसतणु विलास। कादव सूकइ, नई निरर्गलपणउ मूकइं। विकसइं कुसमकली, परमेश्वर सर्वज्ञ पूजतां पूरइ मनतणी रली। तिसिइ आसोसुदि पंचमीतणइ दिवसि मोटइ आडंबरि नरेश्वर सरोवरतणी पालि पुहुता, धजपट दीसइ ल्हलहता।

तिसिइ समइं अनेक ब्राह्मण मिलिया। कवण कवण-दुवे, त्रिवाडी, व्यास, पाठक, देवाईत, मोषाईत, सूराईत, चंद्राईत, देवशर्म्म, मोषशर्म्म, यज्ञशर्म्म, सोमशर्म्म, श्रीधर, देवधर,
20 गंगाधर, गदाधर, लक्ष्मीधर, श्रीवच्छ, पद्मनाभ, पुरुषोत्तम, प्रमुख ब्राह्मण मिलिया, शांति करिवानइ कारणि कलिकलिया। गले त्रागा, वेदध्वनि उच्चरिवा लागा। जे ब्राह्मण १८ पुराण, १८ स्मृति जाणइ। ते किस्या पुराण-भागवतपुराण १, भविष्योत्तरपुराण २, मत्स्यपुराण ३, मार्कंडेयपुराण ४, विष्णुपुराण ५, वाराह पुराण ६, शिवपुराण ७, वामनपुराण ८, ब्रह्मपुराण ९, ब्रह्मांडपुराण १०, ब्रह्मवैवर्त्तपुराण ११, अग्नेयपुराण १२, पद्मपुराण १३, लिंगपुराण १४,
25 नारदपुराण १५, स्कन्दपुराण १६ कूर्मपुराण १७, गरुडपुराण १८।

ते किसी स्मृति-मानवीस्मृति १, आत्रेयीस्मृति २, वैष्णवीस्मृति ३, हारीतकीस्मृति ४, याज्ञवल्कीस्मृति ५, शनैश्वरीस्मृति ६, अंगिरास्मृति ७, आपस्तंबीस्मृति ८, सावर्त्तकीस्मृति ९,

कात्यायनीस्मृति १०, ब्रहस्पतीस्मृति ११, पारासरीस्मृति १२, शंखीस्मृति १३, लिखितास्मृति १४, दाक्षीस्मृति १५, गौतमीस्मृति १६, शातातपी स्मृति १७, वाशिष्ठीस्मृति १८।

तिसिइ रत्नमंजरी कुंआरि राजारहइं वीनती करावी, तिहां कुतिग जोइवा आवी। जेहतणइ परिवारि, सषी अनेकप्रकारि;—कस्तूरिका, कर्पूरिका, लीलावती, पद्मावती, चंद्रावती, चंद्रउली, चंपू, हंसी, सारसी, बगुली प्रमुख अनेक सषी वर्त्तइ। तीहं सहित तिहां आवी, पितारहइं प्रणाम नीपजावी। उत्संगि बइठी, दिव्य रूप देषी रायतणइ मनि चिंता पइठी। एह योग्य कवण वर, किं नर, किं विद्याधर, इसिउं चींतवतइं नरेश्वर, सरोवरभणी दृष्टि दीधी। तु निर्मल जलि, बइठा कमलि, हंस करइं रमलि, च्यारइ दिसि वासीइ परिमलि। कारंड कुरंज कलहंस कलगलइं, ताप टलइं। मोर वासइं, सर्प नासइ। आडि पंषीआ तरइं, ब्राह्मण स्नान करइं। माहि शतपत्र सहस्रपत्र कमलवन, दीसतां प्रीति पमाडइं मन। देहुरी दंडकलस झलहलइं, ल्हारि उछलइं। इम जोतां राजहंस एक सरोवरहूंतउ ऊडी बइठउ राजातणइं हाथि, निहालिउ नरनाथि। तु रूडउ रूपवंत, रुलीयामणउ, सोहामणउ, श्वेत लावण्योपेत। जिसिउं लक्ष्मीदेवतातणउ चमर, जीणइं मोहीयइं अमर। कुंदकुसुमस्तवकसमान, प्रधान। पक्षिकुलावतंस, इसिउ हंस। कुतिगकरी कुमारी लीधउ, राजा दीधउ। जेतलइ जोअइ कुमरी, तेतलइ हंसि जिमणी पांप [illegible]स्तारी। कुमरि पांषमाहि घाती, भलीपरि साती। ऊपडिउ हंसु, तत्काल पडिउ ध्वंसु। धस[illegible]तउ ऊठिउ राउ, कहइ धाउ धाउ, वालिउ नीसाणि घाउ। राउत पायक पलभलिया, वीर [illegible]त्रे मिलिया। धाइं राणा, ब्राह्मण घरभणी ऊजाणा। दुवे नाठा, सवे त्रिवाडी त्राठा। बुंब पडी [illegible] धायउ हंस पूठिइं जेतलइं, हंस धाई पइठउ कमलमाहि तेतलइं। जे वारू, ते पइठा [illegible]वर माहि तारू। समग्र सरोवर गाहिउ, पणि हंस न साहिउ। निश्वास मेल्ही राउ पाछउ [illegible]उ, परिघउ परिवार मिलिउ। राणी ते वात जाणी, मूर्छा पामी सप्राणी, सचेत कीधी छांटी पाणी। राजा आवासी आव्या, कन्यातणुं दुःख धरता छ मास अतिक्रमाया।

तिसिइ आविउ वसंत, हूउ शीततणउ अंत। दक्षिणदिसितणउ शीतल वाउ वाइं, विहगराइं।

"सव्वे भल्ला मासडा पण वइसाह न तुल्ल। जे दवि दाधा रूंपडां तीह माथइ फुल्ल॥"

मउरिया सहकार, चंपक उदार, वेउल वकुल, भ्रमरकुल संकुल, कलरव करइं कोकिलतणां कुल। प्रवर प्रियंगु पाडल, निर्मल जल, विकसित कमल। राता पलास, सेवंत्री वास। कुंद मुचकुंद महमहइं, नाग पुन्नाग गहगहइ। सारसतणी श्रेणि, दिसि वासीइं कुसुमरेणि। लोकतणे हाथि वीणा, वस्त्राडंबर झीणा। धवल श्रृंगार सार, मुक्ताफलतणा हार। सर्वांगसुंदर, वनमाहि रमइ भोग पुरंदर। एकि गीत गवारइं, दान दिवारइं। विचित्र वादित्र वाजइं, रमतितणां रंग छाजइं।

एकि वादिइं फूल चूटइं, वृक्षतणा पल्लव चूंटइं। हींडोलइ हींचइं, झीलता वादिइं जलिइं सींचइ। केल्हिरां कउतिग जोअइं, प्रीतमत होयइ। वनपालकि अवसर लही, वसंत अवतरियातणी वार्त्ता कही। राजा सोमदेव आव्या वनमांहि, तेह जि सरोवर देषी कुंअरि सांभली मनमांहि। तेतलइ पुरुषि एकइं तेह सरोवरहुतु एक कमल लेइ रायरहइं दीधउं, राजा हाथि लीधउं।
5 तेतलइं तेह जि कमलमध्यहूंती नीसरी रत्नमंजरी कुमरि, दीठी नरेश्वरि। दु.खतणां व्याप्त चूरिया, लोक आश्चर्य पूरिया। नगरमध्य वार्ता जणावी, राज्ञी कमललोचना आवी। दीठी बेटी, हुइ परमानंदतणी पेटी, परिवरी चेटी। तिहां मांडिया वधामणां, महोत्सवि करी सुहामणां। विचित्र वादित्र वाजिवा लागा। ते कवण कवण—वीणा, विपची,वल्लकी, नकुलेष्टी, जया, विचित्रिका, हस्तिका, करवादिनी, कुब्जिका, घोषवती, सारगी, उदंबरी, त्रिसरी,
10 झंषरी, आलविणि, छकना, रावणहत्था, ताल, कंसाल, घंट, जयघट, झालरि, उंगारि, कुरकचि, कमरउ, घाघरी, द्राक, डाक, ढाक, धूंस, नीसाण, तांबकी, कड्डआलि, सेल्लक, कांसी, पाठी, पाऊ, साष, सींगीं, मदन, काहल, भेरी, धुंकार, तरवरा, ईणिपरि मृदंग पडु पडह प्रमुप वादित्र वाज्यां, दु.ख दूरि ताज्यां। इकवीस मूर्छना, इगुणपंचास तान, इस्या हुइं गीत गान; याचक योग्य प्रधान वस्त्रदान। किस्यां ते वस्त्र—सूथिला, संग्रामा, दाडिमां, मेघवनां, पांडुरां, जादरा,
15 फालां, पीयलां, पालेवीयां, ताकसीनीयां, कपूरीयां, कस्तुरीयां, फूदडीयां, चउकडीयां, सलवलीयां, ललवलीयां, हसवडि,गजवडि,उडसाला,नर्म, पीठ, अटाण, फटाण, झूना, झामरतली, भइरव,शुद्ध भइरव,नलीबद्ध,प्रमुख वस्त्र जाणिवां। ईणिपरि महोत्सवभरि,साथि कुमरि,नरेश्वर पहुता नगरि। मनतणइ उल्लासि, आव्या आवासि। रायरहइ कुमरीतणउ स्वरूप विमासतां ऊपनी आकाशवाणी, ए वार्त्ता कहिस्यइ केवलनाणी। राजा तां आश्चर्य धरतई हुंतइं प्रधान तेडाविउ, तिहां
20 आविउ। ते प्रणाम करी बइठउ, तउ राजा बोलाविउ—हे मंत्रीश्वर विचारि, पाणिग्रहणयोग्य हुई रत्नमंजरी कुमारि। तु मंडावीयइ स्वयवर, मेलीयइं सवे नरेश्वर, कन्या आपणी इच्छाइं वरइ वर। इसिउ आलोच कीधउ, तु राजा सविहुं दूतरहइ आदेश दीधउ। जु को पृथ्वीपीठि राय नइ राणउ, तम्हे जाणउ, ते समग्र ईणि स्थानकि आणउ। तिवार पूठिइ स्वयंवरमंडप सूत्रधारपाहिं कराविवा मंडाविउ, हु तुम्हकन्हइ आविउ। हिव तुम्हे तिहां पाउधारउ, ए वीनती
25 अवधारउ, राजा सोमदेवतणइ मनि आनंद वधारउ।

इसी वार्त्ता सांभली दूतन्हइं बहुमान देतु कटक लेई राजा पृथ्वीचंद्र स्वयंवरभणी चालिउ, कटकभारि पातालि शेषनाग हालिउ। हाथीया घोडा, नहीं थोडा। किस्या ते हाथीया छइं—सिंहलद्वीपतणा, जाजनगरतणा, भद्रजातीक, उल्ललितसुंडादंड, प्रचंड, पर्वतसमान, जलधरवान, चपलकान, मदजल झरता, आलि करता, अतुलबल, उछृंखल, गलगर्जित करता

गजेंद्र सांचरिया । तरलतेजी तरवरिया । किस्या ते–हयाणा,भयाणा,कूंकणा, कास्मीरा, हयठाणा, पइठाणा, सरसईया, सीधडरा, केकाइला, जाइला, उत्तरपंथा, ताजा, तेजी, तोरका, काच्छूला, कांबोजा, भाडेजा, आरट्ट, वाल्हीकज, गांधार, चांपेय, तैतिल, त्रैगर्त्त, आर्जनेय, कांदरेय, दरद, सौवीर,क्षेत्रशुद्ध प्रमाणशुद्ध चपल सरल तरल उंचासणा परीछणा, जोयउं सहइं, वपूकारिया रहइं; वांकी द्रेठी, सभर पूठि; छोटे काने, सूधइ वानि; सइरनी ल्लवलाई, नीछटनी फलाई; पूछतणी 5 आयताई, पलाणतणी सामंत्राई; वांकी तुंडवालि, वहुली पेटवालि; मुहि रूधा, आसाणि सूधा; हसमंत हयहेपारवि अंवर वधिर करता । सूरवीर, साहसिक, काढआ, किरडिया, किहाडा, नीलडा, सेराहा, कविला, धूंसरा, मांकडा, दोरीया, वोरीया, द्वादशावर्त्तव्यंजनगुणि शोभित, शालिहोत्रशास्त्रप्रणीतलक्षणलक्षित । ससइं धसइं, साटि पइसइं; जुडइं, दउडइं; जिस्या सूर्यतणा रथ छूटा हुइ तिस्या अनेक तुरंगम साचरिया । तउ पायक पहटिया । किस्या ते 10 पायक–सूरवीर, विक्रांत, दुर्दांत, षड्ग षेडे लीधे श्रमइं, वयरीरहइं आक्रमइं । पवनवेगि पुलिइं, योधस्युं जुडइं । सेल्ल कुंत तोमर ताकइं, वयरीरहइं हाकइं । वेला लामी, न मेल्हइं स्वामी । नवनवां आयुध लिइं, एक वार आकाश पडतां घाढ दिइं । किहांई न दीसइ थाका, जीह लगइ हुइ जयपताका । जे धाइं, पुलइं, ऊच्छलइं । इस्या पायकनी मिली कोडि, जीह माहि नही पोडि । हिव रथ विस्तारिया । किस्या ते रथ–चपलतुरंगमजूता, सुखिइं सुभट चालइं माहि वइठा सूता । 15 छत्रीसे दंडायुध भरिया, वायुवेगि सांचरिया । धडहडाटि धरामंडल धंधोलइं, रजमाहि रविबिंब रोलइं । ऊपरि धज ल्हल्हइं, जाणे देवसंबंधीयां विमान गहगहइं । घांट वाजइं, वयरी भाजइं । मूर्त्तिवंता जिस्या मनोरथ, इस्या अनेक सांचरिया रथ । इणिपरि चतुरंग दल चालतां हूंतां नरेश्वररहइं वाटइं अनेक ग्राम नगर आवइं, लोक नवनवां भेटणां नीपजावइं ।

मार्गि जातां आवी एक अटवी; हिव ते किसीपरि वर्णविवी । जेह अटवीमाहि तमाल 20 ताल हंताल माल्हर खर्जूर अर्जुन चंदन चंपक वकुल विचिकिल सहकार कांचनार जांवू जंवीर वानीर कणवीर कीर केलि कदंव निंव नारिंग नालीयरि द्राष दाडिमी देवदारु अंकुल्ल कंकिल्लि नाग पुन्नाग वल्ली यूथिका मालती माधवी जपा मरुवक दमनक पारधि केतकी मुचकुंद कुंद मंदार तगर सेवत्री राजगिरि सिरीषां सींवलि सिरघू सीसमि साग टींडूसार आक- आकमंदार कपित्थ बील वहिडां करण वरण धव षदिर पलाश वड वेडस पीपल पींपरि उंवर कठंवड 25 धाहुडी धामण घीप षेजड षीरणीं कइर करंज वाउल वीजुरी आमली आंविली वोरि इंगोरि गोरडीया प्रमुख वृक्षावली दीसइं, वीहंतां सूर्यतणां किरण माहि न पइसइं । अनइं किहांइं सिवातणा फेत्कार, घूकतणा घूत्कार । व्याघ्रतणा घुरहराट, न लाभइं वाट नइ घाट । माहि वा- नरपरंपरा उछलइ, मदोन्मत्त गजेंद्र गुलगलइं, सिंहनादभयभीत मयगल पलभलइं । जिस्या

दविं दाधा षील, तिस्या भील । सूअर घुरकइं, चीत्रा बुरकइं; वेताल किलकिलइ, दावानल प्रज्वलइं, रींछ सांचरइं, विरुतणा यूथ विचरइं । इसी महारौद्र अटवी ।

तेहमाहि नरेश्वरतणा कटक न लहइ माग, न लहइ नदीतणा ताग । न सकइ चाली घोडा हाथी, न को जाणइ साथी । विषम पर्वतमाला, डावी जिमणी दवतणी ज्वाला । जई न
5 सकइं चडिया नइ पाला, तेतलइ दीसिवा लागा भील अत्यत काला । तिवारइ राजा पृथ्वीचंद्र चींतविउं–आवी विषम वेला, जई थाई भील भेला, तु किम झूझीयइं, जइ परदल न बूझीयइं । जेतलइं राजा इसिउं चींतविउं तेतलइ ते कटक अटवी ऊपरि हुई पारि पहुतुं, मनि गहगहतुं । आगलि नगर एक देषइ, ते हर्ष कुणतणइ लेषइ । सवे कटकीया लोक आश्चर्य धरइ, परस्परइ इसी वात करइ । कूणहिं काई जाणिउ, ए कटक इहा कुणि आणिउं । दैव रूठउ, पुणि देव
10 दाणव कोइ तूठउ । जीणइ एवडुं सानिध्य कीधउं, हेलामात्र कटक इहां लीधउं । अथवा राजा पृथ्वीचंद्र धन्य, जेहनुं गरूउ पुण्य । जेह कारणि इस्युं कहइ–जे गया विदेसि, पडिया क्लेशि । ताणीया पाणीनइ पूरि, आक्रम्या क्रूरि । चाप्या सघरि, डसिया विषधरि । धरियां राइ, भेल्या घणे घाइ । मुरडिया मोगे, दूहविया रोगे । ऊपाडिया बंदि, पडिया विछंदि । तीह सविहुनइं धर्मनउ आधार, ए साचउ विचार । लोकरहइं इसी वात करता राजाइं तिहां आम्रावृक्षहेठलि आव्या,
15 ऊतारा नीपजाव्या । तेतलइ धातु, पुल्तु, पाछउ जोतउ, कायरपणइ रोतउ, पुरुष एक नरेश्वर तणइ शरणि पइठउ । तेतलइ तरूआरि ताकता, हणिहणि भणी हाकता । केई पुरुष आव्या, तेहइ राजा बोलाव्या । आपु ए चोर, महाकठोर, जे एहनइं राषइ ते ढोर । तिवारइ राजातणे सेवके कहिउं–अरे ए कहीइ राजा पृथ्वीचंद्र, एहस्युं पहुची न सकइ इंद्र । तिवारइ ते पुरुष कहिवा लागा–नरेश्वर पहिलउं वात अवधारउ, तउ चोर ऊगारउ । अम्हे तलार, करउं नगर-
20 तणी सार । पुणि ए चौर, दुर्दान्त अपार । ए विविधवेसि हेरइ, बोलाविउ बोल फेरइ । चडइ मालि अटालि, पइसइ परनालि षालि । कमाड ऊघाडइ, पुणि सूतु कोइ न जगाडइ । अघोर निद्रा दिइ, कानकोटना आभरण लिइ । कटारी पायबंधन वाढइ, पर्वतप्राय केकाण काढइ । चडिउ चोर पवाडई, राउला भंडार फाडइ । दीसइ दिवसि शात, पुणि रात्रिइं साक्षात् कृतान्त । विणासीतउ न मानइ चोरी, बांधइउं वाढी जाइ दोरी । लोह सांकल त्रोडइ, घडी न रहइ षोडइ । हाकिउ
25 ऊजाइ, रुधिउं धसी धाइ । करि कीधइ करवालि, जाइ लोकलक्षविचालि । गढ मांदिर फाडइ, धीजि अडइ । इस्यु ए चोर गढनइ परनालि पइसतउ लाधउ, पाडी बाधउ । दांते दोर त्रोडि नाठउ, तुम्हनइं शरणइ पइठउ । पुणि ए पापी, जीणि प्रजा संतापी । ए तुम्ह म थापउ, अम्हरहइ आपउ । नहीं तु घायप्रहार देसिउं, प्राणिहिं लेसिउं । अम्हारउ ठाकुर सपराणउ, तेह आगलि न कोई राय नइ राणउ । साभलउ ए वात–ए आगलि दीसइ पद्मपुरनगर महाविख्यात ।

तिहां छइ राजा समरकेतु, अतिसचेतु, वयरी प्रति साक्षात् केतु। जेतलइ तेउ ए वात जाणिसिइ, तेतलइं ताहरा अहंकारतणउं अंत आणिसिइ । एह कारणि चोर आपी निर्दोष थाउ, पछइ तुम्हे भावइ तिहां जाउ । इसी वार्त्ता सांभली आपणां सुभटसाम्हउं जोई राजा पृथ्वीचंद्र हस्या, तउ ते सुभट उल्हस्या । ऊठिया ते वीर, ताकवा लागा तोमर तीर । नाठा तलार, नासता पूठिइं वाजइ प्रहार। नीठ ते जई नगरमाहि पइठा, तु नाभिइं सास वइठा। जइ वीनविउ समरकेतु राउ, देषाडइं आपणउ घाउ। समरकेतु राजा कीधउ कोप, हूउ दलवई निरोप। तत्काल सामहिउं दल, मिलइं सुभट सवल। वाजइं प्रयाणभेरी, वीहइं वयरी। पाटहस्ति गुडिउ, तेहऊपरि राजा चाडिउ। रथ हथियारे भरिया, तुरंगम पापरिया, पायक सांचरिया। चतुरंग दल नीकलिउं, बाहिरि एकठउं मिलिउं। दीसइं छत्रध्वज, ऊछलइं रज। तउ तेह दूत मोकलिउ तिहां रही, तीणें पृथ्वीचंद्रप्रतिइं इसी वात कही। तुं पियारइ देसि पइस, अन्याय करी इहां बयस। तउ तुं अजाण, अजी मानि स्वामीसमरकेतुतणी आण, नहीं तु प्रकटि प्राण। चोरदंड तुझनइ होसिइं, लोक कउतिग जोइसिइं । ईणइं वातइं दूत अपमानी वाहिरि काढी राजा पृथ्वीचंद्रि दल सामहाविउं, ए आपणइं पर्व आविउं । चाल्यां वेउ दल, ऊपडइं धूलिपडल। कोइ आप पर विभाग बूझवइ नहीं, पितापुत्र सूझइ नहीं। न जाणीइं आपणां दल, न जाणीइ पिरायुं दल। न जाणीयइ भूतल, न जाणीइ नभोमंडल। न जाणीइ पूर्व, न जाणीइ पश्चिम; एकाकार हूउ। विहुं दल मिलते मादल वाजी, जयढक्क वाजी, रणचडण काहली वाजी, रणतूर वाजियां। त्र्यंबकतणे त्रहत्रहाटि जाणे त्रिन्हइ त्रिभुवन टलवलिवा लागा, भेरीतणे भूंभूयाटि भुहि भिलिहि फाटी, काहलतणे कोलाहले कायर कमकम्या, नीसाणतणे निनादि उच्चैः श्रवा ऊकनिउ, ऐरावण ऊमंडिउ, दिग्गज डहडहिया, ढाकबूक वाजी, बुंबारव फाटी, विहुं दलि चालते सेषनाग सलवलिउ, कुलाचलचक्र चलिउ। कूर्म्म करोडि भाजइ। अंबर गाजइ अकालि अप्रस्तावि प्रलयकालनी शंका हुई। वाध्या क्रोध, झूझइं योध। घाय नालवइं, छत्रीस दंडायुध चालवइं। किस्यां ते—वज्र १, चक्र २, धनुष ३, अंकूश ४, पङ्ग ५, छुरिका ६, तोमर ७, कुंत ८. त्रिशूल ९, भाला १०, भिंडमाल ११, मुसंढि १२, मक्षिक १३, मुद्गर १४, अरल १५, हल १६, परशु, १७, पट्टि १८, शविष्ट १९, कणय २०, कंपन २१, कर्त्तरी २२, तरवारि २३, कुद्दाल २४, दुस्फोट २५, गदा २६, प्रलय २७, काल २८, नाराच २९, पाश ३०, फल ३१, यंत्र ३२, द्रस ३३, दंड ३४, लगड ३५ कटारी ३६, वहि। इस्यां हथीआर झलहलइं, कायर पुलइं । रथ जूडंता दूरापाती लघुसंधानी शब्दवेधी धनुर्धर धाया, बाण मेल्हते आकाश छाया। एकि घोडे चडइ, एकि ऊतावला पडइं, कायर रडइं. सुभट भिडइं, योध जुडइं। घोडा मुह मूकी धाइं, त्रूटे पगि ऊ जाइंः हस्तीतणा सुंडादंड त्रूटइं, एकिना

शिर फूटइं । इसिइ युद्धि प्रवर्त्ततइ हुंतइ राजा पृथ्वीचंद्रतणुं दल वयरीए एकवार भागूं, नासिवा लागूं । समरकेत हूउ सानंद, पृथ्वीचंद्र हूउ निरानद, चींतवइ ए किसी वात, माहरा दलरहइं कांइ हूउ उपघात । राजा चींतवतइ हूंतइ वीर एक आकाशमार्गि आविउ, तीणइ कउतिग नींपजाविउ । तीणं दीठइ वयरीना हाथतु हथियार पडियां, पृथ्वीचंद्रना कटकरहइं 5 चाडियां । राजासमरकेतु बांधी पृथ्वीचंद्रतणे पगतली आणिउ, पुण ते वीर तिवारपूठिइ कुणही न जाणिउ । तत्काल जयजयारव ऊछलिउ, राजापृथ्वीचंद्रतणउ वीरवर्ग मिलिउ ।

इति श्रीअंचलगच्छे श्रीमाणिक्यसुंदरसूरिविरचिते श्रीपृथ्वीचंद्रचरित्रे
द्वितीयोल्लास.

तृतीयोल्लासः

---

10 जइ मान मोडिउ, तउ समरकेतु बंधहूंतउ छोडिउ; पिहरावी बोलावीउ । तु मनि गर्व आणे, माहरी वात न जाणे । किवारइ सूर्य पूर्व छाडी पश्चिम उदय मांडइ, समुद्र मर्यादा छांडइ मेरु ढलइ, आकाशतउ नक्षत्रराशि गलइ, पापीयाघरि धर्म्म पलइ, पाणीमाहि अग्नि प्रज्वलइं, धूमंडल षलभलइं, कुलाचलचक्र चलइ, अमृतहूतउ विष थाइ, पृथ्वी रसाताल जाइ, कृपणि दान दीजइ, पुणि मुझकन्हइ प्राणि शरणागत चोरइ किम लीजइ । तिवारइं जे आविउ छइ 15 शरणि, ते लागु राजातणे चरणि । स्वामी तुं धन्य जीणि तइ हुं ऊगारिउ, नहीं तु तलारे हूतु मारिउ । पडतउ ससारि, होयत मनुष्यजन्मतणी हारि । राजा कहिउं तु किसिउ, जेहनुं मन इसिउं । विचारि ते कहिवा लागु । अंगदेशि श्रीपुरिनिगर, तिहा श्रेष्ठि लक्ष्मीधर, श्रीलक्ष्मीइ सधर । तेहतणु पुत्र हुं श्रीपति, पणि विषम देवगति । दसकोडि द्रव्य हूंती, पणि बापुजीसाथि पहुती । पिता परोक्ष हूआ पूठिइ ज वाहणमाहि घातिउं, तं समुद्र सातिउ । कई वाणउत्रे ग्रसिउ, 20 हाट चोरे मुसिउं । थल्वटनउं थल्वटइ रहिउ, काई ठाकुर ग्रहिउ । घर बलिउं, समग्र मंडाण टलिउ । समग्र द्रव्य निस्तरिउ, एकलक्ष द्रव्य ऊगरिउ । पछइ अवर काजकाम छांडिउ, प्रवहण पूरिवा माडिउ । भलइ दिवसि प्रवहण पूरिउ । त्रिन्नि सइं साठि कियाणां चडाव्या, सप्तविध पकवान चडाव्यां, सप्तविध करंवा लिया, पोता सपाणी भरिया, देवसमुद्र वायस पूजाव्या । पाभिल मादल वाजिवा लागां, वावारि कोलणि नाचेवा लागी, गलेला हेलाहेल करवा लागा । 25 कूउपंभउ ऊभउ कीधउ, नांगर ऊपाडिउ, सिढ ताडिउ, घामतीउ घामत उलीचइवा लागु, वाऊरीऊ तलि पइठउ, नीजामउ नालि बइटउ । आउलां पडइं, सूकाणी सूकाण चालवइ, मालिम

वाहण जालवइं, सुरवर ल्हलह्या, वादित्रनादि समुद्र गाजी रह्या। हिव आगलि जातां हूंता चिलीवाय वायां, आकाशि हूई मेघछाया। ऊडिउ पवन प्रवल, समुद्र हूउ उच्छृंखल। कल्लोल आकाशि ऊपडइं, वीहतां लोकरहइं डींबा चडइं। वेला लामी, वस्तु वामी। एक, हा दैव! करइ, एक देवध्यान धरइं। वाहण पर्वति आफली भागउं, श्रीपतिइ हाथि पाटीउ लागउं। तेहनइ आधारि तरतउ तरतउ, त्रिहु दिवसि पारि आविउ। वनमाहि सरोवारि जल पीउ, फलभक्षण नीपजाविउ। आगलि जाता दीठउ योगी एक, मइं साचविउ नमस्कारतणउ विवेक। जोगी कहिउं तूरहिइ एक देसु, बीजउ लेइसु। मइं कहिउं दिइ, पछइ मुज निर्द्धनकन्हइं जं देषइ तं लहिइं। जोगी बंधछोडणी विद्या देई मस्तिक मागिउं, मइं चींतवइउं, वली पूर्वभवपातक जागिउं। जोगी धायु पूठि, मइं नासिवा बांधी मूठि। नासतु इणि नगरि आवी रात्रिइं गढ-तणइ षालि पयसी रहिउ, तलारके ग्रहिउ। तइं रापिउ, मोटउ उपगार दाषिउ। 10

" छासिइं केरउ आफरु, दासिइ केरु नेह।
कंवलकेरु मोलीउं, पिसत न लागइ षेव॥ "

माहरी लक्ष्मी इहसरीषी हुई। तउ कहीइ—आभतणी छांह, कुपुरिसतणी वांह, आढनउ तूर, नदीनूं पूर, ठाकुरनउ प्रसाद, माकडनउ विषाद, वहीनउ पडीगणउं, सूपडानउ उठीगणउं, दीवानु तेज, मात्रेईनु हेज, दासीनु स्नेह, शरदकालनु मेह, थोडा मेहनउ त्रेह, वहिलउ आवइ छेह। लक्ष्मीतणउं त न्याय नीपनउं, हिव वैराग्य ऊपनउं। तापसदीक्षा लेसु हिव, जिम हुइ सदा सिव। 15

हिव समरकेतु राजा ते वार्त्ता सांभली मनि वैराग्य पामिउं, राजापृथ्वीचंद्रप्रतिइं शिरु नामिउ। अनइ इसी वात कही, ताहरु पुण्य अद्भुत सही। तूरहिइ कोइ अदृष्ट देवता सानिध्य करइ, सर्व विघ्न हरइ। ताहरुं अद्भुत भाग्य, मुझनइ ऊपनुं वैराग्य। विमासी जोयुं तउ असार संसार। जिशिउं पीपलनुं पान, जिशिउं गजेन्द्रनुं कान, जिशिउ संध्यानु राग, जिशिउ भमरीनु पाग, जिशिउ मांकडनु वैराग, जिसिउ वीजनु झवकु, जिसिउ पोइणिनइ पाति पाणीनउ टवकउ, जिशिउ समुद्रनु कल्लोल, जिशिउ धजनु अंचल, तिसिउ संसार चंचल। तुं एक कहिउं करि, माहरुं राज्य अंगीकारि। हउं तापसी दीक्षा लेसु, तप करिसु, संसार तरिसु। पृथ्वीचंद्रि तीहं विहुप्रति कहिउं—तुम्हे करुवउ धर्म, पणि नथी जाणता मर्म। सांभलउ—वन ते वर्णवीइ जे वृक्षवंत, नदी ते जे नीरवंत, कटक ते जे वीरवंत, सरोवर ते जे कमलवंत, मेघ ते जे समावंत, महात्मा ते जे क्षमावंत, प्रासाद ते जे ध्वजावंत, वाट ते जे यूथवंत, हाट ते जे वस्तुवत, घाट ते जे सुवर्णवंत, भाट ते जे वचनवंत, मठ ते जे मूनिवंत, गढ ते जे अभंगवंत, देव ते जे अरागवंत, गुरु ते जे क्रियावंत, वचन ते जे सत्यवंत, शिष्य ते जे विनयवंत, 20 25

मनुष्य ते जे धर्मवंत, तुरंगम ते जे तेजवंत, हस्ती ते जे भद्रजातिवंत, प्रधान ते जे बुद्धिवंत, कर ते जे चायवत, राय ते जे न्यायवंत, व्यवहारीया ते जे मयावंत, धर्मी ते जे दयावंत। अहो महाभागउ, हीयाने लोचने जागउ। जेतलं अंतर राणी अनइ दासि, जेतलं अंतर दही नइ छासि, जेतलं अंतर मधुरध्वनि नइ घासि, जेतलं अंतर समुद्र नइ कूया, जेतलं अंतर
5 सोनईया नइ रूया, जेतलं अंतर बाप नइ फूया, जेतलं अंतर नरेश्वर नइ आहीर, जेतलं अंतर रूपा नइ कथीर, जेतलं अंतर सुवर्ण नइ माटी, जेतलं अंतर वारू भीति नइ त्राटी, जेतलं अतर पटउला नइ छाटी, जेतलं अंतर पडसूत्र नइ सूतली, जेतलं अंतर जीवता माणस नइ पूतली, जेतलं अंतर खड्ग नइ छुरी, जेतलं अंतर तंदुल नइ बुरी, जेतलं अंतर सूर्य नइ तारा, जेतलं अंतर साकर नइ षारा, जेतलं अंतर सीह नइ सीआल, जेतलं अंतर प्रभात नइ वीआल,
10 जेतलं अंतर रूंगा नइ राग, जेतलं अंतर सींबलि नइ साग, जेतलं अंतर अलसला नइ नाग, जेतलं अंतर हंस नइ काग, जेतलइ लूण नइ कपूर, जेतलइ षजूया नइ सूर, जेतलइ डाकिली नइ तूर, जेतलइ खाल नइ गंगापूर, जेतलइ साधु नइ चोर, जेतलइ हार नइ दोर, जेतलइ गजेंद्र नइ ससा, जेतलइ गुरुड नइ मसा, जेतलइ कोडि नइ सवा विशा, जेतलइ काविला घाट नइ गोहीस, जेतलइ मोटा वृक्ष नइ रोहीस, जेतलइ व्यवसाय नइ कुठाकुर सेव, तेतलं
15 अंतर अपर देवत अनइ श्रीसर्वज्ञदेव।

एह कारणि इसिउ मनि निश्चयु आणिवउ। जिम श्री सूर्यपाषइ दिवस नही, पुण्यपाषइ सौख्य नही, पुत्रपाषइ कुल नहीं, गुरूपदेशपाषइ विद्या नही, हृदयशुद्धिपाषइ धर्म नही, भोजनपाषइ त्रिपति नही, साहसपाषइ सिद्धि नही, कुलस्त्रीपाषइ घर नही, वृष्टिपाषइ सुभीक्ष नही, तिम श्रीवीतराग पाषइ मुगति नही। अनइ जिहां हिंसा, तिहा नही धर्मतणी प्रशंसा।
20 जेह कारणि इसिउं कहिइ—जिम विलंब विणसइ काज, कुठाकुरि विणसइ राज, मार्जारि प्रचारि विणसइ छाज, अणबोलिइं विणसइ व्याज, पडपि विणसइ दान, कुसंगति विणसइ संतान, स्वरपाषइ विणसइ गान, लइ विणसइ मउपान, व्याधिइं विणसइ वान, कुमरणि विणसइ अवसान, कुपंडित विणसइ छात्र, क्षयणि विणसइ गात्र, पीपलि विणसइ प्रासाद, सिंदूरि विणसइ साद, आकदूधि विणसइ नेत्र, तीडे विणसइ नीपनु क्षेत्र, चीभडी विणसइ कणकनु
25 वाक, विषइप्रयोगि विणसइ रसवतीतणउ पाक, वरसालइ विणसइ शस्त्र, षयरी विणसइ वस्त्र, जिम कुव्यसनि विणसइ सत्कर्म, तिम जीवहिंसा विणसइ धर्म। राजा पृथ्वीचद्र समरकेतु श्रीपतिप्रतिइ कहिइ छइ—सांभलउ परमार्थ हेव, टालिउ मिथ्यात्वतणी टेव, आदरु दयाधर्म नइ श्रीअरिहंत देव, करउ सद्गुरुनी सेव, जिम टलइ पापकर्मतणा लेव।

ए वार्त्ता सांभली तीह विहुरहिड मिथ्यात्वतणी भ्रांति टली, जैनदीक्षा लेवा हुई मनि

रली। तेतलइ भाग्ययोगि दैवसंयोगिइं चारण श्रमण माहत्मा एक तिहां आविउ, नेहे सविहु तेहरहइं प्रणाम नीपजाविउ । पगि लागी, दीक्षा मागी। तीणि दीधी, वांछितवार्त्ता सीधी। तिवारपूठिइं तेहे ऋषींश्वरे राजा मोकलावी विहारक्रम कीधु, नरेश्वरि आघउ पीयाणउ दीधउ। पहिलं पहुतु पद्मपुरि, लोक हर्ष पमाडिया भलीपरि। तिहां परमहंस प्रधान स्थापिउ, कर्णवारनु भार आपिउ। हिव राजा पृथ्वीचंद्र तेह नगरहूंता सात पीयाणे अयोध्या नगरी पहुता, स्वयंवरि आविया दीठा राय सवे गहगहता। राजा सोमदेवि साम्हइं आवी महोत्सवि करी माहि लिया, भला ऊतारा दिया। तेतलइं सूत्रहारे स्वयंवरमंडप नीपायु, पोयणिने पाने छायु। कपूर कस्तूरी महमहइं, ऊपरि ध्वज लहलहइं। चंद्रूआतणी विचित्राइ, पूतलीतणी काविलाई। थंभकुंभीतणा मनोहर घाट, पठइ भाट। रत्नमई तोरण नइ मोतीसारि, अलंकरिउ कुसुमतणे प्रकरि। वादित्र वाजइं, मांगलिक्यगीत छाजइं। आरीसा झलकइं, चालतां स्त्रीना नेउर पलकइं। इसिइ मंडपि राययोग्य मांड्यां नामांकित सिंहासण, मागणहारनइं पगि पगि दीजइ वासण। तु राजा सोमदेव दूत सांचरिया, ऊतारे फिरिया। राय सविहुं योग्य आकारण नीपजाव्या; मोटे आडंवरि समग्र नरेश्वर मंडपमाहि आव्या। जिस्या देवलोकसंबंधीया हुइं देव, तिस्या दीसइं सवि नरेश्वर सिंहासणि बइठा हेव। तिसिइ अवसरि राजा पृथ्वीचंद्र, जिसिउ साक्षात् हुइ इंद्र। इसिउ आवी स्वयंवरि सभामाहि बइठउ, सविहुं रायतणे मनि इसिउ शंकाभाव पइठउ। जं एउ सही कन्या वरिसिइ, अम्हारउं आविवउं किसिइ करिसिइ। राजातणइ मस्तकि छत्र, अनइ चमर ढलइं पवित्र। राजा पृथ्वीचंद्र देषी सकललोक इसिउं विमासइं–जिम अक्षरमाहि ओंकार, मंत्रमाहि ह्रींकार, गंधर्वमाहि तुंवरु, वृक्षमाहि सुरतरु, सुगंधवस्तुमाहि कपूर, वस्त्रमाहि पाटणनउं चीर, वीरमाहि शुद्रकवीर, गढमाहि कालिजरु, षाणिमाहि वइरागरु, द्वीपमाहि जंवुद्वीप, प्रदीपमाहि रत्नप्रदीप, पवर्तमाहि मेरुभूधर, जीवनहेतुमाहि जलधर, जिम हस्तीमाहि ऐरावण, मंडलेश्वरमाहि रावण, तुरंगममाहि उच्चैःश्रवा तुरंग, हरिणमाहि कस्तूरीउ कुरंग, धवलमाहि वृषभ, प्रशस्यदिशिमाहि उत्तरककुभ, अचलमाहि ध्रूमंडल, क्षमावंतमाहि भूमंडल, जिम नागमाहि शेषनाग, रागमाहि श्रीराग, जिम ध्यानमाहि शुक्ल ध्यान, दानमाहि अभयदान, मंत्रीश्वरमाहि अभयकुमार प्रधान, पानमाहि नागरखंडउ पान, ज्ञानमाहि केवलज्ञान, विमानमाहि सवार्थसिद्धि विमान, गरूआमाहि गगन, पवित्रमाहि पवन, दर्शनमाहि जैनदर्शन; जिम देवमाहि इंद्र, ग्रहगणिमाहि चंद्र, तिसिउ सविहुं रायमाहि दीसइ पृथ्वीचंद्र नरेंद्र।

तिवार पूठिइं राजा सोमदेवि प्रतीहारपाहि कन्यारहइं तेडउ दिवराविउ, तउ सधव स्त्रीए धवलमंगलपूर्व कन्याम्हइं मांगलिक स्नान कराविउं। अंगरूक्षण अनंतर कन्या सदश श्वेत कपड पहिरियां, आभरणे अंग उपांग अलंकरियां। किस्यां किस्यां ते आभरण–हार, अर्द्धहार,

त्रिसर, प्रालंब, प्रलंब, कटीसूत्र, कांची, कलाप, रसना, किरीट, मुकुट, पट्ट, शेपर, चूडामणि, मुद्रिका, तबक, दशमुद्रिका, केयूर, कटक, कंकण, ग्रैवेयक, अंगुलीयक, अगुस्थल, हेमजाल, मणिजाल, रत्नजाल, गोपुच्छक, उरस्त्रिक, चित्रक, तिलक, कुडल, अभ्रमेचक, कर्णपीठ, हस्त-संकली, नूपुर प्रमुख आभरण जाणिवा । ईहमाहि स्त्री योग्याभरणि कन्या हुई अलंकृतगात्र, 5 हुई रूपतणउ पात्र, मस्तकि धरियां सीकिरितिणां छात्र । कन्यातणइ सिरि सिंदूरि भरिउ माग, मुखि ताबुलराग । आविउं नरविमान, तीणि चडी ते चाली देवांगनासमान, आगलि हुइ वादित्रध्वनि अनइ गीत गान । ईणिइं परिइं सकललोकन्हइ आश्चर्य करती, हाथि वरमाला धरती, महोत्सवसहित कुमरि, पहुती मंडपतणइ द्वारि । ते देषी नरेश्वर सवे मकरध्वजइ मनाविया हारि, चींतवइ ए रंभा कि तिलोत्तमातणइ अवतारि । तेहतणा पाणिग्रहणतणी वाछा 10 धरइं, विविध चेष्टा करइ । एकि राय आपणा हीयानउ हार हलावइ, एकि बाहतणा वहिरपा चलावइं, एकि रत्नमय दडा ऊलालइं, एकि छुरी ऊछालइं, एकि मित्रसिउं वार्त्तालाप माडइं, एकि दृष्टिरहइ विनोद ऊपजावइ क्षणु एकि षाडइं, एकि संभालइ कानि कुंडल, ईणिपरि त्रिविध चेष्टा करइ राजमंडल । तिसि समइ जि जोइवा आव्या आकाश देव अनइ दानव, पृथ्वीपीठि संख्या नही मानव । मिलिया सिद्ध अनइ किंनर, संख्या नहीं विद्याधर । हिव 15 कन्या आभरणि तेजि उल्लसती, रंभारहइं हसती, स्वयंवरमंडपमाहि आवी, तु यशोधरा इसिइं नामिइ प्रतीहारीइ बोलावी । अहे कुमरि, अद्भुत गुण ताहरा संसारि, जेहे आकर्षिया हुंता आसमुद्रातपृथ्वीतणा राय मिलिया, इसिउं जाणिउं जेहरइ तु वरसि तेहना मनोवाछित पासा ढलिया, मनोरथ फलिया ।

हिव जोइ तुझ आगलि दसलक्ष मगधदेसतणउ नरेश्वर, सहिजिइं अलवेश्वर, राजगृह-20 नगरतणउ राजा मकरध्वज इसिइ नामि दीसइ । जेह राजातणइं कृपाणि राज्यलक्ष्मी वसइ, मुखि सरस्वती उल्लसइ । तूठउ दारिद्य हरइ, दीठउ आनंद करइ । रणांगणि गयवरतणी गुडि गाजइ, शत्रुभट भाजइ । इस्यु भूपाल, एहतणइ कंठि घाति वरमाल । अथवा ए जोइ वाणार-सीतणउ राउ, भांजइ वयरीतणउ भडिवाउ । ए सरागदृष्टि अवलोकि, जेहतणउ प्रताप प्रसिद्धउ त्रिहुं लोकि । जेहतणइ गजदलि चालतइ हुंतइ इन्द्रन्हइ सपक्षपर्वततणी शंका नीपजइ । 25 जेहतणइ तरलतुरगमि प्रसरतइ हुंतइ वइरीरहइ प्रलयकालोद्धतसमुद्रकल्लोलतणी शंका नीपजइ । इसिउ प्रचंडबल, अखंडभुजबल, अकल, सकल, कर्मचंद्रनामा नरेश्वर वरि, माहरुं कहिउ करि । अथवा विदर्भदेस कुंडिनपुरनगरीतणउ नरपति निहालि, जे विषमकालि; वहइ कर्णदाने-श्वरतणउ अवतार, धनुर्धरपणइ हरइ अर्जुनतणउ कार्तिप्राग्भार, जेहतणइ अतुल भंडार, प्रबल कोठार, झझारतणउ नही पार, करइ शत्रुसंहार, करइ भद्र कइवार, मलाइवार, महाउदार, कठि

वरमाल घाती ए मकरध्वज राजा अंगीकरि भर्त्तार । अथवा गौडदेस हंसपुरपाटणनु स्वामी सिंहरथराजा जोइ, जीणि दीठइ आणंद होइ। जेह राजा संबंधीयइ कुंद-मचकुंद-कुमुद-केतकी-कर्पूरधवलि कीर्ति मंडलि प्रसरतइ हुंतइं नवी सृष्टि स्थापी, तं अंजनाचलपर्वतरहइ कैलास-पर्वततणी पदवी आपी । यमुनातणइ स्थानाकि कीधउ गंगाप्रवाहु, मित्र कीधा चंद्र नइ राहु । सरीषा कीधा हार नइ नाग, अंतर टालिउं वग नइ काग । ईश्वरन्हइं नीलकंठपणउं टालिउं, 5 विष्णुन्हइं कृष्णपणउं पखालिउं, बलदेव बांधवपणउं उजुआलिउं । ईणिपरि जीणि ब्रह्मातणी सृष्टि फेरी, तेहनी किसी वात वषाणीयइ अनेरी । इसिउ अलवेश्वर, सिंहरथ नरेश्वर, करि तुं आपणउ जीवितेश्वर । ईणिपरि तीणइं प्रतीहारियइं राजा हरिकेतु सिंहकेतु मकरकेतु धूमकेतु पद्मरथ वीर्यबाहु सुवर्णबाहु शंखध्वज पद्मदेव पद्मानंद क्षेमंकर पृथ्वीधर सुबाहु रत्नांगद हेमांगद हेमरथ मणिरथ मणिशेषर रत्नशेखर चंद्रसोम सोमप्रभ सूरप्रभ प्रमुख नरेश्वर वर्णव्या वषाण्या, 10 पणि रत्नमंजरी कुंअरि मनइमाहि ना आण्या ।

हिव आगलि दीठउ राजा पृथ्वीचंद्र, निहालिउ तेहतणउ मुषचंद्र । ऊल्टिउ आनंद-सागर, मनि चीतवइ एउ सही गुणतणउ आगर । तिवारइं प्रतीहारीयइं कहिउं—हे कुमरि सांभलि, पुरा-पूर्वइं सगर चक्रवर्ति हूउ विख्यात वसुधातलि । जेह सगरचक्रवर्तितणइ चउरासी लाष हस्ती, जीहतणि गति महाप्रशस्ती। चउरासी लाष तुरंग, ऊछलता जिस्या हुइं 15 कुरंग; चउरासी लाष रथ सहिजिइं सुरंग। चउरासी लाष नीसाण वाजइं, वयरीना भडवाउ भाजइ । अत्यत अभिराम, छन्नू कोडि ग्राम। गाम घोडउं काढतां छन्नू कोडि साहण मिलइं, छन्नू कोडि पायक कलकलइं । चऊद सहस्र संबाध, चऊद सहस्र अमात्य अत्यंत साधु । जेहनइ चउद रत्न, देवता करइ यत्न । नव निधान, बहुत्तरि सहस्र नगर प्रधान। अन्यायरहइं दाटण, अडतालीस सहस्र पाटण। जेहे वसइं अनेक कुडुंब, इस्या चउवीस सहस्र मडंब। 20 जीहना वर्णनतणी कीजइ छेड, इस्या सोलसहस्र षेड। जेह चक्रवर्तितणइ सवाकोडि व्यापारी, रिद्धि अत्यंत सारी । चरणि रुणझुणइ नेउर, इस्या चउसट्ठि सहस्र अंतेउर । विहितोल्लास, अठावीसउ लाष पिडविलास । वत्तीससहस्र राय, प्रभाति प्रणमइं पाय। प्रत्यक्ष पंचवीससहस्र यक्ष। वीस सहस्र सोनारूपातणा आगर, नवकोडि ध्वजाधर । छत्रीस लाष दीवटीया उदार, त्रिन्निसइं साठि सूआर। एवंविध प्रचंड भुजदंड, साधित भरतक्षेत्रषट्षंड। निरुपमस्फूर्त्ति, 25 अद्भुतमूर्त्ति, इसिउ हूउ सगर चक्रवर्त्ति । हिव भगीरथ राजा हूउ सगरतणउ पुत्र, जिणइं गंगा समुद्रि घाती राषिउ आपणउं चरित्र । तीणइ राज्य पालिउ अनेक कोडिवरस, तेहनइ पुत्र हूआ दस । तेहमाहिइ एकरहइं कुंतल इसिउं नाम, तेह कुंतलरहइं दीधउं मरहठदेसि ठाम । तेह कुंतलतणइ वंसि जयवंत जयध्वज देवचंद्र देवानीक प्रमुख राय हूआ, तेहना

प्रघट्टक कुणइ वर्णवाइ जूजुया। देवानीकतणउ पुत्र हूउ राजा पृथ्वीशेपर। जीणि पुहिठाणपुर पाटण थापिउं, स्वर्गतणउं दर्शन प्रत्यक्ष आपिउ। हिव मधुरवाणि, तेहतणउ राजा पृथ्वीचंद्र जाणि। एउ नरेश्वर, ऐश्वर्यगुणि साक्षात् सुरेश्वर, धैर्यगुणि मेरु महधिरु, दानिगुणि नवीन जलधर, गाभीर्यगुणि क्षीरसागर। निर्मलपणइ गंगाजल, सौम्यपणइ शशिमंडल। रूपिगुणि
5 अश्विनीकुमार, परकलत्रपरिहरणगुणि गागेयतणउ अवतार। विवेकगुणि राजहंस, चातुर्यगुणि बृहस्पतितिणीपरि लब्धप्रशंस। पृथ्वीभारवहणि शेषनाग, एह ऊपरि धरि तु अनुराग, इहा छइ ताहरउ लाग। घणउ किसिउ कहीई—एह राजा विक्रमाक्रातक्षोणीमंडल, शौर्यश्रीवदनारविंद-प्रद्योतन, सकलमहीपालर्लीलाललितशासन, पालितश्रीजिनशासन, तुज वरिवा योग्य छइ। ते रत्नमंजरी कुमारि प्रतीहारितणां इस्यां वचन साभली अगि रोमाच धरती, नेउरतणा झमझम-
10 कार करती, हर्षभर वहती, राजाढूकडी पुहती। लाज ठेली, कंठकंदलि वरमाल मेल्ही। तत्काल जयजयारव ऊछलिया, लोक कलकल्या। विद्याधर पुप्पवृष्टि करइं, भट्ट जयजयशब्द उच्चरइं। गंधर्व गीत गाइं, वादित्रीया वादित्र वाइ। वापरइ धवलमगल, हुइ महामहोत्सव विपुल।

इति श्रीअंचलगच्छे श्रीमाणिक्यसुन्दरसूरिकृते श्रीपृथ्वीचन्द्रचरित्रे वाग्विलासे तृतीय उल्लास.।

15
चतुर्थ उल्लासः

हिव तिसिइ अवसारि तेह राजालोकमाहि जे धूमकेतु राजा कहिउ तेहरहइं धूमकेतु-देवतणउ मंत्र स्फुरइ, तीणइ जं चींतवइ तं करइ। धूमकेतुदेव अठ्यासीग्रहमाहिलउ जांणि-वउ। कवण कवण—अगारक १, विकालिक २, लोहिताक्ष ३, शनश्चर ४, आधुनिक ५, प्राधुनिक ६, कण ७, कणकणक ८, कणक ९, वितानक १०, कणसतानक ११, सोम
20 १२, सहित १३, अश्वासन १४, रुत १५, कार्योपग १६, कर्बुरक १७, अजकरण १८, दुंदुभक १९, शख २०, शखनाभ २१, शखवर्णाभ २२, कंस २३, कसनाभ २४, कंसवर्णाभ २५, नील २६, नीलावभास २७, रुप्य २८, रुप्यावभास २९, भस्मक ३०, भस्मराशि ३१, तिल ३२, तिलपुष्पवर्ण ३३, दक ३४, दकवर्ण ३५, काय ३६, वंध्य ३७, इद्राग्नि ३८, धूमकेतु ३९, हरि ४०, पिंगल ४१, बुध ४२, शुक्र ४३, बृहस्पति

४४, राहु ४५, अगस्ति ४६, माणव ४७, कामस्पर्श ४८, धुर ४९, प्रमुख ५०, विकट ५१, विसंधिकल्प ५२, प्रकल्प ५३, जटाल ५४, अरुण ५५, अग्नि ५६, काल ५७, महाकाल ५८, स्वस्तिक ५९, सौवस्तिक ६०, वर्द्धमान ६१, प्रलंब ६२, निल्यालोक ६३, नित्योद्योत ६४, स्वयंप्रभु ६५, अवभास ६६, श्रेयंकर ६७, क्षेमंकर ६८, आरंभकर ६९, प्रभंकर ७०, अरजा ७१, विरजा ७२, अशोक ७३, वीतशोक ७४, वितत ७५, विवस्त्र ७६, विशाल ७७, शाल ७८, सुव्रत ७९, अनिवृत्ति ८०, एकजटी ८१, द्विजटी ८२, कर ८३, करिक ८४, राजा ८५, अर्गल ८६, पुप्प ८७, भावकेतु ८८ । इह अठ्यासी-ग्रहमाहि धूमकेतु जाणिवउ ।

जिवारइ पृथ्वीचंद्रराजातणइ कंठि वरमाला पडी, तेतलइ धूमकेतुराजान्हइं रीस चडी । रोसें हूउ विकराल, धूमकेतुदेवतातणउ मंत्र स्मरीनइ ऊलालिउं करवाल । ते खड्ग फीटी हूउ वेताल, जे उंचउ नवताल, कंठावलंबितरुंडमाल, करतलि कपाल, बुभुक्षाभिभूत, जिसिउ यमदूत, कान टापरा, पग छापरा, आंषि ऊंडी, पेटि कूंडि, आपि राती, हाथि काती, विकराल वेश, मोकला केश, हडहडाटि हसइ, धरामंडलि धसइ। मस्तकि अंगीठउ वलइ, भैरव जिम कलकलइ। इसिउं रूद्र रूप, केतलूं वषाणीयइ तेहनूं स्वरूप । इसिउ वेताल देषी सहू भयभ्रांत हूउ । तेतलइं धूमकेतुराजा ऊठी कन्या उपाडी रथि घातिवा लागउ । तेतलइ राय राणा धसमसिवा लागा । तेतलइं तेह जि वेतालहूंतउ अंधकार प्रसरिउं । जीणइं अंधकारि प्रसरतइं हुंतइं अवर कवण लेखइ, कोई आपणी छाह न देषइ । गजेंद्र गलगलारवि जाणीयइं, रथचक्र चीत्कारपणइं जाणीयइं, चिंधपताका किंकिणीक्वाणि करी जाणीयइं, तूर्य शब्दि करी जाणीयइं, नींसाण द्रहद्रहाटि जाणीयइं । इसिउ अंधकार विपहर दिवसतणा, च्यारि प्रहर रात्रितणा; छप्रहर गर्भवास सरीषुं प्रवर्तिउं ।

हिव हूउ प्रभात, फीटी राक्षसनी वात, टलिउ अंधकारव्रात, अदृश्य नक्षत्रपटल, गगन उज्ज्वल, निःशब्द घूककुल, निर्मल दिग्मंडल, आश्रितपूर्वाचल, हूउं रविमंडल, विहसइं कमल, विस्तरइं परिमल, वायु वाइं शीतल, प्रसन्न महीतल, जिस्यां राता पारेवातणा चरण, तिस्यां विस्तरइं सूर्यतणा किरण । इसिइ प्रभाति हुंतइ दीसइं घोडा हाथीया, दीसइं पूरिया साथीया । दीसइं रायराणापरिवार, पुणि न दीसइं रत्नमंजरी कुमारि सार । तिवारइं सोमदेव राजा हूउ सचिंत, परिवार हूउ शोकवंत, पृथ्वीचंद्र राय हूउ विछाय । स्वजनवर्गसंबंधीया राइराणा, तिसिइ अवसरि [आपइं] उल्हाणा। ते मंडप रत्नमंजरीपाषइ नि श्रीक दीसिवा लागउ । जिम लवणहीन रसवती, व्याकरणहीन सरस्वती; गंधरहित चंदन, घृतरहित भोजन; खांड रहित पक्वान, मानरहित दान, छंदरहित कवि, शक्ररहित पविः विवेकरहित मणु, वेदरहित

ब्राह्मणु, स्वर्गरहित ऐरावण, लकाररहित रावण, शस्त्ररहित पायक, न्यायरहित नायक, फल-
रहित वृक्षु, तपोरहित भिक्षु, वेगरहित तुरगम, प्रेमरहित संगम, नासिकारहित मुखमंडल,
कर्णपालिरहित कर्णकुण्डल, वस्त्ररहित शृङ्गार, सुवर्णरहित अलंकार, तांबूलरहित भोग, प्रसि-
द्धिरहित प्रयोग, कंकणरहित बाहुदंड, पणिछरहित कोदंड, चरणरहित बाल, राज्यरहित
5 भूपाल, स्तंभरहित प्रासाद, दानरहित प्रसाद, मुष्टिरहित कृपाण, ठउलीरहित बाण, अणीरहित
छुरी, लोकरहित नगरी। जिम पाणीरहित सरोवर, तिम रत्नमंजरीपाषइ ते न शोभइ लोक-
तणउ व्यतिकर। ते सभा हुई निष्प्रभा। रीझइ हुंते जेहरहइ दीजइं मोतीतणा त्राट, तीह
भाट बोलतां न जोइ कोइ वाट। जीह रीझइ चीत, ते कोइ न गाइ गीत। जेहे ऊपजइं चित्र,
ते न वाजइ वादित्र। जीण धूणीइ मस्तक, ते कोइ न वांचइ पुस्तक। जीहनउं वपाणीयइ
10 औचित्य, तिसिउं न होइ नृत्य। इसिइ दु:खि स्वयवरमाहि पर्वततइ हुंतइ पृथ्वीकंप विछूटउ।
धूजइ थंभ, धूजइ कुंभ, धूजइ रायराणा आसणपीठ, बइठे रहीइ नीठ। एकि धूजतां पडइं,
कायर रडइ। इम धूजि विछूटी, पछइ सभाविचालि पृथ्वी फूटी। विवर नीपनुं। तेह ज
माहि तेज प्रगट हूउं। जोतां हूतां तेह विवरमाहि दिव्यरूपधारिणी सिंहासणि बइठी स्त्री
एकि दीसिवा लागी। तेह स्त्रीतणइ उत्संगि शोभमान तेजभारि, दीठी रत्नमंजरी कुमारि। सहू
15 आश्चर्यपूरित हूउ। तीणें स्त्रीइ बिहु हाथि कुंअरि ऊपाडी बाहिरि मेल्ही, आपणपइ माहि गई,
पृथ्वी वली तिसीइ जि हुई। असमाधि फेडी, राजा कूंअरि आघी तेडी।

तिवार लोकतणा मेला, वात पूछिवातणी नही वेला। हिव हर्षिइं लोक कलकलिया,
विशेषतु उच्छव ऊकलिया। राजा कुमारि अनइ पृथ्वीचंद्र सहित आवासि पहुता। राय
ऊतारे हूया। भोजन मंडपऊपरि धज लहलहिया, विवाहमहोत्सव गहगहिया। हुइ धवलगान,
20 नीपना पकवान, केलवीयइ धान, स्वजनन्हइ बहुमान, वापरइं पान, जिमाडीयइं जान। काम-
काजना धणी पलवटि बांधी हींडइ आकुला, मेलइ चाउरी चाकुला। मेलइ आडणी, हिव
भोजनतणी मांडणी। बइठी पांति, जिमणहार परीसणहार बिहुरहइं पांति। पहिलउ परीस्या
फलावली, खंडखाद्य, पकान्न, पछइ परीस्या उण्हा अन्न। तां विशालस्थालि, परीसी शालिदालि,
घृततणी नालि, पाषलि शाकतणी पालि। ऊपरि कूर करबा दहीं वापरइ, ईणिपरि लोक भोजन
25 करइ। आचमनअनतर दीधा कपूरमिश्र बीडा, लक्ष्मीवततणे सवे वस्तु संपजइ क्रीडां। हिव
वेलाऊपरि राजापृथ्वीचंद्रन्हइं कराविउं मगलस्नान, विवाहयोग्य पहिरिया वस्त्र प्रधान। सर्वांग
शृंगार धरिउ, जाणे इंद्र अवतरिउ। गरुउ गर्जेंद्र आविउ, उत्तिम स्त्री वधाविउ। गर्जेंद्रहूंतउ
ऊतरी डावइ पगि सिरावसपुट चांपतउ माहि पहुतु। आचारविचार हूआ। चउरीमाहि च्यारि
मागलिक वर्त्यां, हाथमेलावणइ दान प्रवर्त्यां। राजा सोमदेवि वरन्हइ गजरथ तुरगम दान

दीधउं, राजा पृथ्वीचंद्रि महोत्सवसहित रत्नमंजरीतणउं पाणिग्रहण कीधउं। पछइ विशेषवंत उत्सवसंयुक्त ऊताराभणी चालिउ, सकललोक जोइवा मिलिउ। एकि वषाणइ पृथ्वीचंद्र भूप, एकि वषाणइ रत्नमंजरीतणउं रूप। एकि वषाणइ भाग्य, एकि वषाणइ सौभाग्य। एकि वषाणइ शरीरतणा श्रृंगार, एकि वषाणइ परिवार। एकि वषाणइ ऊहतणा कुल, एकि वषाणइ विहुंतणां शील निर्मल। एकि वषाणइ लावण्य, एकि वषाणइ पुण्य। इसीपरि वषाणीतु स्थानकि आविउ, विश्वन्हइं आनंद ऊपजाविउ। राजा सोमदेवि सविहुं रायन्हइं आवर्जन कीधी। कुणन्हइं घोडउ, कुणन्हइं हाथिउ, कुणन्हइं आभरण, कुणन्हइं पटकूल–ईणिपरि भक्ति कीधी। राय सवे आपणे आपणे नगरि पहुता। राजा पृथ्वीचंद्रन्हइं सोमदेवनरेश्वरतणइ आवासि नितु नवनवे गौरवि शिवमय सुखमय दिवस अतिक्रमइं।

अन्यदा प्रस्तावि राजा पृथ्वीचंद्र अनइ राजा सोमदेव राजसभां एकठा बइठा। किसी ते राजसभा–जीणि सभा पात्र नाचइं, विद्वास बइठा पुस्तक वाचइं, माल मल्लविद्या मांडिवा माचइं, रागज्ञ रायन्हइं रग रहाविवा राचइं, सुहावोला शुभ वोली स्वामिन्हे पसाउ याचइं, कूडा झागडू चिरकाल विवाद करी स्वयमेव पाचइ। इसी सभा, विहुं नरेश्वरि करि वली वाधी प्रभा। तिसिइ अवसरि, हर्ष प्रसरि। पहुतउ वनपाल, तीणि वीनविउ श्रीसोमदेव भूपाल स्वामिन्! आपणइ उद्यानवनि श्रीधर्मनाथ तीर्थकरदेव, पाउधारिया, जीणि परमेश्वरि त्रिभुवन आनंद वधारिया। हिव अवसरि आविउं, श्रीधर्मनाथतणउ कहिवउं, चरित्र महापवित्र। ईणि भरतक्षेत्रि प्रवरगुणि करी मनोहर, रत्नपुर नामिइं नगर। तिहां ऐश्वर्यनिर्जितसुरेश्वर, भानुनामा नरेश्वर। तेहतणइ पट्टराणी, सुव्रता इसिइं नामिइं जाणी। अन्यदा प्रस्तावि तीणि राज्ञी आपणइ आवासि, मनतणइ उल्हासि। पल्यंकि पउढी हुंती विपहुर रात्रिसमइं निद्राभरि वर्त्तमान हूंतीइं चऊद महास्वप्न दीठां। किस्यां ते महास्वप्न–गज १, वृषभ २, सिंह ३, लक्ष्मी ४, पुष्पमाला ५, चंद्र ६, सूर्य ७, ध्वज ८, पूर्णकलस ९, सरोवर १०, समुद्र ११, विमान १२, रत्नराशि १३, निर्धूम वैश्वानर १४। ईह चतुर्दश महास्वप्नतणउं सांभलउं जूजूउं वर्णन व्यतिकर। राणी प्रथम दीठउ गजन्द्र। किसिउ गजेंद्र–चतुर्दंत, विनयवंत, सत्तागप्रतिष्टित, गजेंद्रगुणि अधिष्टित; विशालकुंभस्थल, विलोलकर्णाचल, उदंडशुंडादंड, तेजि करी प्रचंड; मदजलवासित कपोलमूल, भ्र रकुल अनुकूल, परित्यक्तसकलदोष, उत्पादितसकलजननयनसंतोष, प्रधान, ऐरावणगजसमान; महाकाय, पर्वतप्राय; भद्रजातीय, अद्वितीय, जेहतणी गति प्रशस्ती, एवंविध दीठउ हस्ती। १।
तउ दीठउ वृषभ। किसिउ ते वृषभ–निर्जलधाराधरधवल, विकसित काशकुसुमसमुज्ज्वल, विशालककुद, चंदकिरणतणीपरि विशद, सूक्ष्मसुकुमालरोमराजिविराजमान, स्निग्धकांतिदेदीप्यमान; अभंगश्यामलश्रृंग, सुंदर समस्त अंगोपांग, विशुद्धदंत. पंक्तिशोभितः प्रमुखप्रदेश, चारुचरण-

संनिवेश, प्रसन्न वदन, दुग्धधौतधवललोचन, जिसिउ चालतउ हुइ प्रासाद, अथवा कैलासपर्वतस्युं लिइ वाद, इसिउ अत्यत शुभ, दीठउ वृषभ ।२। तउ राणीयइ दीठउ सीहु । किसिउ ते सीह–रूप्यपिंडपाण्डुर, अद्भुत प्रभाडबर, रक्तोत्पलसुकुमालताल, ताल्इ लागी आरक्त जिह्वा जिसिउं हुइ अशोकप्रवाल, विस्तीर्णकेशरसटाशोभितस्कध, वज्रसारशरीरबध; प्रवरपीवरप्रकोष्ठ,
5 कमलदल रक्तोष्ठ, तीक्ष्णदाढाविडबितवदन, पराक्रमतणउ सदन, पुन्छच्छटां पृथ्वी आस्फालतउ, पीतलोचनि भूमिकांति निहालतउ, मूषागतसुवर्णसमान फिरतां पिंजरनेत्र, शौर्यवृत्तितणउं क्षेत्र, अकल अगंजित, सबल अपराजित, अबीह, एवविध दीठउ सीह ।३। तु दीठी देवी लक्ष्मी । ते किसी–हिमवतपर्वततणइ शिषरि, महाप्रखरि, पद्मद्रहमाहि योजनप्रमाणविमलकमलि संनिविष्ट, चद्रसमान वदन, कमलसमान लोचन, निर्जितसूर्यमडल, देदीप्यमानकुडल, उदारप्रलंबितहार,
10 अद्भुतशृगार, दिग्गजेंद्रे अमृतकलसि करी अभिषिच्यमान, पगतलि चापी रही नवनिधान, एवविध सकलकल्याणपात्र, मनोज्ञगात्र, देवी लक्ष्मी दीठी ।४। तदनंतर अशोक चंपक नाग पुन्नाग प्रियंग पाडल सेवत्री जाइ जूही वेउल बउल श्रीदमणा मरूआ मंदार मचकुंद केतकीप्रमुख वनस्पतीतणे कुसुमि निष्पन्न भ्रमरभरभुज्यमानपरिमल एव विध दीठउ मालायुग्म ।५। तउ दीठउ चद्रमा । ते किसीउ चंद्रमा–रात्रितणइ समयि उदयि करी, सकल ताप हरी,
15 रोहणीरमण, यामिनीजीवितेश्वर, अमृतमयमूर्त्ति, उज्ज्वलधवल, प्रीणितचकोरकुल, एवविध चंद्रमंडल ।६। तउ दीठउ श्रीसूर्य। किसिउ ते सूर्य–प्रभाततणइ समइ जेह श्रीसूर्यतणइ उदइ प्रासादतणां द्वार ऊघडइ, देवन्हइ पूजा चडइ, पथ सवे वहइं, मुनीश्वर धर्मकथा कहइं, लोक वाटविशेष लहइ, मेघ मल्हार गाइइं, माहि अनेक शतपत्र सहस्रपत्र लक्षपत्र कोटिपत्र सूर्यवंशी कोमल विहसइ, चक्रवाक उल्हसइ, एवविध प्रखरकिरणनिकर, दीठउ सहस्रकर ।७।
20 तउ दीठउ ध्वज। किसिउ ते ध्वज–कृताह्लाद, कोई एक गरूउ प्रासाद, प्रखरि, तेहतणइ शिषरि; अखड, सुवर्णमयदंड, तेजि करी अंकुश, कनकमय कलश, भली, रत्नमय पाटली, तिहां जिसी स्वर्गतउ ऊदाली, इसी फाली, निरूपम स्वरूप, तिहा सीहतणउ रूप, इसिउ घंटागाणि गहगहतउ, वाइ लहलहतु, निर्मल नीरज, राणीइ दीठउ ध्वज ।८। तउ दीठउ पूर्णकलस। किसिउ ते पूर्णकलस–सुवर्णघटित, रत्नमय पडघियां स्थापित, कंठि पुष्पमाला
25 व्यापित, माहि अमृतपूरित, घटजुगलीविराजमान, आम्रफलप्रधान, मागलिक लक्ष्मीप्रदानतणइ विषइ अनलस, दीठउ पूर्णकलस।९। तउ दीठउ सरोवर, वृक्षतणउ परिकर, पालिनउ विस्तर, देहरीनउ समहर, पाणीनउ आकर, चउकी चउषडी झलहलइ, षरइ वाइ लहरि ऊच्छलइं; ऊपर जाण भरीयइ, घड कूङ तरीयइ, अमृतोपम नीर, दीठइ ठरइ शरीर, सारस कुरल कर्पिंजल कलहंस कलगलइ, तापतणा व्याप टलइ, राजहस रमइ, भ्रमर भमइ, चकोर चक्रवका

कूजइं, जलकेलिनां कोड पूजइं; मोर वासइं, सर्प नासइं; आडि पंखीया तरइं, ब्राह्मण स्नान करइं; आस्तिक लोक नित्य सारइं, कश्मल निवारइं, संध्याविधि साधइं, अघमर्षणमंत्र आराधइं; धोतीयां धोयइं, कमंडल ढोयइं, सिसिरगुणतणउ सहवास, जलदेवतातणउ निवास; देहरी दंडकलस आमलसारा झलकइं, जलहारिणीकुलवधूतणां नूपुर षलकइं; तडि कीर्त्तिस्तंभ दीसइ, हीयउं विहसइ; वग थलइ जाइइ, मेघ मल्हार गाइइ, माहि अनेक शतपत्र सहस्रपत्र लक्षपत्र 5
कोटिपत्र सूर्यवंशी सोमवंशी कमलवन विकाश पामइं, देवता जिहां क्रीडा कामइं; एवंविध उदार, वृत्ताकार, अत्यंतसार, महामनोहर; दीठउ पद्मवनखडमंडित सरोवर । १० । तउ दीठउ समुद्र । किसिउ ते समुद्र—अनंतजलु अनंतकल्लोलकोटीसंकुल; माहि मत्स्य महामत्स्य नक्र चक्र पाठीन पीठ तिमिंगिलितणा कुल पडइ, एकि ऊपडइ; लहरि वाजइं, पाणी गाजइं; दक्षिणा-वर्त्तशंखतणां यूथ फिरइं,माहि अनेक प्रवहण सांचरइं । एक पूंरी[य]इं एकि नांगरीयइं,वाहण वाहण- 10
रहइं एकि मिलितां आफलइं; मोतीप्रवाला आगरथकां लीजइ, किहां एकइ मेघिइं पाणी पीजइं; इसिउ आश्चर्यतणउ निलय, पृथ्वीपीठन्हइ वलय; गुहिर गंभीर, अनंतनीर; समुद्र, राणीयइ दीठउ समुद्र । ११ । तउ दीठउं विमान । किसिउं विमान—सुवर्णमयभित्ति, रत्नमयविच्छित्ति; प्रशस्यकलशि करी शोभमान, गगनलक्ष्मीन्हइ कुंडलसमान; जेहमाहि अनेक देव देवी रमलि करइं, एकि श्रुति धरइं; एकि गीत गायइ, एकि वादित्र वाइं; हींयइ हर्ष न माइ; अनेककुसु- 15
मतणा प्रकर, चंद्रूआतणा निकर, मोतीतणी सरि लहकइं, कपूरकस्तूरीतणा परिमल वहकइं; ध्वजा लहलहइं, मन गहगहइं, एवंविध विबुधवधूजनक्रीडास्थान, तेजःपटलि निर्जितभानुप्रधान, दीठउं विमान ।१२। तउ दीठउ रत्नराशि । किसिउ ते रत्नराशि—अनेक वज्र वैडूर्य चंद्रकात जलकांत पुष्पराग पद्मराग मरकत कर्केतन चंद्रप्रभ साकरप्रभ प्रभानाथ अशोक वीतशोक अपराजित गंगोदक मसारगल्ल हंसगर्भ लोहिताक्ष प्रमुखरत्नतणउ राशि, विरचितविश्वप्रकाश, देषइ राणी मनतणइ 20
उल्लासि । १३ । तउ दीठउ निर्धूम वैश्वानर । किसिउ ते वैश्वानर—कांतिभरकमनीय, प्रदक्षि-णावर्त्तज्वाला करी रमणीय; मधुघृतघनपरिषिच्यमान, कूर्चरहितदेवतामुखसमान; धूमरहित, तेजसहित; मांगलिक्यमूल, विश्वानुकूल; प्रवर, एवंविध दीठउ वैश्वानर । १४ ।

ए चतुर्दश स्वप्न देषी राणी जागी, निद्रा भागी, मनि विमासिवा लागी । मइं तां ए चऊद सुमिणां दीठां, इहतणां फल हुसिइ अत्यंतमीठां । तउ स्वामीकन्हइ जाइसु, नि संदेह 25
थाइसु । इसिउं विमासी, कइ न बोलावी दासी; सखी महिली सवि पाली, राणी स्वयमेव चाली । हंसगति हरषिइं गहगहती, जिहां राजा तिहां पहुती, जयविजय करती । रायन्हइं निद्रा टाली राजा तणइ आदेसि भद्रासनि वइठी । स्वप्नवार्त्ता सांभली राजा फल कहिउं; राज्ञी हृदयि ग्रहिउं । तिवार पूठिइं आपणइ स्वस्थानकि आवी, पल्यंक वइसी सखीसहित धर्मजाग

रिका नींपजावी । प्रभाति नरेश्वरि सभामाहि स्वप्नपाठकपाहिइ विचार कहाविउ, दान देउं निमित्तीवर्ग अदरिद्र नींपजाविउ । संपूर्ण दिवस अतिक्रमे हुंते परमेश्वरतणउ हूउ अवतार, देवता करइं जयजयकार ।

इति श्रीअञ्चलगच्छे श्रीमाणिक्यसुन्दरसूरिविरचिते श्रीपृथ्वीचन्द्रचरित्रे वाग्विलासे चतुर्थोल्लास ।

5

पञ्चमोल्लासः

तत्काल मनतणी रली, छप्पन्न दिक्कुमारिका मिली । ते कवण कवण–भोगकरा १, भोगवती २, सुभोगा ३, भोगमालिनी ४, तोयधारा ५, विचित्रा ६, पुप्पमाला ७, आनदिता ८, मेघंकरा ९, मेघवती १० सुमेघा ११, मेघमालिनी १२, सुवत्सा १३, वत्सामित्रा १४,
10 वारिषेणा १५ बलाहका १६, नंदोत्तरा, १७, नंदा १८, आनंदा १९, नंदवर्द्धिनी २०, विजया २१, वैजयन्ती २२, जयंती २३, अपराजिता २४, समाहारा २५, सुप्रदत्ता २६, सुप्रबुद्धा २७, यशोधरा २८, लक्ष्मीवती २९, शेषवती ३०, चित्रगुप्ता ३१, वसुंधरा ३२, इलादेवी ३३, सुरादेवी ३४, पृथ्वी ३५, गमावती ३६, एकनाशा ३७, नवमिका ३८, भद्रा ३९, सीता ४०, अलंबुसा ४१, मितकेशा ४२, पुडरीका ४३, वारुणी ४४, हासा
15 सर्वप्रभा ४६, श्री ४७, ही ४८, सुतारा ४९, चित्रकनका ५०, चित्रा ५१, सौत्रामणी ५२, रूपा ५३, रूपांसिका ५४, सुरूपा ५५, रूपवती ५६, एव अधोलोकनिवासिनी ८, ऊर्ध्वलोकनिवासिनी ८, रुचकपर्वतचतुर्दिशिनिवासिनी प्रत्येक ८, ८, विदिसिनिवासिनी ४, मध्यरुचकनिवासिनी ४, ईणिपरि छप्पन्नदिक्कुमारिका आवी । तेहे सूतिकर्मतणी समग्रीरीति नींपजावी । तदनंतर सौधर्मादिकदेवलोकइंद्रहइ आसनप्रकंप नीपनउ । पहिलउं इंद्रन्हइं कोप
20 ऊपनउ । वज्र ऊलालिउ, ज्ञानदृष्टि निहालिउं । जाणिउ परमेश्वरतणउ अवतार, ऊलटिउ भक्तिभार । इंद्र मनि गहगहिउ, आसण छांडी उत्तरासंग करी गूडे थई मस्तकि हाथ जोडी शक्रस्तव कहिउ । इंद्रि आसणि बइसी हरिणगमेसी देव बोलाविउ, तत्काल आविउ । इंद्रतणइ आदेसि सुघोषा घंटा आस्फालीनइ देवलोकि जणाविउ । इंद्र लक्षयोजनप्रमाणि पालकि विमाने चडी पचरूपि परमेश्वर लेउ मेरुपर्वति आविउ । चउसठि इंद्र मिलिया, देवसमूह हर्षि कलक-
25 लिया । आठ सहस्र चउसाठि आगला कलसि करी निर्मलजलि भरी स्नान कीधउं । तदनंतर

अंगरूक्षण १ करी; विलेपन २, वस्त्रयुगल ३, वासपूजा, पुष्पारोहण ५, माल्यारोहण ६, वर्णारोहण ७, चूर्णारोहण ८, ध्वजारोहण ९, आभरणारोहण १०, पुष्पग्रह ११, पुष्पप्रकर १२, अष्टमंगलकरण १३, धूपोत्क्षेप १४, गीत १५, नृत्य १६, वादित्र १७, सत्तरभेदपूजा-तणउं करणीय सीधु।

तीणि अवसरि गगन गाजिया, इगुणपंचासभेदि वाजित्र वाजियां। कवण कवण परिइं- 5 "उद्धमंताणं शंखाणं संगीयाणं खरमुहीयाणं परिपरियाणं अहम्मंताणं पणवाणं पडहाणं अफ्फालिज्जंताणं भंभाणं हारंभाणं तालिज्जंताणं भेरीणं झल्लरीणं दुंदुभीणं आलिप्पंताणं मुरवाणं मुत्तिगाणं नदीमुत्तिगाणं घटिज्जंताणं कच्छभीणं चित्तवीणाणं आमोडिज्जंताणं झुंकाणं नउलाणं छिप्पंताणं दुंदुकीणं चिषाणं वाइज्जंताणं करडाणं डिडिंमकाणं उत्तालिज्जंताणं तलाणं तोलाणं कंसतालाणं घट्टिज्जंताणं रिंकिसिकाणं सुसरिकाणं दुंदुकीणं फूमिज्जंताणं वंसाणं वेणूणं 10 एवमाईणं एगूणवन्नाए पवाइज्जंताणं।" ईणि युक्तिइं, भावभक्तिइं, आत्मशक्तिइं, परमेश्वरन्हइं स्नानमहोत्सव करी पुनरपि पंचरूपिइं इंद्र होई देव मातातणइं समीपि मुंकिउं। बत्रीस बत्रीस स्थाल सिंहासनादिक बत्रीसकोडि सुवर्णरत्नतणी वृष्टि करी, स्वामितिणइ दक्षिणहस्तांगुष्ठि करी अमृत संचारी, वस्त्रयुगल कुंडल श्रीदाम मेल्ही इंद्र स्वस्थानकि पहुतु।

हिव प्रभाति दासीमहिलीए राउ वधाविउ—स्वामी! तम्हारे पुत्र आविउ। राजा वधामणी 15 दीधी, नगरमाहि सर्व महोत्सवतणी पद्धति कीधी। अलंकरिउ प्राकार, शृंगारिया प्रतोलीद्वार। मंच अतिमंचतणी रचना हुई, स्वर्गपुरीतणी शोभा लई। ध्वजपताका लहकइं, पुष्पपरिमल वहकइं। नाचइं पात्र, राजाभवनि आवइं अक्षतपात्र। सोमाई भणतां आवइं छात्र, लोक अलंकरइं आभरणि गात्र, उत्सव करिवा एहइ ज वात। तीणि वेलां नऊइं कोरण, वांधीयइं तोरण। बांधीयइं वंदरवाल,उत्सव विशाल। गुलधीउ लाहीयइं,मन ऊमाहीयइ। ईणि युक्ति जन्ममहो- 20 त्सव हूआ। नामगरणतणइ अवसरि मातान्हइं डोहलइ धर्म बुद्धि हुई, एहभणी धर्म इसिउं नाम दीधउं, परमेश्वरि रमलि करतां बालपणु लीधउं, यौवनवयि राजकन्यातणउं पाणिग्रहण कीधउं। अढइ लाप वरस कुमारपणउं पाली, पंचासवरस (?) राज्यलक्ष्मी पामी, पछइ विरक्तियुक्त हूउ स्वामी। नवविध लोकांतिकदेवतणी वीनतीलगइ सांवत्सरिक दान दीधउं, पछइ महोत्सवि सहित चारित्र लीधउं। बि वरस छद्मस्थ काल अतिक्रमी, केवललक्ष्मी पामी। विहारक्रम करइं, 25 भव्यलोक तारइं।

हिव राजा पृथ्वीचंद्र अनइ सोमदेव उद्यानपालकरहइं साढाबारलाख सुवर्णदान देई, समस्तपरिवारसाथिइं लेई। परमेश्वर नमस्करिवा साचरिया, सकललोक ऊलटि धरिया। पृथ्वीरहइ अलंकरण, दीठउं स्वामीतणउं समोसरण। किसिउं ते—समग्र देव आवइं. समोसरण

नींपजावइं । तां पहिलुं वायुकुमारदेवतानिर्मित संवर्त्तक वायु विस्तरइं, ते तृण काष्ट कचवर हरइं, आकासि मेघपटल पसरइं, गंधोदकि वृष्टि करइं, फूलपगर भरइं, गरूअउं रत्नमय पीठ बाधी ऊपरि जानुप्रमाण पंचवर्ण कुसुम वरसइ, चिहुं दिसि दिव्य परिमल विलसइं । रत्नमय सुवर्णमय रूप्यमय त्रिन्नि प्रकार, रूपि करी उदार, अनेक प्रकार । मणिरत्नसुवर्णमय
5 कउसीसां सदाकार, च्यारि प्रतोलीद्वार । तिहां बिहु पासे उच्चैस्तर सुवर्णमय स्तभ, ऊपरि मणिमय कुंभ । इंद्रधनुषमानमूरण, रत्नमय तोरण । प्रत्यक्ष जिसी मागलिक्यनी पालि, इसी वंदरवालि । अनेकि विचित्र, विशाल छत्र । उदारस्वरूप, कनकमय पूतलीतणा रूप । जेहे लिषित सिंह शार्दूल गज, इस्यां निर्मल नीरज पचवर्ण ध्वज । इस्या समोसरणविचालि, मणिबद्धपीठि विशालि । सकलमागलिक्यमुख्य, गरूउ अशोकवृक्ष । जिसिउ प्रत्यक्ष कल्पवृक्ष,
10 इसिउ बारगुण चैत्यवृक्ष । तेहतणी छायां रत्नमय सिंहासण, जगन्नाथन्हइं बइसण । तेजिइं जोई सकीयइ नीठ, इसिउं रत्नमय पादपीठ । जिस्या विकसित सहस्रपत्र, तिस्या पनर छत्रा-तिछत्र । अमर, देवन्हइ ढालइं चमर । अधरीकृतआदित्यमडल, तीर्थंकरलक्ष्मीकर्णकुंडल, पूठइं झलकइं भामंडल । जेहतणइ दर्शनि मिथ्यात्वपटल टलइं, इसिउ आगलि धर्मचक्र झलहलइं । दिव्य दुंदुभि वाजइ, तीणि निर्घोष गगनागणि गाजइ, परतीर्थिकतणउ भडवाउ भाजइ ।
15 सहस्रप्रमाणयोजन इंद्रधज लहलहइं, धूपतणा परिमल महमहइ, वादित्रतणी कोडि द्रुहद्रुहइं । मनुष्यतणी कोडि आवइं, मनि रहरहइ । ईणि इसिइ समोसराणि परमेश्वर जगदीश्वर नवसुवर्ण-कमलि पाय स्थापतउ, पूछिया ऊत्तर आपतु, प्रभाइं दसइ दिसि व्यापतउ, भविकलोकन्हइं पाप मूंकावतउ; पूर्वदिसितणइ द्वारि पइसइ, पूर्वाभिमुख सिंहासनि बइसइ । चतुर्मुख होई, भविकसंमुख जोई । संपूरी,बार परिषद पूरी, मिथ्यात्वमान मूरी, पापपटल चूरी । सर्वसत्त्वसाधारिणी,
20 अमृतानुकारिणी, मधुरवाणी, लाभ जाणी, वखाण करइ, धर्ममार्ग विस्तरइ ।

हिव बेउ नरेश्वर मनि गहगहता, समोसरणिमाहि पहुता । श्रीधर्मनाथन्हइ प्रदक्षिणा देउ, आगलि बइठा नरेश्वर बेउ । तिवारे राजा पृथ्वीचंद्रि आपणइं विशेषवतइं रूपि लावण्ये करी देवदानवइंद्रन्हइं आश्चर्य कीधुं, श्रीधर्मनाथि तीर्थंकारि उपदेश दीधउ । किस्यु ते—

सद्वंशजन्म गृहिणी स्पृहणीयशीला लालायित वपुषि पौरुषभूषणा श्रीः ।
25 पुत्राः पवित्रचरिता सुहृदोऽपदोषा स्युर्धर्मतः खलु फलानि पचेलिमानि ॥१॥

अहो भव्य जीव ! ए इस्या धर्मना फल जाणिवां । कवण कवण—पहिलुं ता उत्तिमकुलि अवतार, ए धर्मतणां फल सार । जइ जीव नीचकुलि अवतरइ, तु किसिउं पुण्य करइ । एह विश्वमाहि एक माछीतणां कुल, भीलतणा कुल, कोलीतणां कुल । ईणिपरि थेहरी आहेडी वागुरी घाटकी मद्यप घाची चोर वेश्या वावरी मेय डुंब पाणपेरणीयातणां पापतणां

कुल जाणिवां। जीव एहे कुले अवतरी पाप करी नरकि जाइ,लाधु मनुष्यजन्म निरर्थक थाइ। पुणि जीवन्हइं उत्तिम कुल दुर्लभ। कुण तेउ उत्तम कुल—

वंसाणं जिणवंसो सव्वकुलाणं च सावयकुलाइं।
सिद्धिगई य गईणं मुत्तिसुहं सव्वसुक्खाणं ॥२॥

वंश ते प्रशंसि जेहे जिणतणउ अवतार। वंशतणउ कवण विचार—इक्ष्वाकुवंश,सूर्यवंश, चंदिल्ल, चाहूआण, सोलकीवंश, वालावंश, वाघेला, वाघरोलावंश, गुलवंश, गुलबरवंश, सोभटा, भाटीया, सीदा, वांदा, दाहिणमा, कच्छवाह, कणवाहा, हूणवंश, हरीयड, शकट, सिलार, धान्यपालवंश, अनंगपाल, राजपाल, दधिपाल, कलाप, परमार, मोरीवंश, यादव, सैधव, निकुंभ, गुहिलउत्त, डोडीवंश, डोडीयाणवंश, मंकूआणा, खइरवंश, सीलणवंश, चोडाणवंश, दहीयावंश, प्रमुख वंश जाणिवा। अनइ ब्राह्मणादिक कुलविशेष ज्ञातिविशेष जाणिवा। जिम कलिकाल प्रवर्त्तमानि चउरासी ज्ञाति बोलीयइं। किसी ते ज्ञाति—श्रीश्रीमाली, उसवाल, वाघेरवाल, डींडू, पुष्करवाल, डीसावाल, मेडतवाल, भाभू, सूराणा, छत्रवाल, दोहिल, सोनी, षडवड, षंडेरवाल, पोरूआड, गूजर, मोढ, नागर, जाल्हरा, षडाइता, कपोल, जाबू, वायडा, वाव, दसउरा, करहीया, नागद्रहा, मेवाडा, भटेउरा, कथरा, नरसिंहउरा, हारल, पंचमवंश, सिरषंडला, कमोह, रोतकी, अगरवाल, जिणाणी, वांभ, घांघ, पाल्हाउत, उचित, वगडू, अहिछत्रवाल, श्रीगउड, वाल्मीकि, टाकी, तेलटा, तिसउरा, अठवग्री, लाडीसाखा, बधनउरा, सुहडवाल, वीघू, पद्मावती, नीमा, जेहराणा, माथुर, धाकड, पल्लीवाल, हरसउरा, चित्रउडा, गोला, गहिवरिया, लोहाणा, भाटीया, नागउरा, आणंदउरा, सतला, कडकोलापुरी, रायकवाल, पेसीया, परूया, गोमित्री, नारायणा, टींटू, गजउडा, गोपरूआ, अजयमेरा, कंडोलीया, कायत्थ, सगउडा, सीहउरा, जेसवाल, नादेवा, जाइलवाल, चावेल, ए सविहुं ज्ञातिकुलवंशमाहि वषाणीइ सुश्रावक कुल। जीणि सुश्रावकतणइ कुलि जीववधु टालीयइ, जीवदया पालीयइ। मिथ्यात्व परिहरीयइ, सम्यक्त्व अंगीकरीयइ। पांणी भलीपरि गालीयइ, इंधण सोधी ज्वालीयइ। अथाणूं न राषीइ, अणंतकाई न चाषीइ। चोरी न कीजइ, सुपात्रि दान दीजइ, सुतीर्थि वित्त वावी लाभ लीजइ। आलोअण लेई पाप धोईइ, परिग्रहप्रमाणि पुण्यवंत होईइ। उभयकाल सामायक त्रिकाल देवपूजा समाचरीइ, पुण्यभंडार भरीइ। वावीस अभक्ष, बत्रीस अणंत काय टालीयइं, आठमि चऊदसि पूनिम अमावास चउमासी पजूसण पर्व पालीयइं, पुण्यमार्ग उजूआलीयइ। इसुं श्रावकतणउं कुल, तउ पामीयइ जइ पोतइ पुण्य हुइ विपुल। उत्तिमकुलि लाधइ हूंतइ गृहस्थरहइं जय हुइ कुकलत्रतणउ संयोग, तु हुइ पुण्यतणउ वियोग। किसी ते कुकलत्र—जे चालती कउयाछि, साची अलछि। आत्मकुटुंबभंजकि, परचित्तरंजकि। **कपटविषयि** पटिट,

अतिहिं अनिष्ट। बोलती छडउ ऊतारइ, रीसइ छोरू मारइ। जीभइं जव छोलइ, अलविइ असंबद्ध बोलइ। बगाई करती गोदड्ड गिलइ, घरि वित्रोड करी वाहिरि मिलइ, बोलावी विसइ हाथ ऊछलइ। फूफूती सापिणी, चालती चीत्रिणी। पुण्यद्वारतणी आगल, नगरतणी भागल। घणूं किसिउं कहीयइ–जिसी मिरीतणी ऊगटि, जिसिउं चालतउ पलेवणउं, जिसी दाघज्वरतणी
5 वहिनि, इसी सतापकारि तुं सपजइ नारी, जउ जीव पापकर्मि भारी। अनइ तु हुइ सुकलत्र, जइ पोतइ हुइ पुण्यपवित्र। किसी ते–सुशील सुलील सदाचार सत्यवंती विनयवंती विवेकवंती पुत्रवंती बोलवती सुजाणि, मधुरवाणि। देवगुरुतणइ विषइ भक्त, पुण्यतणइ विषइ आसक्त। सहजि सलावण्य, इसी सुकलत्र तु संपजइ जइ पोतइ पुण्य। अनइ जं शरीरि सपजइ लीला-वंतपणूं, त पुण्यतणउं प्रमाण। जं मधुरगति चालइ, पापबुद्धि पालइ। सहजि विचक्षण,
10 शरीरि बत्रीसलक्षण, अलिकुलकज्जलश्यामल केशपाश, अष्टमीचद्रसमान भालस्थल, कामदेवको-दंडाकार भ्रूभंग, पूर्णचंद्रसमान वदनमंडल, आदर्शतलसमान कपोलयुग, मौक्तिकश्रेणिसमान दशनमाल, वक्षस्थल विशाल, प्रचंड भुजदंड, इसी रूपलक्ष्मी अखंड, तु संपजइ जइ पोतइ प्रचुरपुण्यपिंड। अनइ जे द्रव्य ऊपार्जिवातणइ कारणि एकि लोक देव-देवता आराधइं, मंत्र-विद्या सघरपणइं साधइं। राजसभा बुद्धिवंत भणी बइसइं, रणक्षेत्रि पहिलां पइसइ। व्यापार-
15 कला केलवइं,धूर्त्तपणइ भलारहइं भोलवइं। जलमार्ग स्थलमार्ग आदरि आक्रमइ,भूमडलि भूजाबलि भमइं। जोगीपूठिइ-लोभि लुवधा लागइ। एकि मोटा ठाकुर मागइ। एकि पाला पुलता पथि चालइं। एकि हा दैव! भणी वइरागारि घाउ घालइ। एकि हल षेडइ,उलग करइं लागा ठाकुर-केडइ। रसकारणि रसकूपिका पडइ, एकि कलकलतइ समुद्रि चडइ। एकि त्रिन्निसइं साठि क्रियाण वहुरइ, पिराया कवित्व वहरइ। कष्ट सहइ विपुल, पुणि लक्ष्मी तु पामइं जइ पोतइ
20 हुइ पुण्य परिघल। घरि सुवर्ण मणिरत्न प्रवाल, प्रधान मुक्ताफल, गजरथतुरगमादिक जाणिवा लक्ष्मीतणा विलास सकल।

हिव ज सपजइ सत्पुत्र, एहू पुण्यतणउं चरित्र। एकइं तणइ एकि कुपुत्र हुइ जे बालपणि पालीइ लालीइ पणि जेतलइ यौवनभरि जाइ, तेतलइं मावीत्रसाम्हां थाइ। कृत्य अ-कृत्य न गिणइ, वडातणा वचन निहणइ। मावीत्रसाम्हां नीटुर बोल भणइ, अहकारि हणहणइ।
25 लक्ष्मीमदि कुपात्रि वरसइ, कुस्थानकि विलसइ,पिराई भूमि ग्रसइं, चाडूए वचनि उल्लसइ, रूडी वात कहतां साम्हा धसइ, स्वाननी परि भसइं, अपरम्हइ हसइ, पापकरी ऊससइ, धर्मवार्ता हियइ न वसइ। इस्या जं पुत्र अभक्त अजाण, ए पापतणू प्रमाण। अनइ ज पुत्र विवेकीया विचारवत, सहजिइ सत सौभाग्यवत,गुरुआप्रति भक्तिवंत गुणवत,देवगुरुधर्मतणइ विषइ तत्पर, सुपुत्र पामियइ जइ, पोतइ पुण्यतणउ भर।

हिव तु पामीयइ सुमित्र उत्तम, जइ पोतइ पुण्य हुइ निरुपम। एक जीव सहजइं दुर्जनप्रकृति, पापतणइ विषइ मोटी आकृति। मुहि मींठउ, चित्ति विणठउ। पिरायां छलछिद्र जोइ, विणास विण विगोई। उपगारि केतलइं न लीजइं, परप्रशंसा मनमाहि पीजइं। आपणपउं घणुं देषइ, अवर नहीं किसिइं लेखइ। सजन संकटि पाडइ, परदोष ऊघाडइ। राउलइ वानइ, देवगुरु अपमानइ। मूर्त्तिवंत अधर्म, बोलइ पिराया मर्म। जिसिउं विषवृक्षनउं वन, 5 इसिउ जाणिवउ दुर्जन। एकि जीव, सहजिइं उत्तमस्वभाव, पुण्यऊपरि भाव। उपगार करइं, परमर्म हीयडइं धरइं। परदोष न प्रकासइं, असत्य न बोलइं हासइं। उन्मार्गि न चालइं, पापवार्त्ता टालइं, गुरूपदेश झालइं, धर्मतउ न हालइं। नवे क्षेत्रे वेवइं धन, जिसिउं बावनुं चंदन, इस्यां जीहनां सीतल मन, इस्या कहीय्रइ सज्जन। संपजइ सुमित्र सज्जन सुजाण, तं पुण्यतणउं प्रमाण। इस्यां धर्मफल देषी, प्रमाद ऊवेषी; आलस परिहरी, आदर करी; पूण्य- 10 तणइ विषइ भावनासहित लाभ लेवउ। जेह कारणि इसिउं कहीइ-जिम प्रासाद शोभइ ध्वजाधारि, जिम हृदय शोभइं हारि; जिम गृह शोभइं उत्तिम नारि; जिम मस्तक शोभइ केशप्राग्भारि, जिम कर्ण शोभइ स्वर्णालंकारि, जिम शरीरि शोभइ शीलशृंगारि, सरोवरि शोभइ कमलि, पूष्प शोभइ परिमलि, मुष शोभइ निर्मलि नेत्रयुगलि, रात्रि शोभइ चंद्रमंडलि; विवाह शोभइ कूरि, उत्सव शोभइ तूरि, नदी शोभइ पूरि; जिम सम्यक्त्व शोभइ प्रभावना, तिम धर्म शोभइ 15 भावना। एह कारणि भावनासहित पूण्यवंति लाभ लेवउ। जिसिइं पुण्यप्रभावि सकलश्रेयकल्याण संपजइं।

इसिउ उपदेश सांभली, मनतणी रुली, परमेश्वरप्रतिइं विहुं नरेश्वरि वीनती कीधी वली। हे जगन्नाथ ! संदेह भांजिवानइं ऊभउ हाथ; तुझ टाली अपरि संदेह न भाजइं, संदेह भंजन विरुद तूंरहइं छाजइं। जेहि कारणि इसिउं कहीइं—समुद्रि उलंघीयइ भारंडि, न मसइ; 20 गजेंद्र विडारीयइ सीहि, न ससइं। विषधरतणां विष जीरवियइं गुरुडि, न कुकडइं; वृक्षसिहर तणां फूल लीजइं तडवडइं, न ढूंकडइं। संग्रामभूमिइं भिडीयइ राउति, न दयामणइ; भंडारीतणा भार झाल्यिइ अभीष्टि, न अलषामणइं। पर्वततणां टोल ताणीयइं नदीतणइ पूरि, न वाहलइं; रायतणइ मनि रंगि रहावीयइं मधुरस्वरि,न पाहलइं। समुद्रि सेतुबंध बांधीइ पर्वते. न काकरइं; दृढगढतणी पोलि भाजियइ गजेंद्रि, न वाकरइं। याचकजननां दरिद्र टालीयइं दातारि 25 लक्ष्मीवंति, न आजन्मदुस्थि; सकलसंदेह भांजीइ केवलीए, न छद्मस्थि। तेह कारणि तउं हे स्वामिन् ! अम्हारा संदेह टालि, एक संदेह ऊपनउ सरोवरतणि पालि,एक ऊपनउ अटवीठामि; एक संग्रामि; एक स्वयंवरि; ए सवे संदेह अपहारि। इसी वीनती साभली जगन्नाथ कहइ छइ—अहो नरेश्वर ! साभलउ; हिव कहीइ छइ पूर्वभव, जिसिउ हूउ अनुभव। ईणइ क्षेत्रि

भृगुकच्छनामिइं नगर, जिहां नर्मदा नदी प्रवर । प्रौढ धवलगृह, लोक पुण्यविषइ सस्पृह। जीणि नगरि महाधर मंडलीक सेल्लहत्थ वरवीर राउत डबइत भाथाइत ऊडणाइत फलहकार छुरीकार नलीकार कुंभकार सींगडीया सावलीया जेठी यंत्रवाहा भंडारी कोठारी प्रभृति राज-लोक वसइ, सर्वज्ञभवन देषी मन उल्लसइं। जिहां पद्मश्रीनामि सरोवर, महामनोहर, जिहां

5 राज्य पालइ द्रोणनामा नरेश्वर। तेहतणइ सागर अनइ पूरण इसिइ नामि पवित्रचरित्र, बि पुत्र। ते बेउ नर्मदानदीमाहि बेडी चडी मत्स्य विणासिवा प्रवर्त्तिया। तिसिइ अवसरि मत्स्य एक साम्हउ जोई तीह प्रतिइ बोलिउ—रे दुराचारउ! म करउ पाप, नरकि इस्या हुसिइ संताप, नहीं छूटउ करताइ विलाप, जइ न मानउ तउ पूछउ आपणउ बाप। ए वात साभली बेउ कुमर भयभ्रांत हूआ। तिसिइ नदीनइ कठि एक दीठउ मुनीश्वर। तेहे बेडीतउ

10 ऊतरी नमस्करिउ। वच्छउ! तुम्हे म्हारा पौत्र, हूं पालऊं चारित्र, तुम्हे करउ अक्षत्र। तीणइ सोनइ किसिउं कीजइ जीणइं त्रूटइं कान। तीणइं उपाध्यायि किसिउं कीजइं जीणइं चूकइं ज्ञान। तीणइं ठाकुरि किसिउं कीजइं जीणइ पामीइ पगि पगि अपमान। तीणइं धर्मि किसिउं कीजइ जीणइं वाधइ मिथ्यात्ववाद। तीणइ वयरइ किसिउं कीजइं जीणि पाळइ ऊपजइ विष-वाद। तीणि मित्रि किसिउं कीजइ जीणइं थाइं प्रमाद। तीणिइं घरि किसिउं कीजइं जेहमाहि

15 फूफूइ साप। तीणइं स्त्रीइं किसिउं कीजइं जेहतु नितु संताप। तीणइं रामतिइं किसिउं कीजइं जीणि कराइ पाप। वत्स मुझ भक्त व्यंतरि, मत्स्यमुखि अवतरी, तुम्हे जगाडिया, पुण्यमार्गि लगाडिया। हिव पाप परिहरउ, पुण्य करउ। तीणइं ऋषीश्वरि पुण्यतणी परठ कही, तेहे बिहुं ग्रही। आव्या आपणइ घरि, करइं पुण्य नवनवीपरि। दिइं दान, धरइं अरिहंततणउं ध्यान। करइ सुगुरुभक्ति, जाणइ विवेकयुक्ति। करावइं प्रासाद, पडावइं सत्रूकारि साद।

20 पालइ सम्यक्त्व, जाणइ नव तत्त्व। करइं सामायक सार, स्मरइ पंचपरमेष्ठि नमस्कार, बे कुमार इसीपरि भरइं पुण्यभंडार।

अन्यदा प्रस्तावि द्रोणि राजां तीह बिहुन्हइ राज्य दीधउं, आपणपइं राज्ञीसहित चारित्र लीधउं। निर्मल चारित्र पाली, भावविशेषि पातालि, बलीन्द्र अवतरिउ, राणीइं इंद्राणि थइनइं तेह्न जि अणसरिउ। हिव पूरणतणइ पद्मश्री इसिइ नामि हुइ कलत्र, जे महासच्चरित्र। ते सागर पूरण पद्मश्री पुण्य करी पहुता देवलोकि, सौख्य भोगवी अवतरिया मनुष्यलोकि।

25 सगरतणउ जीव हूउ तू सोमदेव नरेन्द्र, पूरणनउ जीव हूउ पृथ्वीचंद्र। पद्मश्री ईहां रत्नमंजरी अवतरी। पूर्वतणउ धर्म फलिउ सर्वसंयोग मिलिउ।

बिहु नरेश्वरि इणिपरि उपदेश साभलिउ, श्रीधर्मनाथतीर्थंकरि वली कहिउं—हिव साभलउ जे पूछिया संदेह, तेहनु कीजइ छेह। जिसिइ समइ रत्नमंजरी सरोवरतणी पालिइ पितातणइ उत्संगि बइठी, कुणरहइ देवातणी चिंता पइठी। तिसिइ अवसरि, बलींद्रदानवेश्वरि;

ज्ञानि प्रमाणि पूर्व जाणी; पुत्रपृथ्वीचंद्रनिमित्त राषिवा रत्नमंजरी हंसरूपिइं अपहरी आपणइ कन्हइ आणी। छमास पातालि स्थापी, पछइ अवसरि पाछी आपी। राजा पृथ्वीचंद्रन्हइं स्वप्न दीधउं, अटवी अनइ संग्रामांगणि महासान्निध्य कीधउं। अनइ स्वयंवरि जेतलइ धूमकेतु राजा वेतालांधकार विस्तारीनइ रत्नमंजरी रथि घाती, तेतलइं वलींद्रतणी इद्राणी ते मेल्हिउ निपाती। छ प्रहर पातालि राषी, प्रभाति प्रकट करी दाषी। उहे दिषाडिउ पूर्वभवस्नेह, एतलइं टलियां सवे संदेह। अहो पृथ्वीचंद्र! ताहरुं विशेषवंत छइ भाग्य, अद्भुत सौभाग्य। जेह कारणि गृहस्थवेषि हाथियइं चडतां ईणइ जि भवि ऊपजिसिइ केवलज्ञान, एह भणी ए भाग्य प्रधान। सोमदेवन्हइं त्रीजइ भवि मुक्ति, इसी छइ युक्ति। ए वार्त्ता मनि धरी, श्रावकयोग्य धर्म आदरी, परमेश्वर नमस्करी; वे नरेश्वर सपरिवारि स्वस्थानकि आव्या, परमेश्वरि विहारक्रम नीपजाव्या।

हिव राजा पृथ्वीचंद्र सुसरउ राउ मोकलावी रत्नमंजरीसहित आपणइ पुहिठाणपुरि पाटणि आव्या, प्रधानि प्रवेश महोत्सव कराव्या। सकल पाटण लोक हाट काज काम परिहरी आभरण त्रूटते, वेणीदंड छूटते; पटउले फाटते, घाटडे विणसते; धसमसाटि जोइवा धाइउ, राजा महोत्सवसहित आपणइ आवासि आइउ। रत्नमंजरी पट्टराणी स्थापी, कीर्त्तिइं जगत्रयी व्यापी। राज्यसौभाग्य भोगवतां अवसरि रत्नमंजरी महीधर इसिइं नामिइं पुत्र जन्मिउ। ते सर्वांगसुंदर, रूपिइं पुरंदर, विवेकवंधुर राज्यधुरंधर सत्पुरुषसिंधुर नामि महीधर प्रवर्द्धमान हूउ। राजापृथ्वीचंद्रन्हइं राज्य करतां नवलाष नवाणवइ सहस्र नवसइं नवोत्तर वरस अतिक्रम्यां। तिसिइ अवसरि कानडदेसनउ राउ सिंहकेतु इसिइं नामिइं अकस्मात् पुहिठाणपुरि पाटणि ऊपरि चडी आविउ, लोकन्हइं आतंक ऊपजाविउ। तत्काल चरपुरुषि पृथ्वीचंद्रन्हइं जणाविउ। ते सांभली राजापृथ्वीचंद्र कोपि करी करवाल ऊलालतु सामहिउ, सुभटवर्ग गहगहिउ। भंभा वाजी, गगनांगण रहिउ गाजी। राजा आप जेतलइं हाथि चडिउ, तेतलइं मनि विमासण पडिउ। रे आत्मन्! हुं बाह्यवइरी पूठिइं धाउं, अंतरंगवइरी पूठि न धाउं। कुण ए बुद्धि, किसी शुद्धि। जीतउ जोईयइ क्रोध, जेहतउ चालइ विरोध। जीतु जोईयइ मान, जेहन्हइं पर्वतनउं उपमान। जीती जोईयइ माया, जेहतु पामीयइ स्त्रीतणी काया। जीतु जोईयइ लोभ, जेहतु संसारि समयक्षोभ। जीतु जोईयइ काम, जेहतु फेडइं पुण्यतणउं ठाम। ईणिपरि नरेश्वरन्हइं चींतवतां ऊपनउं शुक्लध्यान, तत्काल ऊपनउं केवलज्ञान। आव्या देव, करइं सेव। वइरी समिउ, आवी नमिउ। वाजइं वादित्र, महोत्सव विचित्र। देवे वेष दीधउ, राजऋषि लीधउ। हंसजमलि, बइठउ सुवर्णकमलि। दिइ उपदेश, हूउ पुण्यतणउ निवेश। एके आदरिउं सम्यक्त्व, एके श्रावकत्व। एके संयम, एके नियम। ईणिपरि लोकन्हइं लाभ देई पृथ्वीमंडलि विहारक्रम करी

पृथ्वीचंद्रि राजा सिद्धिसाम्राज्य लीधउं, तेहतणइं पुत्रि महीधरि पुहिठाणपुरि अखंडप्रतापि राज्य कीधउं। पृथ्वीचद्रनरेश्वरतणउं चरित्र साभली, मनतणी रली,वलीवली, विवेकवंति पुण्यवंत लाभ लेवउ। जिसिइं पुण्यतणा प्रभावतउ सकल श्रीसंघन्हइ श्रेयकल्याण ऋद्धिवृद्धिपरंपरा संपजइं।

श्रीमदञ्चलगच्छे श्रीगुरुमाणिक्यसूरिणा।
पृथ्वीचन्द्रनरेन्द्रस्य चरित्रं चारु निर्मितम् ॥

संवत १४७८ वर्षे श्रावण सुदि ५ रवौ पृथ्वीचन्द्रचरित्रं पुरुषपत्तने निर्मितं समर्थितम्।

यावन्मेरुर्मही यावत् याचन्द्रदिवाकरौ।
वाच्यमानो जनैस्तावद् ग्रन्थोऽयं भुवि नन्दतात् ॥

इति श्रीअंचलगच्छे श्रीमाणिक्यसुंदरसूरिकृते श्रीपृथ्वीचंद्रचरित्रे वाग्विलासे
10 पञ्चम उल्लासः।



नमस्कार बालावबोध

[कर्त्ता हेमहंसगणी; वि० सं० १५००]

श्रेयांसि श्रीमहावीरः सश्रीसंघस्य यच्छतात् ।
यस्याज्ञा कल्पवल्लीव मनोवाञ्छितदायिनी ॥ १ ॥
श्रीवर्द्धमानशासनराज्यनेता विश्वत्रयाद्भुतचरित्रयुगप्रधानः
श्रीसोमसुन्दरगुरुर्गुरुचक्रवर्ती भूयादमेयमहिमा मम सुप्रसन्नः ॥२॥ 5
तत्पट्टनायकाः श्रीमुनिसुन्दरसूरयो जयन्त्यधुना ।
जयचन्द्रसूरिजिनकीर्तिसूरिपरिवारपरिकरिताः ॥३॥
स्वान्ययोरुपकाराय लिख्यते लेशतो मया ।
षडावश्यकसूत्राणां व्याख्या बालावबोधिनी ॥ ४ ॥ 10

पहिलउं सकलमंगलीकनउं मूल,श्रीजिनशासननउ सार, इग्यार अंग चऊद पूर्वनउ उद्धार, सदैव शाश्वतउ श्रीपंचपरमेष्ठि महामंत्र नउकार–

नमो अरिहंताणं ॥१॥ नमो सिद्धाणं ॥२॥ नमो आयरियाणं॥३॥ नमो उवज्झायाणं ॥४॥ नमो लोए सव्वसाहूणं ॥५॥

एसो पंच नमुक्कारो ६, सव्वपावप्पणासणो ७ । मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं ॥८॥ 15

एहनउ अर्थ–नमो अरिहंताणं–नमोऽर्हद्भ्यः । अरिहंत जेहे रागद्वेष कषायादिक अंतरंग अरिवइरी हणिया छइं । ते श्री अरिहंत चउत्रीस अतिशय, पांत्रीश वाणीगुणे करी सहित समवसरणि बइठा विहरमाण छइं । तेहंन्हइं, नमो कहीइ–माहरउ नमस्कार हुओ । अरिहंत चंद्रमंडलनीपरि श्वेतवर्ण ध्याईइं । एतलइं एकपद तथा एक संपद हुई । जेतलइ अर्थ समाप्तिनउ अविकार हुइ, तेतलइ संपद जाणिवी । उच्छास ए बीजउं नाम । तिहां वीसामउ 20 लीजइ । इम सर्वत्र जाणिवउं ।

हवइ, नमो सिद्धाणं–नमः सिद्धेभ्यः–सिद्ध जे आठ कर्मनिर्मुक्त हुई अनंतसौख्यमयमोक्षि पहुता सिद्धसिला ऊपरि जोअणनइ चउवीसमइ भागिं वर्त्तइ । तेह श्री सिद्धन्हइं नमो नमस्कार हउ । श्री सिद्ध ऊगता सूर्यनी परि रक्तवर्ण ध्याईइं । एतलइं बि पद, बि संपद हुई ।

नमो आयरियाणं–नम आचार्येभ्यः–आचार्य जे ज्ञानाचारादिक पंचविध आचार 25 आपणपें पालइं अनेरान्हइं पलावइं । शिष्यनइं द्वादशांगीनउ अर्थ कहइ । ते श्री आचार्यन्हइं नमो नमस्कार हउ । आचार्य सुवर्ण वर्ण ध्याईइं । एतलइं ३ पद, ३ संपद हुई ।

नमो उवज्झायण—नम उपाध्यायेभ्यः—उपाध्याय जे द्वादशांगीनउं सूत्र मुखाधीतगुणइं, शिष्यन्हइं पढावइ। ते उपाध्यायन्हइ नमो नमस्कार हुउ। उपाध्याय मरकतमणिनी परिं नीलवर्ण ध्याईइं। एतलइं ४ पद, ४ संपद हुई।

नमो लोए सव्वसाहूणं—नमो लोके सर्वसाधुभ्यः—लोके मनुष्यलोकमाहिं जे सर्वसाधु मोक्षमार्गसाधक जिनकल्पी प्रमुख घणे भेद ऋषीश्वर छइ। ते सविहुंन्हइं नमो नमस्कार हुउ। महात्मा आसाढना मेघनी परि श्यामवर्ण ध्याईइ। एतलइं ५ पद, ५ संपद हुई।

एतलइं पांत्रीशे अक्षरे श्री नउकार मूलमत्र कहीइ। हवइ आगलि चिहुंपदनी चूलिका-माहिं एह मूल मत्र-प्रभाव कहइ छइ। "एसो पंच नमुक्कारो सव्वपावप्पणासणो—एष पंच नमस्कारः सर्व पापप्रणाशनः"। ए पाचहं परमेष्ठिनउ नमस्कार ते किसिउ छइ—सव्व पाव०—सर्व पाप तणउ प्रणाशन फेडणहार छइ। एतलइ छठउ अनइ सातमउं वि पद हूआं। बि संपद हूई छट्ठी सातमी। तथा—"मंगलाणं च सव्वेसिं, पढम हवइ मंगलं—मंगलानां च सर्वेषां प्रथमं भवति मंगलं।" सर्व मंगलीक जे लोकीक दधि दूर्वा अक्षत चदनादिक, लोकोत्तर तप नियम संयमादिक, तेह सवि हुं मंगलीकमाहिं, पढमं—प्रथमं कहीइ—पहिल्उं उत्कृष्टउं मंगलीक ए श्रीनउकार कहीइ। एतलइ आठमउ अनइ नवमउं बिहु पद हूआं। बिहु पदे करी संपद एकजि आठमी हुई। एह चूलिकामाहि 'हवइ' नइ स्थानकिं 'होइ' इसिउंहु कहता केतलाइ बत्रीशजि अक्षर मानइं, पुण मूलिं तेत्रीस अक्षर छइ।

यत उक्तं—महानिशीथसिद्धाते—"तहेव इक्कारसपयपरिच्छिन्नत्ति" 'इग्यार पदि परिच्छिन्न कहतां सहित छै। "इक्कारसपयपरिच्छिन्नत्ति आलावगे तित्तीसअक्खरपरिमाण। एसो पच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो। मगलाण च सव्वेसिं, पढम हवइ मंगलं॥ इति चूलं॥ तेणेव कमेण छट्ठसत्तमट्ठमादिणेसु आंबिलेहिं अहिजिज्जा।

प्रवचनसारोद्धारेप्युक्त—

पच परमिट्ठिमंते पए २ सत्त संपया कमसो। पज्जंतसत्तरक्खरपरिमाणा अट्ठमी भणिआ॥
गाथा ६८॥

यद्यपि 'हवइ' अनइ 'होइ' कहता अर्थनउ विभेद काई छइ नही। तथापि 'हवइ' इसिउ जि कहिवउं। जेह भणी नमस्कार चूलिका प्रथमाहिं कहिउं छइ—जिवारइ कार्यविशषि ऊपनइ चूलिकातणउ ध्यान करीइ, तिवारइ बत्रीसदल कमल रची एकेकउ अक्षर एकेकी पाखुडीइ स्थापी तेत्रीसमउ अक्षर मध्यकर्णिकाइ स्थापी ध्यान करिविउं। हवइ जउ 'होइ' इसिउं कहीइ तउ चूलिका बत्रीस जि अक्षर पहुचइ, बत्रीसे अक्षरे बत्रीस पाखुडीइ जि पूराइं, मध्यकर्णिका ठाली जि रहइ। इत्यादिक अनेक श्री सिद्धातयुक्तिछइं। मध्यस्थ पणइ

विचारिवउं । एवं श्रीनवकारमहामंत्रि ९ पद, ८ संपद, ६८ अक्षर, तेहमाहि ७ भारे, ६१ लघु अक्षर । जे वि अक्षर एकठा मिल्या हुइं ते भारी कहीइ । जे एकेकलउ अक्षर ते लघु हुइउ; इम सर्वत्र जाणिवउं । एह श्री नउकारनउ महिमा इम कहि छइ–

नवकार इक्कक्खर पावं फेडंइ सत्त अयराणं । पन्नासं च पएणं सागरपणसयसमग्गेणं ॥१॥

जो गुणइ लक्खमेगं पूएइ विहीइ जिणनमुक्कारं । तित्थयरनामगोअं सो बंधइ नत्थि संदेहो ॥२॥

अट्ठेव अट्ठसय अट्ठसहस अट्ठलक्ख अट्ठकोडीउ । जो गुणइ भत्तिजुत्तो सो पावइ सासयं ठाणं ॥३॥ 5

श्रीनउकार भावसहित विधिइं जपतां, श्रीगुरुदत्त आम्नाय अनइं आस्थानइं विशेपिइं करी, इहलोकि अनइ परलोकिं सकल वांछित फल सीझइं । इह लोकि तां देवता सान्निध्य करइं । जिम श्रावकनी पुत्रिकान्हइं कीधउं । **अत्र कथा–**

[१] भरतक्षेत्रि पोतनपुर नगर । तिहां सुगुप्त नामिइं व्यवहारीउ श्रावक, तेहनइ श्रीमती नामिइ बेटी धर्मवंति छइ । एकवार कोएक मिथ्यात्वी श्रेष्ठिनउ बेटउ श्रीमतीनउं रूप देषी 10 व्यामोहिउ । परणिवा वांछइ । पिता कन्हलि मगावइ । पिता मिथ्यात्वी भणी दिइ नही । पछइ कपट श्रावक हुई श्रीमतीनउं पाणिग्रहण कीधउं । आपणइ घरि लेई गिउ । तेहनउं कुटुंब सहू मिथ्यात्वी छइ । श्रीमती घरनां सर्व काज काम करइ, पुण एक मिथ्यात्व किमइ न करइ । जिनधर्म करतां भणी सासू नणंद ते ऊपरि पगि २ खीजइं । पेली आपणा कर्मजिन्हइं दोस दिइ । किमइ धर्मथकी चूकइ नही । भरतार श्रीमती ऊपरि द्वेष वहतउ तेहन्हइं विणासीनइ 15 बीजी स्त्री परिणेवा हींडइ । एकवार तीणइं कालदारुण सर्प घडामाहिं घाती, ढांकी घरमाहिं मूंकिउ । अवसरिं वास भवनमाहिं शिय्याइं बइठउ श्रीमतीन्हइं कहइ–जा घरमाहिं असुकइं स्थानकिं घडामाहिं फूल मूकां छइं ते आणि । पेली स्त्री महाविनीत तत्काल तिहां गई । नवकार जपीतीइ जि ढांकणूं ऊघाडी घडामाहिं हाथ घाल्यो । नउकारनइ प्रभाविइं तूठी शासनदेवताइं सर्प फेडी सुगंध फूलनी माला कीधी । श्रीमतीइं ते फूल आणी भरतारन्हइं आप्यां । पेलउ 20 चमकिउ । ए किसिउं हूउं । तिहां जई ते घडउ जोअइ । देषइ तउ माहिं साप नही, अनइ घडउ परिमलिं महमह छइ । पछइ जाणिउं–सही एहन्हइं देवता साहाय्य करइ । हुं अभागिउ एहन्हइं पाडुउं चीतवउं । पछइ स्वजनवर्ग मेली तेह आगलि आपणउ वृत्तात कहि श्रीमतीन्हइं खमावइ । तेहना गुण ऊपरि अनुराग धरइ । एकवार अवसर देखी श्रीमती भरतारन्हइं जिनधर्मना मर्म कहइ । कर्मविवरनइं योगिइं प्रतिबोध लागउ । महामर्ज्जादी जैन श्रावक हूउ । 25 यावज्जीव धर्मपाली सुगतिइ पुहुतउ ॥ कथा एक ॥

वली नउकारनइं प्रभाविइं अनेक संकट भाजइ, लक्ष्मीनी प्राप्ति हुइ, जिम श्रावकना बेटान्हइ हुई । **अत्र कथा–**

[२] रत्नपुर नगर, यशोभद्र श्रेष्ठि–श्रावक तेहनउ बेटउ शिवकुमार महाव्यसनीउ। पिताइं घणउंइ सीषवी जोइउ धर्म किमइ न करइ। पिताइं प्रांतकालिं मान मागी कहिउं–वच्छ! एतलउं करिजे; जिवारइं तूंन्हइं गाढउं संकट आवइ तिवारइ ए नउकार जपेइ। दाक्षिण्य लगइं मानिउं। पिता दिवंगत हूउ। शिवकुमार सात व्यसन पोष-तइं हुंतइं लषमि सघली नीगमी। निर्द्धन भणी किहाइं मान महत्व न लहइं। एकवार तेह-
5 न्हइं त्रिदंडीउ मिलिउ। तेह आगलि प्रीति लगइ निर्द्धन पणानउ विषाद प्रकाशिउ। त्रिदं-डीउ कहइ–जउ माहरउं कहिउं करेसि तओ तूहन्हइं लक्ष्मीइं करी धनद समान करउ। पछइ शिवकुमार पासइं एक मृतक अणावी काली चउदसिनी रात्रिइ मसाणनी भूमिकाइं गिओ। मांडल माडिउं। मृतकहाथिं ऊघाडउं खड्ग आली शिवकुमारन्हइं कहिउं–तू एहनां पगनां तलां उल्हासि। आपणपइं मंत्रनु जाप होम करइ छइ। तिसिइ शिवकुमार संकटि
10 पडिउ चीतवइ–आहा सही, ईणइं मायावीइ त्रिदडीइं ए सघलु मुझ मारिवानउ उपाय माडिउ। मृतक ऊठीनइ सही मुजन्हइं खड्गि करी आहणिसिइ; तउ हिवं किसिउं करउ। ईहां थकउ हवडां नसाइं नही। इम करतां पितानउं ते वचन सांभरिउं। एकाग्र हुई नउकार जपवा लागउ। त्रिदंडीयाना मंत्रनइं बलिइं करी ते मृतक लगारेक सलसलीनइ ऊठिवा लागउं। वली पाछउं जि पडिउं। त्रिदडीउ चींतवइ–सही काई माहरा जापमांहि दोदलउओ हूओ।
15 वली विशेषिइं एकाग्रपणइं करवा लागउ। मृतक ऊठी बीजीइ वार वली तिम जि पाछउ पडिउं। तिवारइ त्रिदंडीउ चमकिउ। शिवन्हइं पूछइ–कांई मंत्र तून्हइं आवडइं ?। शिव कहइ–ना। पुण हिआमाहिं नउकारनउ महिमा जाणिउ। पछइ त्रिदंडीउ अनइ शिवकुमार बेहू जणा वली आपणउं आपणउं मंत्र स्मरवा लागउ। वेतालनउं अधिष्ठिउं मृतक ऊठिउं। शिवन्हइ नउकारनइं प्रभाविइ करी पुहची शकइ नहीं। पछइ रीसाविइ मृतकिं ऊपाडी त्रिदं-
20 डीआनु मस्तक खड्गि करी छेदिउ। मंत्रनइ महिमाइं करी तत्काल त्रिदंडीउ फीटी सोनातणुं पुरिसउ हूउ। शिवकुमार चमत्करिउ। रात्रिभणी तिवारइं ते सहू भुइ माहिं सातिउ। प्रभा-ति दमितारि राजान्हइं सघलु वृत्तात कहीउ। राजानु आदेश पामी महोत्सवपूर्वक सोनानउ पुरसउ शिवकुमरि आपणइ घरि आंण्यो। लक्ष्मी अखूट हूई। दीहइं पुरसाना मस्तकनइ कोठो टाली बीजा सघलां अंगोपागनउ सोनउं कापी २ वावरीइ। रात्रि वली दिव्यानुभाविं
25 तिस्यांइ जि थाइ। थोडे जि दिहाडे प्रौढ श्रीवंत व्यवहारिउ थिउ। अनुक्रमिं गुरुनइ योगिं धर्मना मर्म जाणी साव सुवर्णमय प्रासाद करावी, माहिं मणिमय प्रतिमा मंडावी, धर्म पाली सुगति पहुतु ॥ कथा २ ॥

वली श्री नउकारनइं प्रभावि मरणांत संकटइ थिकु छूटीइ। जिम जिनदास श्रावक। अत्र कथा—

[३] क्षितिप्रतिष्ठित नगर, बलराजा। एकवार नवइ मेघि वूठइ नदी पूरिं आवी। लोक जोवा ग्या। पाणीमाहिं तरतुं एक मोटउं पाकुं बीजोरू दीठउं। तलारिं माहिं पइसी लीधउं। जई राजान्हइं आप्यो। सुगंध मधुर सरस ते बीजपूर अस्वादिउं। हर्षिउ राजा पूछइ—ए किहां लाधउं ? तलार कहइ—स्वामी ! नदीना पूरमाहिं आविउं तरतुं। राजा कहइ 5
नदीनइ तटिं २ जाउ, एहनूं मूल जोउ। काहिनी वाडिथिकुं ए आविउं। पेला जोता २ तिहां घणीक लगइ ग्या। दीठी वाडी पइसवा लागा। तिसइं ढूकडे लोके कहिउं—अहो ईहं म पइसु। जि कोएकै एहनूं फल फूल लेशइ ते तिहां ठाम जि रहइ, मरइ। पेला पाछा जई राजान्हइं कहइं। राजा रसलंपट थकु कहइ—जाउ तो नगरमाहिं सर्व मनुक्षना वारा करउ। रायना आदेश भणी तलारे सर्वनगरलोकनां नामनी चीठी लिषी एक घडामाहिं घाली प्रभाति कुमारिका 10
पाशइ चीठी कढावीइ। जेहनी चीठी नीकिलइ ते जीवतव्य निरास थई धूजतुं कांपतुं तीणइ वाडीइं जाइ। बीजउरुं त्रोडी नदीमाहिं वहितूं मूंकइ। तलार नगरद्वारि रही ते काढी लिइ। पेलउ आपणपुं तिहां जि मरइ। नगर सघलुं विषाद प्राप्त हूउं। राजाना मनइमाहि नहीं। इम करतां एकवार जिनदास श्रावकनी चीठी नीसरी। पेलउ महानिर्भयपणइ घरि तथा देहरइ देवपूजा करी, सर्व कुटंब षमावी, सागारिअणसण ऊचरी वनभणी पुहतु। ऊंचइं सादिं नुकार 15
कहितुजि वनमाहि पइठउ। वननइं अधिष्ठायकिं व्यंतरइं नउकार सांभलिउ। चींतवइ—ए अक्षर किहांइ आगइं सांभल्या छइं। ज्ञाननु उपयोग देई पाछलिउ भव जोइ देखइ तु, सिउं—पाछिलइं भवि मइं दीक्षा लेई विराधी तेह भणी मरी विंतर थिउ। अहो जीणइं दीक्षाइं एकइ दीहाडउ सूधी पालीइं हूतइ वैमानिक देवतानी पदवी लाभइ; ते दीक्षा प्रमाद लगइ ते मिं हारी; अहो !—इम पश्चात्ताप धरतु आवी जिनदास श्रावकन्हइ प्रत्यक्ष हूउ। बे हाथ जोडी आगलि 20
ऊभु रहिउ। पगि लागी कहइ—मूहन्हइ धर्म बूझविउ, तूं माहरइ गुरु; कांई वर मागि। श्रावक कहइ—वरदेसि तु सर्व जीव मारिवा नियम लिइ; अनइ स्थानकि जि बइठा दिन प्रति एक बीजउरउं आणी आपवउं। व्यंतरइं मानिउं। श्रावक अखंड पाछउ आविउ। राजान्हइं वृत्तान्त कहिउं। एकेकउं बीजोरो श्रावकरहइ व्यंतरउ सदैव आणी आपइ। श्रावक जई राजारहइं आलइ। राजा हर्षिउ; नगरलोक हर्षिउ। सहू को जिनदास श्रावकनी प्रशंसा करइ। घणु काल 25
धर्म पाली सुगति पहुतु ॥ कथा ३ पूरी ॥

ए इहलोकि नउकारना फल ऊपरि त्रणि दृष्टान्त कह्या। हवइं परलोक ऊपरि कहीइ छइ २ दृष्टान्त ॥ परलोकिं नउकारनइ प्रभाविं राज्यपदवी पामीइ। जिम चंडपिंगल चोरइ पामी। अत्र कथा—

[४] वसंतपुर नगर, जितशत्रु राजा, भद्रा रानी। चंडपिगलनामइं चोर छइ। तीणइं

चोरी करी करी नगरलोक ऊदेगिउं छइ । एकवार रायनु भंडार फाडी राणीनु अमूलिक हार चोरिउ। एक कलावती नामिं तिहां गणिका छइ। कांई श्राविका कांई मिथ्यातिणि। तेहनइ विषइ ते चोर उद्धधउ छइ। ते हार लेई गणिकान्हइ आपिउ। इम करतां मयण-तेरासिनुं पर्व आविउं छइ। सघली गणिका आपणा २ शृंगार पहिरी उद्यान वनमाहिं क्रीडा 5 करिवा गई। कलावतीइ ते हार पहिरी तिहां आवी। तिसिं राणीनी दासीए ते हार तेहनइ कंठि दीठउ। ओलषिओ, जई राणीनइ कहिउं । राणीइ राजान्हइ कहिउं। राजाइ प्रतीहार पाइं जोवरावी चंडपिंगल कलावतीना घरमाहिंथिकु साही महाविडंबनापूर्वक सूलिइ दिवराविउ। कलावती ते वात जाणी तिहा गई। चिंतवइ-अहो! माहरइ कीधइ एहरइ इसी अवस्था आवी; तु आजतू एह पुरुष टाली बीजा सर्वपुरषनु नियम। एहरहइं नुंकार दिउ। पेली नुंकार 10 देई। छेहडइ चोर मरी पट्टराणीनु बेटउ हूउ। राजाइ महामोह लाइ महोत्सव करी पुरंदर कुमार नाम दीधउं। कलावतीइं दीहाडानी तकताक जोई जाणिउ सही ए तेह जि माहारो भरतार। राजानइ आवासि आवइ। पुरंदर कुमार बालकन्हइं हुलावइ। जिवारइं रुदन करइ तिवारइ पाछिला भवनइ नामिं बोलावइ। हे चंड पिंगल! म रोइ। बालकरहइं ते नाम सांभ-ली जातिस्मरण ऊपनुं। नुकारनु महिमा जाणिउ। पिता दिवगत हूआ पूठि पुरंदर कुमार 15 राजा हूउ। कलावतीनउ उपगार जाणी तेह ऊपरि अत्यंत स्नेहथिकु निरतर नुंकारनुं स्मरण करइ। राज्य अनइ धर्मपाली सुगतिं पहुतु ॥ कथा चौथी ४ ॥

वली परलोकि नउकारनइं प्रभाविं महापापनु करणहार मरी देवतानी पदवी ल्हइ। जिम हुडिक चोरिं लाधी ॥ **अत्र कथा—**

[५] मथुरां नगरी, शत्रुमर्दन राजा। तिहा हुडिक चोर सदैव चोरी करइ। एकवार कहिएक व्यवहारीआनइ घरि खात्र पाडी घणउ सुवर्ण चोरिउ। कुटुंबनें 20 माणुसे कलकल कीधउ। तलार धाया। सोना सहित चोर साहिउ। बाधी प्रभाति राजा आगलि आण्यो। राजाइ नगरमाहिं चहुटइ २ फेरवी अनेक प्रकारि विडम्बना करावी, वापडउ सूलीइ दिवराविउ। नगरमाहिं सघले उदघोषणा करावी-अहो लोको! इसिउं फल देषी बीजउ को चोरी म करसिउ। अनइ एहनी चिंता कूणहिं न करिवी। पछइ सूली कन्हलि राउला चर मूंक्या। जि को एहनी चिंता करइ ते आवी कहिज्यो, जिम तेहरहइ एह जि 25 दंड कीजइ। तिसिइ वापडा ते चोररहइ तावडइ अनइ रुधिरनइ नीकलवइ करी अपार गाढी तृषा लागी। जि को ढूकडु जाइ तेहन्हइ पाणी मागइ। राजाने भए करी कुणहू पाणी पाइ नही। तिसिइ जिनदत्त श्रावक आविउ। पेलइं पाणी मागिउ। श्रावकि कहिउं-पाणी लेई आवुं तेतलइ तूं नुकार गुणि। 'नमो अरिहंताण' मुषि ऊचारि। श्रावक घरि जई करवडउ पाणी भरी जेतलइ आवइ तेतलइ 'नमो अरिहंताण' कहिता जि चोरना प्राण ग्या। मरी

महर्द्धिक यक्ष देवता ऊपनउ । तिसिं चरे जई जिनदत्त श्रेष्टिनु वृत्तांत राजा आगलि कहिउ । राजाइं तेहरहइ सूली घालवानु आदेश दीधउ । रासभि चडावी तीणइं भूमिकां लेई ग्या । तिसइं तीणइं हुंडिकयक्षइ नवइ ऊपनइ अवधिज्ञान प्रयुंजिउं । आपणा गुर जिनदत्त श्रावकन्हइं तिसी अवस्था दीठी रीसाविउ । आवी नगर ऊपरि महाकाय शिला विकुर्वी, आकाशि वाणी बोलवा लागो–अरे राजा अमात्य प्रमुष सर्व नगरलोक पापी ! आओ हवडां जि ईणइं शिलाइं करी तुम्ह सविहुंन्हइं चूर्ण करउं । ए दयानु समुद्र सुश्रावक माहरु स्वामी श्रीजिनदत्तश्रेष्ठी; तेहन्हइं तुम्हे एवडी विडंवना करु छउ । एकवार देपु माहरुं कीधुं । तीसइं राजा प्रमुष सहू को भयभ्रांत हूतुं पुष्पादिकनी पूजा करी वीनयइ–अजाणिवा लागइ कीधउं ए अपराध खमि । अहो देवता आज अम्हन्हइं जीवितव्य दिइं । देवता कहइ–तु जीवता मूंकुं, जउ एह श्री जिनदत्त श्रेष्टिनइ सरणइ पइसउ; अनइ पूर्वदिसि माहरउ प्रासाद करावु । माहिं सूलिइ घालिउ चोर अनइ नुकार देतु श्रेष्ठि ए विहुंनी मूर्त्ति करावी पूजउ तु मूकुं । राजादं सहू मानिउं । पछइ श्रेष्ठिनइ अन्याय खमावी पट्टहस्तीइं बइसारी मोटे उत्सवे नगरमाहिं पइसारु कीधउ । ते यक्षना प्रासादमाहि तिसी वि मूर्त्ति सहू कराविउं । यक्ष उपशांत हूउ । स्थानकि पहुतु ॥ कथा पांशमी ॥

तथा श्रीनुकारनइं प्रभाविइं मोक्षइनी पदवी लाभइ । राजसिंह कुमारनी परि । **अत्र कथा–**

[६] त्रीजउ पुष्करवरद्वीप, तिहां भरतक्षेत्रमाहिं सिद्धावट ग्राम । तिहां ढूकडी पर्वतनी गुफाइं एक दमसार ऋषीश्वर चउमासी उपवास तप करतु चउमासुं रहिउ छइ । तिहां एक पुलिंदिउ नइ पुलिंदी आव्या । ऋषि वांदिउ । भद्रपरिणाम देषी ऋषिं नुंकार सीषवीनइ कहिउं–ए त्रिकाल सदैव सावधान थई जपिवउ । पेलां बेहू सदैव जपइं । ऋषि चउमासा पूठि गुरुकन्हलि पहुता । कालिं बेहू परोक्ष हूआं । पुलिंदानु जीव मरी जंबूद्वीप मणि मंदिरि नगरि राजा मृगांक राजा विजया राणी, तेहनइ गर्भि अवतरिउ । राणीइं सीहनुं स्वप्न लाधउं । अनुक्रमिं पुत्रजन्म हुउ । महोत्सव करी राजसिह कुमार नाम दीधउं । मउडइ २ बहुत्तरि कला पारीण हूउ । रूप लावण्य सौभाग्यनउं निधान यौवन वय प्राप्त हूउ । मतिसागर मुहतानउ बेटउ सुमतिकुमार । तेहसिउं राजसिंहनइ मित्राई छइ । एकवार राजसिंह कुमार मित्रसहित वनमाहिं तुरंगमनी क्रीडा करिवा गिउ । घणी वेला तुरंगम पेलावी थाकु एक आंबानी छायाइं वीसमइ छइ । तिसइ एक वटेवाहू तिहां मिलिउ । कुमरिं पूछिउं–कहु किहां थकी आव्या, किहां जासिउ ? । किहांइं कांई आश्चर्य दीठउं हूइ ते कहु । पेलउ कहइ–पद्मपुर नगर थकु हूं आविउ । सकलतीर्थनु ठाकुर श्री शत्रुंजय तीर्थनी यात्रा करवा जाउं छउं । हवइं आश्चर्यनी वात सांभलि । तेणइ पद्मपुरि नगरि पद्मराजा, हंसी राणी, तेह तणइ रत्नवती नामि बेटी चउसठि कलाकुशल महा-

रूपपात्र यौवनवय प्राप्त हुई । पितानिं मनिं वरचिंता ऊपनी । अमात्यन्हइं कहइ–एह कन्यान्हइ गुणे करी अनुरूप योग्यवर किहां थिकु मिलशइ । महुंतु कहइ–स्वामी ! म करु चिंता । एहनां भाग्य छइ ते स्वयमेव समानयोग मेलशइ । एकवार राजा आगलि एक नटवउ पुलिंदानइ वेषि नाचतु देषी कन्यान्हइ मूर्छा आवी जातिस्मरण ऊपनु । आपणु पाछिलु भव
5 पुलिंदानु दीठउ । पूर्वभवनी भार्या रत्नवती प्रतिं अतिसानुरागाथिकु वली पूछइ–कहु आवुं किसिउं हूउ ? । वटेवाहू कहइ–पछइ ते कन्यातणी प्रतिज्ञानी वात देसि विदेसि विस्तरी । अनेक राजाना कुमार ते कन्या परिणवानइ लोभइ आवी २ कूडुं जि कहइ । अम्हे पाछिलइ भवि पुलिंदा हूता । पछइ कन्या कहइ–अहो जु तुम्हे पुलिंद हूता तु कहउ तम्हे सिउं पुण्य कीधउं हूतउं जेणइ करी एवडी राज्यरिद्धि लाधी ? पेला ते वात न जाणइ, कूडा पडिआ ।
10 तंहींथ लगइ ते कन्या पुरुषद्वेषिणी थई । ए पुरुप सघलाइ कूडा बोला जि हुइ । तेह भणी एह पुरषतणूं मुख नहीं जोउं । इसिउं चींतवई स्त्रीइजिना वृंदमाहिं थिकी रहइ । तु अहो राजकुमर ! पुरुषमाहिं तूं रत्न छइ अनइ स्त्रीमाहिं तु ते कन्या रत्न । तुम्ह बिहुंन्हइ जइ योग मिलइ तु अपार जडतुं हुइ । इसिउं सांभली कुमार हर्षिउ, आनंदिउ; सर्व अंगलग्न आभरण ऊतारी तेहन्हइं आपी विसर्जी आपणइ घरि आविउ । रत्नवतीन्हइं मिलवाना
15 उपाय चिंतवइ । तिसइं नगरलोके मिली राजान्हइ एकांतिं वीनवइ–स्वामी ! अम्हे किम करूं ? ए राजसिंह कुमार नगरमाहिं जीणइ २ सेरीइं साचरइ तिहां २ आपणां बालकइ रोव्यतां मूंकी मूंकीनइ सौभाग्यना व्यामोहिआ स्त्रीना वृंद गमे २ जोइवा धाइ । अह्मारां घरनां काज-काम सघलाइ सीदाइ छइ । तेह भणी स्वामी ! कुमर नगर माहिं फिरतु वारु । राजाइं प्रती हार पाइ कुमाररहइं कहिवराविउ । वच्छ ! तूं सदैव आवासमाहिं जि थिकु रहिजे, कला
20 अभ्यसजे, बाहिरि हींडतां पुरुषनी कला विकला थाइ । ते साभली कुमर दूहवाणउ । चिंतवइ-तातिं इम तु कहाविउं, जु कांई माहरु उ(अ)पराध तातनइ मनि प्रतिभासिउ । पछइ सुमित्रइ वातनु परमार्थ कहिउ । तू दूहवण फीटी । पछइ कुमर कहइ -मित्र ! ए तातनी आज्ञा तु गाढी दुष्कर, सदैव घरमांहि पइसी रहिवूं; अनइ ते पद्मरायनी बेटीनु घणउं कूतिग छइ तु चालउ तेह देशांतर भणी जईइ ॥ यतः—

25 दीसइ विविह चरिअ जाणिज्जइ सुज्जण दुज्जण विसेसो ।
अप्पाण च कलिज्जइ हिंडिज्जइ तेण पुहवीए ॥ १ ॥

इसिउ विमासी बेहूजण षड्ग हाथि लेई तिहां भणी नींकल्या । ठामि २ अनेक आश्चर्य जोअता २ जाइ छइ । एकवार अरण्यमाहिं सूनइ देवकुलि सूते कहिएक पुरुषनु करुणास्वर सांभलिऊ । कुमार ऊठी षड्ग हाथि लेई तेहभणी चाल्यिउ । आगलि गिउ देषइ तु विकराल

राक्षसइं पुरुष एक कक्षामाहिं चांपिउ छइ । ते आक्रंद करइ छइ । कुमरइं राक्षसन्हइ कहिउं –ए बापडउ मूकि । ईणइं ताहरुं सिउं विणासिउं [2] पेलउ कहइ–ए मूंहन्हइ वशि करतु हूतु। मइं कहिउं–तु वासि थाउं जु आपणउं महामाश कापी मूंहन्हइ दिइ। ए तु देई सकइ नहीं। हूं तु भूषिउ । तु हव ए माहरु भक्ष, ए किम मूंकुं। कुमार कहइ–एहन्हइ मूंकि । हूं माहरुं महामांश तूंहन्हइ यथेष्ट आपु । इम कही षड्ग काढी जेतलइ मांस कापवा लागउ तेतलइ 5
राक्षस हर्षिउ कहइ–अहो साहसीक परोपकारी सत्पुरुष ! ताहरइ साहसिं तूठउ हूं । कांई वर-मागि । कुमर कहइ–जु तूं तुठो छें तु एह बापडानउं मनवाछित पूरि । राक्षस कहइ–ताहरा कहिआ भणी ते करिखु । पुण देवतानुं दर्शन निष्फल न थाइ । तेह भणी आ चिन्तामणि. रत्न ल्हिइ । इम कही चिंतामणि रत्न आपी राक्षस अदृश थिउ । कुमार पाछउ गिउ । मित्रनइं ते वृत्तांत कहिउ । आघा चाल्या । कुमारिं मार्गि मित्र आगलि पूर्वभवनउं स्वरूप कहिउं। मित्र 10
हसी कहइ–अहो मित्र ! तूं रत्नवती परिणीवा जाइं छइं; अनइ ते तु पुरुष द्वेषणी छइ । ईणइं पुरुषनइ वेषिइं तेहनुं दर्शनइ करवा नही लाभइ; संभाषणनी वातइ किहां । कुमार कहइ–मित्र चिंता सी कीजइ । हिव भाग्य ज फलइ । यतः–

अघटितघटितानि घटयति, सुघटितघटितानि जर्जरीकुरुते ।

विधिरेव तानि घटयति यानि पुमान्नैव चिन्तयति ॥ १ ॥ कूमारनइ मनिं पूर्वभवनउ 15
वृत्तात जाणिआ लगइ एक नउकार जि नी एकांत आस्था अनइ ध्यान छइ । एकवार अर-ण्यमाहिं एक सरोवरनी पालिं आंबानी छायाइं कुमार सूतु छइ । ढूकडा वनगहनमाहिं सुमन फल चूंटइ छइ । तिशइ तु आकाशि एक विद्याधर जाइ छइ । तीणइं जातइ सूतो राजसिंह कुमारनउं रूप देषी चिंतविउं–मझ केडइ जि माहरी भार्या आवइ छइ ते जउ एह पुरुषनउं रूप देषिशइ तो माहरु स्नेह मूकी एह जि ऊपरि अनुराग धरशइ । इसिउं विमासी तेह जि 20
वनगहनमाहिं थिकी किसीइ ऊषधी लेई पाणीइसिउं घसी ललाटिं सूक्ष्म तिलक कीधउं । तत्काल कुमार स्त्रीरूपि हूउ । विद्याधर आघउ चाल्यो । लगारेकइ तेहनी भार्या विद्याधरी आवी । तीणइ ते स्त्रीरूप देषी चितविउं–सही वलतो आवतो माहरो स्वामी जउ एह स्त्रीन्हइं देषिसिइ तो एहनइ विषइ रातु मुझ सालुं न जोइ । इसिउं विमासी तेह जि वनगहनमाहिंथी अनेरी एक ऊषधी लेई घसी तिम जि तिलक कीधउं । तत्काल स्त्रीरूप टाली पुरुषरूप थिउं । विद्याधरी 25
आघी चाली । ते सघलउ वृत्तांत सुमतिं वृष्यनइ आतरइ रहिं दीठउ । ते विन्हइ ऊषधी वनमाहिथी लेई गांठिं बांधी । कुमारन्हइं जगाडी सघलउ वृत्तांत कहिउ । अनुक्रमि पद्मपुरि पहुता । तिहां सुवर्णमय जिन प्रासाद ढूकडा रहइ छइं । चिंतामणिनइ प्रभावि सकल मनो-वांछित सुष पहुचइ छइ । तिमइं जि स्त्रीनइ समूहि वींटी सुपासनि बइठी रत्नवती कन्या प्रसादिं

आवी। आगलि थिका कांबडीआ पुरुष तलार पुरुषनइं पाछा करइ छइ । तिसिइं ते विन्हइ
कारिमी स्त्री थई ढूकडेरी प्रासादमाहिं आवी ऊभी रही । रत्नवतीइ परमेश्वरनइ आठ प्रकारि
पूजा कीधी। पाछी वलतीइं कुमार स्त्री दीठी। देवांगनासमान रूप देषी हर्षि पूछिउं—महानु-
भागि ! तुम्हे अपूर्वस्यां दीसउ। किहां तां आव्या ? तिसइ मित्र स्त्री कहइ—ए माहरी सपी
5 मणिमंदिर नगरथिकी आवी। रत्नवती कहइ—ए तम्हारी सषी मझनइ देषतां मनि अपार
उल्लास थाइ छइ। तुम्हे माहरइ जि परहुणा थाउ। आपणइ घरि लेई गई। अनेकभक्ति
करइ । बेहू घणु काल तिहा रहिआं । एकवार रत्नवती प्रति कुमारश्री कहइ—देषउ
अजीतां ताहरइ पूर्वभवनुं भरतार पुलिंदउ किहांइं जाणीइ नहीं, अनइ योग्यवर पाषइ रुडी-
इ कन्या कांई शोभइ नहीं। पछइ एकिसिउ मेली स्वयंवर मंडप मंडावी आपणा मनगमता
10 कहिएक वरनउ पाणिग्रहण करइ कां नहीं। पछइ रत्नवती कहइ—जोइ, नर भरतार तां मननी
रतिनइ काजिइं कीजइ। ते तु तुझ साह्मउं जोऊतां मझन्हइ ऊपजइ छइ। तु बीजइ कुणहिं
माहरइ काज काई नहीं। तिवारइ कुमार स्त्री पूछइ--ते भवांतरनु पुलिंदउ वर किम ओलषाइ।
रत्नवती कहइ—जि को ते भवनुं कीधउं पुण्य माहरुं जाणशड ते सही माहरु पूर्वभवनु पति।
तिवारइं कुमारस्त्री कहइ—एतलुं जाणउं 'पाछिलइ भवि दमसार ऋषीश्वर नुंकार तूंहन्हइ
15 सीषविउ हूतु ते स्मरवानइं प्रभावि तू मरी रायनी बेटी हूई'। ते सांभलीनइ चमत्करी रत्नवती
आपणी सषी चंद्रलेषा प्रति कहइ—ए किम ए वात जाणइ ? । चंद्रलेषा कहइ—स्वामिनी !
जोइतां एहनी गति, वचनचेष्टा, सहु पुरुषना सरिषु दीसइ छइ । अनइ एह देषी तुजन्हइं
रति ऊपजइ । तीणइ इसिउं जाणीए, सही ए ताहरु पूर्वभवनु भरतार । किसिइं कारणिं
पुरुषनुं स्वरूप आच्छादी स्त्रीनइ रूपिं आपणपुं देषाडइ छइ। तिसइं चंद्रलेषा कुमारस्त्री
20 प्रति कहइ—स्वामी ! हवे प्रसाद करी आपणउ स्वभावनुं रूप देषाडउ । तिसइं ऊषधिनइ
योगइं बेहू पुरुषनइ रूपि थिआ । रूप देषी सहू को हर्षिया । पछइ चंद्रलेषा
कहइ—स्वामी ! जिम रूप प्रकाशिउं, तिम गोत्र कुलादिक प्रकासउ । तिवारइं मित्रइ
कुमारतणउ देस, कुल, गोत्र, वटेवाहूना वचननउ वृत्तांत संपूर्ण कहिउ । राजाइ
वात जाणी हर्षिथिकइ शुभलग्नि मोटे महोत्सवे रत्नवतीनो पाणिग्रहण कराविउ। हस्ति मोचनि
25 अनेक गजेंद्र तुरंगम अर्द्ध राज्य दीधउं । राजसिंह कुमार रत्नवती सहित नानाप्रकार भोग-
सुप भोगवइ छइ। घणउ काल हूउ। एकवार पिताइ मृगांकराजाइं प्रतीहार हाथि लेष मोकली-
नइ कहाविउं—वच्छ ! हिवइ अम्हे वृद्ध हूआ। राज्य छांडी दीक्षा लेवानी उत्कंठा करुं छउं।
घणाकाल लगइ ताहरा दर्शननी उत्कंठा छइ। तु वहिलु आहां आविजे। पछइ राजसिंह
कुमार सुसरानइ मोकलावी रत्नवती सहित चतुरंग कटक परिवार मणिमंदिर नगरभणी चा-

लिउ। अनुक्रमिं पुहुतुं। पितान्हइं प्रणाम कीधउं। सर्व कुटुंब परिवार हर्षिया। राजा चिंतवइ छइ—कुमारन्हइ राज्य देई हूं आपणुं धर्मकार्य करउं। इसिइं आवी उद्यानपालकि वीनविउं —स्वामी! उद्यानमांहि श्रीगुणसागरसूरि गुर पाउधारिया। राजा अति हर्षिउ। राजसिंह कुमार प्रतिं राज्य स्थापी साते क्षेत्रे वित्त वेची सपरिवारु गुरुकन्हलिं गिउ। दीक्षा लेई दुष्कर तप करी देवलोकि पहुतु। राजसिंह राजाइं रत्नवती राणीसहित सम्यक्त्वमूल बार व्रत पडिवज्या। निष्कंटक राज्य अनइ श्रावक धर्म पालइ छइ। नुकारनइ प्रभावि मोटा २ वयरी राजा आज्ञा मनाव्या। गाम २ जिनप्रासाद कराव्या। पृथ्वी जिनमंडित करावी। चिरकाल राज्य पाली एकवार रोगाक्रांत थिकइं हूंतइ आपणा पुत्र प्रतापसिंह कुमारन्हइं राज्य स्थापना कीधी। आपणपइ रत्नवती राणी सहित श्रीगुरुनइ मुखिंइ सविस्तरि आराधना कीधी। सर्व जीवराशि पमावी शुभध्यानि श्रीनउकार [जप]तु जि परोक्ष हूउ। मरी पांचमि देवलोकि दस सागरोपमनइ आऊपइ ब्रह्मेंद्र इसिं नामिं इंद्र हूउ। रत्नवतीइ मरी तीणइं जि इंद्र [तणी] सामानिक देवता हूई। तिहां थकु च्यवी एकभव संसारमाहिं अवतरी दीक्षा लेई सकलकर्म क्षयकरी केवलज्ञान ऊपार्जी बेहूं जणां मोक्ष लहशइ॥ कथा ६ ॥

॥ श्रीनवकार बालावबोध ॥



औक्तिक प्रकरण

मुग्धावबोध औक्तिकमांनां अवतरणो

[कर्ता–कुलमंडनसूरि, विक्रम संवत् १४५०]

[विभक्ति विचार]

१. जु करइ, सुइ,[1] लिइ, दिइ, पढइ[2] हुइ[3]: इत्यादि बोलिवइ उक्तिमाहि क्रिया कारिवइ जु मूलिगउ[4] हुइ सु कर्त्ता, तिहां प्रथमा–१ । २ । ३ । हुइ । चंद्र ऊगइ । ऊगइ इसी क्रिया । कउण[5] ऊगइ–चंद्र । जु ऊगइ सु कर्त्ता । तिहां प्रथमा । चंद्रः उद्‌गच्छति । वीतराग वांछित दिइ । दिइ इसी क्रिया । कउण[6] दिइ, वीतराग । जु दिइ सु कर्त्ता । तिहां प्रथमा । किसउं[7] दिइ, [8]वांछित । ज दीजइ त कर्म्म । तिहां द्वितीया । वीतरागः वाञ्छितं ददाति । एवं अहं देवं[9] नमस्करोमि ॥

२. जं कीजइ, लीजइ, दीजइ, पढीइ, गुणीइ[10]: इत्यादि बोलिवइ[11] युर्कि[12] क्रिया करी उक्तिमाहि जं वस्तु कर्त्ता व्यापीइ त कर्म्म । तिहां द्वितीया । चेत्रु कटु[13] करइ । करइ इसी क्रिया । कउण करइ, चैत्रु । जु करइ सु कर्त्ता । तिहां प्रथमा । किसउं करइ, कटु । जं कीजइ तं कर्म्म । तिहां द्वितीया । चैत्रः कटं करोति । एवं चैत्र. काष्ठं दहति । ग्राम याति । शास्त्रं पठति ॥

३. जीणइ[14]करी करइ, लिइ, दिइ इत्यादि युर्कित[15]जिहां: 'इं' कहीइं, अनइ जीणइ करी कर्त्ता क्रिया साधइ त करण । तिहां, अनइ जेहसिउ[16] इत्यादि बोलिवइ सहादि योगि[17] तृतीया हुइ[18] । जीव धर्म्मिइं संसार तरइ । तरइ इसी क्रिया । कउण तरइ, जीव । जु तरइ सु कर्त्ता । तिहा प्रथमा । किसउ तरइ, संसार[19] । ज तरीइ[20] त कर्म्म । तिहा द्वितीया । किसिइं[21] तरइ, धर्म्मि । तिहा कराणि तृतीया । जीव संसारं धर्म्मेण तरति । चैत्रु लोकसिउं वात करइ । करइ इसी क्रिया इत्यादि । कर्त्ता कर्म्म पूर्ववत् [22] । कीणइ सिउं[23] लोकसिउं ।

---

१ A માં આ શબ્દ નથી २ B C મા આ શબ્દ નથી ३ B મા આ શબ્દ નથી. ४ B માં मूलगउ, C મા मूलगु ५ A મા कुण. ६ A મા कुण. ७ A Cમા किसुं ८ આ બને અંક વચ્ચેનો પાઠ B પ્રતિમા છૂટી ગયો ९ A માં આ શબ્દ વાક્યને અંતે આપ્યો છે १० A C મા આ શબ્દ નથી ११ C મા નથી १२ A મા નથી. १३ B મા चैत्र कट. १४ A મા जीणं. १५ A મા युक्तिइ १६ B મા जेहिसिउं १७ Cમા योगि પછી तिहां શબ્દ વધારે છે. १८ B મા हुइ નથી. १९ B મા ससारु. २० C મા तरीयइ २१ A મા किसइ. C માં किसि. २२ B પ્રતમા આ વાક્યને બદલે 'कउण करइ चैत्र । सु कर्ता, तिहां प्रथमा । किसउं करइ, वात । जं कीजइ त कर्म, तिहां द्वितीया । २३ A માં कीणंसिउ.

तिहां सह शब्द अनइ तेहनइ योगि तृतीया । चैत्रः लोकेन सार्द्ध-सह-साकं-समं वा वार्त्ता[1] करोति ॥

४. जेहनइं कारणि क्रिया कर्त्ता कर्म्म हुइ । अनइ जेहरहइं[1] दान दीजइ, कोप कीजइ, तिहां संप्रदानि चतुर्थी । विवेकिउ मोक्षनइं कारणि खपइ । खपइ इसी क्रिया इत्यादि । क्रिया कर्त्ता कर्म[2] पूर्ववत् । कउणनइं[3] कारणि, मोक्षनइं । तिहां तादर्थ्ये[4] चतुर्थी । विवेकी मोक्षाय यतते[5] । एवं सेवकाय प्रसीदति । लोकाय[6] नृत्यति नटी । संप्रदाने चतुर्थीयं । अत्र चतुर्थ्या हेतुः क्रिया[7] । धर्म्मु सुखनइं कारणि हुइ । क्रिया कर्त्ता पूर्ववत् । किसानइं कारणि धर्म्मु हुइ, सुखनइं । तिहां चतुर्थी । धर्म्मः सुखाय भवति । [8]एवं यूपाय दारु भवति । अत्र चतुर्थ्या हेतुः कर्त्ता । साधु मोक्षनइं कारणि तपु करइ । करइ[9] इत्यादि क्रिया कर्त्ता कर्म्म पूर्ववत् । किसानइं कारणि, मोक्षनइं । तिहां तादर्थ्ये चतुर्थी । साधुर्मोक्षाय तपः करोति । द्विजाय दक्षिणा ददाति । संप्रदाने चतुर्थी एषा । मैत्राय कोपं करोति । अत्र चतुर्थ्या हेतुः कर्म्म ॥

५. जेहतउ, हूंतउ, थउ, थकउ[10]: इत्यादि बोलिवइं जेह वस्तुनइं परित्याग सूचियइं[11] ते अपादान । अनइ[12] आरंभी प्रभृति अन्यादिकनउ [13]योगु जिहां हुइ तिहां पंचमी[13] । वृक्षतउ पान पडइ । पडइ इसी क्रिया । कर्त्ता कर्म पूर्ववत्[14] । कउणतउ पडइ[15], वृक्षतउ । तिहां अपादानि[16] पंचमी । वृक्षात् पर्ण्णं पतति । एवं चौरात् नश्यति लोकः । [17]आपाढात् प्रभृति आरभ्य वा वृष्टिर्भवति । अस्ति जीवः शरीरात् अन्यः । पितुः पृथक् संजातः पुत्रः[17] ॥

६. एहनउ, तणउ, एहरहइं[18], किहि[19]: इत्यादि बोलिवइ उक्तिमाहि जेह वस्तुरहइं[20] कारकसिउं अथवा संबंधसिउं स्व-स्वामित्वादिक[21] संबंध सूचीयइ[22]; अनइ जेहरहिं क्रिया

---

१ B जेहरहिं, C जेहरहीं. २ A मा कर्म नथी. ३ B कउण. ४ B सम्प्रदाने. ५ B खपते. ६ A सेवकाय. B मां लोकाय प्रसीदति ए वाक्य वधारे छे. ७ B चतुर्थी हेतुक्रिया. ८ B मा आ, तथा आ पछीनां बधां वाक्योने ठेकाणे-मात्र- 'साधु मोक्षनइ कारणि तप करइ । क्रिया कर्ता कर्म पूर्ववत् । साधु' मोक्षाय तपः करोति । आटलो ज टुंको पाठ छे ९ A मां थी. १० B जेहतउ थकउ इत्यादि; C जेहतु तउ हूतउ थकउ इत्यादि. ११ A B सूचीइ १२ A मां नथी. १३ B योगु हुइ जिहां तिहां पंचमी, C मां योग पंचमी. आटलो ज फक्त पाठ छे. १४ C मां क्रिया कर्ता पूर्ववत् आटला ज शब्दो छे. १५ B C मा नथी. १६ A C अपादान. १७ B मां आ वाक्यो नथी. १८ B C एहरहिं. १९ B मां नथी C मां कहीं. २० B C वस्तुरहिं. २१ B मां नथी, C मां स्वस्याम्यादिक. २२ B सूचीअइ.

हेतुपणउ न हुइं[1] ते संवध, तिहां षष्ठी हुइ[2]। चैत्रतणउं धनु गामि छइ। क्रिया कर्त्ता पूर्व-वत्। धन कउण तणउं, चैत्र तणउं। तिहा कर्त्ता संबंधि षष्ठी। किहा, गामि। तिहां आधार सप्तमी। चैत्रस्य धनं ग्रामे अस्ति। गुरुतणउं वचन हउं[3] सांभलउं। क्रिया कर्त्ता पूर्ववत्। वचन कउण तणउं, गुरु तणउं। तिहा कर्मसंबंधि[4] षष्ठी। अहं गुरूणा वचनं शृणोमि।
5 एवं काशस्य लेखन्या अक्षराणि लिखति लेखकः। [5]अत्र करणसंबंधि पष्ठी। वलभ्या ब्राह्म-णाय गां ददाति। अत्र संप्रदान संबंधि षष्ठी। चैत्रस्य गृहात् चौरो नष्टः। अत्रापादान संबंधि षष्ठी। ग्रामस्य मध्ये लोको वसति। आधार संबधि षष्ठी। तव गुणानां पार कोऽपि न प्राप्नोति। सबध सबधे षष्ठी[6]॥

७. जिहां देशि, कालि, जेहनइ विषइः इत्यादि 'इ'कारनइ बोलिवइ जे[7]कर्त्तानउ अथवा
10 जे[8] कर्म्मनउ आधारु[9] हुइ ते अधिकरण। तिहा सप्तमी। चैत्रु[10] ग्रामि वसइ। क्रिया कर्त्ता पूवर्वत्। किहा वसइ, ग्रामि। तिहा आधारि[11] सप्तमी। चैत्रः ग्रामे वसति। एव ग्रीष्मे तपति सूर्यः। लोकः स्थाल्या धान्यं पचति। आकाशे चन्द्रं पश्यति॥

[कृदन्त विचार]

८. करी, लेई देई, इत्यादि बोलिवइं एक उक्ति माहि पूर्व्विली क्रिया आगलि 'ई'कार
15 जिहां बोलाइ[12] तिहा क्त्वा प्रत्यय—त्वा इसिउ आवइ, अव्यय। क्त्वानइ कर्म्मि द्वितीया। शिष्य शास्त्र पढी अर्थ पूछइ। पूछइ इसी क्रिया। कउण पूछइ, शिष्य[13]। जु पूछइ सु कर्त्ता। तिहां प्रथमा। किसउं[14] पूछाइं, अर्थ। जं पूछाइ त[15] कर्म्म। तिहां द्वितीया। किसुं करी पूछइ,[16] पढी। तिहा क्त्वा प्रत्यय। किसुं[17] पढी, शास्त्र। तिहा क्त्वानइ कर्म्मि द्वितीया। शिष्यः शास्त्रं पठित्वा अर्थं पृच्छति। एव पुस्तकं छोटयित्वा। गुरून् वन्दित्वा[18]॥
20 ९. करिवा, लेवा, देवाः इत्यादि बोलिवइ एक उक्ति माहि जिहा उत्तरक्रिया आगलि 'वा' कहीयइ[19] तिहां तुम् प्रत्ययः। तुं इसिउ आवइ, अव्यय। तुम्नइ कर्म्मि द्वितीया। [20]कुभकार घडा घडीवा माटी अणइ। क्रिया, कर्ता, कर्म्म पूववत्। किसुं करिवा, घडिवा। तिहां तुम् प्रत्ययः। किसा घडिवा, घडा। तिहां तुम्नइ कर्मि द्वितीया[21]। कुम्भकारो घट घटयितुं

---

१ B માં આ વાક્ય નથી. २ B મા આ શબ્દ નથી, C મા આ વ્યાકયની જગ્યાએ ते संवंधी षष्ठी આટલુ ટુકુ વાક્ય છે. ३ B हुं. ४ A संबंधे. ५–६ આ બને અંકો વચ્ચે રહેલા સસ્કૃત વાકયો B પ્રતિમા નથી. ७ C जेह. ८ B C મા નથી. ९ A आधार १० A चैत्र. ११ A आधार. १२ A कहीइ, C कहायइ. १३ B મા આ બે વાકયો નથી. १४ A किसुं, B किसू. १५ A पूछीइ १६ B C મા આ શબ્દ નથી १७ C किसउं. १८ C માં अर्थं पृच्छति शिष्यः આટલું વાક્ય અતે વધારે છે. १९ A कहीइ, C कहायइ २०–२१ આ બંને અંક વચ્ચેના વાક્યો A પ્રતિમા પડી ગયા છે.

मृत्तिकां आनयति । एवं गृहं कर्तुं ॥

१०. करी, लई देई:[1] इत्यादि आगलि [2]जाणइ–सकइ ए विहुंनइ[3] योगि तुम् हुइ । उदारो दातुं जानाति; शक्नोति वा ॥

११. करतउ, लेतउ;[4]करती, लेती; करतउं, लेतउं;[5]इत्यादि घणी परि समानकालिक क्रिया शब्दनइ छेहि जिहां 'तउ'[6] बोलीयइ तिहां त्रिहुं लिंगे, साते विभक्ते, २१ वचने, शतृ प्रत्यय 5
अन् इसिउ आवइ । अनइ शतृ विशेष्य आगलि जे लिंग विभक्ति वचन हुइं ते शतृ प्रत्यय परइं आणीयइं[7]। अनइ शतृनइ कर्म्मि द्वितीया हुई[8]। करसणी हल खेडतउ बीज वावइ । क्रिया, कर्त्ता, कर्म[9] पूर्ववत् । करसणी किसउं करतउ, खेडतउ । तिहां शतृ प्रत्यय । करसणीनइ पुंलिंग प्रथमा,[10]एक वचनु । किसुं खेडतउ, हल । तिहां शतृनइ कर्म्मि द्वितीया । कर्षकः हलं खेटयन् कृषन् वा बीजं वपति । एवं नद्यः पानीयं वहन्त्यः पथिकान् प्रीणयन्ति । छात्राणि 10
शास्त्रं पठन्ति विवेकवन्ति भवन्ति । विनयं कुर्वतः शिष्यस्य विद्या समागच्छति ॥

१२. करणहार, लेणहार, देणहार: इत्यादि बोलिवइं[11]क्रिया शब्दनइ अंति जिहां 'णहार' कहीयइ[12] तिहां त्रिहु लिंगे, ७ विभक्ते, तृच्प्रत्यय 'तृ' इसिउ [13]आवइ । अनइ तृच्ना[14] विशेष्य आगलि जे लिंग, विभक्ति, वचन हुइं ते तृच् प्रत्यय[15] आगलि आणीयइं,[16] अनइ तृच्नइ कर्म्मि षष्ठी हुइ । धर्म्म करणहार जीव सुख पामइ[17] । क्रिया, कर्त्ता, कर्म्म 15
पूर्ववत् । किसुं (कउण) करणहार, जीवु[18] करणहार । तिहां तृच् प्रत्यय, जीवनइ विशेषणि पुंलिंग प्रथमा एक वचन । किसुं करणहार, धर्म्म । तिहां तृच्नइ कर्म्मि षष्ठी । धर्म्मस्य कर्त्ता जीवः सुखं प्राप्नोति । एवं शीलस्य पालयित्री स्त्री स्वर्गं लभते । दानस्य दातृ कुलं याचकान् प्रीणयति ॥

१३. कीजतउ, लीजतउ,[19]पढीतउ, कीजती; कीजतउं, इत्यादि बोलिवइ जिहां 'ईजतउ' 25
अथवा 'ईजतउं'[20] कहीयइ तिहां आनश् प्रत्यय; 'यमान' इसिउ[21] आवइ । तेहना विशेष्य आगलि जे[22] विभक्ति, लिंग हुइं ते आनश् प्रत्यय[23] परइं आणीयइं[24] । आनश् तणा कर्त्तारइं तृतीया हुइ । सूत्रधारइ[25]कीजतउ प्रासाद; अथवा कीजती वावि; अथवा कीज-

१ A C मा आ शब्द नथी. २ B मा आ नथी. ३ A विहुंइनइ. ४ B मा तउ शब्द वधारे छे. ५ A C मां करतुं लेतुं. ६ A C मा त. ७ A आणीइं. ८ ... मा नथी. ९ A मा नथी. १० C प्रत्ययमा. ११ B ०वइ. १२ B कहीइ. १३ ... इसउ. १४ A तृच्नइ. १५ B C मा आ शब्द नथी. १६ A आणीइ. १७ ... पामई. १८ A C जीव. १९ B C मां आ शब्द नथी. २० B ईत, ईजत. ईजत आवो पाठ छे. २१ A इसउ. २२ B जु. २३ B C मा आ शब्द ... २४ A आनीइ. २५ A सूत्रधारि.

तउं देहरउं, लोक देखइ। देखइ इसी क्रिया। कउण देखइ, लोक। जु देखइ सु कर्त्ता। तिहा प्रथमा। किसउं देखइ प्रासाद। जं देखीयइ[1] तं कर्म्म। तिहा द्वितीया। प्रासाद किसउ,[2] कीजतउ। तिहां आनश् प्रत्यय[3]। प्रासादनइ विशेषणि पुलिंग द्वितीया एक वचनु[4]। कीणइं कीजतउ, सूत्रधारिइं। तिहा आनश्नइ कर्त्ता तृतीया। सूत्रधारेण क्रियमाणं
5 प्रासाद लोकः पश्यति। एवं स्त्री लिंगे–क्रियमाणा वापीं। नपुसकलिंगे–क्रियमाणं देवगृहं। एवं निष्पद्यमानं पात्यमानं विनश्यमानं चीयमान वा[5] ॥

१४. तथा, शिष्य शास्त्र पढतउ हउं सांभलउं; इत्यादि बोलिवइ जे क्रिया शब्द आपणा कर्त्ता-नउं विशेषण हुइ,[6] तिहां शतृप्रत्यय। अथवा,[7] शिष्यिइं शास्त्र पढीतउं हउं सांभलउ। इत्यादि बोलिवइं जे क्रियाशब्द आपणा कर्म्मनउं विशेषण हुइ, अथवा शिष्यिइं[8] पढीतउं हउं
10 साभलउं, इत्यादि बोलिवइं भावनउं विशेषण हुइ, तिहां बिहु स्थानके आनश् प्रत्यय हुइ। शिष्य शास्त्राणि पठन्तं अहं[10] शृणोमि। शिष्येण शास्त्रं पठ्यमानं शृणोमि। शिष्येण पठ्यमान शृणामि ॥

[अथ उक्तिभेद]

15

१५. जिहां उक्तिमांहि कर्तानी अपेक्षां क्रिया आगलि अर्थु अनइ १।२।३ वचन हुइं ते कर्त्ता उक्ति 'पाधरी' कहीयइ। तिहा कर्त्ता आगलि प्रथमा, कर्म्म आगलि द्वितीया। क्रिया आगलि प्राहिं परस्मैपद तणां नव वचन हुइ। मैत्र. कट करोति। मैत्रौ कटं कुरुतः। मैत्राः कट कुर्वन्ति। त्वं कटं करोषि। इत्यादि ९ ॥

20 १६. जिहा कर्म्मनी अपेक्षां क्रिया आगलि अर्थ अनइ १। २। ३ वचन हुइ, अनइ जिहां क्रियानइ छेहि वर्त्तमानकालि 'ईयक, ईजत'[12] बोलाइं ते कर्म्मि उक्ति ' वाकुडी ' कहीयइ। तिहां कर्त्ता आगलि तृतीया, कर्म्म आगलि प्रथमा। क्रिया आगलि आत्मने पदतणा नव वचन हुइ। छात्रेण छात्रैर्वा ग्रन्थः पठ्यते, ग्रन्थौ पठ्येते, ग्रन्थाः पठ्यन्ते। लकेन त्वं स्तूयसे। [13]युवां स्तूयेथे। यूयं स्तूयध्वे। एव, अहं स्तूये। आवां स्तूयावहे। वयं स्तूयामहे[14] इति[15]
25 ९ वचनानि। अनइ जिहां वांकुडी उक्तिमांहि कर्म्म न हुइ ते भावि उक्ति कहीयइ।

---

१ A देखइ. २ A किसउ छइ. ३ C मा नथी ४ A वचन. ५ A मा वा नथी. ६ A मा नथी. ७–८ आ बे अंक वच्चेनो पाठ B प्रतिमां नथी ९ B C शिष्यि १० A मां नथी ११ A मा आ बे शब्दो, वचन शब्द पछी मूकेला छे. १२ B मां आ शब्द नथी. १३–१४ B C मा आ वाक्यो नथी. १५ B, C इत्यादि.

तिहां कर्त्ता आगलि तृतीया। क्रिया आगलि आत्मनेपदनउं पहिलउं एकू ज वचन हुइ। त्वया मया महात्मभिर्वा पठ्यते। एवं उक्ति त्रिहु भेदि—कर्त्ता १ कर्म्मि २ भावि ३; अथवा बिहु भेदि पाधरी १ वांकुडी[1] २। अनइ जिहां कर्म्म कर्त्ता पणइं बोलाइ ते कर्म्मकर्त्ता उक्ति कहीयइ, तिहा कर्त्ता न ऊचरीयइ। कर्म्म आगलि कर्त्ता भणी प्रथमा। अनइ क्रिया आगलि आत्मनेपद। ए ग्रंथ सुखिं[2] पढायइ[3]। अयं ग्रंथः सुखेन पठ्यते। इहां[4] सोनउं सहुंगउं वींकाइ। इह सुवर्णं समर्घं विक्रीयते। तथा प्राकृत उक्ति सकर्मक अतीत कालि कर्मि जि बोलीयइ। श्रावकिइं[5] देवु[6] पूजिउ। श्रावकेण देवः पूजितः। एवं क्षुल्लकेन पुस्तिका छोटिता। अनइ जेह उक्ति माहि गत्यर्थ अथवा अकर्म्मक क्रिया हुइ, तिहां प्राकृत वार्त्ता अतीत कालि कर्त्ता बोलायइ। चैत्रु गामि गिउ। चैत्रः ग्रामं गतः, अगच्छत् वा। एवं आगतः, चलितः। तारउ ऊगिउ। तारकः उद्‌गतः, उदगच्छत् वा। एवं लोक ऊठिउ, सूतउ, जागिउ। लोकः उत्थितः, सुप्तः, जागरितः।

१७. अमुकइ हुंतइ करतइ; अथवा अमुकइ हुईतइ अमुकइ कीजतइ; अथवा अमुकउ करइ इत्यादि बोलिवइ कर्त्ता कर्म भाव आगलि जिहां 'इ'कार कहीयइ, अनइ जीणइं आपणी क्रियां कीरा मूल्गां कर्त्ता क्रिया सूचीयइं ते भावलक्षण त्रिहुं भेदि हुइ। तिहां सप्तमी। तिहां कर्त्ता भावलक्षण, अकर्मक, सकर्मक हुइ[7]। मेघि वरिसतइ मोर नाचइं। नाचइं इसी क्रिया। कउण नाचइं मोर। जे[8] नाचइ ते[9] कर्त्ता। तिहां प्रथमा। किसइ हुंतइ नाचइं मेघि। तिहां भावलक्षणि सप्तमी। मेघि किसुं करतइ, वरिसतइ[10]। तिहां शतृ प्रत्यय, मेघनइ विशेषणि सप्तमी। मेघे वर्षति मयूरा नृत्यन्ति। गुरि अर्थु कहतइ प्रमादीउ ऊंघइ। क्रिया कर्त्ता पूर्ववत्। किसइ हुंतइ, गुरि; तिहां भावलक्षण सप्तमी। गुरि किसउं करतइ, कहतइ[11]। तिहां शतृ प्रत्यय। गुरुनइ विशेषणि सप्तमी। किसउं कहतइ अर्थु[12]। तिहां शतृनइ कर्म्मि द्वितीया। गुरावर्थं कथयति प्रमादी निद्रायते। १।

१८. कर्म्मि भावलक्षण यथा—गोपालिइं[13] गाए दोहीतीए चैत्रु[14] आविउ। क्रिया कर्त्ता पूर्ववत्। किसइ हुंतइ, गाए। तिहां भावलक्षणि सप्तमी। गाए किसीए, दोहीतीए; तिहां आनश् प्रत्यय। गाइनइ विशेषणि सप्तमी। किणइं दोहीतीए गोपालिइं[15]। तिहा आनश् प्रत्ययना कर्त्ता आगलि तृतीया[16]। गोपालेन गोषु दुह्यमानासु चैत्र आगतः। एव उपवेश्यमानासु, उत्थाप्यमानासु, चार्यमाणासु, पाय्यमानासु वा। २।

१ B पाधरी, वांकी. २ A सुखिइ. ३ B पढीइ. ४ A, C इह. ५ B श्रावकि. ६ A देव. ७ B, C માં આ વાક્યને બદલે तत्र कर्ता भावलक्षणं अकर्मकं सकर्मकं च આવું સંસ્કૃત વાક્ય છે. ८ B जु. ९ B, C सु. १०. A, B वरसतइ. ११ A, B માં આ શબ્દો નથી. १२ A अर्थि. १३ B गोपालि. १४ A चैत्र. १५ B, C पींडारइं. १६ C માં આ વાક્ય ત્રુટિત છે; B માં तिहां आनशनइ कर्ता तृतीया આવો પાઠ છે.

१९. भावि भावलक्षण यथा—चैत्रिइं गाईतइ मैत्रु नाचइ। क्रिया कर्त्ता पूर्ववत्। किसइं हुंतइ, गाईतइ। तिहा भावलक्षण सप्तमी। आनश् प्रत्यय। किणइ[1] गाईतइ, चैत्रिइ[2]। तिहा आनशन-इ कर्त्ता तृतीया। चैत्रेण गीयमाने मैत्रो नृत्यति। एव वाद्यमाने,[3] दीयमाने, आगम्यमाने, विलोक्यमाने वा। ३।

5 २० एवं त्वयि कार्य्यं कुर्वति, कुर्वाणे आनश्,[4] चक्राणे कान,[5] चक्रुषि क्वसु। ग्रामं गते क्तः, गतवति क्तवतु। शास्त्रस्याध्यापके णक्। अध्येतरि तृच। यदि वा त्वया कार्ये कृते चैत्रः समागच्छतीत्यादि॥

[शब्द संग्रह]

10 **ऊपरि** इत्यर्थे उपरि, उपरिष्टात्।
हेठि अधः, अधस्तात्।
कन्हइ पार्श्वं, समीपं।
—एषां योगे षष्ठी।
जं तं यत् तत्।
15 **जइ** यदि।
तउ तर्हि।
जां यावत्
तां तावत् } अनयोर्योगे द्वितीया।
पाखलि परितः पक्षतलेन वा।
20 —अनयोर्योगे क्रमाद् द्वितीयाषष्ठ्यौ।
पाखइ विना, अंतरेण, ऋते।
—एषां योगे द्वितीया।

ईहं इह, अत्र, अस्मिन् स्थाने वा।
तिहां तत्र, तस्मिन् स्थाने वा।
जिहां यत्र, यस्मिन् स्थाने वा।
किहां क्व, कुत्र, कस्मिन् स्थाने वा।
हवडां अधुना, इदानीं, संप्रति, सांप्रत, एतर्हि।
तिवारइं तदा, तदानीं, तस्मिन् काले वा।
किवारइ कदा, कस्मिन् काले वा।
जिवारइं यदा, यस्मिन् काले वा।
अनेरीवार अन्यदा, अन्यस्मिन् काले वा।
सदैवइ सदा, सर्वदा, सर्वस्मिन् काले वा।
एकवार एकदा, एकस्मिन् काले वा।
किम कथं, केन प्रकारेण।
जिम यथा, येन प्रकारेण।

---

१ A, B कणइ. २ A मां नथी. ३ A कथमाने, गीयमाने. ४–५ A मां बन्ने शब्दो नथी.

तिम तथा, तेन प्रकारेण।
इम इत्थं, एवं।
अहुण ऐषमः, अस्मिन् संवत्सरे वा।
पउर परुत् , पूर्वस्मिन् संवत्सरे वा।
परारु परारि।
आजु अद्य।
कालि कल्ये।
गिइ कालि ह्यः, गतकल्ये वा।
आवतइ कालि श्वः, आगामिकल्ये वा।
अनेरइ दीसि अन्येद्युः, अन्यस्मिन् दि-
वसे वा।
आगलि अग्रे, अग्रतः, पुरः, पुरतः, पुरस्तात्।
पाछलि पश्चात्।
—एषां योगे षष्ठी।
डावागमा वामतः।
जिमणगमा दक्षिणतः।
विहुंगमा उभयतः।
सविहुंगमा सर्वतः, अभितः परितः।
—एषां योगे द्वितीया।
बाहिरि बहिः, बहिस्तात्।
ऊपिलु उपरितनं।
हेठिलुं अधस्तनं।
आगिलुं अग्रेतनं।
बाहिरलुं बाह्यं।
ताहरउं तव, तावकं, तावकीनं, त्वदीयं।
माहरउं मम, मामकं, मामकीन, मदीय।
अम्हारउं अस्माकं, आस्माकं, अस्माकीनं,
अस्मदीयं।
तम्हारउं युष्माकं, यौष्माकं, यौष्माकीणं,
युष्मदीयं।

तेहतणउं तस्य सत्कं, तदीयं।
जेहतणउं यस्य सत्कं, यदीयं।
अनेरातणउं अन्यदीयं।
एहतणउ एतदीयं, इदमीयं, अदसीयं।
किहतणउं किमीयं। 5
किसउं कीदृशं, कीदृक्।
जिसउं यादृशं, यादृक्।
तिसउं तादृशं, तादृक्।
अनेसउं अन्यादृशं, अन्यादृक्।
इसउं ईदृशं, ईदृक्। 10
सरीषउं सदृशं, सदृक्।
जेतलउं यावत्, यावन्मात्रं।
तेतलउं तावत्, तावन्मात्रं।
एतलउं इयत्, एतावत्।
केतलउं कियत्। 15
जेवडउं यावद्वृद्धं।
तेवडउं तावद्वृद्धं।
केवडउं कियद्वृद्धं।
एवडउं एतावद्वृद्धं।
जेतला यति, यावन्तः। 20
तेतला तति, तावन्तः।
केतला कति, कियन्तो वा।
जईयलगइ (जहींइलगइ) यदाप्रभृति,
यस्मात्प्रभृति यस्मादारभ्य।
तईयलगइ (तहींयंलगइ) तदाप्रभृति, 25
तस्मात्प्रभृति तस्मादारभ्य वा।
अजी अद्यापि।
कांई किमपि।
अईय आ. एवं, ओँ, आन्।
अनइ कांई अन्यत्किं। 30

कु जि कांई को जानाति किं ।
किसउं किं ।
तउ किसउं ततः किमं, ततः कीदृशं वा ।
हउ अस्तु, भवतु ।
5 **आथ(घ?)उ** इतिमुखः ।
ओथउ उन्मुखः ।
जेथउं यतोमुखं ।
तेथउं ततोमुखं ।
हेठउं अधोमुखं ।
10 **केथउं** कुतोमुखं ।
ऑरहउं अर्वाक् ।
ऑलिउ अर्वाचीनः ।
पइलउ पराचीनः ।
वरगड वराकर्षकः ।
15 **ऊयत्र** उद्यात्रा ।
जानउत्र जन्ययात्रा ।
पहिलउं प्रथमं, आदिमं, आद्यं ।
पाछिलउं पाश्चात्यं, पश्चिमं ।

आगिलउं अग्रय, अग्रेतनं ।
छेहिलउं अंत्यं, अंतिमं ।
माहिलउं मध्यमं ।
पूर्विलउं प्राच्यं, प्राक्तनं, पुराणं ।
दक्षिणायां दाक्षिणात्यः , एवमौत्तराहः ।
वेगलु दूरेत्यं ।
ग्रामतणउ ग्राम्यो, ग्रामीणो वा ।
इहातणउं इहत्य, अत्रत्यं ।
—एवं तत्रत्यं, कुत्रत्यं ।
केहागमातणउं कुतस्त्यं ।
आजूनउं अद्यतनं ।
परायुं परकीय ।
अहुणोकउं ऐषमस्त्यं, ऐषमस्तनं ।
परोकउं परुत्तन, परारोकं, परारितनं ।
काल्हूणउं कल्यतनं, ह्यस्तनं, श्वस्तन ।
वहिलउं शीघ्र, त्वरितं, मंक्षु, सद्यो, झटिति वा ।
मउडउं मंद, शनैर्वा ।
गाढं अत्यर्थं, गाढतर, अतीव ।

औक्तिक-पदानि

अथ षट् कारकाणि लिख्यन्ते–छ कारक, सातमउ संबंधु। कर्त्ता, कर्म्मु, करणु, संप्रदानु, अपादानु, संबंधु, अधिकरणु। जु करइ तु कर्त्ता। जं कीजइ तं कर्म्मु। जीण करी क्रिया कीजइ तं करणु। येह देवातणी वाञ्छा, येह रूषइ कांई, धरीइ कांई; तं कारकु संप्रदानसंज्ञकु हुइ। 5
जेहतउ अपाय विश्लेषु हुइ, जेहतउ भयु हुइ, जेहतउ आदान ग्रहणु हुइ, तं कारकु अपादान संज्ञकु हुइ। जेह कन्हइ, जेह माझि, जेह पासि, जेह तणउ, जेह तणी, जेह तणउं, जेहरहिं इत्यर्थे संबंधु। गामि, पाद्रि, षलइ, क्षेत्रि, वनि, पर्वति, माझि, वाहिरि इत्यर्थे आधारु।

(१) कर्त्ता प्रथमा। कर्म्मि द्वितीया। कराणि तृतीया। संप्रदानि [चतुर्थी। अपादानि] पंचमी। संबंधि षष्ठी। अधिकराणि सप्तमी। 10

(२) जउ पाधरी उक्ति तउ उक्त कर्त्ता। उक्ते कर्तरि प्रथमा। अनुक्तुं कर्म। अनुक्ते कर्मणि द्वितीया।

(३) जु कांकी उक्ति तउ अनुक्त कर्त्ता। अनुक्ते कर्त्तरि तृतीया। उक्तुं कर्म। उक्ते कर्मणि प्रथमा।

(४) कालि भावि सप्तमी। वेला दीसु पक्षु मासु वरसु ऋतु इत्यादि कालः, अमुकइं हुंतइ 15
अमुकुं हौउं इत्यादि भावः।

(५) पाखइ, विना, किशा पाखइ, जेह, त्यहां, विना, योगे द्वितीया-तृतीया-पंचम्याः।

(६) यावद्योगे द्वितीया। परितो योगे द्वितीया। अनाभिप्रतियोगे द्वितीया।

(७) प्रभृतियोगे पंचमी। अर्वाक् योगे पंचमी।

(८) एक आगलि एक वचनु, बिहुं आगलि द्वि वचनु, घणां आगलि बहु वचनु। 20

[शब्द संग्रह]

[१]

	कीधुं	कृतं
5	लीधु	गृहीत
	दीधउं	दत्तं
	ग्यउं	गतं
	आव्यउ	आगत
	आण्यउं	आनीतं
10	पढिउं	पठितं
	बोल्यउ	उक्तं
	मारिउं	हतं
	जाणिउं	ज्ञातं
	यमिउं	भुक्त
15	रहिउ	रहितं
	थाकउं } थ्युउ	स्थितं
	दीठउं	दृष्टं
	पूछिउं	पृष्टं

20 [२]

	करतउ	कुर्वन्
	लेतु	गृह्णन्
	देतउ	ददन्
	जातउ	गच्छन्
25	आवतउ	आगच्छन्
	आणतउ	आनयन्
	पढतउ	पठन्
	बोल्तउ	वदन्, जल्पन्
	मारतउ	घ्नन्
	जाणतउ	जानन्
	जिमतउ	भुञ्जन्
	अछतउ } रहतउ	तिष्ठन्
	देखतउ	पश्यन्
	पूछतउ	पृच्छन्

[३]

	कीजतउ	क्रियमाण
	लीजतउं	गृह्यमाणं, लीयमानं
	दीजतउं	दीयमानं
	ज(जा)ईतउं	गम्यमान
	आवीतउ	आगम्यमानं
	आणीतउं	आनीयमानं
20	पढीतउं	पठ्यमानं
	बोलीतउं	उच्यमानं
	मारीतउं	हन्यमानं
	जाणीतउं	ज्ञायमानं
	यमीतउं	भुज्यमानं
25	रहीतउं } अछीउ	स्थीयमानं
	दीसतउं	दृश्यमानं
	पूछीतउं	पृच्छ्यमानं

[४]

	करी	कृत्वा
	लेई	गृहीत्वा

देई	दत्त्वा
जाई	गत्वा
आवी	आगत्य
आणी	आनीय
पढी	पठित्वा
बोली	उक्त्वा
मारी	हत्वा
जाणी	ज्ञात्वा
यमी	भुंक्त्वा
रही } थे }	स्थित्वा
देखी	दृष्ट्वा
पूछी	पृष्ट्वा

[५]

करिवा	कर्त्तुं
लेवा	गृहीतुं
देवा	दातुं
जाइवा	गन्तुं
आविवा	आगन्तुं
आणिवा	आनेतुं
पढिवा	पठितुं
बोलिवा	वक्तुं
मारिवा	हन्तुं
जाणिवा	ज्ञातुं
यमिवा	भोक्तुं
रहिवा } अछिवा }	स्थातुं
देषिवा	द्रष्टुं
पूछिवा	प्रष्टुं

[६]

करणाहरु	कर्त्तुकामः
लेणाहरु	गृहीतुकामः
देणहारु	दातुकामः
जाणहारु	गन्तुकामः
आवणहारु	आगन्तुकामः
आणनहारु	आनेतुकामः
पठणाहारु	पठितुकामः
बोलणहारु	वक्तुकामः
मारणहारु	हन्तुकामः
जाणनहारु	ज्ञातुकामः
× × ×	× × ×
पूछणहारु	प्रष्टुकामः

[७]

करिवुं	कर्त्तव्यं
लेवउं	गृहीतव्यं
देवुं	दातव्यं
जाइवउं	गंतव्यं
आविवुं	आगंतव्यं
आणिवउं	आनेतव्यं
पढिवुं	पठितव्यं
बोलिवउं	वक्तव्यं
मारिवउं	हन्तव्यं
जाणिवउं	ज्ञातव्यं
यमिवउं	भोक्तव्यं
रहिवउं } अछिवउं }	स्थातव्यं
देपिवउं	द्रष्टव्यं
पूछिवउं	प्रष्टव्यं

कीधउं, लीधउं, दीधउं } इत्यादौ निष्ठाक्तः ।

करतुं, लेतुं, देतुं } इत्यादौ शतृङ्

कीजतुं, लीजतुं, दीजतु } इत्यादौ आनश्

करी, लेई, देई } इत्यादौ क्त्वा

करिवा, लेवा, देवा } इत्यादौ तुम् ।

शक ज्ञा धातु प्रयोगे क्त्वास्थाने तुम्—

करी जाणउं	कर्तुं जानाति
पढी सकुं	पठितुं शक्नोमि

करणहारु, लेणहारु, देणहारु } इत्यादौ शतृ–कानशौ

करिवु, लेवु, देवुं } इत्यादौ तव्यानीयौ

आजु	अद्य
कालि	कल्ये
परम	परेद्यवि
अरिरम	अपरेद्यु
आजूणं	अद्यतनं
कालूणउं	कल्यतनं
हवडां	अधुना, इदानीं, साम्प्रतं, सांप्रति
हवडानुं	आधुनिकं, सांप्रतीनं
नहीं तनो वा	नोचेत्
लगइ	प्रभृति, आरभ्य
पाखइ	विना, ऋते
मुहीयां	मुधा
यम	यथा
तिम	तथा
किम	कथं
ईणपरि	इत्थं
जहींय	यदा
तहींय	तदा
कहींय	कदा
अनेकवार	सर्वदा, सदा
एकवार	एककृत्वः ।

—एव वारस्य संख्यायाः कृत्वस्

एकपरि	एकदा
ब्यहु परि	द्विधा, द्वैध
तृहु परि	त्रेधा, त्रैध्यं
च्युहु परि	चतुर्धा
किहां	कुत्र, क्व
यहां	यत्र
तिहा	तत्र
ईहा	अत्र, इह
अनेति	अन्यत्र
सघले	सर्वत्र
वळी	व्याहृत्य

तिमइ	तत्कालं	
झटकइं	झटिति	
जूउं	पृथक्	
ताहरुं	त्वदीयं	
माहरउं	मदीयं	
तम्हारउं	युष्मदीयं	
अम्हारउं	अस्मदीयं	
ताहरउ	तावकः, तावकीनः	
माहरउ	मामकः, मामकीनः	
जां	यावत्	
तां	तावत्	
जेतलुं	यावन्मात्रं	
तेतलुं	तावन्मात्रं	
एवडुं	एतावन्मात्रं	
केतलउं	कियत्	
केवडुं	कियन्मात्रं	
एतलउं	इयत्	
जु	यदि, यतः	
तु	ततः	
जं	यत्	
तं	तत्	
जइकिमइ	यदिकिमपि चेत्	
इमै	अन्यथा	
इसुं	इति	
होउ	एवं	
हवं	अथ	
हाथल	प्रत्युत	
पूठिं	अनु	
सामहु	अनु	

डावउ	वाम	
यमणुं	दक्षिण	
वांकउ	कुटिलः	
पाधरु	ऋजु, सरलः	
हेठि	अधः	5
ऊपरि	उपरि	
आडउ	तिर्यक्	
तिरसउ	तिरश्चीनः	
आगिलुं	अग्रे, पुरः	
पाछिलु	पाश्चात्यः	10
सरीषउ	सदृक्, समान, सदृक्षः	
किसउ	कीदृग्, कीदृश, कीदृक्षः	
इसउ	ईदृक्, ईदृश, इदृक्षः	
यसउ	यादृक्, यादृश, यादृक्षः	
तिसउ	तादृक्, तादृश, तादृक्षः	15
अनेसउ	अन्यसदृक्, अन्यसदृशः, अन्यसदृक्षः	
तूसरीषु	त्वादृशः	
मूंसरीषउ	मादृशः	
तम्हंसरीषउ	युष्मादृशः	20
अम्हंसरीषउ	अस्मादृशः	
अरहु	अर्वाक्	
परहु	पराक्	
पाखलि	परितः, सर्वतः, विष्वक्, समन्तात्, समन्ततः	5
उगउ मुगउ	अवाग्मूकः	
झलझांपसउं	चलच्चांक्षं	
ऊबांघलुं	उद्धृलिक	
सूगामणउं	शूकाजनकं	
अहिम	विधवा	30

सूहव	सुधवा
ऊतरिण्यु	उत्तारिततृणं
पढ्ढ	प्रतिभू
पढ्ढचउं	प्रतिभाव्यं
5 उपरीयामणु	उत्कटिकाकुलं रणरणकं वा
ओल्यिउ	अर्वाचीन
पयलु	पराचीनः
विलखउ	विलक्षः
10 द्रहद्रहवार	जयद्रथवेला
तागणी	तनुगमनिका
गोई	गोसली, गोप्यसिलाका
ऊकरडी	अवकरोत्करिका
पूंजउ	अवकर

15 उक्ति च्यहु प्रकारि—कर्त्ता, कर्म्मि, भावि, कर्मकर्त्ता। जउ उक्ति पाधरी हुइ—उक्तिमाहि कर्त्ता कर्म्मु हुइ [?] ते उक्ति कर्त्ता जाणिवी। जु वाकी उक्ति हुइ तु माहि कर्त्ता हुइ, कर्म्मु न हुइ तउ ते उक्ति भावि 20 जाणिवी। जु कर्म्म फींटी कर्त्ता आविउ हुइ, ते उक्ति कर्म्म-कर्त्ता जाणिवी। कर्त्ता परस्मै पद दीजइ। कर्म्मि भावि आत्मनेपद दीजइ।

पुरुष केता ३। कुण कुण ? प्रथमु, 25 मध्यमु, उत्तमु। नामि बोलावीय ते प्रथमपुरुष। तु तम्हि मध्यम पुरुषु हुइ। हुं अम्हि उत्तम पुरुष।

काल केता ३। कुण कुण ? वर्त्तमानु, अतीतु, भविष्यु। वर्त्तइ वर्त्तमानु, 30 वर्त्यु अतीतु, वर्त्तसिइ भविष्यु। वर्त्तमानकालि ३ विभक्ति हुइ—वर्त्तमाना, सप्तमी, पचमी। अतीत कालि ४ विभक्ति—ह्यस्तनी, अद्यतनी, परोक्षा, स्म संयोगि वर्त्तमाना। भविष्यकालि ३ विभक्ति—भविष्यन्ति, आशिः, श्वस्तनी।

करइ, लिइ, दिइ, करत, ल्यथ[द्यथ?], करुं, ल्युं, द्यु, इसइ बोलि वर्त्तमान कालु. वर्त्तमानानुं परस्मैपदु दीजइ।

कीजइ, लीजइ, दीजइ, कीज, लीज, दीज, कीजुं, दीजुं, लीजु, इसइ बोलि वर्त्तमानु कालु. वर्त्तमानानुं आत्मनेपदु दीजइ।

करिजे, लेजे, देजे, इसइ बोलि वर्त्तमानु कालु. सप्तमीनुं परस्मैपद दीजइ।

कीजिजे, लीजिजे, दीजिजे, इसइ बोलि वर्त्तमानु कालु. सप्तमीनु आत्मनेपदु दीजइ।

करइ, लिइ, दिइ; करउ, लिउ, दिउ, इसइ बोलिवइ वर्त्तमानु कालु. पचमीनुं परस्मैपदु दीजइ।

कीजउ, लीजउ, दीजउ, इसइ बोलि वर्त्तमानु कालु. पचमीनुं आत्मनेपदु दीजइ।

करतउ, लेतउ, देतउ, करता, लेता, देता, करती, लेती, देती, करतउं, लेतउं, देतउ, इसइ बोलिवइ अतीत कालु ह्यस्तनी अद्यतनी परोक्षानु परस्मैपदु दीजइ।

कीधुं, लीधुं, दीधुं, कीधा, लीधा, दीधा, कीधी, लीधी, दीधी; इसइ बोलिवइ अतीत कालु. ह्यस्तनी अद्यतनी परोक्षानुं आत्मनेपद दीजइ।

करिसिइ, लेसिइ, देसिइ, करसुं, लेसुं, देसुं; करिस्यउ, लेस्यउं, देस्यउं, इसइ बोलिवइ भविष्यु कालु भविष्यन्तीनु परस्मैपदु दीजइ।

करीसिइ, लीजसिइ, दीजसिइ, इसइ बोलि भविष्य कालु. भविष्यन्ती आत्मनेपदु दीजइ।

भविष्यकालि आशीर्वादयोगी आशीर्विभक्ति हुइ; अनइ भविष्य कालि योगि (²) श्वस्तनी विभक्ति दीजइ। भविष्यतीनी वाणी बोलीइ।

जउ–जु करत,जु लेत, जु देत; इसिइ वोलिवइ अतीत कालु. क्रियातिपत्तीनउं परस्मैपद दजिइ।

जु कीजत, जु दीजत, जु लीजत; इसिइ वोलिवइ अतीत कालु. क्रियातिपत्तिनउं आत्मनेपद दीजइ। कर्ता परस्मैपद दीजइ, कर्म्मि आत्मनेपदु दीजइ।

अथ त्यादि विभक्ति केती, १०। कुण कुण ² वर्त्तमाना १, सप्तमी २, पंचमी ३, ह्यस्तनी ४, अद्यतनी ५, परोक्षा ६, श्वस्तनी ७, आशीः ८, भविष्यन्ती ९, क्रियातिपत्ती १०। अकेकी।विभक्ति १८ वचन–९ परस्मैपद तणां, ९ आत्मनेपद तणां।

ति, तस्, अन्ति; सि, थस्, थ; मि, वस्, मस्, इं नव परस्मैपद तणा। ते, आते, अन्ते, से, आथे ध्वे; ए, वहे, महे; इं नव आत्मनेपद तणा।

ति, तस्, अन्ति; इति प्रथम पुरुषः। सि, थस्, थ; इति मध्यमपुरुषः। मि, वस्, मस्; इति उत्तमपुरुषः। ते, आते, अन्ते; इति प्रथम पुरुषः। से, आथे, ध्वे, इति मध्यमपुरुषः। ए वहे, महे; इति उत्तमपुरुषः।

ति, एक वचनु. तस्, द्विवचनु. अन्ति बहुवचनु। सि, एकवचनु. थस्, द्विवचनु. थ, बहुवचनु। मि, एकवचनु. वस, द्विवचनु. मस्, बहुवचनु। एवं सर्वत्र।

जु कर्ता प्रथम पुरुष हुइ तु क्रिया प्रथम पुरुष हुइ। जु कर्त्ता मध्यम पुरुष हुइ तु क्रिया मध्यम पुरुष हुइ। जु कर्त्ता उत्तम पुरुष हुइ तु क्रिया उत्तम पुरुष हुइ।

जु कर्त्ता आगलि एक वचनु हुइ, तु क्रिया आगलि एक वचनु। जु कर्त्ता आगलि द्विवचनु, तु क्रिया आगलि द्विवचनु। जु कर्त्ता आगलि बहुवचनु, तु क्रिया आगलि बहुवचनु। 5

जु कर्त्ता उक्ति हुइ तु कर्त्तानी अपेक्षां विभक्ति दीजइ। जु कर्म्मि उक्ति हुइ तु क्रिया आगलि कर्मनी अपेक्षां विभक्ति दीजइ।

चउकीवटु	चतुष्कपट्ट	10
वटवालनुं	वर्त्मपालनं	
वेहडउं	द्विघटं	
गुढउं	गुडगूढं	
खिसरहंडी	क्षिप्रसरहिंडिका	
ओरसु	अवघर्षः	15
घरट्टु	घर्षकः	
वेसरु	द्विशरीरु	
अरतपरत	आकृत्या प्रकृत्या च	
वापशरीपउ	पितृसदृशः	
अगेवाणु	अग्रानीक	20
पाछिवाणु	पश्चादनीकं	
मौ (¹)	मार्गौकाः, मुक्तौका	
वेगडि	विकटशृंगी	
मींढी	मिल्तिशृंगी	
फाडी	प्रसृतशृंगी	25
कुंढली	कंडलितशृंगी	
मुहपायी	परोक्षवादः	
लिपसणउं	लिम्पायनं	
वहलि	वीतनेत्रा	
पटातरं	ग्रन्थान्तरं	30

	विज्जाहरी	विजयगृही
	कोठउ	कोष्टक
	डोकरु	डोलत्करः
	छींडणि	छिद्राटनी
5	छेकडि	छिद्रकरी
	सीरामणु	शीताशनं, शरीराप्यायनक वा
	सउडि	संवृत्तपटी
	सीरष	शीतरक्षा
10	तुलाई	तूलिका
	ऊसीसउ	उपधानं
	शलाटु	शिलाघटकः
	मडि	मड्डिका
	खंडायतु	खड्गवित्तः
15	भथायितु	तूणावित्तः, भस्त्रावित्तो वा
	पूणी	पिचुमर्दी
	आंडणु	अंगमंडन
	कागु	काक, वायसो वा
	वावि	वापी
20	कूउ	कूपः, अंधुः
	तलावु	तडाग, जलाधारः
	खडोखली	दीर्घिकाः
	. . . . .	पङ्ककरणं
	वगाई	जृंभिका
25	चीपडीउ	चिपटः
	गूहली	गोमुखा
	क्रोसींटउ	कोपसमृद्धः
	कायिलु	कालिकः
	व (च ?) णहडीउ	चनक प्रवर्त्तकः
30	लुंकडि	लोमकडिका

सवार	सवेला
माकुण	मत्कुण
कलाखरिउ	कालाक्षरितः, दाणी
घाणिउ	झाणितः
दीवाली	दीपालिनी, दीपोत्सवो वा
त्रुटी	त्रिपुटी
धुलहडी	धूलिभाटिका, धूलितटी, रजोत्सवो वा
थूंकु	निष्ठीव
आभूयानुं	उद्भियमानं
झगडउ	उद्वदः
छ्यकारु	गेयकारु
चिणोठी	चित्रपृष्ठा, गुंजा, कृष्णलवा
ओंडक	अपराल्या.
ढांकणउं	स्थागनकं
सूणहरउं	शयनगृहं
पथरणउं	प्रस्तरणं
ओढणउं	आच्छादनं
नणंद	ननन्दा
नणदोई	ननान्द्रिपतिः
जमाई	जामाता
नाणिद्रउ	ननान्दृसुतः
भत्रीजउ	भ्रातृजः, भ्रातृसुत'
परीयटु	निर्नेजकः
छीपट	रजकः
कुतिगीउ	कौतुकिकः
अणगुक	अनग्निपक्वः
फिरक	स्फुरितचक्रिका

पाटूआली	पादप्रहारवती
पाणीकणउं	पादनपरं
परमूणउं	परमदिव
पुरोकउं	प्राक्वर्षीयं
सरलउ	दीर्घ:, प्रलंब:
ऊघडदूघडउ	उद्घटदुर्घट:
कहूआलउ	कोलाहल:
देसानी	छायाकर
मोलीउं	मूर्द्धवेष्टनं
मोसंधीयुं	उष्णीषं वा
निलाड	ललाट, निटिलं वा
पोठीउ	पृष्ठवाहक
अरणइ	अरति
राल्गुन	राजल्कुलं [?]
किरि	किल
बिमणउं	द्विगुणं
त्रिगुणु	त्रिगुण
चउगुणउं	चतुर्गुण:
चीपलालुं	कर्दमाकुलं, पंकिलं वा
परिवारचं	प्रपारितं
मुडइं	मंदं मंदं
वली वली	पुन: पुन:
पालटउ	परिवर्त्त:
पालटिउ	परिवर्तित:
बापडउ	वराक:
विहरउ	व्यतिकर:
लागु	लग्न:
लगाडिउ	लगित:
पाटलउ	पाटचार:
जुहारु	नमस्कार:

सोहिलउं	सुखावहं	
दोहिलउं	दु:खावहं	
रलीयामणउं	रतिजनकं	
उद्वेगामणउं	उद्वेगजनकं	
राउताई	राजपुत्रता	5
राउत	राजपुत्र	
द्रम्मामु	द्रम्ममय	
असुणिउ	अपशकुनित	
सुण	शकुन	
सणउं	स्वप्नं	10
अंबोडउ	धम्मिल्ल	
वीणि	वेणि	
मांडहिय	बलात्कारेण, हठाद्वा	
घायिसउं	सहसैव	
देहरासरु	देवतावसर:	15
आरतीयासरु	आरात्रिकावसर:	
सर्वोसरु	सर्वावसर:	
मोटउ	स्थूल	
नान्हउ	लघु, ह्रस्व	
कडव	कर्णीवा	20
आरती	आरात्रिक	
धूपधाणउं	धूपधाम, धूपदहन-पात्र	
वरांसिउ	विपर्यस्त	
वरांसउ	विपर्यास	25
आखुडिउ	अवस्खलित	
घोडाहडि	वाजिशाला, अश्वकुटी वा	
रसोयि	रसवती, पाकस्थानं, महानसं वा	30

	मंडारु	भांडागारः, कोशो वा	अभोखणुं	अभ्युक्षणं
	मन्त्रासरु	(मंत्रावसरः)	ऊलिषउ	उदकोल्लंचन
	हथसाल	हस्तिशाला,	पच्छोकडु	पश्चादोकस्तटं
		गजसदनं वा	पडोसु	प्रत्योकस्
5	श्रीगरणु	श्रीकरणं	उपवासी	उपोषित
	वयगरणउ	व्ययकरणं	फुई	पितृष्वसा
	घडामंची	घटमंचिका	मासी	मातृष्वसा
	दाबडउं	जलयंत्र	बहिन	स्वसा
	अरहट्ट	अरघट्टक	मु(माउ?)लाणी	मातुलपत्नी
10	छमकाव्यउं	छमत्कारितं	भुजाई	भ्रातृजाया
	अवाहूउ	प्रतिकूल	सासू	श्वश्रू
	सवाहूउ	सानुकूलः	पीत्राणी	पितृव्यपत्नी
	पडीसारउ	प्रतीसारक	पीत्रीयु	पितृव्यक
	गुडिउ	गुंडितः	माउलउ	मातुल
15	पाव(ख?)रिउ	प्रक्षरितः	फुईहायी	पितृस्वस्रीय
	कुजि	को जानाति	माईय (हायी) }	मातृष्वस्रीय
	बलही	बालदधि, बालहिता वा	मास्याही }	
	वरगडु	वराकर्षक	मालाही	मातुलीय
	जानुत्र	यज्ञयात्रा	देशातरी	देशान्तरिक
20	जानावासउ	यज्ञावासक	पलवटि	परिवलितपटी
	एकउडउ	एकतटिक	पिराणउ	प्रतोद, प्राजिनं, तोत्रं, प्रवयणं वा
	घूघटिउ	अवगुंठन	चंदौउ	चंद्रोदय, उल्लोच
	गमाणि	गवादिनी	परीयच्छि	तिरस्करिणी
	आहारजाहर	आगमनगमानिका	बाउलु	बुब्बूल
25	खाजलु	खाद्यफलं	आंबिली	चिंचा, चिंचिणी वा
	पीजहलु	पेयफलं	दीवटीउ	दीपवर्त्तिक
	मसाहणी	महासाधनिक	चांद्रिणानीलाप	चंद्रायलिप्सा
	आखउंडली	अक्षपटलिका	घातखायु	धातुखादकः
	वलवलीउ	वाचाल, वावदूक	साघ (थ?)	संस्था
30	मेरायीयुं	मेरायकं		

आद्रहणु	अधिश्रयणं
आहिनाणु	अभिज्ञानं
हराविउ	पराजित
विदाणउ	वितानप्रभाव
कोटील्उ	कुट्टनक
परालु	पलालं
अरडकमल्लु	अर्यटकल्ल (?)
सूआडि	सूतिकागृहं
भोल्उ	मुग्धः
पाहरी	प्राहरिकः
गउखु	गवाक्ष
नीद्रालूखउ	निद्रारुद्धक
ऊंडहणुं	उद्वहनकं
खोडउ	खंजः
पलेवलउं	प्रदीपकं
न्युंजणउं	नियंत्रकं
गउंछणउं	गुच्छनकं
न्युंछणउं	न्युच्छनकं
छाणावालि	कारीषावली
ऊदेही	उद्देहिका
आडावंग	तिर्यक्सूत्रिका
ऊटाटीयुं	उद्दीकनं
कूडछी	कूर्मोच्छ्रयिका
जोत्रु	योक्त्रं
जूंसरु	युगं
तीन्हउं	तीक्ष्णं
कोटडउ	प्राकारं
गडु	दुर्गः



अथ क्रियावचनानि

मांजइ	परमार्ष्टि	
जागइ	जागर्त्ति	
गायइ	गायति	5
होमइ	जुहोति	
गूंथइ	गुथ्यति	
करइ	करोति, कुरुते, विदधाति, विधत्ते,	
धरइ	दधाति, धत्ते, धरति, धारयति	10
दि	यच्छति, राति, दत्ते, दाति	
लि	नयति, आदत्ते, गृह्णाति, विगृह्णाति	
ऊडइ	उत्पतति, उड्डीयत	15
आचरइ	आचरति	
पवित्रइ	पवित्रयति, पुनाति	
ऊपणइ	उत्पुनाति	
धूपइ	धूपायति	
क्षरइ	क्षरति	20
वीकइ	विक्रीणाति, विक्रीते	
मर्दइ	मुद्गाति (मृद्नाति ?)	
मिलइ	मिल्ते	
अडइ	अड्डते	
छूटइ	छुट्यति	25
ऊठइ	उत्तिष्टति	
नीठइ	निस्तिष्टति	
किरगिरइ	किरगिरति	
वषाणइ	व्याख्यायति	
छिउ (प?)इ	छुपति, स्पृशति	30

	वावइ	वपति
	चोरइ	मुष्णाति, चोरयति
	ऊखेडइ	उत्कीलयति
	डाभइ	दम्नाति
5	परव	प्रपा
	वारइ	वारयति, निवारयति, निषेधयति
	पल्हालइ	प्रक्लिद्यति
	पालुइ	पल्लवयति
10	थाकइ	स्थानमाहरति, स्थानयति
	फूटइ	स्फुटति
	पतीजइ	प्रत्येति, प्रत्ययति, प्रतीयते
	वरासीयि	विपर्यस्यते
	जाम(य?)इ	जायते
15	हुइ	भवति
	खाजइ	कण्डूयति
	उलंभइ	उपालभते
	ऊटंटइ	उल्लंघयति
	क्रमइ	क्रामति
20	आयसिइ	आदिशति
	वाधइ	वर्द्धते
	निवीजइ	निर्विज्यते
	कुपइ	कुप्यते, क्रुध्यति, रुष्यति
	तोलइ	तूलयति
25	सहइ	क्षमति, तितिक्षति, सहते, क्षाम्यति, मृष्यति
	मरइ	म्रियते, विपद्यते
	आखुडइ	आस्खलति
	फडफडइ	फटफटायते
30	शपइ	शपति, शप्यते इत्यादि

तिष्ठति गम्लृ दृशूज्वलौ
स्पृहस् पृच्छति नी पचक् पठौ।
क्षिप् भणौ विश मुंच् पिच् कृपौ
त्यज दहौ तरति स्तु चल त्रमौ ॥ १ ॥
लिखन् मोखन् जिघ्रति वर्पे
पिब् पतेऽथ जि जीव परस्मै।
यज् वपौ वद् वेञ् वसौ वह-
त्युभयमाह भवादिगणानां ॥ २ ॥
वर्तते च रमते वृधूव्यथौ
याचते च लभते च शोभते।
कंपते च घटते सुखायते
प्रारभते सहते तदात्मने ॥ ३ ॥
अद् हन् इण् भा स्वा शास्ति वा जागृ माति
स्वप रुद वच वाया म्नात्यदादिः परस्मै।
दुह लिह् च दा धत्ते भयं स्तुङ् भीह्री
निगदित इह लोके आत्मने पूङ् धातुः ॥४
व्यध् हृष्टौ कुप् तृत्यनशो मुष
श्लिष् दुषौ क्लिब शाम्यति तुष्यति
भ्रम कुपौ चदिवादि परस्मै
तम विदौ गदौ गदितस्तु किलात्मा ॥ ५ ॥
विञ् वृञ् किल दुञ शकापौ
स्वादिगा निगदितास्तु परस्मै।
रुदभिदा छिद भुंजयुजौ वा
भुजयुता उभयं च रुधादि ॥ ६ ॥
तनोति डुकृञ् भयं तनादिः
स्तृप् ग्रह ह्रीं मुष लुड विक्री क्रियादयः।
पार्युभयं च चिंति लोके सभाजिश्चुरताडि भिक्षौ॥
अविकरण कर्त्तरि। दिवादेर्यत्। नु स्वादेः।
तनादेरुः। ना क्र्यादेः। चुरादेश्च। इमानि सर्वाणि विकरणसूत्राणि॥

परस्मैपदह्यस्तनीं यावत्। आत्मनेपदे सर्वत्र सर्वधातुके यण्।

लज्जासत्तास्थितिजागरणं
वृद्धिक्षयभयजीवितमरणम् ।
शयनक्रीडारुचिदीप्त्यर्था
धातव एते कर्मविहीनाः ॥ १ ॥

[कर्मणि वाक्य]

ईणं लाजीइ	–	अनन ह्रीयते
तइं भलइं हुईइ	–	त्वया भव्येन भूयते
मइं रहीइ	–	मया स्थीयते
पाहरीं जागीइ	–	यामकेन जागर्यते
एयु वाधइ	–	असौ वर्द्धते
एयु जीवइ	–	असौ जीवति
वयरी मरीइ	–	अरिणा म्रियते

त्वया सुप्यते । वालेन रम्यते । दानिना शोभ्यते। कर्त्तरि कर्म्मण्यपि । कर्म्म नागच्छति ।

अथ द्विकर्म्मको भावः

दुहि याचि रुधि प्रच्छि भिक्षचिञा-
नुपयोगिनिमित्तमपूर्वविधौ ।
ब्रुवि शासिगणेन च यत्सते (?)
तदकीर्त्तितमाचरितं कविना ॥१॥

जयत्यर्थयती मंथि चतुर्थो दण्डयतीत्यपि ।
एभिः सह बुधैर्ज्ञेया द्वादशैव दुहादयः ॥ २ ॥
नीवह्योर्हकृषोश्चापि गत्यर्थानां तथैव च ।
द्विकर्म्मकेषु ग्रहणं ण्यन्ते कर्म च कर्मणः ॥ ३ ॥

असौ गां दोग्धि पयः । विप्रो राजन गां याचते । असौ गानवरुणद्धि व्रजं । पान्थश्छात्रं पन्थानं पृच्छति । असौ वृक्षमवचिनोति फलानि । विप्रः शिष्यं धर्मं ब्रूते । पण्डितः शिष्यं धर्ममनुशास्ति । काऽपि बुद्धया ग्रामं छात्रशतं जयति । प्रार्थयति राजानं ग्रामं गुरुः । मथ्नन्ति स्म जलधिं देवासुराः ।

[द्विकर्मक वाक्य]

एयु देवदत्तु गर्गनुं सउ दंडइ	असौ देवदत्तो गर्गान् शतं दण्डयति

5

ए छाली गामि लिइ – अजां नयति ग्राम
ए कुंभतणु भारु हरइ–असौ कुंभं भारं हरते
वहति ग्रामं भारं देवदत्तः ।
कर्षति शाखा ग्रामं देवदत्तः । 10

इनन्तेऽपि द्विकर्म्मा–
भोजयति पायसं छात्रं कश्चित् ।
बोधयति वटुं ग्रन्थं गुरुः ।
वाचयति श्लोकं पुत्रं पिता ।

कर्म्मण्यपि द्विकर्म्मका भवन्ति– 15
दुह्यते गौः पयो गोपालेन ।
याच्यते राजा गां विप्रेण ।
रुध्यते गौर्व्रजं गोपालकेन ।
पृच्छयते छात्रः पंथानं पान्थेन ।
अवचीयते वृक्षः फलानि पुरुषेण । 20
अनुशिष्यते छात्रो धर्म्मं पण्डितेन ।
प्रार्थ्यते राजा ग्रामं गुरुणा ।

–एवं सर्वत्र ।

पूर्वकर्त्तरि षष्टी, कर्म्मणि षष्टी, करणषष्टी, संप्रदानषष्टी, अपादानषष्टी, संबंधिषष्टी, 25 निर्द्धारणषष्टी, कालि भावि षष्टी, अधिकरणषष्टी. एते षष्टीभेदाः । सर्वत्र षष्टीवाचकानि कारकाणि ।

तइं गामि जाइवउं	–	गन्तव्यं ते ग्रामे
मइं घरि रहिवउं	–	मम गृहे स्थातव्यम्

कृत्यानां कर्त्तरि वा षष्ठी–

एयु शास्त्र वाचणाहरु	असौ शास्त्राणां वाचयिता

एयु वेद पढणहारु–असौ वेदानामध्येता

5 –णकतृचोः कर्मणि षष्ठी, इतरेषां द्वितीया ।

एयु अन्नि ध्रायु–असौ अन्नाना तृप्तः

विसनरु काष्टि न ध्रायु-अग्निःकाष्ठानां न तृप्यति

पाणी भरिउ सरोवर–जलस्य पूर्णं तडागम्

कोठउ कणि भरिउ–कणानां पूर्णोऽयं कोष्ठकः

10 –इत्यर्थे पूरिसुहितार्थानां करणे षष्ठी ।

एयु प्रधानरहि लाच भइसि दि	असावमात्यस्य लञ्चया महिषीं ददाति
एयु पोष्यवर्गरहिं यावज्जीवु भरणु पोषणु दि	असौ पोष्यवर्गस्य यावज्जीवं भरणपोषणं ददाति

15

ऐहिकफलार्थसंप्रदाने षष्ठी, पारलोके च चतुर्थी–

यथा–कश्चित् ब्राह्मणेभ्यो गा ददाति,

असौ ऋत्विग्भ्यो दक्षिणा वितरति,

–इत्यर्थे पारलौकिके निःस्पृहे चतुर्थी ।

20 भूतंतउ प्राणीया भला	भूताना प्राणिन. श्रेष्ठाः
प्राणीया तु मतिजीवी भला	प्राणिनां मतिजीविनः श्रेष्ठा'

–इत्यर्थे अपादाने निर्द्धारणे षष्ठी, सप्तमी

25 च भवति–

मनुष्यमाहि ब्राह्मण श्रेष्ठ	मनुष्येषु ब्राह्मणाः श्रेष्ठाः
गाईमाहि काली गाइ घणुं दूधु	गोषु कृष्णा संपन्नक्षीरा गौ.

–इति सप्तमी च भवति ।

वांभणनउं घरु–ब्राह्मणस्य गृहम्

व्यासनउं ग्रामु–व्यासस्य ग्रामः

–इति संबंधि षष्ठी ।

लोक विक्रमादित्यु राउ स्मरइ	लोको विक्रमादित्यराज्ञः स्मरति
एयु बोल्या प्रयोग संभारतउ श्लोक नींपजावइ	असावुक्तानां प्रयोगानां स्मरन् श्लोकान् निष्पादयति
श्रीवासुदेव दैत्य मारइ	श्रीवासुदेवो दैत्यानां निहन्ति
राउ वांभणना वयरी मारइ	राजा विप्राणां वैरिणां घ्नाति

–इत्यर्थे स्मरणहिंसार्थानां प्रयोगे कर्मणि षठी।

एयु देवतणइ अर्थि फूलपत्री मेलइ	असौ देवताभ्य' पुष्पपत्राणामुपस्कुरुते
एयु श्राद्धतणइ अर्थि चोषा मुग मेलइ	असौ श्राद्धाय तंदुलमुद्गानामुपस्कुरुते

–इति करोतेः प्रतियत्ने कर्मणि षष्ठी ।

एयु दोरी सापु भणी जाणइ	असौ रज्जुं सर्पस्य जानीते
एयु तेल घीउ भणी जाणइ	असौ तैलं घृतस्य जानीते
एयु एकलउ विदेशि जातउ भयतउ षीलउ पुरुषभणी जाणइ	असौ एकाकी विदेशं व्रजन् भयात्कीलकं नरस्य जानीते

–इत्यर्थे संभ्रान्तिज्ञाने जानाते' कर्म्मणि षष्ठी।

सुखदुःखाभ्यां करणे द्वितीया–

एयु सुखिहिं दीहाडा नींगमइ	असौ सुखं दिनानि निर्गमयति

एयु दुःखिं द्रव्यु उपार्जइ	असौ दुःखं द्रव्यमुपार्जयति

हेत्वर्थे तृतीया—

राउ लोकपाहिं करसणु करावइ	राजा लोकैः कर्षणं कारयति
ब्राह्मणु शिष्यपाहिं पोथउं लिखावइ	विप्रः शिष्येण पुस्तकं लेखयति

—इति हेतु कर्त्ता। कालाध्वभावदेशानां कर्म्मसंज्ञा—

वैष्णवु रातिं च्यारइ पुहुर जागइ	रजन्याश्चतुरो यामान् जागर्त्ति वैष्णवः
सात मसवाडा नइ वहइ	सप्तमासान्नदी वहति

क्वापि कृतो हीने कर्म्मणि प्रधानक्रियापेक्षया द्वितीया न भवति—

तइं वयरी आणी वांधिवउ	त्वयारिपुरानीय बध्यतां

विषवृक्षोऽपि संवर्ध्य स्वयं छेत्तुमसाम्प्रतम्

ईणं हु व्यारीउ द्रव्यु लीधउ	अनेनाऽहं विप्रतार्य द्रव्यं गृहीतः

—गत्यर्थकर्मणि चतुर्थी वा—

ग्रामं गच्छति, ग्रामाय गच्छति असौ।

कर्मप्रवचनी यैश्च अनु—अभि—प्रति—एते कर्म्मप्रवचनीयाः। एषां योगे द्वितीया।

अनुशब्दः पृष्ठे अभिज्ञाने मध्ये सन्मुखे समीपे सह र्थे—

तु पूठि —	त्वामनु
पर्वतनइ अहिनाणि गामु वसइ	पर्वतमनु नगरं वसति
आंवामाहि कोइलि वासइ	सहकारमनुकोकिला कूजति
वृक्ष सामहुं आभउं —	वृक्षमन्वभ्रपटलम्
देवालय कन्हलि तीर्थु छइ	देवालयमनु तीर्थं तिष्ठति

तइसउं वात करइ — त्वामनु वार्त्तां करोति

गुरु साम्हु ऊठइ — असौ गुरुमभ्युत्तिष्ठति

ग्रामि दीहाडी प्रतिं एकु द्रम्मु लहइ	ग्रामे प्रतिदिनं द्रम्मैकं लभते
एयु ब्राह्मणप्रतिं भक्ति बोलइ	असौ प्रतिविप्रं भक्तिं जल्पति

5

उभयतः परितः सर्वतो योगे द्वितीया—

देवालय बिहुंगमे वड दीसइं	देवालयमुभयतो न्यग्रोधा...
घरपापलि वाडि करइ	गृहं परितो वृतिं करोति
गाम सविहुंगमा क्षेत्र वाव्यां	ग्रामं सर्वतः क्षेत्राण्युप्तानि

10

उपर्यधोऽधीनां सामीप्य एव कर्म्मद्वित्वे—

ऊपरि ऊपरि गामु हेठलि हेठलि नगरु	उपर्युपरि ग्रामं, अधो अधो नगरम्

15

अदूरे एनोऽपंचम्या, एनप्रत्ययान्तयोगे द्वितीया—

गाम दाहिणगमइ ढूकडी वाडी	ग्रामं दक्षिणेन निकटं वाटिका
गामबिहुं विचि नदी	ग्रामद्वयमन्तरा नदी
नगरनइं उत्तर गमइं ढूकडउ पर्वतु	नगरमुत्तरेण निकषा पर्वतः

20

समयाहाधिगन्तरान्तरेण युक्ता द्वितीया—

तू कन्हलि —	त्वां समया
एयु भुंडउ —	एनं धिग्

25

गाम बिहुं विचि नदी—ग्रामद्वयमन्तरा नदी

तू पापइ —	त्वामन्तरेण
मूं पापइ —	मामन्तरेण

[समास प्रकरण]

द्विगुर्द्वन्द्वोऽव्ययीभाव' कर्मधारय एव च ।
तत्पुरुषो बहुव्रीहिः षट् समासाः प्रकीर्त्तिताः॥१
पदे तुल्याधिकरणे विज्ञेयः कर्मधारयः ।
5 (१) जीणं समासि बि पद तुल्याधिकरण हुइ सु समासु कर्मधारयसंज्ञिक हुइ.
नीलं उत्पलं—नीलोत्पलं
उत्तम' पुरुषः—उत्तमपुरुषः
[संख्यापूर्वो द्विगुरिति ज्ञेयः]
10 (२) जीणइं समासि संख्या गणितु पूर्वपदि बोलाइ ते समास द्विगु जाणिवउ.
सप्तऋषय. । पञ्चाम्रा'
पञ्चाना मूलानां समाहार'—पञ्चमूली
विभक्तयो द्वितीयाद्या नाम्ना परपदेन तु ।
15 समस्यन्ते, समासो हि ज्ञेयस्तत्पुरुषस्य च ॥
(३) जीणं समासि द्वितीयालगाइ छ विभक्ति आगिलइं पदि सरसी मेलीयि सु समासु तत्पुरुषु जाणिवउ.
ग्राम गत.—ग्रामगत
20 नखैर्निर्भिन्न.—नखनिर्भिन्नः
ब्राह्मणाय देयं—ब्राह्मणदेयम्
मञ्चात्पतित.—मञ्चपतितः
राज्ञ पुरुष —राजपुरुष
अक्षेषु शैाण्ड. —अक्षशौण्ड
25 स्याता यदि पदे द्वे तु, यदिवास्य बहून्यपि ।
तान्यन्यस्य पदस्यार्थे बहुव्रीहि ॥
(४) जीणइं समासि बि पद अथ घणां पद अनेरा पद तणइ अर्थि मेलाइ तेयु समासु बहुव्रीहि जाणिवउ, अनइ बहुव्रीहि समासि
30 यद् शब्द छेहि प्रयुंजीइ.

(क) घणउ गुड छइ जीण लाडू	प्रभूतो गुडो यस्मिन् मोदके स प्रभूतगुडो मोदकः
(का) सदाचार बांभणु जीणइ गामि	सदाचारा विप्रा यस्मिन् ग्रामे स सदाचारविप्रो ग्रामः
(कि) घणां निर्मलां पाणी जीणं नदी	प्रभूतानि निर्मलानि उदकानि यस्यां नद्या सा प्रभूतनिर्मलोदका नदी
(की) पामी विद्या जेहि पुरुषि	संप्राप्ता विद्या यैर्नरैः ते संप्राप्तविद्या नराः
(कु) निर्मलबुद्धि विप्र वैद्य सुभट अछइं जीण राज भुवनि	निर्मलबुद्धिका विप्रा वैद्या सुभटा यस्मिन् राजभुवने तत् निर्मलबुद्धिविप्रवैद्यसुभट राजभुवनम्
(कू) रुलीयायित कीधा जीणं बाभण	तोषिता विप्रा येन स तोषितविप्र'
(के) ऊगिउ वृक्षु जीणइं क्षेत्रि	प्ररूढो वृक्षो यस्मिन् क्षेत्रे तत् प्ररूढवृक्षं क्षेत्रम्
(कै) ढूकडी गंगा जीणइ देशि	आसन्ना गंगा यस्मिन् देशे स आसन्नगंगो देश.
(को) सरीषउं नामु जेहनउं	सदृशं नाम यस्य स सनामा
(कौ) सरीषउं गोत्रु जेहनउं	सदृशं गोत्रं यस्य स सगोत्र

द्वन्द्वसमुच्चयो नाम्नोर्बहूनां वापि यो भवेत् ।
(६) जीणं समासि बिहुं नामनउ समुच्चयु, अथ घणां नामनउ समुच्चयु ते समासु द्वन्द्व जाणिवउ
नरश्च नारायणश्च—नरनारायणौ ।
पीठं च छत्रं च उपानच्च—पीठछत्रोपानहम् ।

ब्राह्मणाश्च क्षत्रियाश्च वैश्याश्च शूद्राश्च—
ब्राह्मणक्षत्रियविट्शूद्राः ।
—चकारवहुलो द्वंद्वः ।
पूर्वं वाच्यं भवेद्यस्य सोऽव्ययीभाव इष्यते ।

(६) जीणं समासि अव्ययपद संयुक्त पूर्वपद वाच्यु हुइ सु समासु अव्ययीभाव जाणिवु.

गामनइ पापइ अधिकरी प्रवर्तइ	अधिग्रामं नरः

सामीप्ये अव्ययीभावः—

घर कन्हलि वृक्षु — उपगृहं वृक्षः
वृक्ष कन्हलि घरु — उपवृक्षं गृहम्
वांभणनउ अभावु—ब्राह्मणानामभावः अब्राह्मणम्
माषीनउ अभावु—मक्षिकानामभावो निर्म्मक्षिकम्
अनुयोगः पश्चादर्थे—
वांभण पाछलि शिष्य — अनुविप्रं शिष्यः
राजा पाछलि सेना — अनुराजं सेना

वर पाछलि गीत गाती स्त्री	अनुवरं गानगायन्त्यो नार्यः

केदारसमीपि सरस्वती — अनुकेदारं सरस्वती

ये ये वडा ते ते मान लहइं	यथावृद्धं मानं लभन्ते
ये ये लहुडा ते ते यमिवा वइसइं	यथालघु भोक्तुमुपविशन्ति
एयु जेतला वांभण तेतला निर्वाप दिइ	असौ यावद्विप्रं निर्वापान् ददाति
जेतलां खांडां तेतला राजपुत्र	यावत्खड्गं राजपुत्राः
तेतला छात्र	यावच्छात्रं
तेतलां पोथां	पुस्तकानि

ब्राह्मणासिउं जाइ — सविप्रो याति
साकरसिउं दूध पीइं — सशर्करं पयः पिबन्ति
पुत्रसिउं यमइ — सपुत्रो भुङ्क्ते

—अव्ययीभावे सहशब्दस्य सभावः ।
पारे मध्ये अन्ते योगे द्वितीया—

समुद्रमाहि रत्न नीपजइं	मध्ये समुद्रं रत्नानि निष्पद्यन्ते
नइमाहि माछा हींडइं	मध्ये नदीं मत्स्या विचरन्ति
पाणीनइ पारि देवालयु	पारेजलं देवालयानि

पाणीनइ छेहि वृक्षु — अन्तेजलं वृक्षः
तलाव विचि देहरउं —अन्तस्तडागं देवगृहम्
गाम विचि वड्डु — मध्येग्रामं वटः

परिशब्दो वर्ज्जने—

पाटण टाली किहां वसीइ	परिपत्तनं क्वापि नोष्यते
नास्तिक टाली कुण पापीउ	परिनास्तिकं कोऽपि न पापी

आङ् यावदर्थे मर्यादाभिविधौ—
आ गृहं — यावद्गृहम्
आ ग्रामं — यावद्ग्रामम्
एवं अव्ययीभाव समास नपुंसकलिंगीयु जाणिवउ.

अथ तद्धितप्रत्यया लिख्यन्ते

मजीठ राती साडी—माञ्जीष्टा माटिका
हलद्रूआं वडां — हारिद्राणि वटकानि
—इति रागयोगात् अण् ।
मघाभियुक्ता रात्रि दिनं मासो वा—माघी रात्रिः, माघं दिनं, माघो मासः ।

फागुण मास- तणी पूनिम	फाल्गुनी पूर्णिमा

-एवं सर्वत्र नक्षत्रयोगे अण् ।

लाष रातउ कांवलउ	लाक्षिकः कम्बलः
5	लाक्षिकी साडी

-इति लाक्षारक्तार्थे इकण् ।

कागनउं टोलउ-वायसं (कार्क) वृन्दं

अंगनानउं वृदु-आंगनं (यौवनं) वृन्दम्

पुरुषतणुं समवायु - पारुषम्

10 -इति समूहे अण् ।

पुरुषात् समूहे एयण्-

पुरुषतणउ समूहु-पौरुषेयम्

स्त्रीतणउ समूहु-स्त्रैणं वृन्दम्

स्त्रीनी सभा-स्त्रैणी परिषत्

15 स्त्रीनुं धनु-स्त्रैणं धनम्

पुरुषनउ वृंदु-पौंस्न वृन्दम्

-स्त्रीपुसाभ्यां नण्-स्नणौ ।

उण्ट्रा उक्ष राजन्य राजन् वत्स मनुष्याणां समूहेऽकण्-

20 ऊंटनउ समूहु-औष्ट्रकम्

वृषभनउ समूहु-औक्षकम्

रायंतणउ समूहु-राजन्यकं, राजकम्

वत्सनु समूहु-वात्सकम्

मनुष्यनउ समूहु-मानुष्यकः

25 ग्रामजनवन्धुसहायानां समूहे तल्-

ग्रामतणु समूहु-ग्रामता

जननउ समूहु-जनता

वधुनउ समूहु-वधुता

सहायीयानउ समूहु-सहायता

गजात् समूहे घटा-

हाथीयांनउ समूहु-गजघटा

धेनुहस्तिशब्दात् समूहे कण्-

धेनुनउ समूहु-धैनुकम्

हाथीयांनउ समूहु-हास्तिकम्

गुणतत्त्वभूतेन्द्रियविषयशब्दास्त्रकरणानां समूहे ग्रामो वक्तव्यः-

गुणनु समूहु-गुणग्राम'

एवं तत्त्वग्रामः । भूतग्रामः । इद्रियग्राम' । विषय-ग्रामः । शब्दग्रामः। अस्त्रग्रामः । करणग्रामः।

केशशब्दात् समूहे हस्तपक्षपाशा भवन्ति-

केशनउ समूहु-केशहस्तः केशपक्षः केशपाशः

तरुपद्मिनीकुमुदकमलादिभ्यः समूहे षंडो वक्तव्य. । समस्तवृक्षतृणगुल्मजातिभ्योऽपि-

तरूनउ समूहु-तरुषंडम्

[एव] पद्मिनीषंडम् । कुमुदषंडम् । कमलषंडम् ।

कर्म्मदूर्वादितृणादिभ्य काण्डो वक्तव्यः-

कर्मनउ समूहु-कर्मकांडम्

दूर्वानउ समहु-दूर्वाकाण्डम्

तृणानु समूहु-तृणकांडम्

आदिग्रहणात्-

अंधारानउ समूहु-तमस्काण्डम्

गणिकानां समूहे यण्-

गणिकानु समूहु-गाणिक्यम्

अश्वानां समूहे ईय.-

अश्वनउ समूहु—अश्वीयः

प्रमाणे अर्थे द्वयसट् दघ्नट् मात्रट् प्रत्यया भवन्ति—

कडिसमा गहूं—कटिदघ्ना गोधूमाः
गूडांसमी पाइ—जानुद्वयसी परिखा
कांधसमुं पाणी—स्कन्धद्वयसं जल
स्कन्धमात्रं वा

पदन्त्यात्—इति अदितिभ्यो यण्—
दैत्यानां समूहो दैत्यं, आदित्यानां समूह आदित्यम्
एयु व्याकरणु जाणइ—इत्यर्थे वैयाकरणः
सूत्रपुराणन्यायमीमांसेतिहासवेदेभ्यो वेत्त्यधीतेऽर्थे इकण्—

सूत्रु पढइ जाणइ—असौ सूत्रिकः
एवं पौराणिकः। नैयायिकः। मैमांसिकः। ऐतिहासिकः। वैदिकः।

सुवर्णना आभरण—सौवर्णान्याभरणानि
रूपानां पात्र—राजतानि पात्राणि
कर्प्पासनां वस्त्र—कार्प्पासानि वस्त्राणि
हरिणनउं चावडउं—हारिणं चर्म्म
मृगतणउं मांसु—मार्ग्गं मांसं
वाघतणां पद—वैयाघ्राणि पदानि
—तस्येदमर्थेऽण्।

विकृतिवाचिन.प्रकृतावभिधेयायां हितेऽर्थे ईयो यश्च—

अंगाररहिं हितूडं काष्ट—अंगारीयाणि काष्ठानि
पींढा योग्य हितूडं लाकडउं—शकव्यं दारुः
बाणरहिं हितूड शरकड—इषव्यः शरःकाण्डः
कूडीरहिं हितूडं चर्म—कुतव्यं चर्म्म
प्रासादयोग्य हितूई ईट—प्रासादीया इष्टिकाः
भाणायोग्यु हितूडं कांसउं—भाजनीयं कांस्यम्
गाडायोग्यु हितूडं लोहडउं—शाकटीयं लोहम्
करवतरहिं हितूडं चर्म्मु ....
विसनररहिं हितूडं काष्ट—कृशानव्यं काष्ठम्
पांड योग्यहितूई सेल्डी—पंडव्या इक्षुः 5

इति उवर्णान्तशब्दात् यः हितऽर्थे, अन्यत्र ईयः—

वत्सरहिं हितूउ—वत्सीयः
घोडारहिं हितूउ—अश्वीयः

पुरुषु राजानीं परि दीसइ—इत्यर्थे उपमाने वति—पुरुषो राजवत् दृश्यते। 10

चपलपणउं—इत्यर्थे तत्वौ भावे—
चपलता, चपलत्वं, चापल्यम्।

अभिव्याप्तौ संपद्यतौ च सातिर्वा देये त्रा च—

राजा गामु वांभणायतु करइ	राजा ग्रामं श्रोत्रियसात्करोति

15

देव आयतुं करइ — देवत्रा करोति

वरुआयती कन्या संपजइ	वरत्रा संपद्यते कन्या

क्षेत्रु विमणइ त्रिमणइ — द्विगुणाकरोति त्रिगुणाकरोति क्षेत्रं—इत्यर्थे डाच्। 20

दाडिमु नींकोल्इ—निःकुल्या करोति दाडिमम्
मृगु वींधइ—सपत्राकरोति मृगम्
महिषु वाणि आहणइ—निष्पत्राकरोति महिषं 25

कृणनउ सचकारु आपइ	सत्याकरोति कृणान्

आंषि ग्रहीयि रूपु—चाक्षुषं रूपम्
कानि सांभलीयि शब्दु—श्रावणः शब्दः 30

पाहणि पीस्या सातू—दार्षदाः सक्तवः
ऊखलि षांड्या मुग—औदूखला मुद्गाः
घोडे वहीयि रथु—आश्वो रथः
च्युहु वहीयि गाडुं—चातुरं शकटम्
5 चौदसि दीसइ राक्षसु—चातुर्दश रक्षः
—इत्यर्थेऽण् ।

गामेचउ—ग्राम्यः, ग्रामेयः,ग्रामीणः
नदीनउं जलु—नादेयं जलम्
दक्षिणदिशिउ—दाक्षिणात्यः
10 पश्चिमीउ—पाश्चिमात्य.
पूर्वीयु—पौरस्त्यः
अहानउ—इहत्यः
तिहानउ—तत्रत्यः
किहांनउ—कुत्रत्यः
15 यहांनउ—यत्रत्यः
.. . . पार्वतीयानि जलानि
वर्षाकालनउ मेघु—प्रावृषेण्यो मेघः
शरत्कालनउ तिडकउ—शारदिक आतपः
हैमंतनु वायु—हैमनः पवनः
20 सांझूणउं—सायंतनम्
घणदीहुं—चिरन्तनम्
घणे दिहाडे आव्यु—चिरेणागतः
थोडे दिहाडे आविउ—अचिरेणागतः
वडी वार लगाडइ—विलंबते
25 साहइ—अवलंबते

म दीधु, म लीधु, म कीधु—आक्षेपना योगे शतृडानशौ ।
मा योगेऽन्याक्रोशे इति सूत्र—मा कुर्वन्, मा कुर्वाण', मा ददत्, मा ददानः
30 जु करत, जु लेत, जु देत—इत्यर्थे क्रियातिपत्ति

यत् यदिचेत् योगे क्रियातिपत्तिः । पाते वा सप्तमी ।

जु किमइ हुं घरि जात तु एयु मइ गामि न मोकलत	यदि अहं गृहं यायां तदयं मां ग्रामं न प्रस्थापयेत्
जु किमइ एयु गामि न जात चोरु वळद न लयेत	यदि असौ ग्रामं न गच्छेत् ततश्चैरो बलीवर्दान्न हरेत्
जे किमइ एयु लेत तु द्राम न पडत	असौ गाधूमांश्चेद् गृहणीयात् द्रम्मास्ततो न

अतीते स्मृत्युक्तौ अभिज्ञा भविष्यन्ती—

जाण अहो पुरुष आपणि लहुडा थ्या वस्त्र पहिरता	स्मरसि पुरुष वयं लघुत्वे बहुमूल्यानि वासांसि पारिधास्यामः
पुरअहे दीहाडे मिष्टान्न यमता	मिष्टान्न भोक्ष्यामः

ननु शब्दयोगे पृष्ठप्रतिवचनोत्तरे अद्यतनी पूर्वादे' उत्तरपदे वर्त्तमानाभावात् हस्तलेख्यं अकार्षीत् ननु करोमि भो । कथं ब्राह्मणं शूद्रान्नं भोजयेत् । अन्यायमेव । क्रियासमभिहारे सर्वत्र हि—स्वौ भवतः । ब्राह्मण यमिर्सि यमिर्सि—ब्राह्मणा भुंक्ष्व भुंक्ष्व

तम्हि कहउ कहउ आपणी वात	यूयं कथय कथय निजा वार्त्तां
अम्हि गामि जास्युं जास्युं	वय ग्रामं गच्छ गच्छ

कालपुरुषत्रयेऽप्येवम् । क्रियासमुच्चयेऽप्येवम् । नाम्न आत्मेच्छायायां यन् काम्य च गृहीते । गृहकाम्यति ।

दासीं वह्लवत् मानइ वधूयति दासं नरः ।

एयु लहडउ लघीयान् लघिष्ठः

इत्यर्थे गुणादिष्टे गुण्यंसौ वा पृथ्वादिभ्यो भावेऽर्थे इमनु वा ।

एयु अति पुहुलउ असौ प्रथीयान्, प्राथिष्ट; प्रथिमा

एयु अति कूंअलउ असौ म्रदीयान्, म्रदिष्टः । म्रदिमा एवं लघिमा अणिमा महिमा वरिमा गरिमा द्रढिमा । कालिमा मलिनिमा

इष्ठ ईयस ईमनु वा प्रत्यये प्रशस्यस्य श्रो[१] भवति । वृद्धस्य च ज्य[२] । अन्तिकवाढयोर्नेदसाधौ[३] । युवाल्पयोः कन्य[वौ][४] । स्थूलदूरयुवक्षिप्रक्षुद्राणां अन्तस्थादेर्लोपो गुणश्च[५]वहोर्लोपि भू च[६] । प्रियस्थिरस्फिरोरुगुरुवहुलतृप्रदीर्घह्रस्ववृद्धवृन्दारकाणां प्रस्थस्फवर्गर्वंहत्रप्द्राघह्रस्वर्षवृन्दा[७] ।

तद्वदिष्टेमेयस्यवहुलं प्रत्ययादिलोपश्च ।

व्याकरणना सूत्रो उपरथी आ सूत्र जेवां वाक्यो ग्रंथकारे स्वयं वनाव्या होय तेम लागे छे. आ वाक्योनां संवादक पाणिनिना सूत्रो नीचे प्रमाणे छे.

१ प्रशस्यस्य श्रः । ५–३–६०.

२ वृद्धस्य च । ५–३–६२.

३ ५–३–६३.

४ युवाल्पयोः कनन्यतरस्यां ५–३–६४.

५ स्थूलदूरयुवह्रस्वक्षिप्रक्षुद्राणां यणादिपरं पूर्वस्य च गुणः । ६–४–१५६.

६ वहोर्लोपो भू च वहोः । ६–४–१५८.

७ प्रियस्थिरस्फिरोरवहुलगुरुवृद्धतृप्रदीर्घवृन्दारकाणां प्रस्थस्फवर्बंहिगर्वर्षित्रप्द्राघिवृन्दा।६–४–१५७.

एयु अतिप्रशस्यु असौ श्रेयान् श्रेष्ठः श्रेमा

एयु अतिवडउ । असौ ज्यायान् ज्येष्ठः ज्यायिमा ।

एयु अतिढूकडउ असौ नेदीयान् नेदिष्ठः. नेदिमा ।

एउ अतिगाढउ साधीयान् साधिष्ठः साधिमा ।

एउ अतिलहुडउ अतिथोडउ असौ कनीयान्, कनिष्ठः, कनिमा ।

एयु अतिमोटउ असौ स्थवीयान्, स्थविष्ठः स्थविमा ।

एयु अतिवेगलउ असौ दवीयान् दविष्ठः दविमा ।

एयु अतिलहुडउ असौ यवीयान् यविष्ठः यविमा ।

एयु अतिव्रहिलउ असौ क्षेपीयान् क्षेपिष्ठः क्षेपिमा ।

एयु अतिक्षुद्रु असौ क्षोदियान्, क्षोदिष्टः क्षोदिमा ।

एयु अतिघणउ असौ भूयान् भूयिष्ठः भूविमा ।

एयु अतिप्रियु असौ प्रेयान्, [प्रेष्ठः] प्रेयनुं दुयिवुं--प्रेमा

एयु अतिस्थिरु असौ स्थेयान् स्थेष्ठः स्थेमा ।

एयु गरूउ वरीयान्, वरिष्टः वरिमा । गरीयान्. गरिष्टः, गरिमा ।

एयु अतिबहुल असौ बंहीयान् बंहिष्ठ·
[बंहिमा]
एयु अतिलज्जालु असौ त्रपीयान् त्रपिष्ठः
[त्रपिमा]
एयु अतिदीर्घु असौ द्राघीयान्, द्राघिष्ठः
दीर्घनउं हुवउं द्राघिमा
एयु ह्रस्वु असौ ह्रसीयान् ह्रसिष्ठः
ह्रसिमा।
अतिवृद्धु वर्षीयान् वर्षिष्ठः।
एकस्वराणामदन्ताना च आपागमः।
एयु प्रशस्यु कहइ असौ श्रापयति।
एयु वडु कहइ असौ स्थापयति।
एयु ढूकडउ कहइ असौ नेदयति।
एयु गाढउ कहइ असौ साधयति।
एयु तरुणउ कहइ असौ यवयति
कनयति।

अतिहिं हुइ बोभूयते, बोभूवीति
बोभोति।
अतिहिंजाइ, वली वलीजाइ जंगम्यते, जगमीति,
जंगति।
अतिहिं ज्वलइ जाज्वल्यते जाज्वलीति
जाज्वल्ति।
अतिहिं हसइ जाहस्यते, जाहसीति
जाहस्ति।
अतिहिं रहइ तेष्ठीयते, तास्थायते।
अतिहि देषइं दरीदृश्यते दरीदृशीति
दरीदृष्टि।
रीस्थाने लुकि रिरौ वा
दरिदृष्टि, दर्दृष्टि।

अतिहिं नाचइ नरीनृत्यते नरीनृतीति
नरीनर्त्ति नर्नर्त्ति।
अतिहिं वरसइ वरीवृषीति, वरीवृष्टि,
वरिवर्ष्टि,वर्वर्ष्टि।
अतिहिं पूछइ परीपृच्छयते परीपृच्छीति
परिपर्ष्टि पर्पर्ष्टि।
अतिहिं जाइ सरीस्रियते, सरीसरीति
सरीसर्त्ति, सरिसर्त्ति।
अतिहिं मरइ मरीम्रियते, मरीमरीति,
मरीमर्ति, मर्मर्त्ति।
अतिहिं लिइ नेनीयते, नेनेति।
अतिहिं पचइ पापच्यते,पापचीति पापक्ति।
अतिहिं पढइ पापठ्यते, पापठीति, पापट्टि।
अतिहिं भणइ बंभण्यते, बमणीति, बंभण्टि।
अतिहिं प्रेरइ चेक्षिप्यते, चेक्षिपीति,
चेक्षिप्ति
अतिहिं लिखइ वावश्यते, वावशीति वावष्टि
अतिहिं मूकइ मोमुच्यते, गोमुचीति,
मोमोक्ति
अतिहिं सींचइ सेसिच्यते, सेसिचीति
सेसेक्ति
अतिहिं छांडइ तात्यज्यते, तात्यजीति,
तात्यक्ति.
अतिहिं दहइ दंदह्यते, दन्हीति, दंदग्धि.
अतिहिं जपइ जंजप्यते जजपीति, जंजप्ति.
अतिहिं दोहइ दोदुह्यते,दोदुहीति,दोदोग्धि.
अतिहिं गात्रु नामइ जजभ्यते, जंजभीति,
जंजब्धि.
अतिहिं रमइ रंरम्यते, रंरमीति, ररन्ति.
अतिहिं नमइ नंनम्यते, नंनमाति नंनंति.

अतिहिं तरइ	तेतीर्यते, तेतरीति तेतर्ति.	चालिवा ,,	चिचालिषति
अतिहिं षिसइ	शनीश्रस्यते, शनीश्रसीति,	फिरिवा ,,	विभ्रमिषति
	शनीश्रस्ति.	लिखिवा ,,	लिलिखिषति
अतिहिं पडइ	पनीपत्यते, पनीपतीति,	चरिवा ,,	चुचूर्षति
	पनीपत्ति.	पूछिवा ,,	पिप्रछिषति
अतिहिं लाइ	पनीपद्यते, पनीपदीति,	धरिवा ,,	दिधरिषति
	पनीपात्ति,	रमिवा ,,	रिरंसति
अतीहि सूकइ	चनीस्कद्यते, चनीस्कंदीति	मारिवा ,,	जिघासति
	चनीस्कन्ति.	नाहिवा ,,	सिष्णासति
अतिहि वूंवइ, विणइ चिणइ	चेकीयते, चेकीयति	कहिवा ,,	चिख्यासति
	चेकेति.	बोलिवा ,,	विवक्षति
		वायिवा ,,	विवासति
हुइवा वांछइ	बुभूषति	आश्रयिवा ,,	आशिश्रीषति
रहिवा थाकिवा थाइवा,	तिष्ठासति	सूयिवा ,,	शिशयिषते
जाइवा वांछइ	जिगमिषति	दोहिवा ,,	दुधुक्षति
देषिवा वांछइ	दिदृक्षति	चाटिवा ,,	लिलिक्षति
वलिवा वाछइ	जिज्वलिषति	वीहिवा ,,	विभीषति
हसिवा वाछइ	जिहसिषति	लाजिवा ,,	जिह्रीषति
लेवा लांछइ	निनीषति	जूझिवा ,,	युयुत्सति
पचिवा वांछइ	पिपक्षति	सुकिवा ,,	शुशुक्षति
पढिवा वांछइ	पिपठिषति	नमिवा ,,	निनंसति
लाषिवा वांछइ	चिक्षिप्सति	खणिवा ,,	चिखासति(चिखनिष)ति ?
भणिवा वांछइ	विभणिषति	सूंघिवा ,,	जिघ्रासति
पइसिवा ,,	प्रविविक्षति	पीवा ,,	पिपासति
मेल्हिवा ,,	मुमुक्षति	पडिवा वांछइ	पित्सति
सींचिवा ,,	सिसिक्षति	जीपिवा वांछइ	जिगीषति
छांडिवा ,,	तित्यक्षति	जीविवा ,,	जिजीविषति
दहिवा ,,	दिधक्षति	मरिवा ,,	मिम्रति
तरिवा ,,	तितीर्षति	देवा ,,	दित्सति
सांभलिवा ,,	शुश्रूषति	धरिवा ,,	धित्सति

आरभिवा ,, आरिप्सते
लहिवा ,, लिप्सति
सेकिवा ,, सिसिक्षति
पडिवा ,, पिपतिषति
पामिवा ,, ईप्सति
फाडिवा ,, बिभित्सति
जमिवा ,, बुभुक्षते
लेवा ,, जिघृक्षति
पूजिवा ,, अर्चिचिषति
निकोलिवा ,, ईप्सति
फाडिवा ,, निश्चुकोषिषति
रोयिवा वाछइ रुरुदिषति
जाणिवा ,, विविदिषति
चोरिवा ,, मुमुषिषति
चिणिवा ,, चिचीषति
चूटिवा ,, ,,
वीणिवा ,, ,,
लुणिवा वाछइ लुलूषति
पवित्रु करवा वाछइ पुपूषति
स्तविवा वाछइ तुष्टूषति

करिवा वाछइ चिकीर्षति
मरिवा ,, मुमूर्षति
स्मारिवा ,, सुस्मूर्षति
करिवा ,, चिकीर्षति चिकीर्षितवान् चिकीर्षन् चिकीर्षमाणः चिकीर्षिता चिकीर्षितुं चिकीर्षणाय चिकीर्षितुकामः। चिकीर्षितुमना.। चिकीर्षिता। चिकीर्षकः। चिकीर्षितव्यं। चिकीर्षणीयं। चिकीर्ष्यं।

अतिहि होउ बोभूयित। बोभूयितवान्। बोभूयमानः। बोभूयते। बोभूयमानः। बोभूयिता। बोभूयितुं बोभूयितुकामः। बोभूयितुमनाः। बोभूइषति बोभूयितव्य। एवं सर्वत्र

उक्तिपदानि समाप्तानि।

शुभं भवतु।

प रि शि ष्ट

१४ मा सैकानुं गूजराती गद्य

बालशिक्षामांनां अवतरणो

[कर्ता—संग्रामसिंह; वि. सं. १३३६]

[संज्ञा प्रक्रममा]

स्वर केता १४, समान केता १०, सवर्ण १०, ह्रस्व ५, दीर्घ ५, नामीआ स्वरो १२, संध्यक्षर ४, व्यंजन ३३, वर्ग ५ कचटतप, अघोष १३, घोषवंत २०.

लिंगु ३ पुल्लिंगु, स्त्रीलिंगु, नपुसकलिंगु; भलु पुलिंगु, भली स्त्रीलिंगु, भलुं नपुंसकलिंगु.

[स्यादिप्रक्रममां—]

सि एकवचनु, औ द्विवचनु, जस् बहुवचन.

[कारकप्रक्रममां]

अथ प्रत्येकं विभक्तिप्राप्तिमाह—करई, लियई, दियई इत्यादौ वर्तमाना । १

कीजई, दीजई, लीजई इत्यादौ वक्रोक्तौ कर्मणि वर्तमानाया आत्मनेपदम् ।

करिजे, लेजे, देजे, इत्यादौ एकारांतवचने सप्तमी । २

करि, ल्यई, दई इत्यादौ अनुमति(तौ) पचमी । ३

कीजउ, दीजउ, लीजउ इत्यादौ कर्मण्यात्मनेपदं ।

कीधउं, दीधउं, लीधउं इत्यादौ परोक्षा ह्यस्तन्यद्यतन्यौ च । ४–५–६

कालि कीधउं इत्यादौ ह्यस्तन्येव, न परोक्षाद्यतन्यौ ।

आजु कीधउं इत्यादौ अद्यतनी, न परोक्षा—ह्यस्तन्यौ ।

न कीरीस [2] (म करि) म ल्यई, म दई, म करिसि, म लेसि, म देसि इत्यादौ माशब्दयोगेऽद्यतनी ।

म कीधु, म लीधु, म दीधु इत्यादौ कर्मणि माशब्दयोगे ।

जई करत, जई लेत, जई देत, इत्यादौ क्रियातिपत्तिः ।

जई कीजत, लीजत, दीजत इत्यादौ कर्मणि क्रियातिपत्तेरात्मनेपदं ।

करिसिई, लेस(सि)ई, देसिई इत्यादौ नही करई, नही लियई, नही दियई इत्यादौ भविष्यन्ती ।

कीजिसिई, लीजिसिई, दिजिसिई इत्यादौ नही कीजई, नही लीजई इत्यादौ च कर्मणि भविष्यन्त्या-त्मनेपदम्। कालि करिसई इत्यादौ श्वस्तनी।

शिष्नु जिणिसई, वर्ष शयु(सउ)जीविसई इत्यादौ आशीर्युक्ते भविष्यतिकालः।

अथ कृत्प्रत्ययप्राप्तिमाह-

करतउ, लेतउ, देतउ इत्यादौ कर्तरि वर्तमाने शतृङानशौ।

कीजतउ, लीजतउ दीजतउ इत्यादौ कर्मण्यानश्।

करणाहरु, लेणाहरु, देणाहरु इत्यादौ वर्तमाने वुण्-तृचौ।

कीधउ, दीधउं, लीधउं इत्यादौ अतीते निष्ठा क्वसुकानौ च।

करीउ, लेउ, देउ इत्यादौ क्त्वा।

करिवा, लेवा, देवा इत्यादौ तुम्।

करी जाणुं, पढी सकउ, करिवउ, लेवउ, देवउं इत्यादौ कर्मणि तव्यानीयौ।

करणाहरु, लेणाहरु इत्यादौ भविष्यति काले तुमन्।

अथ विशेषप्रत्ययप्राप्तिमाह-

करावई, कराविवउं, करावसई, करावतउ, करावी, कराविवा इत्यादौ इनंताव...प्रत्ययाः। —
(उक्तिप्रक्रमः षष्ठः)

शब्दसंग्रह

आजु अद्य
[कालि] कल्ये
परम परेद्यवि
अरीरम अपरेद्युः, अन्यस्मिन्नहनि, अन्येद्युः
अजूणनुं अद्यतनं
काल्हणउं कल्यतनं
हिवडां इदानीं, अधुना, संप्रति, सांप्रतं
हिवडानुं आधुनिकं सांप्रतीनं
नहीत नो वा (?) नो चेत्
लिगई प्रभृति, आरभ्य
पाषई विना ऋते
मुहिया मुधा
यिम यथा
तिम तथा
जाण (जाउ) यावत्
तांउ तावत्
एक वार एकदा
सवई वार सर्वदा, सदा
जहिंयं यदा, यथा (?)
तहिंयं तदा तदानीं
कहिया कदा
अनेरी वार अन्यदा
कीहां क्व, कुत्र
जीहां यत्र
तीहां तत्र
इहां अत्र
अनेतई अन्यत्र
सगल्इ सर्वत्र
वलीउ व्यावृत्य, व्याघुट्य

तिमइ तत्काले
झटकइं झटिति
जूउ पृथक्
ताहरुं त्वदीयं, भवदीयं
माहरउं मदीयं
तुम्हारुं युष्मदीयं
अम्हारउं अस्मदीय
सरीषउ सदृशः
किसउ कीदृशः
जिसउ यादृशः
तिसउ तादृशः
ईसउ ईदृशः
यसउ यादृशः
आनेसउ अन्यादृशः
अम्ह सरीषउ अस्मादृशः
तू सरीषउ त्वादृशः
मू सरीसउ मादृशः
तुम्ह(म्ह)सरीसउ युष्मादृशः
तसि तर्हि
जेतलु यावन्मात्रं
तेतलु तावन्मात्रं
एतलु एतावन्मात्रं, इयन्मात्रं
केतलु कियन्मात्रं
ओरहु अर्वाक्
परहु परतः
पापलि परी(रि)तः
स्वहि गमा समंतात्, सर्वतः
बाहिरि बहिः, बाह्यं

धुरिलुं आदिमं
छहिलउं अंतिमं
एकपरि एकधा
बिहुपरि द्विधा इत्यादि
छहिंपरि षोढा
अनेकपरि अनेकधा, बहुधा
सवेहिपरि सर्वथा
जडपणउं जडता, जडत्वं, जाड्यं
अहुणउं ऐषमः
पुरु परुत्
उगमुगउ अवाग्मुकः
झडझांसउ चलध्वांक्षक.
उघघलु उधू (द्ध) लिकं
वरगड वराघर्ष (रपक्ष)काः
जानुत्र यज्ञयात्रा
जानावासउ जन्यावासकः
एकउडउ एकते (पटि)डिक·
उसीआलु अस्पृष्टालयं
घुघटउ अवगुठनं
वाणिग वादिनी
अउडक अपराल्या
आहरजाहर एहिरे याहिरे
मसाहणी महासाधनिका
अषवडली अउषडली अक्षपटलिक(का)
चांद्रिणुं चंद्रिकालयं
धणीवउ धन्यावयः
छीडणि छिद्राटिनी
नीषणीयासु निक्षीणकर्मा
वलवलीउ वाचालः, वाचाटः
मेराइउ मेरायक
वादलुं वारिदपटलं
अभा(भो)उप अभ्युक्षणं
उलकउ उदकोदंचनं
पछोकउ पश्चादोकः
उपवासीउ उपोषितः
झामलु ध्यामलं
हियाविउं हृदयार्पित
दाणी घणी ऋणितः
हेवाउ हेवाकः
फुईहाईउ पितृष्वस्रीय
मसिहाईउ मातृष्वस्रीयः
पाटूआलि पादप्रहारिणी
अरतउपरतउ आकृत्या प्रकृत्या
बाप सरीपउ च पितृसदृशः
अगीठउ अग्निपीठ
फूटरउ स्फुटतरं
ऊघडदूघडउं उद्घटदुर्घटं
उचीफाड चित्तफाटका
निलषणउ निर्लक्षण·
षाणउ तुषाद(र्द)नस्थानं
अहीणउ अवेनुकं
उपरे थाई उपरिस्थाई(यी)
अंधामीची अधमीलिका
कांकसी कचाकर्ष ी
ओलाणि अवलंबिनी
हथीयारु हस्ताधार·
गोल गवेला (?)
रउडउ रावा
कऊसीउ कपिशीर्षकं
मुखामुखि मुखामुख्यता

गोगीडउ गोकीटः
औलउ उपालयः
निकउ निष्कः
कल्होडउ कलभोत्कटः
आलीगारु आलीककारः
वानयतउ वर्णायत्तः
राउलवायु राजकुलायतः
[ ] पादघातः
दीहदीवी दिनदीपिका
भूराइ भूतराजः
भजवाड भङ्गपातः
पडाइ पताकिका
वाकउकूवडउं वक्रकुब्जं
ऊथूयायनुं (?) ऊचथुयमानं
थूं(धूं)त्राथू (धूं)वि मुष्टामुष्टि (?)
वालालंछी केशाकेशि
पेलावेलि प्रेराप्रेरि
वियारिउ विप्रतारितः
छेतरिउ छलांतरितः
द्रडवडाहिउ द्रवकघातितः
जिगीसा जिघृक्षा
पल्कु प्रलुब्धः
अलजउ उत्कंठा
खाजहलउ खाद्यफलं
पीजहलउ पोद्य(पेय)फलं
ल्हिाच्छोह लब्धोत्साहः
आकडउ उत्कटः
वाउलउ वार्तालयः
उजाणी उद्यानिका
कडअडउ काष्टकाठिनः
भोगला भुजार्गला
असराहिउं आश्चर्यं
महरु महत्तरः
देपाविउ दृष्टापेक्षा
अउडीगउ अपमार्गगः
ऊचलउ अपरिचितः
फाटिउ पातितः
सासुहिउ (?) सज्जितः
वरांसिउ विपर्यस्तः
पच्छाहियउ पश्चाद् हृदयं

इति संस्कारप्रक्रमे प्रथमस्तदक्षराधिकारः

अथ क्रिया

राषइ रक्षति, गोपायति, पाति, त्राति, त्रायते, अवति च
आरंभई आरभते
सांभरइ स्मरति वा ध्या (य)ति च
बोलई जल्पति, निगदति, वक्ति, वदति, भाषते, आह, ब्रवीति, ब्रूते
नासइ नश्यति, पलायते
जिणइ विजयते
जाणई वेत्ति, जानाति, अवगच्छति
बूझइ बुध्यते
परीछइ परीच्छति
जिमइ भुङ्क्ते, अश्नाति, जिमति च
खाअइ भक्षयति, अत्ति, खादति ग्रसतऽपि च ४
अभ्यसइ मनति, अभ्यस्यति
भीषई भिक्षति (ते)
थोभई स्तो (–)भति) स्तम्नाति च
सीषई शिक्षते
शीषवई अनुशास्ति
विणसइ विनश्यति
विमासइ विमृशति
विचारइ विचारयति, ऊहते
वेवई व्ययति
पडीगइ चिकीत्सति, प्रतीकरोति।
अच्छइ अस्ति, तिष्ठति, विद्यते, आस्ते।
कहइ कथयति, आचष्टे, आख्याति, शंसति।
सोहइ शोभते, भाति, राजति, राजते, चकास्ति च
जाइ गच्छति, याति व्रजति, सरति, एति, अयति वा
आवइ [आगच्छति वि०] आङ्पूर्वा एते धातवः आगमने वर्तन्ते
निकलइ निरस्तु निःपूर्वा निस्सरति
ऊगइ [उद्गच्छति वि०] उदस्तु
आथमइ [अस्तं गच्छति वि०] अस्तमस्तु
त्रासइ त्रस्यति, त्रसति
हालइ चालइ चलति
त्रुटइ त्रुट्यति, त्रुटति
पूजइ पूजयति, अर्चति, अंचति
स्तवइ नुवति, स्तौति, स्तुते, नौति, स्तवीति च।
आपइ अर्पयति
वरसइ वर्षति
नमस्करइ नमस्यति वा नमस्करोति
आराधइ आराधयति, उपास्ते
तपु करइ तपः करोति, तपस्यति वा
कुसणइ कुष्णाति
घासइ घर्षति
भेटइ सभाजयति
वीनवइ विज्ञपयति
सेवइ भजति, भजते, सेवते, श्रयति
वापरइ व्याप्रियते, व्यापृणोति
परा(?प्रा)मइ प्राप्नोति
नाहइ स्नाति
भावइ प्रतिभासते, प्रतिभासति, रोचते वा।
वीषरइ विकिरति, विक्षिपति
साम (समा)रइ सम किरति
पीठ(ड)इ पिष्टयति
परिणइ परिणयति, उपयच्छते, विवाहयति

खंडु(खंजु)हालइ प(ख)जेयति
हींडा(डो)लइ आदोलयति
सरइ पूजइ अलंखलु च (?) पूर्यते
निंदइ निंदति, जुगुप्सते, गर्हते
बांधइ बध्नाति
पडिवचइ प्रतिवक्ति
बीहइ बिभेति
बीहावइ भापयते, भीषयते
उल्लींचइ उल्लंचति
लाजइ जिह्रेति, लज्जते, त्रपते, व्रीड्यति
फिरइ भ्राम्यति, भ्रमति
अणभामेइ अनुपूर्वा भ्रम [अनुभ्राम्यति]
सूंघइ सिं(शि)घति, जिघ्रति
झाडइ उज्झति, जहाति च त्यजति
सांपडइ संपद्यते
निरषइ निरीक्षते
ऊपजइ उत्पद्यते
परषइ परीक्षते
नीपजइ निष्पद्यते
ऊवेषइ उपेक्षते
ऊभकइ उध्रकते (?)
पडषइ प्रतीक्षते, प्रतिपालयति
बुहारइ सन्मार्जयति
बालइ ज्वालयति
बलइ ज्वलति
पीअइ पिबति
समारइ समार [च]यति
मुल्इ मृदु लुनाति, मृदुलयति
विदइ विध्यति, कडहायते
व्यापइ अश्नुते, व्याप्नोति च

दीपइ दीप्यते
वांछइ वांछति, कांक्षति
तूसइ तुष्यति
रुषइ रूष्यति
पूछइ पृच्छति, सूच्यति
नाचइ नृत्यति
माचइ माद्यति
ऊगाइ उद्गायति
पीडइ पीडयति, बाधते, तुदति
दुमइ दुनाति, दुःखाकरोति, दुःखं करोति,
दुःखयति वा
सुहाइ सुखादेवं [सुखाकरोति, सुखयति]
सांभलइ निशाम्यति, श्रृणोति; आकर्णयति
विगूपइ विगुप्यति
नरनरइ नदति
थवइ स्थगयति
कडत्थइ कटिस्थ (?) यति
करडइ
काटइ } कृंतति
लांषइ अस्यति, निरस्यति, क्षिपति
नींषइ निःक्षिपति निर्निस्यति
धोअइ प्रक्षालयति
वीछलइ वेस्तु [विक्षाल्यति]
घातइ निक्षिपति, प्रक्षिपति
छांटइ आक्षिपति
खरवल (?)इ अपस्किरति
संवृषइ संवृणुते
समायइ समायते (?)
पुदइ प्रोद्दायते
चिणइ (नु स्वादेः !) चिनोति, चिनुते

साचइ संचिनुते, संचिनोति
चूटइ अवचिनोति
अउगनाइ अपकर्णयति (अवगणइ ?)
ऊजालइ उज्ज्वलयति
प्रासुइ प्रस्नुते
हुअइ भवति, जायते
छुड(खुभ)इ कुप्यति, क्षोभति (?)
चूयइ श्च्योतति–ते
हूदइ हूदते
गाठइ ग्रंथते
थीजइ स्त्यायते
भीजइ क्लिद्यते
ध्यायइ ध्यायति
ऊकलइ उत्कर्षति
वाधइ वर्धते
व्हइ पुंसयते
षीजइ कीलति
ऊमटइ उन्मज्जति
वीधइ विध्यति
पढइ अधीते, पठति च
मायइ माति, मिमीते
प्रसवइ सोति (?), प्रसवति, प्रसुवति, सूते
सूअइ निद्रायति वा शेते, स्वपिति
नागइ न्यंगयति, अनंगीकरोति
फ(फे)डइ अपनयति, स्फटयति, अप्यस्यति।
जुडइ युनक्ति, युंक्ते
उपयागइ वदुपात् [उपयुनाक्ति, उपयुंक्ते](?)
रुधइ रुणद्धि, रुद्धे
उपरुधइ उपात् [उपरुणाद्धि, उपरुद्धे]
फातुरीइ(?) फोर(?) स्फूजत

पसाअइ प्रसीदति, अनुगृह्णाति
उ(ओ)ढइ अवगुठते, प्रावृणोति
ववण [विव]इ व्ययते वो (वा ?)यतेऽपि च
पेअइ प्रात् वा [प्रवयति]
पेलइ नुदति, प्रेरयति
आलिंगइ आलिंगति वा परिष्वजति
वाअइ वादयति
वलइ पश्चाद् व्याघुटते, वलते
छायइ छादयति. आस्तृणोति, स्तृणोति-ते
विस्तरइ / विस्तारइ } विस्तारयति, तनोति, तनुते
लाडइ ललति
पंक्षे(फे)लइ परामृशति
बलअलइ बलाल्लति
धावइ धावति
मनावइ सान्त्वयति
द्रउडइ द्रुताटयति
रमइ क्रीडति, दीव्यति रमते
रोअइ रोदिति, परिदेवयति
ढीलइ शिथिलयति
वमइ वमति
लभ(भेल)इ मिश्रयति
लहइ लभते
झाषइ झाष(?)ति
निउंजइ नियत्रयति
वूडइ ब्रुडति, मज्जति
कुसइ क्रोशति
ऊनूआइ उत्कना(?)ति
...उनूति (?)
कींगाइ केकायते

फिणराइ स्पृहायते
घोडाअइ घंजायते
लुणइ लुनाति, ते
आंबइ प्राप्नोति, घेट(?)ति
आदरइ स्वीकरोति, आद्रियते, अंगीकरोति [अंगी-
पूर्वकृतश्च]
घटइ संभवति, घटते
[विघटइ] विघटते
नींकोलइ कुश्च निःकुलापूर्वः [निःकुलयति]
सीझइ सिध्यति
सूझइ शुध्यति
मीचइ मीलति, निमीलयति
ऊपरमइ उत्प्लवते, उत्पतति
अवहसूयति (?)
ऊजाइ उद्याति
स्पर्द्धइ स्पर्धते, मिष(?)ति
वासइ वास्यते ताम्रचूड़ः
मानइ मन्यते
वरइ वरयति, वृणाति, वृणोति–ते
कुथइ कुथ्यति, कुथ्नाति
मथइ मथ्नाति, मथति
फरलावइ क्वणयति
अलूझइ अलमुञ्झति
ढांकइ प्रच्छादयति, पिधत्ते, पिदधाति च
पहिरइ परिदधाति, संवस्त्रयति
प्रसाजइ प्रस्विधति
छेदइ छेदयत्ययं, छिन्ते, छिनत्ति
तीमइ तेमयति, क्लेदयति
पडइ पतति
अडवडइ अधःपूर्वः पतः [अधः पतति]
सिणमिणइ शनैर्मिनोत्यब्दः
व(ब)सवसइ बहु स्पंदति भूः
कुरमाइ म्लायति क्लाम्यति
हकारइ आकारयति, आह्वयति अपि
प्रहुइ प्रभृज्जति
छणइ क्षणाति
पइसइ प्रविशति
ऊंजइ उदंजयति
आसुरडइ आश्वर्दते
आंजइ अंजयति वा अनक्ति
ऊघडइ उन्मीलयति, उद्घटते
फीटइ स्फिटते
सूकइ शुष्क[य]ति, शुष्यति
पतइ समर्थयति वा समापतति
हीयाथ(?)इ हृदयाप(?)ति
ताच्छइ, च्छोलइ } तक्षति, तक्ष्णाति च
कुहइ क्वथति
पूदइ, पूटइ } क्षुन्ते, क्षुणत्ति वा
विसाहइ विसाधयति
[कीणइ] क्रीणाति, क्रीणीते
सीदाअइ सीदति
ऊगटइ उद्वर्तयत्येपः
झूंबइ लंबते
ऊकलंबइ उत्पूर्वः [उल्लंबते]
साहइ अवलंबते
भेदइ भिनत्ति, भिन्ते
सरवइ निस्यंदते, स्रवति
चाटइ लेढि, लीढे

वीभारइ विप्रतारयति
ऊलटावइ उन्मार्गयति
धूजइ कंपते
ध्राअइ तृप्यति, ध्रायत्यपि
खीजइ खिद्यते, ताम्यति
विहंचइ विभजति
षडहडइ किल खटत्पतति
पालटइ परावर्तयति पेरवां
हडहडइ हठाद्धसी (?)ति
ताणइ
काढइ } कर्षति, कृषते(?)
टलवलइ टलद्वलति
गांगिरइ गां गिरति, गां गृणाति वा
गलअलइ गलद्गलति
द्रंफोडइ द्रुतं स्फोटयति
झूझइ युध्यति
घंघालइ द्रुतं धूनयति
वींटइ वेष्टते
ऊवोढइ उद· [उद्वेष्टते]
साम (समे) टइ सम· [संवेष्टते]
परीसइ परिवेषयति, परीप्साति
षासइ कासते
वीसमइ विश्राम्यति
पराक (स) इ परे परः (?)
नीसमइ नेः (?)
चडइ चटति, आरोहति
धूणइ धूनयत्येषः-धुनाति, ते, धुवति
अउलवइ अपलपति, अपह्नुते
मोकलइ मुत्कलति, विसृजति, प्रहिणोति
फलकलइ कलं क्वणति

समुहइ सजति, समह(?)ति
झणझणइ रणद्ध्वनति
तजइ त्यजति
मांजइ मार्ष्टि
डसइ डसति
[गाजइ] गर्जति
गायइ गायति
कु(?)ण इ कु(?)होति
गूच (?) इ गुवति
करइ करोति कुरुते, विधत्ते
धरइ दधाति, धत्ते, धारयति
दिअइ यच्छति, दत्ते, राति, ददाति
लिअइ आदत्ते, गृह्णाति
विग्रहइ [विग्रहयति]
ऊडइ उड्डीयते अथवा उड्डयते
आचमइ आचमति
पवित्रइ पवित्रयति, पुनाति, पचते
उ [प]णइ उदः पूर्वः [उत्पुनाति, उत्पवते इ०]
धूपइ धूपायति
क्षिरइ क्षरति
वीकइ विक्रीणीते
मरदइ मृध्नाति
मलइ मलते (?)
ऊघडइ उद्घटयति
अडइ अड्डति
छूटइ छुटति
ऊठइ उत्तिष्ठति
नीठइ निः [नितिष्ठति]
किरगिरइ किलगिलति
वघारइ व्याजिघ्रति, वासयति

वषाणइ व्याख्यानयति
वावइ वपति, वपते च
छिवइ छुपते (ति), स्पृशति च
चोरइ मुष्णाति, चोरयति
ऊथेलइ उत्कीलयति
दंभइ दभ्नोति
सकइ शक्नोति
परवारइ प्रपारयति
वारइ निवारयति, निषेधयति
पल्हालइ पर्यार्द्रयति
लेअइ प्रापयति, नयति
पालुअइ पल्लवयति
थाहरइ स्थानमाहरति, स्थानयति
पचारइ प्रत्युच्चारयति
फूटइ स्फुटति
पतीजइ प्रत्येति, प्रत्ययति, प्रतीयते
वरांसीयइ विपर्यस्यति
जाअइ जायते
पाजूअइ कंडुयति, ते
ओलंभइ उपालभते
उच्छूढइ उद्वंघयति
क्रमइ क्रामति
आयसइ आदिशति
वाढइ वर्धयत्ययं
निर्वीजइ निर्विंद्यति (?)
लोढइ लुटयत्ययं
सहइ क्षमते तितिक्षते सहते, क्षाम्यति, मृष्यति च
मरइ म्रियते, विपद्यते
कुपइ कुप्यति, क्रुध्यति ईर्ष्यति
आखुडइ आस्खलति

फडफडइ पटपटायते ध्वजा
शपइ शपति
कडकडइ कटकटायते चक्षुः
ऊकदइ उत्कूर्दते
कुकुदइ कुत्परः [कुत्कूर्दते]
सन्यसइ संन्यस्यति
रंजइ रंजयत्ययं
वीछोहइ विरहयति
द्रमद्रमइ द्रमद्रमति
तडइ तटत्यटति
त्रडत्रडइ (त्रुटत्त्रुटति ?)
झाषवइ तर्जयति
षु(?)सइ गा(गो) पायते(ति), लीयते
विलीजवइ वेः (?)
ऊद्वेगइ उद्वेजयति
हींडइ विचरति, हींडते, चलति
देषइ पश्यति
जोअइ अवलोकते, वीक्षते, अवलोकयति
लोटइ लुट्यति, लोटति
नाथइ नाथति, वृषं तु नस्तयति
धुसइ ध्वंसते
पाठवइ प्रस्थापयत्ययं, प्रहिणोति, प्रेषयत्येषः
पोत्रइ क्षतयत्यसौ
पोषइ पुष्यति पुष्णाति
पुहुंचइ प्रभ नि
ससइ श्वसिति
नीससइ नेस्तु [नि:श्वसिति]
वीससइ वेस्तु [विश्वसिति]. विश्रंभते
फडइ फ (स्फ)टति
ऊपडइ उदः [उत्पतति]

चोपडइ अभ्यंगयत्ययं
ऊटइ उद्वर्तते
नीमटइ निवर्तते
वर्तइ वर्तते
आवइ आङः [आवर्तते]
कारांषइ क्रंदति
गूंथइ ग्रंथयति
[गुंफइ] गुंफति
झंपावइ झंपयति, झंपामाप्नोति
गाहइ गाहते
अजूआल (वगाह)इ अवात् [अवगाहते]
मां(सा)कइ मं(शं)कते
गाजइ गर्जति
भांजइ भनक्ति
आवइ [आगच्छति]
[वाइ] वाति
विहाइ विभाति
सीवइ सीव्यति
पीसइ पिनष्टि
घोषइ घोषयति
हणइ हिनस्ति, हंति, व्यापादयति एषः
मारइ मारयति
आभिडइ आभ्यटति
पलवइ प्रलुप्य(?)ति
ऊभूआ(?)इ उद्भवति
गिलगिलावइ किल गिलापयति
चांपइ संवाहयति
हिणहणइ हेषायते
वमइ वमति
वइसइ उपविशति, निषीदति

ऊलषइ उपलक्षयति
ओहटइ अपसरति, विरमति
संझोरइ विसर्जयति
मोकलावइ मुत्कलापयति, आपृच्छतेऽपि
गंधाअइ गंधायते, गंधयति
पडुच्छइ प्रतिपृच्छति
पिसइ श्रं(स्रं)सते
ओठंभइ अवष्टभ्नाति, अवष्टभति, अवष्टभतेऽपि च
सांखइ संख्याति
पलाणइ पर्याणयति
सूजइ स्व(श्व)यति(ते)
सूजवइ शोफयति
दूषइ दुष्यति
दुहइ दोग्धि दुग्धे च
वाटइ वर्तयति
परत(?)इ प्रात्तरेः [प्रतरयति]
षडषडइ षटत्करोति
उपगरइ उपात् कृः उपकरोति
निराकरइ निराकरोति
फरकइ स्फ(स्फु)रति
वाह[र]इ व्याहरति
रहइ रह(?)ति
भडहडइ कृ भटतः [भटत्करोति]
ह(!)ठुडइ कृ अधशः [अधःकरोति]
छेकइ छतः करोति
छींकइ छीतः क्षौति (छीत्करोति, क्षुत्करोति)
हडहडइ कृ धटतः [घटत् (हट) करोति]
हाकइ हातः [हाक्करोति]
फूंकइ फूतः (फूत्करोति)

जाकइ जातः [जात्करोति]
चूकइ चूतः [चूत्करोति]
यूकइ यूतः (यूत्करोति)
थूंकइ थूतः (थूत्करोति), निष्ठीवति
चींचूइ चीसः कृ (चीत्करोति)
मेल्हइ मुंचति
छाटइ सिंचति
लोपइ लुंपति
लींपइ लींपति
मागइ (मार्गयति), याचते वा
घूमइ घूर्णते वा
धाअइ धावति, धावते च मुचादिषु

अथ कर्मकर्तरि

राचइ रच्यते
वाजइ वाद्यते
दाझइ दह्यते
खाजइ खाद्यते
घासइ घृष्यते
जणाइ ज्ञायते
फटइ विदीर्यते
कराइ क्रियते
लूणअइ लूयते

इति संस्कारप्रक्रमे द्वितीयः क्रियाधिकारः। इत्थं शब्द-क्रियोक्तिरन्याप्यूह्या।

इति संग्रामसिंहविरचितायां बालशिक्षायां संस्कारप्रक्रमः।

आराधना

(सं० १३३० मा लखेला ताडपत्रमाथी)

ज्ञानाचारि पुस्तक पुस्तिका सपुट संपुटिका टीपणां कवली उतरी ठवणी पाठा दोरी प्रभृति ज्ञानोपकरण अवज्ञा, अकालि पठन अतिचार विपरीतकथनु उत्सूत्रप्ररूपणु अश्रद्दधानप्रभृतिकु आलोयहु । दर्शनाचारि देवद्रव्यु भक्षितु उपेक्षितु प्रज्ञाहीनत्वु जिनभुवन आसातना अघोयति देवपूजा गुरुद्रव्यग्रहणु गुरुनिंदा द्रव्यलिंगिएसउं संसर्गु बिंबआशातना स्थापनाचार्यआशातना शंका आकांक्षा विचिकित्सा मिथ्यादृष्टि-प्रसंसा मिथ्यादृष्टिपरिचिउ ए पाच अतिचार आलोयउं । चारि आचारि प्राणातिपात मृषावाद अदत्तादान-मैथुनपरिग्रह ए पाच अणुव्रत दिगुविरति भोगपरिभोगविरति अनर्थदडविरति ए तिन्नि गुणव्रत । सामायिकु देसावकासिकु पौषधु अतिथिसंविभागु ए च्यारि सिक्ष्याव्रत, ईहतणइ विषइ जु कोइ अतिचारु आसेवियउ सु हुं आलोयह । तपाचारि अनशन ऊनोदरिता वृत्तिसक्षेपु रसत्यागु कायक्लेशु संलीनता षट्विधबाह्यतपतणइ विषइ प्रायश्चित्तु विनउ वैयावृत्यु स्वाध्यानु(यु?) कायोत्सर्ग षड्विधआभ्यंतरतपतणइ विषइ जु अतीचारु सु हु आलोयहुं । वीर्याचारि संतइ बलि सतइ वीर्जि जु धर्म्मानुष्ठानि उद्यमु नहीं कियउं सु हुं आलोयहुं । सम्यक्त्वप्रतिपत्ति करहु अरिहतु देवता सुसाधु गुरु जिनप्रणीत धर्म्मु सम्य-क्त्वदंडकु ऊचरहु,सागारप्रत्याख्यानु ऊचरहु चऊहु सरणि पइ सरहु । परमेश्वर अरहत सरणि सकलकर्म निर्मुक्तासिद्ध सरणि संसारपरीवारसमुतरणयानपात्रमहासत्त्वसाधु सरणि सकलपापपटलकवलनकलाकलितु केवलिप्रणीतु धर्म्मु सरणि सिद्ध संघ गण केवलि श्रुत आचार्य उपाध्याय सर्वसाधु व्रतिणी श्रावक श्राविका इह ज काइ आशातना की हुंती ताह मिच्छा मि दुक्कडं । पुढविकाइ जीव आउकाइ जीव तेउकाइ जीव वाउकाइ जीव वणस्पइकाइ जीव बेइंदिय त्रेंदिय चउरिंद्रिय जलचर स्थलचर खेचर जि जंतु ताह मिच्छा मि दुक्कडं । पनर कर्मभूमि जि मनुष्य त्रीस अकर्मभूमि जि मनुष्य तीहिं मिच्छा मि दुक्कडं । छप्पन अंतरद्विपतणा मनुष्य तीह मिच्छा मि दुक्कडं । सात नरकतणा नारकि दशविध भवनपति अष्टविध व्यतर पंचविध जोइसी द्वैविध वैमानिकदेवा किं बहुना । दृष्ट अदृष्ट ज्ञात अज्ञात श्रुत अश्रुत स्वजन परजन मित्रु शत्रु प्रत्यक्षि परोक्षि जे केइ जीव चतुरासीलक्ष योनि ऊपना चतुर्गतिकी संसारि भ्रमंता मइ हुमिया वचिया सेहिया सीरीविया हसिया निंदिया किलामिया दामिया पाछिया चूकिया भवि भवातरि भवसति भवसहस्रि भवलक्षि भवकोटि मनि वचनि काइ तीह सर्वेहइ मिच्छा मि दुक्कडं । अढार पापस्थान वोसिरावइ इहु सर्व्वू प्राणातिपातू सर्व्वू मानू सर्वेइ माया सर्व्वू लोभू प्रेमु द्वेषु कलहु अभ्याख्यानु रति अरति पैशून्यु मिथ्यादर्शनशल्यु परपारिवादू अढार पापस्थान त्रिविधिहि मनि वचनि काइ करणि करावणि अनुमति परिहरउ । अतीतु निंदउ वर्तमानु संवरहु अनागतु पच्चक्खउ । पंचपर-मेष्ठिनमस्कारु जिनशासनि सारु चतुर्दशपूर्वसमुद्धारु संपादितसकलकल्याणसंभारु विहितदुरितापहारु क्षुद्रोपद्रवपर्वतवज्रप्रहारु लीलादलितसंसारु सु तुम्हि अनुसरहु, जिणि कारणि चतुर्दशपूर्वधर चतुर्दश-

पूर्वसंबंधिउं ध्यानु परिलजिउ पंचपरमेष्ठि नमस्कारु स्मरहि, तउ तुम्हि विशेषि स्मरेवउ, अनइ परमेश्वरि तीर्थंकरदेवि इसउ अर्थु भणियउ अच्छइ, अनइं संसारतणउ प्रतिभउ म करिसउ, अनइ रुद्धि नमस्कार इहलोकि परलोकि संपादियइ ॥ आराधना समाप्तेति ॥

यदक्षरं परिभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् । क्षन्तव्यं तद् बुधैः सर्वं कस्य न स्खलते मनः ॥

संवत् १३३० वर्षे आश्विनसुदि ५ गुरावद्येह आशापल्लयाम् ॥

(१) सर्वतीर्थनमस्कारस्तवन ।

(संवत् १३५९ मा लखायेला कागळना पुस्तकमाथी)

पहिलउं त्रिकालु अतीत अनागत वर्त्तमान बहत्तरि तीर्थंकर सर्वपापक्षयंकर हउं नमस्करउं । तदनंतरु पांचे भरते पांचे ऐरवते पांच महाविदेहे सत्तरिसउ उत्कृष्ट कालि विहरमाण हउं नमस्करउं । तउ पहिलइ सौधर्म्मि देवलोकि बत्रीस लाख, बीजइ ईसानि देवलोकि अठावीस लाख, त्रीजइ सनतकुमारि देवलोकि बारलाख, चउत्थइ माहेंद्रदेवलोकि आठ लाख, पांचमइ ब्रह्मदेवलोकि च्यारि लाख, छठइ लांतकि देवलोकि पंचास सहस, सातमइ शुक्रदेवलोकि च्यालीस सहस, आठमइ सहस्रारि देवलोकि छ सहस, नवमइ आणति देवलोकि वि सइ, दसमइ प्राणति देवलोकि वि सइ, इग्यारमइ आरणि देवलोकि वारमइ अच्युतदेवलोकि बिहू दउढु दउढु सउ, अनइ हेठिले त्रिहू ग्रैवेयके इग्यारोत्तरु सउ, माहिले त्रिहू ग्रैवेयके सत्तोत्तर सउ, ऊपइले त्रिहू ग्रैवेयाकि एकु सउ, पंच पंचोत्तर विमाने, एवंकारइ स्वर्गलोकि चउरासी लाख सत्ताणवइ सहस त्रेवीस आगला जिनभुवन वांदउं । अनंतरु भुवनपतिमज्झे असुरकुमारमज्झे चउसट्ठिलाख, नागकुमारमज्झे चउरासी लाख, सुवन्नकुमारमज्झे बहत्तरिलाख, वायकुमारमज्झे छन्नवइ लाख, दीवकुमार दिसाकुमार अहिट्ठकुमार विज्जुकुमार थुणियकुमार अग्गिकुमार छहं मध्यभागे छहत्तरि छहत्तरि लाख, एवंकारइ पाताललोकि सातकोडि बहत्तरिलाख जिनमंदिर-स्तवउं । अथ मनुष्यलोकि नंदिसर वरि दीपि बावन्न, च्यारि कुंडलवल्गि, च्यारि रुचकि वल्गि, च्यारि मनुष्योत्तरि पर्वति, च्यारि इक्षार पर्वति, पंच्यासी पांच मेरे, वीस गजदंत पर्वति, दस कुरुपर्वति, त्रीस सेलसिहरे, असीव, क्षारसेलसिहरे, सरिसउ वैताढ्यपर्वति, एवं च्यारि सइ त्रिसट्ठि जिणालइपडिमं, एवं आठ कोडि छप्पन्न लाख सत्ताणवइ सहस च्यारि सइ छियासिया तियलोके शास्वतानि महामंदिर त्रिकाल तीह नमस्कारु करउं ॥

सर्वतीर्थनमस्कारस्तवनम् ।

नवकारव्याख्यानम्

(संवत् १३५८ मां लखाएला पुस्तकमांथी)

नमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ माहरउ नमस्कारु अरिहंत हउ । किसा जि अरिहंत, रागद्वेषरूपिआ अरि वयरी जेहि हणिया, अथवा चतुष्षष्टि इंद्रसंबंधिनी पूजा महिमा अरिहइ; जि उत्पन्न दिव्य विमल

केवलज्ञान, चउत्रीस अतिशयि समन्वित, अष्टमहाप्रातिहार्यशोभायमान महाविदेहि खेत्रि विहरमान तीह अरिहंत भगवंत माहरउ नमस्कारु हउ ॥ १ ॥

नमो सिद्धाणं ॥ २ ॥ महारउ नमस्कारु सिद्ध हउ । किसा जि सिद्ध; दुष्टाष्टकर्म्मक्षउ करिउ, जि मोक्षि ग्या। आठ कर्म किसा भणियइ। ज्ञानावरणीउ १ दरिसणावरणीउ २ वेदनीउ ३ मोहनीउ ४ आयु ५ नामु ६ गोत्तु ७ अंतराउ ८ ईह आठकर्म्मक्षउ करिउ जि सिद्धि ग्या। किसी ज सिद्धि; लोकतणइ अग्रविभागि पचत्तालीस लक्षयोजनप्रमाणि जिसउ उत्ताणु छत्रु तिसइ आकारि ज सिद्धिसिला अमलनिर्मल जलसंकासं जु अजरामरस्थानु, तेह ऊपरि योजनसंबंधियइ चउवीसमह य विभागी जि सिद्ध अनंत सुखलीण ति सिद्ध भणियइ। तीह सिद्ध माहरउ नमस्कारु हउ ॥ २ ॥

नमो आयरियाणं ॥३॥ माहरउ नमस्कारु आचार्य हुउ । किसा जि आचार्य, पंचविधु आचारु जि परिपालइ ति आचार्य भणियइ । किसउ पचविधु आचारु । ज्ञानाचारु, दर्शनाचारु, चारित्राचारु, तपाचारु, वीर्याचारु, यउ पंचविधु आचारु जि परिपालइ ति आचार्य भणिइ । तीह आचार्य माहरउ नमस्कारु हउ ॥ ३ ॥

नमो उवज्झायाणं ॥ ४ ॥ माहरउ नमस्कारु उपाध्याय हुउ। किसा जि उपाध्याय द्वादशागी जि पढइ पढावइ । किसी ज द्वादशागी; आचारागु १ सूयगडु २ ठाणांगु ३ समवाउ ४ विवाहपन्नत्ति ५ ज्ञाताधर्म्मकथा ६ उवासगदसा ७ अंतगडदसा ८ अणुत्तरोववाइयदसा ९ पण्हवागरणु १० विपाकश्रुतु ११ दृष्टिवादु १२ ए बार आग जि पढइ पढावइ ति उपाध्याय भणियइ। तीह उपाध्याय माहरउ नमस्कारु हुउ ॥ ४ ॥

नमो लोए सव्वसाहूणं ॥ ५ ॥ ईणिं लोकि जि केई अछइ साधु । यउ लोकु च किसउ भणियइ। अढाई द्वीपसमुद्र पनर कर्म्मभूमि । जि किसी, पांच भरत पांच ऐरवत पांच महाविदेह खेत्र ईह पनर कर्म्मभूमिमाहि जि केई अच्छइ साधु । किसा जि साधु; रत्नत्रउ जि साधइ । किसउ रत्नत्रउ; ज्ञानु दर्शनु चारित्रु यउ रत्नत्रउ जि साधइ ति साधु भणियइ। तीह साधु पंचमहाव्रतपरिपालक पंचमहाव्रत किसा भणियइ । प्राणातिपातु १ मृषावादु २ अदत्तादानु ३ मैथुनु ४ परिग्रहु ५ रात्रीभोजनु । जि विवर्जइ ति साधु भणियइ । तीह साधु सर्वेहीं माहरउ नमस्कारु हुउ ॥ ५ ॥

एसो पंच नमोकारो ॥ ६ ॥ एउ पंचपरमेष्ठिनमस्कारु पचपरमेष्ठि किसा । जि पूर्वोक्तभाणिया अरिहत १ सिद्ध २ आचार्य ३ उपाध्याय ४ साधु ५ इह पंचपरमेष्ठिनमस्कारु भावि क्रियमाणु हुंतउं किसउं करइ ॥ ६ ॥

सव्वपावपणासणो ॥७॥ सर्वपापप्रणासकारियउ हुइ । ईणि जीवि चतुर्गतिकि संसारि भवभ्रमणु फरतइ हुंतइ जि असुभलेश्या उपायी पापु सु ईणि पंचपरमेष्ठिनमस्कारि महामत्रि सुमरीतइ हुंतइ क्षउ हुयउ ॥ ७ ॥

मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होइ मंगलं ॥८॥ ईणि संसारि दधिचंदनदूर्वादिक मंगलीक भाणियइ। तीह मंगलीक सर्वहीमांहि प्रथमु मंगलु एहु । ईणि कारणि शुभकार्यआदि पहिलउं सुमरेवउ, जिव ति कार्य एहतणइ प्रभावइ वृद्धिमंता हुयइ । यउ नमस्कारु अतीतअनागतवर्त्तमानचउवीसीआदिजिनो-त्कसारु, सु तुम्हे विसेषहइ हिवडातणइ प्रस्तावि अर्थयुक्तु ध्येयु ध्यातव्यु गुणेवउ पढेवउ । जु किंसउ।

जिणसासणस्स सारो चउदसपुव्वाण जो समुद्धारो ।
जस्स मणे नवकारो संसारो तस्स किं कुणइ ॥

अनइ एहु नमस्कारु स्मरता इहलोकतणा भय नासइ ।

यदुक्तं—अडविगिरिरन्नमज्झे भयं पणासेइ चिंतिओ संतो ।
रक्खइ भवियसयाइं माया जह पुत्तभंडाइ ॥
वहिजलजलणतक्करहरिकिरि संगामविसहरभएहिं ।
नासंति तक्खणेणं जिणनवकारप्पभावेणं ।
हियइगुहाए नवकारकेसरी जाण संठिओ निच्चं ।
कम्मट्ठगंठिदोघट्टघट्टयं ताण परिनट्ठं ॥

नमस्कारस्य स्वरूपं भण्यते । ईणि नवकारि नव पद पांच अधिकार सत्तसट्ठि अक्षर, तीहमाहि छ भारी इकसठि लघु । इसउं नमस्कारतणउं माहात्म्यु ।

एसो मंगलनिलओ भयविलओ सलयसंतिसुहजणओ ।
नवकारपरममंतो संतियमित्तो सुहं देउ ॥
अप्पुव्वो कप्पतरू एसो चिंतामणी य अप्पुव्वो ।
जो झाइ सयलकालं सो पावइ सिवसुहं विउलं ॥

नवकारव्याख्यानं समाप्तम् ॥

अतिचार

(सवत १३६९ मां लखेला ताडनपत्रमांथी)

तउ तुम्हि ज्ञानाचार दरिसणाचार चारित्राचार तपाचार वीर्याचार पंचविधआचार विषइया अतीचार आलोउ । ज्ञानाचारि कालवेला पढिउ गुणिउ विनयहीनु वहुमानहीनु उपधानहीनु गुरुनिन्हवु अनेरीकन्हइ पढिउ अनरउ कहिउ । व्यजनकूट अक्षरकूट कानइ मात्र आगलउ ओछउ देववंदणइ पडिक्कमणइ सज्झाओ करतां पढतां गुणतां हुओ हुइ, अर्थकूट तदुभयकूट ज्ञानोपकरणि पाटी पोथी ठवणी कमली सापडी सांपडी पति आसातना पगु लागउ थुकु लागउ पढतां गुणतां प्रद्वेषु मच्छर अंतराइ हुउ कीधउं हुइ भवसगलाहइमाहि तेह मिच्छामि दुक्कडं । रूपावादि सहसात्कारि प्रादु कन्या-

केवलज्ञान, चउत्रीस अतिशयि समन्वित, अष्टमहाप्रातिहार्यशोभायमान महाविदेहि खेत्रि विहरमान तीह अरिहंत भगवंत माहरउ नमस्कारु हउ ॥ १ ॥

नमो सिद्धाणं ॥ २ ॥ महारउ नमस्कारु सिद्ध हउ । किसा जि सिद्ध, दुष्टाष्टकर्म्मक्षउ करिउ, जि मोक्षि ग्या । आठ कर्म किसा भणियइ । ज्ञानावरणीउ १ दरिसणावरणीउ २ वेदनीउ ३ मोहनीउ ४ आयु ५ नामु ६ गोत्तु ७ अंतराउ ८ ईह आठकर्म्मक्षउ करिउ जि सिद्धि ग्या । किसी ज सिद्धि; लोकतणइ अग्रविभागि पचतालीस लक्षयोजनप्रमाणि जिसउ उत्ताणु छत्तु तिसइ आकारि ज सिद्धिसिला अमलनिर्मल जलसंकासं जु अजरामरस्थानु, तेह ऊपरि योजनसंबाधियइ चउवीसमह य विभागी जि सिद्ध अनंत सुखलीण ति सिद्ध भणियइ । तीह सिद्ध माहरउ नमस्कारु हउ ॥ २ ॥

नमो आयरियाणं ॥३॥ माहरउ नमस्कारु आचार्य हुउ । किसा जि आचार्य, पचविधु आचारु जि परिपालइ ति आचार्य भणियइ । किसउ पंचविधु आचारु । ज्ञानाचारु, दर्शनाचारु, चारित्राचारु, तपाचारु, वीर्याचारु, यउ पंचविधु आचारु जि परिपालइ ति आचार्य भणिइ । तीह आचार्य माहरउ नमस्कारु हउ ॥ ३ ॥

नमो उवज्झायाणं ॥ ४ ॥ माहरउ नमस्कारु उपाध्याय हुउ । किसा जि उपाध्याय द्वादशांगी जि पढइ पढावइ । किसी ज द्वादशांगी, आचारागु १ सूयगडु २ ठाणागु ३ समवाउ ४ विवाहपन्नत्ति ५ ज्ञाताधर्म्मकथा ६ उवासगदसा ७ अंतगडदसा ८ अणुत्तरोववाइयदसा ९ पण्हवागरणु १० विपाकश्रुतु ११ दृष्टिवादु १२ ए बार आंग जि पढइ पढावइ ति उपाध्याय भणियइ । तीह उपाध्याय माहरउ नमस्कारु हुउ ॥ ४ ॥

नमो लोए सव्वसाहूणं ॥ ५ ॥ ईणि लोकि जि केई अछइ साधु । यउ लोकु च किसउ भणियइ । अढाई द्वीपसमुद्र पनर कर्म्मभूमि । जि किसी, पांच भरत पांच ऐरवत पांच महाविदेह खेत्र ईह पनर कर्म्मभूमिमाहि जि केई अच्छइ साधु । किसा जि साधु; रत्नत्रउ जि साधइ । किसउ रत्नत्रउ, ज्ञानु दर्शनु चारित्रु यउ रत्नत्रउ जि साधइ ति साधु भणियइ । तीह साधु पंचमहाव्रतपरिपालक पंचमहाव्रत किसा भणियइ । प्राणातिपातु १ मृषावादु २ अदत्तादानु ३ मैथुनु ४ परिग्रहु ५ रात्रीभोजनु । जि विवर्जइ ति साधु भणियइ । तीह साधु सर्वेह्रीं माहरउ नमस्कारु हुउ ॥ ५ ॥

एसो पंच नमोकारो ॥ ६ ॥ एउ पंचपरमेष्ठिनमस्कारु पंचपरमेष्ठि किसा । जि पूर्वोक्तभणिया अरिहत १ सिद्ध २ आचार्य ३ उपाध्याय ४ साधु ५ इह पचपरमेष्ठिनमस्कारु भावि क्रियमाणु हुंतउं किसउं करइ ॥ ६ ॥

सव्वपावपणासणो ॥७॥ सर्वपापप्रणासकारियउ हुइ । ईणि जीवि चतुर्गतिकि संसारि भवभ्रमणु फरतइ हुंतइ जि असुभलेश्या उपायी पापु सु ईणि पंचपरमेष्ठिनमस्कारि महामंत्रि सुमरीतइ हुंतइ क्षउ हुयउ ॥ ७ ॥

मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होइ मंगलं ॥८॥ ईणि संसारि दधिचंदनदूर्वादिक मंगलीक भाणियइ। तीह मंगलीक सर्वहीमांहि प्रथमु मंगलु एहु। ईणि कारणि शुभकार्यआदि पहिलउं सुमरेवउ, जिव ति कार्य एहतणइ प्रभावइ वृद्धिमंता हुयइ। यउ नमस्कारु अतीतअनागतवर्त्तमानचउवीसीआदिजिनो-कसारु, सु तुम्हे विसेषहइ हिवडातणइ प्रस्तावि अर्थयुक्तु ध्येयु ध्यातव्यु गुणेवउ पढेवउ। जु किसउ।

जिणसासणस्स सारो चउदसपुव्वाण जो समुद्धारो।
जस्स मणे नवकारो संसारो तस्स किं कुणइ ॥
अनइ एहु नमस्कारु स्मरता इहलोकतणा भय नासइ।
यदुक्तं—अडविगिरिरन्नमज्झे भयं पणासेइ चिंतिओ संतो।
रक्खइ भवियसयाइं माया जह पुत्तभंडाइं ॥
वाहिजलजलणतक्करहरिकरि संगामविसहरभएहिं।
नासंति तक्खणेणं जिणनवकारप्पभावेणं।
हियइगुहाए नवकारकेसरी जाण संठिओ निच्चं।
कम्मट्ठगंठिदोघट्टघट्टयं ताण परिनट्ठं ॥

नमस्कारस्य स्वरूपं भण्यते। ईणि नवकारि नव पद पांच अधिकार सत्तसट्ठि अक्षर, तीहमाहि छ भारी इकसठि लघु। इसउं नमस्कारतणउं माहात्म्यु।

एसो मंगलनिलओ भयविलओ सयलसंतिसुहजणओ।
नवकारपरममंतो संतियमित्तो सुहं देउ ॥
अप्पुव्वो कप्पतरू एसो चिंतामणी य अप्पुव्वो।
जो झाइ सयलकालं सो पावइ सिवसुहं विउलं ॥

नवकारव्याख्यानं समाप्तम् ॥

अतिचार

(सवत १३६९ मां लखेला ताडनपत्रमांथी)

तउ तुम्हि ज्ञानाचार दरिसणाचार चारित्राचार तपाचार वीर्याचार पंचविधआचार विषइया अतीचार आलोउ। ज्ञानाचारि कालवेला पढिउ गुणिउ विनयहीनु बहुमानहीनु उपधानहीनु गुरुनिन्हवु अनेरीकन्हइ पढिउ अनरउ कहिउ। व्यंजनकूट अक्षरकूट कानइ मात्र आगलउ ओछउ देववंदणइ पडिकमणइ सज्झाओ करतां पढतां गुणतां हुओ हुइ, अर्थकूट तदुभयकूट ज्ञानोपकरणि पाटी पोथी ठवणी कमली सांपडी सांपडी पाति आसातना पगु लागउ थुंकु लागउ पढतां गुनतां प्रद्वेषु मच्छरु अंतराइ हुउ कीधउं हुइ भवसगलाहइमांहि तेह मिच्छामि दुक्कडं। मृषावादि सहसात्कारि प्रमाद मन्या-

केवलज्ञान, चउत्रीस अतिशयि समन्वित, अष्टमहाप्रातिहार्यशोभायमान महाविदेहि खेत्रि विहरमान तीह अरिहंत भगवंत माहरउ नमस्कारु हउ ॥ १ ॥

नमो सिद्धाणं ॥ २ ॥ महारउ नमस्कारु सिद्ध हउ । किसा जि सिद्ध, दुष्टाष्टकर्म्मक्षउ करिउ, जि मोक्षि ग्या । आठ कर्म किसा भणियइ । ज्ञानावरणीउ १ दरिसणावरणीउ २ वेदनीउ ३ मोहनीउ ४ आयु ५ नामु ६ गोत्तु ७ अंतराउ ८ ईह आठकर्म्मक्षउ करिउ जि सिद्धि ग्या । किसी ज सिद्धि; लोकतणइ अग्रविभागि पचत्तालीस लक्षयोजनप्रमाणि जिसउ उत्ताणु छत्तु तिसइ आकारि ज सिद्धिसिला अमलनिर्मल जलसंकासं जु अजरामरस्थानु, तेह ऊपरि योजनसंबंधियइ चउवीसमह य विभागी जि सिद्ध अनंत सुखलीण ति सिद्ध भणियइ । तीह सिद्ध माहरउ नमस्कारु हउ ॥ २ ॥

नमो आयरियाणं ॥३॥ माहरउ नमस्कारु आचार्य हुउ । किसा जि आचार्य, पंचविधु आचारु जि परिपालइ ति आचार्य भणियइ । किसउ पचविधु आचारु । ज्ञानाचारु, दर्शनाचारु, चारित्राचारु, तपाचारु, वीर्याचारु, यउ पंचविधु आचारु जि परिपालइ ति आचार्य भणिइ । तीह आचार्य माहरउ नमस्कारु हउ ॥ ३ ॥

नमो उवज्झायाणं ॥ ४ ॥ माहरउ नमस्कारु उपाध्याय हुउ । किसा जि उपाध्याय द्वादशांगी जि पढइ पढावइ । किसी ज द्वादशागी, आचारागु १ सूयगडु २ ठाणांगु ३ समवाउ ४ विवाहपन्नत्ति ५ ज्ञाताधर्म्मकथा ६ उवासगदसा ७ अंतगडदसा ८ अणुत्तरोववाइयदसा ९ पण्हवागरणु १० विपाकश्रुतु ११ दृष्टिवादु १२ ए बार आग जि पढइ पढावइ ति उपाध्याय भणियइ । तीह उपाध्याय माहरउ नमस्कारु हुउ ॥ ४ ॥

नमो लोए सव्वसाहूणं ॥ ५ ॥ ईणिं लोकि जि केई अछइ साधु । यउ लोकु च किसउ भणियइ । अढाई द्वीपसमुद्र पनर कर्म्मभूमि । जि किसी, पांच भरत पांच ऐरवत पांच महाविदेह खेत्र ईह पनर कर्म्मभूमिमाहि जि केई अच्छइ साधु । किसा जि साधु; रत्नत्रउ जि साधइ । किसउ रत्नत्रउ; ज्ञानु दर्शनु चारित्रु यउ रत्नत्रउ जि साधइ ति साधु भणियइ । तीह साधु पंचमहाव्रतपरिपालक पंचमहाव्रत किसा भणियइ । प्राणातिपातु १ मृषावादु २ अदत्तादानु ३ मैथुनु ४ परिग्रहु ५ रात्रीभोजनु । जि विवर्ज्जइ ति साधु भणियइ । तीह साधु सर्वेहीं माहरउ नमस्कारु हुउ ॥ ५ ॥

एसो पंच नमोकारो ॥ ६ ॥ एउ पंचपरमेष्ठिनमस्कारु पचपरमेष्ठि किसा । जि पूर्वोक्तभाणिया अरिहत १ सिद्ध २ आचार्य ३ उपाध्याय ४ साधु ५ इह पंचपरमेष्ठिनमस्कारु भावि क्रियमाणु हुंतउं किसउं करइ ॥ ६ ॥

सव्वपावपणासणो ॥७॥ सर्वपापप्रणासकारियउ हुइ । ईणि जीवि चतुर्गतिकि संसारि भवभ्रमणु करतइ हुंतइ जि असुभलेश्या उपायी पापु सु ईणि पचपरमेष्ठिनमस्कारि महामंत्रि सुमरीतइ हुंतइ क्षउ हुयउ ॥ ७ ॥

मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होइ मंगलं ॥८॥ ईणि संसारि दधिचंदनदूर्वादिक मंगलीक भाणियइ। तीह मंगलीक सर्वहीमांहि प्रथमु मंगलु एहु । ईणि कारणि शुभकार्यआदि पहिलउं सुमरेवउ, जिव ति कार्य एहतणइ प्रभावइ वृद्धिमंता हुयइ । यउ नमस्कारु अतीतअनागतवर्त्तमानचउवीसीआदिजिनोत्कसारु, सु तुम्हे विसेषहइ हिवडातणइ प्रस्तावि अर्थयुक्तु ध्येयु ध्यातव्यु गुणेवउ पढेवउ । जु किसउ ।

जिणसासणस्स सारो चउदसपुव्वाण जो समुद्धारो ।
जस्स मणे नवकारो संसारो तस्स किं कुणइ ॥
अनइ एहु नमस्कारु स्मरता इहलोकतणा भय नासइ ।

यदुक्तं—अडविगिरिरन्नमज्झे भयं पणासेइ चिंतिओ संतो ।
रक्खइ भवियसयाइं माया जह पुत्तभंडाइ ॥
वाहिजलजलणतक्करहरिकिरि संगामविसहरभएहिं ।
नासंति तक्खणेणं जिणनवकारप्पभावेणं ।
हियइगुहाए नवकारकेसरी जाण संठिओ निच्चं ।
कम्मट्ठगंठिदोघट्टघट्टयं ताण परिनट्ठं ॥

नमस्कारस्य स्वरूपं भण्यते । ईणि नवकारि नव पद पांच अधिकार सतसट्ठि अक्षर, तीहमाहि छ भारी इकसठि लघु । इसउं नमस्कारतणउं माहात्म्यु ।

एसो मंगलनिलओ भयविलओ सयलसंतिसुहजणओ ।
नवकारपरममंतो संतियमित्तो सुहं देउ ॥
अप्पुव्वो कप्पतरू एसो चिंतामणी य अप्पुव्वो ।
जो झाइ सयलकालं सो पावइ सिवसुहं विउलं ॥

नवकारव्याख्यानं समाप्तम् ॥

अतिचार

(संवत १३६९ नां लखेला ताडनपत्रमांथी)

तउ तुम्हि ज्ञानाचार दरिसणाचार चारित्राचार तपाचार वीर्याचार पंचविधआचार विषइया अतीचार आलोउ । ज्ञानाचारि कालवेला पढिउ गुणिउ विनयहीनु बहुमानहीनु उपधानहीनु गुरुनिन्हवु अनेरीकन्हइ पढिउ अनेरउ कहिउ । व्यंजनकूट अक्षरकूट कानइ मात्र आगलउ ओछउ देववंदणइ पडिक्कमणइ सज्झाओ करतां पढतां गुणतां हुओ हुइ, अर्थकूट तदुभयकूट ज्ञानोपकरणि पाटी पोथी ठवणी कमली सांपडी सांपडी पति आसातना पगु लागउ थुकु लागउ पढतां गुणतां प्रद्वेषु मच्छर अंतराइ हुउ कीधउं हुइ भवसागरहइमांहि तेह मिच्छामि दुक्कडं। मृषावादि सहसात्कारि आदु अभ्या-

ख्यानु दीधउं, रहसमंत्रभेदु कीधइ, मृषोपदेसु दीधउ, कूडउ लेखु लेखिउ कूडी साखि थापणि मोसउ कुणहइसउ राडि भेडि कलहु विढाविढि, जु कोइ अतिचारु मृषावादि व्रति भवसगलाइमाहि हुउ त्रिविधि त्रिविधि मिच्छा मि दुकडं। अदत्तादानि विराइउं छानउं फीटउं लीधउं दीधउं चावरिउं घरि बाहिरि खेत्रि खलइ पाडइ पाडोसि अणमोकलाविउ चोरीच्छाइं चोर प्रति प्रयोगु कीधउ, नवउं पुराणउ रसु विरसु सजीवु निजीवु मेलिउं, कूडी तूल कूडइ थापि कूडउ कहिउ हुइ, अतीचारु अदत्तादानि व्रति भवसगलाइमाहि हुउ तह सवहइ मिच्छा मि दुक्कडं। मैथुनव्रति लहुडपणि आपणा विराया सील खंडया सिउणइ सिउणातरि, दृष्टिविपर्यासु, आठमिचउदसितणा नीमभंगु, अनंगक्रीडा परविवाहकरणु तीव्रभिलाषु, धरिउ हुइ, अनेरा जु कोइ अतिचारु मैथुनव्रति भवसगलामांहि हुअउ तेह सवहइ त्रिविधि त्रिविधि मिच्छा मि दुकडं। हव हियामाहिं सम्यक्त्व धरउ। अरिहंत देवता, सुसाधु गुरु, गुरु जिणप्रणीतु धर्मु, सम्यक्त्वदंडकु ऊचरउ। हिव अढार पापस्थानक वोसिरावउ। सर्वू प्रागातिपात, सर्वू मृषावाद, सर्वू अदत्तादान, सर्वू मैथुनु, सर्वू परिग्रहु, सर्वू क्रोधु, सर्वू मानु, सर्वू माया, सर्वू लोभु, रागु द्वेषु, कलहु, अभ्याख्यानु, पैशुन्य, रति, अरति, परपरिवादु, मायामृषावादु, मिथ्यात्वदरिसणसल्यु ए अढार पापस्थान मोक्षमार्ग संसर्ग विघन समान त्रिविधि त्रिविधि वोसिरावउ, अतीतु निंदउ, अनागतु पच्चक्खउ, वर्तमानु संवरु। सागारु प्रत्याख्यानुउ।

खमिउ खमाविउ मइं खमिउ छव्विह जीवनिकाय।
सिद्धह दिन्ना लोयणा जइ मह वइरु न पावु।

हिव दुकृतगरिहा करउ। जु अणादि संसारमांहि हींडतइ हूतइ ईणि जीवि मिथ्यात्वु प्रवर्ताविउ। कुतिर्थु संस्थापिउ, कुमार्ग प्ररूपिउ, सन्मार्गु अवलपिउ। हिवु ऊपार्जि मेल्हि सरीरु कुटुंबु जु पापि प्रवर्त्तिउ, जि अधिगरण हलऊ खल घरट घरटी खांडां कटारी अरहट्ट पावटा कुप तलाव कीधां कराव्या, अनुमोद्या ते सर्वे त्रिविधि त्रिविधि वोसिरावउ। देवस्थानि द्रवि वेवि पूजा महिमा प्रभावना कीधी, तीर्थजात्रा रथजात्रा कीधी, पुस्तक लिखाव्यां, साधर्मिकवाछल्य कीधां, तप नीयम देववंदन वादणांइ सझ्याइ अनेराइ धर्मानुष्ठानतणइ विषइ जु ऊजमु कीधउ सु अम्हारउ सफलु हुओ। इति भावनापूर्वक अनुमोदउ।